अपनी छाया

विश्व-विख्यात उपन्यासकार आस्कर वाइल्ड के

'दि पिक्चर आफ डोरियन ग्रे'

का हिन्दी अनुवाद

अपनी छाया

विश्व-विख्यात उपन्यासकार आस्कर वाइल्ड के

'दि पिक्चर आफ डोरियन ग्रे'

का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

रामकुमार



द्वितीय संस्करण

१९५८

मूल्य

पाँच रुपए

प्रकाशक

राजपाल एण्ड सन्ज़

दिल्ली

मुद्रक

इण्डिया प्रिंटर्स

दिल्ली

प्रस्तावना

कलाकार वह है जो सुन्दर चीजों की रचना करे।

कला को प्रकट करना और कलाकार को छिपाये रखना, यही कला का ध्येय है।

आलोचक वह है जो सुन्दर रचनाओं के विषय में अपने विचार किसी दूसरे ढंग या किसी नई वस्तु में प्रकट करे।

सर्वोच्च कोटि की आलोचना सबसे नीचे दरजे की आलोचना की भाँति एक प्रकार से आलोचक की अपनी आत्मकथा-सी होती है।

सुन्दर चीजों के भद्दे अर्थ निकालने वाले लोग आकर्षक न होकर बिगड़े हुए होते हैं, यह उनका दोष है।

सुन्दर चीजों के सुन्दर अर्थ निकालने वाले लोगों को मंजा हुआ कहा जा सकता है और वे भविष्य में कुछ कर सकते हैं।

सुन्दर चीजों में केवल सौन्दर्य देखने वाले इने-गिने होते हैं।

पुस्तकों को नैतिक और अनैतिक नहीं कहा जा सकता।

पुस्तकें या तो अच्छी लिखी हुई होती हैं या बुरी। बस, इससे आगे कुछ नहीं।

उन्नीसवीं शताब्दी में यथार्थवाद के प्रति उदासीनता उस बन्दर के समान है जो अपना मुख शीशे में देखकर क्रोधित हो उठता है।

उन्नीसवीं शताब्दी में रोमांस के प्रति घृणा उस बन्दर के समान है जो दर्पण में अपनी ही शक्ल न देखकर क्रोधित हो उठता है।

मानव का नैतिक जीवन कलाकार के विषय का एक अंग है, परन्तु अपूर्ण ढंग का अच्छी तरह से उपयोग करना ही कला की नैतिकता है। कोई भी कलाकार कोई चीज प्रमाणित नहीं करना चाहता। परन्तु जो

सत्य है उसके लिये प्रमाण दिये जा सकते हैं। कोई कलाकार भी नैतिकता के प्रति सहानुभूति नहीं दिखलाता।

कलाकार कभी अस्वस्थता का अनुभव नहीं करता, वह प्रत्येक भाव को व्यक्त कर सकता है।

कलाकार के लिये भाव और भाषा, कला को व्यक्त करने के उचित साधन होते हैं।

दोष और गुण कलाकार के लिये कला की वस्तु बन जाते हैं। सब कलाकारों में संगीतकार ही अपनी कला को किसी ढांचे की शक्ल-सूरत दे सकता है और अभिनेता की कला दूसरों को अनुभव करने के लिये बाध्य कर देती है।

सब कलाओं की अपनी सतह और अपने चिह्न होते हैं।

जो लोग इस सतह से नीचे चले जाते हैं, वे इस खतरे के उत्तर-दायी स्वयं ही होते हैं।

और जो इन चिह्नों को पढ़ लेते हैं, वे इस खतरे के कारण स्वयं ही बनते हैं।

कला जीवन को नहीं, बल्कि देखने वाले को व्यक्त करती है।

कलापूर्ण कृति पर लोगों के विभिन्न मत यह प्रकट करते हैं कि कृति नई, आकर्षक और उलझी हुई है।

जब किसी कृति के विषय में आलोचक एकमत नहीं हो पाते तब कलाकार का उसकी आत्मा के साथ सामंजस्य हो जाता है।

एक उपयोगी वस्तु का निर्माण करने वाला जब तक स्वयं उसकी प्रशंसा नहीं करता, तब तक उसे क्षमा किया जा सकता है। एक व्यर्थ की चीज बनाने वाले के पास केवल यही बहाना है कि लोग उसकी बहुत प्रशंसा करते हैं।

सब कलायें सारहीन हैं!

—आॅस्कर वाइल्ड

१

स्टूडियो गुलाब की तेज़ सुगन्धि से महक रहा था। गर्मियों की हल्की-फुल्की ठण्डी हवा बाग़ के पेड़ों में उलझकर रह गई थी। लिली फूलों की सुगन्धि वायु के झोंकों के साथ दरवाजे से अन्दर आ रही थी। शायद इस सुगन्धि में गुलाबी फूलों की झाड़ियों की खुशबू मिली हुई थी।

अपनी पुरानी आदत के अनुसार लार्ड हेनरी व्रटन फारस के कीमती मसनद पर लेटा सिगरेटें फूंक रहा था। शहद की भाँति मीठे और पीले रंग के फूलों की चमक वह वहीं से बैठा देख रहा था। इन फूलों के अतुल सौन्दर्य के भार से पेड़ की झूमती हुई शाखायें दबी जा रही थीं। बड़ी-बड़ी खिड़कियों और दरवाजों के सामने लटकते हुए पर्दों पर बाहिर चह-चहाते हुए पक्षियों की छाया को वह स्पष्ट रूप से देख रहा था। इस वातावरण को देखकर उसे पीले और कमजोर जापानी कलाकारों की याद आ रही थी, जो अपनी कला द्वारा गति और स्फूर्ति का प्रदर्शन करते थे। लन्दन का हल्का शोरगुल कहीं दूर बजते हुए नगमे की भाँति प्रतीत हो रहा था।

कमरे के बीच में एक सीधे स्टैण्ड पर एक असाधारण नवयुवक का पूरा चित्र बना हुआ रखा था। इसके सामने कुछ दूरी पर इसका बनाने वाला चित्रकार बासिल हालवर्ड बैठा हुआ था। कुछ वर्षों पूर्व बासिल के यकायक गायब हो जाने पर जनता में बड़ी सनसनी फैल गई थी और तरह-तरह की अफवाहें उड़ रही थीं।

चित्रकार ने अपनी कला के चातुर्य से बने हुए जब उस सुन्दर और स्वर्गीय चित्र को देखा, तब प्रसन्नता की एक लहर उसके मुख पर दौड़ कर वहीं टिक गई। परन्तु वह यकायक उठ बैठा और अपनी आँखों को

बन्द करके, पलकों को उँगलियों से दबा लिया, मानो वह अपने मस्तिष्क में से उस स्वप्न को बाहिर नहीं निकलने देना चाहता था, क्योंकि नींद से जग जाने के उपरान्त स्वप्न के भंग हो जाने का भय था।

"बासिल, यह तुम्हारी सर्वोत्तम कृति है, इससे अच्छा तुमने आज तक कोई भी चित्र नहीं बनाया।" लार्ड हेनरी ने सुस्ताते हुए कहा—"अगले साल तुम इसको आर्ट गेलरी में जरूर भेज देना। यह गेलरी है तो बहुत बड़ी, परन्तु यहाँ उच्चकोटि के चित्रों का सदा अभाव रहता है। मैं जब कभी वहाँ गया, वहाँ पर इतने लोग थे कि मैं उन सस्ते चित्रों को भली भाँति देख नहीं सका, या वहाँ इतने अधिक चित्र थे कि उनमें व्यस्त होकर मैं लोगों को नहीं देख सका जो मुझे पहले से भी बुरा लगा। आर्ट गेलरी ही एक ऐसा स्थान है जिसको तुम्हारे इस चित्र की अत्यधिक आवश्यकता है।"

"मेरे विचार में मैं इसे कहीं नहीं भेजूँगा।" उसने उत्तर दिया और अपना सिर पीछे की ओर धकेल दिया "नहीं, मैं इसको कहीं नहीं भेजूँगा।"

लार्ड हेनरी की भौहें कुछ तन-सी गईं और तेज तम्बाकू वाली सिगरेट के नीले धुएँ से बने हुए गोलाकारों में से उसने आश्चर्यचकित होकर बासिल की ओर देखा—"कहीं नहीं भेजोगे? लेकिन क्यों? क्या इसका कोई कारण है? तुम चित्रकार भी कैसे अजीब आदमी होते हो। अपनी प्रसिद्धि के लिये तुम संसार का कोई भी काम कर सकते हो, परन्तु ज्यों हीं प्रसिद्ध हो जाते हो, तब उससे दूर भागना चाहते हो। यह तुम्हारी मूर्खता है, क्योंकि संसार में इससे बुरी कोई चीज़ नहीं कि तुम्हारे विषय में लोग चर्चा न करें। इस प्रकार का चित्र तुमको इंग्लैंड के सब नवयुवकों से ऊपर उठा देगा, और यदि बूढ़े आदमियों में थोड़ी भी भावुकता है तो वे तुम से ईर्ष्या करने लगेंगे।"

"मैं जानता हूँ कि तुम मुझ पर हँसोगे।" उसने उत्तर दिया—"परन्तु सचमुच ही मैं इसका प्रदर्शन नहीं कर सकता। इस चित्र में बहुत

कुछ मैंने अपने आपको व्यक्त किया है।"

लार्ड हेनरी मसनद पर सीधा लेट गया और हँसने लगा।

"मैं जानता था कि तुम हँसोगे, परन्तु यह बिल्कुल सत्य है।"

"अपने आपको बहुत कुछ व्यक्त किया है! वासिल, मुझे पता नहीं था कि तुममें इतना अभिमान भरा होगा। तुम में और इस चित्र में मुझे तो कोई समानता दिखाई नहीं देती। कहाँ तुम्हारा भावहीन और खुरदरा चेहरा, काले बाल और कहाँ यह युवक जो हाथी दाँत और गुलाब की पत्तियों का बना हुआ मालूम पड़ता है। प्यारे बासिल, यह तो एक कोमल पौधा है, और तुम···हाँ तुम में बौद्धिक अभिव्यंजना है। परन्तु वास्तविक सौन्दर्य की समाप्ति वहीं हो जाती है जहाँ बौद्धिक अभिव्यक्ति का आरम्भ होता है। बुद्धि स्वयं ही अतिशयोक्ति है जो किसी भी चेहरे के सौन्दर्य और सन्तोष को नष्ट कर देती है। जब कभी मनुष्य सोचने लगता है तब वह किसी प्रकार की एक भयानक शक्ल धारण कर लेता है। किसी भी बौद्धिक कार्य में संलग्न सफल लोगों को देखो, वे देखने में कितने बदसूरत लगते हैं। तुम्हारा यह रहस्यपूर्ण मित्र जिसका नाम तुमने मुझे कभी नहीं बतलाया परन्तु जिसके चित्र ने मुझे चकाचौंध कर दिया है, क्षण भर के लिए भी नहीं सोचता। यह एक ऐसा सुन्दर नवयुवक है जिसके पास दिमाग नहीं। सर्दियों में जब देखने के लिए फूल नहीं होते, तब इसका यहाँ होना आवश्यक है, और गर्मियों में अपनी बुद्धि को शीतल करने के लिए इसकी उपस्थिति अनिवार्य प्रतीत होती है। बासिल, व्यर्थ में ही अपने आप को इतना ऊँचे न चढ़ाओ, तुम उससे तनिक भी तो नहीं मिलते।"

"हैरी, तुम मुझे समझ नहीं सके।" कलाकार ने उत्तर दिया—"यह तो मैं भलीभाँति जानता हूँ कि मैं उससे बिल्कुल नहीं मिलता। हम दोनों में भला क्या समानता हो सकती है। तुम अपना सिर क्यों हिला रहे हो? मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह सत्य है। शरीर और बुद्धि की तुलना करना घातक सिद्ध होता है। अपने साथियों से भिन्न न होना

ही अच्छा है। बदसूरत और मूर्ख लोग ही इस संसार में सुख पाते हैं। निश्चिन्त होकर वे इस खेल का आनन्द उठा सकते हैं। यदि वे विजय के उल्लास से परिचित नहीं हैं तो पराजय की यातना भोगने का अवसर भी उन्हें कभी नहीं मिला। तब चिन्ताओं से दूर, उदासीन और बिना बोले जिस प्रकार वे अपना जीवन बिताते हैं, वही हमें भी करना चाहिये। वे स्वयं किसी के दुःख का कारण नहीं बनते। अतः दूसरों के हाथों भी उनका कोई बुरा नहीं होता। हैरी, तुम्हारी यह ऊँची पदवी और धन-दौलत, मेरी बुद्धि और कला, चाहे इसका मूल्य कुछ भी हो, डोरियन ग्रे का आकर्षक सौन्दर्य, भगवान ने यह जो कुछ दिया है, इसके लिए हमें बहुत भारी दुख सहने पड़ेंगे।"

"डोरियन ग्रे ? क्या यही उसका नाम है ?" लार्ड हेनरी ने बासिल के पास आकर पूछा।

"हाँ, यही उसका नाम है, मैं नहीं चाहता था कि तुमको यह नाम पता चले।"

"लेकिन क्यों ?"

"ओह, मैं समझा नहीं सकता। जब मैं किसी को बहुत अधिक पसन्द करता हूँ, तब किसी को उसका नाम नहीं बतलाता। नाम बतलाने से उसका कुछ भाग मैं दूसरे को दे देता हूँ। आजकल किसी के रहस्य को प्रकट न करना मुझे बहुत अच्छा लगता है। आधुनिक जिन्दगी को रहस्यमय और उल्लासपूर्ण बनाने का यही तो एकमात्र उपाय है। साधारण से साधारण चीज को भी यदि रहस्यमय बना दिया जाय तो वह सुन्दर बन जाती है। जब मैं शहर से बाहर जाता हूँ तो अपने लोगों को कभी अपना पता नहीं बतलाता। यदि बता दूँ तो मेरी सारी प्रसन्नता काफूर हो जाय। इसे चाहे मेरी मूर्खता से भरी आदत ही समझो, परन्तु यह जीवन में एक रोमांस उत्पन्न कर देती है। शायद इस विषय में तुम मुझे महाबेवकूफ समझ रहे होगे।"

"कभी नहीं।" लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया, "बासिल, मैं तुम्हारे विषय

में ऐसा सोच ही नहीं सकता। तुम शायद यह भूल गये हो कि मैं विवाहित हूँ और पति और पत्नी का एक दूसरे से कुछ बातों को छिपाना आवश्यक बन जाता है, यही विवाह का अनोखापन और आकर्षण है। मुझे कभी पता नहीं रहता कि मेरी पत्नी कहाँ पर है और वह यह नहीं जानती कि मैं क्या कर रहा हूँ। हम परस्पर बहुत कम मिलते हैं, कभी हम दोनों का भोजन बाहिर होता है या जब हम ड्यूक के घर जाते हैं तब बहुत गम्भीर बनकर हम एक-दूसरे को बे-सिर-पैर की कहानियाँ सुनाया करते हैं। मेरी स्त्री इन बातों में मुझसे कहीं बढ़-चढ़ कर है।"

"हैरी, जिस ढंग से तुम अपने विवाहित जीवन की बातें करते हो, उससे मुझे अधिक घृणा है।" बासिल हालवर्ड ने बाग में खुलते हुए दरवाजे की ओर कदम बढ़ाते हुए कहा—"मुझे विश्वास है कि वास्तव में तुम एक योग्य पति हो और अपने गुणों का प्रदर्शन करते हुए लजाते हो। तुम एक असाधारण व्यक्ति हो। तुम कभी नैतिकता की बातें नहीं करते, लेकिन कभी तुमने बुरे काम भी नहीं किये। नैतिकता और सत्य के प्रति घृणा तुम्हारा झूठा प्रदर्शन है।"

"स्वाभाविक बनने का प्रयास करना भी एक प्रदर्शन है, शायद सबसे बुरा प्रदर्शन।" लार्ड हेनरी ने चिल्लाकर हँसते हुए कहा। तत्पश्चात् वे दोनों बाग़ के भीतर चले गये और एक लम्बे से विशाल वृक्ष की छाया में रक्खे हुए एक लकड़ी के बेंच पर बैठ गये। सूर्य का प्रकाश चमकती हुई पत्तियों से नीचे फिसल रहा था, घास पर टहनियों में लगे हुए फूल हवा में झूम रहे थे।

थोड़ी देर पश्चात् लार्ड हेनरी ने अपनी घड़ी निकाली। "बासिल, मुझे अब चलना चाहिये।" उसने धीमे स्वर में कहा—"परन्तु जाने से पूर्व थोड़ी देर पहले पूछे हुए एक प्रश्न का उत्तर चाहता हूँ।"

"क्या बात है?" चित्रकार ने पृथ्वी पर आँखें गड़ाये पूछा।

"तुम जानते तो हो।"

"हैरी, सचमुच मुझे पता नहीं।"

"खैर, मैं तुमको फिर बतलाये देता हूँ, मुझे स्पष्ट रूप से समझा दो कि तुम डोरियन ग्रे का चित्र क्यों नहीं प्रदर्शित करना चाहते । मैं इसका वास्तविक कारण जानना चाहता हूँ ।"

"मैं तो पहले ही बतला चुका हूँ ।"

"नहीं, कहाँ बतलाया है तुमने ? तुमने कहा कि इस चित्र में तुमने अपने आप को बहुत अधिक व्यक्त किया है, लेकिन, ये तो बच्चों की-सी बातें हैं ।"

"हैरी !" वासिल हालवर्ड ने हैरी के मुख की ओर गम्भीरता से देखते हुए कहा—"मन में भावों का तूफान लिये जब कोई भी चित्र बनाया जाता है, तो वास्तव में वह कलाकार का अपना चित्र होता है, बैठने वाले का नहीं । बैठने वाला तो केवल एक साधन या निमित्त मात्र को होता है । चित्रकार बैठने वाले माडल की वास्तविकता को अपने चित्र में व्यक्त नहीं करता, बल्कि रंगे कैनवस पर वह अपने भावों को व्यक्त करता है । इस चित्र में मैंने अपनी आत्मा का रहस्य दिखलाया है, इसी कारण मैं इसको प्रदर्शित नहीं करना चाहता ।"

लार्ड हेनरी हँसा—"वह रहस्य क्या है ?" उसने पूछा ।

"मैं तुम्हें बतला दूंगा ।" हालवर्ड ने कहा, परन्तु उलझन के भाव उसके मुख पर चमक रहे थे ।

"मैं बड़ी अधीरता से वाट जोह रहा हूँ ।" हैरी ने अपने साथी की ओर देखते हुए कहा ।

"ओह, सचमुच ही स्पष्ट करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं ।"

चित्रकार ने कहा—"मुझे भय है कि तुम इसे शायद ही समझ सको, तुम शायद विश्वास भी न करो ।"

लार्ड हेनरी मुस्करा दिया, उसने झुककर गुलाबी रंग का फूल उठा लिया और उसे ध्यान से देखते हुए कहा—"मुझे दृढ़ निश्चय है कि मैं सब कुछ समझ जाऊँगा । उसने उत्तर दिया—"और जो तुम विश्वास की बात कहते हो, तब मैं तो किसी बात पर भी विश्वास कर सकता हूँ

परन्तु वह अविश्वसनीय होनी चाहिये ।"

हवा के तेज झोंके से पेड़ के कुछ फूल चमकते सितारों की भाँति शून्य में इधर से उधर उड़ने लगे । दीवार के सहारे एक चिड़िया फुदकने लगी थी । लम्बे और पतले धागे की भाँति एक कीड़ा अपने पर फैलाये घूम रहा था । लार्ड हेनरी बासिल के हृदय की धड़कन का अनुभव कर रहा था और सोच रहा था कि बासिल क्या कारण बतलाएगा ।

"कहानी तो केवल इतनी-सी है ।" चित्रकार ने कुछ समय पश्चात् कहा । "दो महीने पूर्व मैं श्रीमती ब्रैंडन के घर गया था । तुम जानते ही हो कि बेचारे कलाकारों को यदा-कदा लोगों से मिलना ही पड़ता है, जिससे वे उनको असभ्य न समझें । जैसा कि तुमने मुझसे एक बार कहा था कि शाम का सूट और सफेद टाई लगाकर शेयर-व्यापारी भी अपने आपको सभ्य कह सकता है । वहाँ दस मिनट तक कीमती और भड़कीले वस्त्रों वाले धनाढ्य लोगों में बातचीत करने के पश्चात् मुझे ऐसा आभास हुआ कि कोई मेरी ओर देख रहा है । मैंने आधा मुड़कर पहली बार डोरियन ग्रे को देखा । जब हमारी आँखें मिलीं, तब मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं पीला पड़ गया हूँ । भय से भरी हुई सिहरन मेरे सारे शरीर में हुई । मैं जानता था कि मेरी एक ऐसे व्यक्ति से मुठभेड़ हुई है जिसके व्यक्तित्व में ही इतनी चकाचौंध है कि यदि मैं अपने आप को ढीला छोड़ दूं तो वह मेरे स्वभाव, मेरी आत्मा और मेरी सत्ता को अपने में मिला लेगा । मैं अपने जीवन पर कोई बाहरी छाप नहीं पड़ने देना चाहता था । हैरी, तुम जानते ही हो कि मैं स्वभाव से ही कितने स्वतन्त्र विचारों वाला हूँ । डोरियन ग्रे से मिलने से पूर्व मैं स्वयं सदा ही अपनी इच्छा का मालिक रहा हूँ । तब······लेकिन यह सब मैं तुम्हें किस तरह समझाऊँ, मुझे ऐसा प्रतीत होता था मानो मेरे जीवन में कोई बड़ा भारी तूफान आने वाला है । मुझे ऐसा ख्याल आता था कि मेरे लिए मेरे भाग्य में बहुत-से अलौकिक सुख और नाटकीय दुःख लिखे हैं । मैं भयभीत हो गया और कमरे से बाहिर जाने के लिये तैयार हो गया । मेरी

आत्मा ने मुझे ऐसा करने के लिए विवश नहीं किया था, बल्कि वह मेरी कायरता थी । । इस प्रकार भागने का प्रयास करने में मैं अपनी तारीफ़ नहीं करता ।"

"बासिल, वास्तव में आत्मा और कायरता में कोई अन्तर नहीं । इस कम्पनी का व्यापारिक नाम आत्मा है । बस, इससे अधिक और कुछ नहीं ।"

"हैरी, मुझे विश्वास नहीं होता, और तुमको भी इसमें विश्वास नहीं है । खैर, मेरा मतलब कुछ भी था—शायद यह मेरा अभिमान ही हो, परन्तु द्वार तक जाने का मैंने प्रयास जरूर किया । तभी अचानक मेरी श्रीमती ब्रैंडन से मुठभेड़ हो गई—'हालवर्ड, तुम इतनी जल्दी जा तो नहीं रहे ?' उसने चिल्लाकर पूछा । तुम उसकी कर्कश आवाज़ तो पहचानते ही हो ।"

"हाँ, वे सौन्दर्य के अतिरिक्त अन्य सब बातों में तेज़ हैं ।" लार्ड हेनरी ने अपनी लम्बी-लम्बी उँगलियों से फूल को मसलते हुए कहा ।

"मैं इससे छुटकारा नहीं पा सका । उसने शाही लोगों, सेना में तमगे और पदकों को जीते हुए फौजी अफ़सरों और अधेड़ स्त्रियों से मेरा परिचय कराया । उसने मुझे अपना सबसे प्रिय मित्र घोषित किया । मैं इससे पहले केवल एक बार ही मिला था, परन्तु वह इसको घनिष्ठता में परिवर्तित करने का प्रयास कर रही थी । मुझे ऐसा जान पड़ता है कि शायद मेरे मित्र ने हाल ही में कोई सफलता प्राप्त की होगी, या उसकी धूम समाचार पत्रों में निकली होगी, १९वीं शताब्दी की इस अमरता के चिह्न को देखकर ही वह यह मैत्री स्थापित कर रही थी । यकायक मैंने उसी नवयुवक को अपने पास खड़े पाया जिसके व्यक्तित्व ने ऐसी अनोखी रीति से मुझे प्रभावित किया था । हम दोनों इतने समीप थे कि एक दूसरे का स्पर्श कर रहे थे । हमारे नेत्र एक बार फिर मिले । मैंने श्रीमती ब्रैंडन से अपना इस युवक से परिचय कराने के लिये कहा । परन्तु यह परिचय होना तो अनिवार्य ही था । हम बिना किसी परिचय से भी

परस्पर बातचीत करने पर विवश हो जाते; इसका मुझे दृढ़ विश्वास है। डोरियन ने भी मुझे वाद में यही बतलाया। वह भी यह मन ही मन अनुभव कर रहा था कि हम दोनों एक दूसरे को जाने बिना रह नहीं सकते थे।"

"श्रीमती ब्रैंडन ने इस अनोखे युवक का परिचय किस प्रकार दिया ?" उसके मित्र ने पूछा। "मैं जानता हूँ कि वह संक्षिप्त रूप में किस प्रकार अपने महमानों का परिचय देती है। वह अपने महमानों से उसी प्रकार का व्यवहार करती है जिस प्रकार नीलाम करने वाला अपने सामान से करता है। या तो वह अपने महमानों का बड़े विस्तार से वर्णन करने लगेगी या किसी के विषय में और सब बातें तो बतला देगी, बस केवल वही बात छिपा लेगी, जिसको जानने के लिए सब इच्छुक रहते हैं।"

"बेचारी श्रीमती ब्रैंडन ! हैरी, तुमने उसके विषय में ठीक नहीं कहा।" हालवर्ड ने कहा।

"मैं उसकी प्रशंसा कैसे कर सकता हूँ ? वह लोगों का स्वागत करने के लिए मकान तलाश करने का प्रयास कर रही थी, परन्तु बेचारी रेस्तरां खोलने में ही सफल हो सकी। हाँ, यह तो बताओ कि वह डोरियन ग्रे के विषय में क्या कहती थी ?"

"शायद इसी तरह का कुछ कहा था—'सुन्दर युवक है, इसकी माँ और मैं कभी अलग नहीं हुईं—यह तो मैं भूल ही गई कि ग्रे क्या काम करता है—शायद कुछ भी नहीं करता···हाँ···हाँ····यह प्यानो बजाता है, या शायद बायलिन का शौक है—ग्रे जरा तुम ही बतलाना···' हम सब बिना हँसे रह नहीं सके और हम दोनों तत्क्षण मैत्री के सूत्र में बँध गये।"

"मैत्री का आरम्भ हँसी से होना बुरा नहीं होता और समाप्ति के लिए भी अच्छा ही होता है।" लार्ड हैनरी ने एक और फूल तोड़ते हुए कहा। हालवर्ड ने अपना सिर हिलाया—"हैरी, तुम नहीं समझते कि

मित्रता किसे कहते हैं।" वह बोला—"तुमने कभी शत्रुता को भी नहीं समझा। तुम सब को पसन्द करते हो, या दूसरे शब्दों में यों कहना चाहिए कि तुम सबके प्रति उदासीन रहते हो।"

"तुम मेरे साथ अन्याय कर रहे हो।" लार्ड हैनरी ने चिल्लाकर कहा। उसने अपना हैट पीछे धकेल दिया और बादलों के छोटे-छोटे टुकड़ों की ओर देखने लगा, जो गर्मी के हल्के नीले रंग के आकाश में सफ़ेद रेशम के ढेरों की भाँति उड़े जा रहे थे। "हाँ, यह तुम्हारा अन्याय है। मैं लोगों में बहुत भिन्नता देखा करता हूँ। मैं अच्छी शक्ल-सूरत वालों को अपना मित्र बनाता हूँ, अच्छे चरित्रवालों से केवल मेरा परिचय ही रहता है और तीव्र बुद्धिवालों को मैं अपना शत्रु बनाता हूँ। अपने शत्रुओं को चुनने के लिए मनुष्य बहुत समय नहीं लगा सकता। मेरी जान-पहचानवालों में कोई भी ऐसा नहीं, जो मूर्ख हो। उन सब में थोड़ी-बहुत बुद्धि होती ही है और अन्त में वे सब के सब मेरी प्रशंसा ही करते हैं। क्या में बहुत अभिमान से ये सब बातें कह रहा हूँ, हाँ शायद मुझको गर्व हो गया है।"

"हाँ, मैं इसे तुम्हारा अभिमान ही समझता हूँ। तब तो मैं तुम्हारा केवल एक परिचित ही रह जाता हूँ।"

"मेरे बासिल, तुम तो मेरे लिए एक परिचित से कहीं ज्यादा हो।"

"परन्तु मित्र के दर्जे से तो बहुत नीचे हूँ, सोचता हूँ कि शायद तुम्हारे भाई की तरह हूँ।"

"ओह! तुम भाई की बात कहते हो। मैं भाइयों की तनिक भी चिन्ता नहीं करता।"

"हैरी!" हालवर्ड ने क्रोधित होकर कहा।

"प्रिय बासिल, मैं बिल्कुल भी गम्भीर नहीं हूँ। परन्तु अपने सम्बन्धियों से बिना घृणा किए हुए मैं नहीं रह सकता। शायद इसका कारण यह है कि जो दोष हम में होते हैं, वे हम दूसरों में सहन नहीं कर सकते। ब्रिटिश प्रजातन्त्रवाद धनाढ्य और ऐश्वर्यशाली लोगों की

बुराइयों के विरुद्ध जो आन्दोलन कर रहा है, मेरी उससे पूर्ण सहानुभूति हैं। आम जनता यह अनुभव करती है कि शराब का नशा, मूर्खता और अनैतिकता पर केवल उन्हीं लोगों का अधिकार होना चाहिए, यदि हम लोगों में से कोई बनने का प्रयास करे तो वे समझते हैं कि हम उनके अधिकारों को छीन रहे हैं। एक बार एक गरीब तलाक देने के लिए अदालत में आया, इस पर इन लोगों ने अपना क्रोध प्रदर्शन किया, परन्तु मेरा तो ऐसा विचार नहीं कि इन लोगों में दस प्रतिशत भी ऐसे हैं जो ईमानदारी से अपना जीवन व्यतीत करते हों।"

"जो कुछ तुमने कहा, उसके एक शब्द पर भी मुझको विश्वास नहीं। हैरी, मुझे निश्चय है कि तुम भी उस पर विश्वास नहीं करते।"

लार्ड हेनरी ने अपनी पूरी दाढ़ी को सहलाया—"बासिल, तुम कैसे अंग्रेज़ हो। तुम दूसरी बार यह सब कह रहे हो। यदि सच्चे अंग्रेज के सम्मुख कोई एक विचार रक्खे, तब वह कदापि यह नहीं सोचता कि यह विचार गलत है या सही ? वह तो केवल यही ध्यान देने योग्य समझता है कि क्या कहने वाले को स्वयं भी उस पर विश्वास है ? जितना कम मनुष्य ईमानदार होता है, उतना ही पवित्र और बौद्धिक उसका विचार होता है। क्योंकि तब उसके विचारों पर उसकी आवश्यकताओं, इच्छाओं और अन्धविश्वासों का प्रभाव नहीं पड़ता। खैर, मैं तुम से राजनीति, समाज विज्ञान या मस्तिष्क विज्ञान पर बहस नहीं करना चाहता। मैं सिद्धान्तों की अपेक्षा लोगों को अधिक पसन्द करता हूँ। परन्तु संसार में सबसे अच्छे मुझको वे लोग लगते हैं जिनके कोई सिद्धान्त नहीं होते। डोरियन ग्रे के विषय में मुझे अधिक विस्तार से बतलाओ, क्या तुम उससे रोज मिलते हो ?"

"हाँ, रोज़ ही समझो, उसको प्रतिदिन देखे बिना मुझे चैन नहीं मिलता, यह मेरे जीवन का एक आवश्यक अंग बन गया है।"

"कैसे आश्चर्य की बात है, मैं तो सोचता था कि अपनी कला के अतिरिक्त तुम और किसी स्त्री की भी चिन्ता नहीं करते।"

"अब तो वही मेरी कला बन गया है।" चित्रकार ने उदास स्वर में कहा—"हैरी, मैं कभी-कभी सोचा करता हूँ कि विश्व इतिहास में केवल दो युग ही महत्त्वपूर्ण होते हैं। पहला—कला के लिये नये ढंग का आविष्कार और दूसरा—कला के लिये नये व्यक्तित्व की आवश्यकता। मैं उसे देखकर अपने चित्र में केवल रंग ही नहीं लगाता, या उसे अपने सम्मुख बिठाकर केवल रेखायें ही नहीं खींचता, यह सब तो मैं पहले कर ही चुका हूँ। परन्तु मैं उसको 'माडल' से कहीं अधिक महत्त्व देता हूँ। मैं तुमको यह नहीं बताऊँगा कि उसका इस ढंग से जो मैंने उपयोग किया है, मैं उससे संतुष्ट नहीं हूँ, या उसका सौन्दर्य ऐसा है जो कला द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता। संसार में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है जो कला द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती। मैं यह जानता हूँ कि डोरियन ग्रे से मिलने के पश्चात् मैंने जो चित्र बनाये हैं, वे अच्छे बने हैं—शायद मेरे हाथों के सर्वोत्तम चित्र हैं। मुझे पता नहीं कि तुम मुझे समझ रहे हो या नहीं? परन्तु न जाने किस प्रकार उसके व्यक्तित्व ने मेरी कला में मुझे एक नई धारा, एक नया टेकनीक और ढंग का दिग्दर्शन कराया है। मैं साधारण चीज़ों में भी नवीनता देखता हूँ, उनके विषय में एक नये ढंग से सोचा करता हूँ। मैं अब एक नए ढंग से जीवन का संचार कर सकता हूँ जो पहले मुझसे छिपा हुआ था। इस लड़के की केवल उपस्थिति ही मेरे लिये क्या बन जाती है—वह मेरी दृष्टि में अभी तक बालक ही है, यद्यपि उसकी अवस्था २० से ऊपर ही होगी—हाँ, केवल उसकी उपस्थिति मुझ पर जादू का काम करती है। ओह! मुझे आश्चर्य है कि क्या तुम मेरे इस मतलब का अनुभव कर सकते हो। अनजाने में ही उसने मेरे सम्मुख चित्रकला की एक नई धारा की रूपरेखा रख दी है, जिसमें रोमांस भरा पड़ा है, आत्मा की पूर्णता है और शरीर और आत्मा का सामंजस्य है। हमने अपने पागलपन में इन दोनों को अलग-अलग कर दिया है और एक ऐसे यथार्थवाद का आविष्कार किया है जो अर्थहीन है, हमारा आदर्श सारहीन है। हैरी, काश

कि तुम समझ सकते कि डोरियन ग्रे मेरे लिए क्या है। तुम्हें शायद मेरा वह रेखांकित दृश्य का चित्र याद होगा जिसको खरीदने के लिए एगनू ने मुझे इतनी बड़ी रकम देने के लिए कहा था, परन्तु जिसको देने से मैंने इन्कार कर दिया था। यह मेरे सर्वोत्तम चित्रों में से एक है। क्या इसका कारण तुम जानते हो? क्यों कि इसको बनाते समय डोरियन ग्रे मेरे पास बैठा था। अचानक ही उसमें से कोई आलौकिक ज्योति मुझ में समा गई और अपने जीवन में पहली बार मैंने उस साधारण दृश्य में एक जादू-सा देखा, जिसकी खोज मैं इतने वर्षों से कर रहा था, परन्तु अब तक असफल रहा था।"

"बासिल, आज तुम कैसी अजीब-अजीब बातें कर रहे हो? अब तो मैं अवश्य ही डोरियन ग्रे को देखूंगा।"

हालवर्ड अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ और बाग में इधर से उधर घूमने लगा, कुछ समय पश्चात् वापिस आकर बोला—"हैरी, डोरियन ग्रे केवल मेरी कला का साधन मात्र है। शायद तुम उसमें कोई भी विशेषता न देख सको। मैं उसमें सब कुछ देखता हूँ। चित्र बनाते समय जितना वह मेरे मस्तिष्क में घुस जाता है, उतना स्वयं उपस्थित होते हुए भी नहीं होता। इस नई धारा में वह मेरा पथ-प्रदर्शक है। मैं अपनी कुछ रेखाओं में उसकी प्रतिछाया देखता हूँ, कुछ इने-गिने रंगों के मिश्रण में उसका आभास पाता हूँ, बस वह मेरे लिए यही है।"

"तब तुम इस चित्र का प्रदर्शन क्यों नहीं करते?" लार्ड हेनरी ने पूछा।

"क्योंकि इस चित्र में मैंने बिना किसी संकल्प के विचित्र कलापूर्ण आकर्षण और अगाध प्रेम का दिग्दर्शन कराया है, जिसके विषय में मैंने कभी डोरियन से बातचीत नहीं की। वह यह सब कुछ नहीं जानता, शायद कभी जान भी नहीं सकेगा। परन्तु संसार इस रहस्य का भास पा सकता है। मेरी आत्मा इन लोगों की वह एकाग्रदृष्टि सहन नहीं कर सकती। मैं अपने हृदय को उनके माइक्रोस्कोप के नीचे नहीं रख

सकता। हैरी, इस चित्र में मैंने अपने आपको बहुत अधिक व्यस्त किया है....बहुत ही ज्यादा।"

"कवि तो बहुत लापरवाह होते हैं, परन्तु तुम उनसे बिलकुल उलटे हो। वे जानते हैं कि अपनी कृतियों को प्रकाशित करवाने का नशा कितना लाभदायक होता है। टूटे हुए हृदयों द्वारा लिखी गई पुस्तकों के कितने ही संस्करण निकल जाते हैं।"

"मैं इसी कारण से उनसे घृणा करता हूँ।" हालवर्ड ने जोर से कहना आरम्भ किया—"कलाकार को सुन्दर चीज़ों की रचना तो करनी चाहिये, परन्तु उसमें अपने जीवन की अभिव्यक्ति करना ठीक नहीं। आज हम उस युग में रह रहे हैं जब आत्मकथा के लिये कला को साधन बनाया जाता है। हम सौन्दर्य को परखने की शक्ति खो बैठे हैं। किसी दिन मैं संसार को सौन्दर्य की वास्तविकता दिखलाऊँगा, इसी कारण से मैं संसार को अपना डोरियन ग्रे का चित्र नहीं दिखला सकता।"

"बासिल, मेरे विचार में तुम ग़लती कर रहे हो, लेकिन मैं तुम्हारे साथ बहस नहीं करूँगा। क्या डोरियन ग्रे भी तुमको बहुत चाहता है ?"

चित्रकार कुछ क्षणों तक चुपचाप खड़ा सोचता रहा। "वह मुझको पसन्द करता है।" उसने थोड़ी देर पश्चात् कहा—"मैं जानता हूँ कि वह भी मेरी ओर आकर्षित है। मैं उसकी तारीफें भी बहुत करता हूँ। मैं उससे कुछ ऐसी बातें कहता हूँ जिन्हें कहकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती है, परन्तु उनके विषय में सोचकर मुझे बाद में दुःख ही होता है। खैर, वह मुझे बहुत सुन्दर मालूम पड़ता है और हम स्टूडियों में बैठकर दुनिया भर की बातें करते हैं। परन्तु बहुत बार वह बहुत भयानक रूप से विचार हीन बन जाता है और मुझे दुख देने में उसे सचमुच ही आनन्द मिलता है। हैरी, उस समय मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि मैंने अपनी आत्मा एक ऐसे व्यक्ति को सौंप दी है जो इसे एक फूल समझता है।

"बासिल," लार्ड हेनरी ने कहा—"शायद तुम्हारे प्रति उसकी उत्सुकता सताप्त होने से पहले ही तुम न उससे ऊब जाओ। इसकी कल्पना

करना भी दुःखदायी है परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि योग्यता सौन्दर्य से अधिक देर तक जीवित रहती है। यही कारण है कि हम अपने आप को आवश्यकता से अधिक शिक्षा देने का कष्ट उठाते हैं। आज का मुख्य ध्येय तो यही है कि मनुष्य सर्वज्ञानी बने। मेरे विचार में तो तुम ही पहले डोरियन ग्रे से ऊबने लगोगे। किसी दिन अपने मित्र की ओर देखकर तुमको ऐसा मालूम होगा कि उसके शरीर की ड्राइंग ठीक से नहीं हो रही है, या रंग लगाते समय तुम्हें कोई विशेषता नहीं मालूम पड़ती, या इसी प्रकार के तुम्हें कितने ही दोष दिखाई देने लगेंगे। तुन मन ही मन उसे अपने से दूर पाओगे और गम्भीरता से सोचने लगोगे कि उसने तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव किया है। जब वह अगली बार तुम्हारे घर आयेगा, तब तुम उसका प्रेम से स्वागत नहीं करोगे और उसके प्रति उदासीन-से बन जाओगे। मुझे तुम पर दया आती है क्योंकि यह तुममें बहुत-से परिवर्तन कर देगा। तुमने मुझे जो कुछ भी बतलाया, वह एक रोमांस है, इसको कला का रोमांस ही कहना चाहिये। किसी प्रकार के रोमांस का सबसे बुरा यह परिणाम होता है कि वह मनुष्य को बिल्कुल रोमांसहीन बनाकर छोड़ देता है।"

"हैरी, इस तरह की बातें मत करो। जब तक मैं जीवित रहूँगा तब तक डोरियन ग्रे का व्यक्तित्व मुझ पर शासन करता रहेगा। जो मैं अनुभव करता हूँ, वह तुम नहीं कर सकते। तुम तो बहुत जल्दी-जल्दी अपने विचार बदलते हो।"

"ओह, बासिल! यही तो कारण है कि मैं इसका अनुभव कर सकता हूँ। जो लोग अपने प्रेम में सच्चे होते हैं, उनको प्रेम का केवल एक पहलू ही दिखाई देता है, परन्तु प्रेम के विश्वासघाती प्रेम की ट्रेजेडी को भी समझा सकते हैं।" लार्ड हेनरी ने चांदी के डिब्बे में से एक सिगरेट निकाल कर सुलगाई और इस प्रकार आत्मविश्वास और सन्तोष की साँस लेकर सिगरेट पीने लगा मानो उसने समस्त विश्व की गहराई को

एक ही मुहावरे में प्रकट कर दिया हो। हरे पेड़ की शाखाओं पर चिड़ियों के चहचहाने का स्वर हो रहा था, काले बादलों की नीली छाया मानो इन पक्षियों को अपने आवरण में ढँकने का प्रयास कर रही थी। बाग़ का वातावरण बहुत सुन्दर था। हेनरी को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि विचारों की अपेक्षा लोगों की भावनायें कितनी अधिक सुन्दर और सुखदायक होती हैं। एक ओर तो मनुष्य की अपनी आत्मा और दूसरी ओर अपने मित्रों के प्रति उसका अगाध प्रेम—जिन्दगी में इन दोनों में सामंजस्य लाना ही तो मनुष्य की योग्यता का प्रतीक है। बासिल हालवर्ड के घर इतनी देर तक ठहरकर उसने अपनी चाची के घर के नियन्त्रण से जो मुक्ति पाई थी, इससे वह मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। यदि वह अपनी चाची के घर जाता तो अवश्य ही लार्ड गुडवाडी से उसकी भेंट होती, और गरीबों का पेट भरने और आधुनिक ढंग के मकान बनाने की समस्याओं पर ही बातचीत होती। प्रत्येक श्रेणी के लोग उन्हीं गुणों का प्रचार करने का उपदेश देते, जिनको ग्रहण करने की उनको कोई आवश्यकता नहीं थी। अमीर लोग कम खर्च करने का महत्व समझाते और बिना काम-काज वाले वक्ता मजदूरों के आदर-सम्मान पर व्याख्यान देते हैं। इन सब व्यर्थ की बातों से छुटकारा पाकर उसे हार्दिक प्रसन्नता हुई। ज्योंही वह अपनी चाची के विषय में सोचने लगा तभी यकायक एक विचार उसके मन में आया। वह हालवर्ड की ओर मुड़ा और कहने लगा "बासिल, मुझे अभी-अभी एक बात याद आई है।"

"क्या ?"

"मैंने डोरियन ग्रे का नाम कहीं सुना है ?"

"कहाँ ?" हालवर्ड ने तनिक मुँह बनाकर पूछा।

"बासिल, इस प्रकार क्रोधित मत होओ। हाँ, याद आया, मैंने अपनी चाची अगाथा के घर पर ग्रे का नाम सुना है। उसने मुझसे कहा था कि उसने एक असाधारण नवयुवक को खोज निकाला है, वह उसे सहायता देगा। हाँ, उसका नाम डोरियन ग्रे बतलाया था। इतना तो

मुझे विश्वास है कि उसने ग्रे को सुन्दर नहीं कहा था। खैर, स्त्रियाँ कभी सुन्दर नख-शिख की प्रशंसा नहीं करतीं, कम से कम सुन्दर स्त्रियों की तो यही आदत है। उसने ग्रे को बहुत ईमानदार और अच्छे स्वभाव वाला बतलाया था। मैंने उस समय ग्रे की बहुत विचित्र-सी कल्पना की थी। काश, मैं जानता कि वह तुम्हारा मित्र है।"

"हेनरी, मुझे बहुत खुशी है कि तुम्हें पता नहीं चला।"

"क्यों ?"

"मैं नहीं चाहता कि तुम उससे मिलो।"

"क्या उससे मेरी मुलाकात तुम पसन्द नहीं करते ?"

"नहीं।"

"डोरियन ग्रे स्टूडियों में पहुँच गये हैं।" नौकर ने बाग में आकर सूचना दी। चित्रकार अपने नौकर की ओर मुड़ा—"मि० ग्रे से प्रतीक्षा करने के लिये कहो, मैं थोड़ी देर में आ रहा हूँ।" नौकर ने झुककर सलाम किया और वापिस मुड़ गया।

तत्पश्चात् उसने लार्ड हैनरी की ओर देखा—"डोरियन ग्रे मेरा सबसे प्रिय मित्र है।" उसने कहा—"उसका स्वभाव सादगी और सौन्दर्य से भरा पड़ा है। तुम्हारी चाची ने उसके विषय में जो कुछ भी कहा वह ठीक है। उसको बिगाड़ मत देना। उस पर अपना प्रभाव जमाने का प्रयास न करना। तुम्हारा प्रभाव उसके लिये बुरा सिद्ध होगा। यह दुनिया बड़ी लम्बी-चौड़ी है और इसमें नाना प्रकार के लोग बसते हैं। मुझ से एक ऐसे व्यक्ति को मत छीनना जो अपना सारा सौन्दर्य मेरी कला को दान में दे रहा है। मैं कलाकार के रूप में उस पर ही निर्भर हूँ। हेनरी, सुन रहे हो न ? मुझे तुम पर विश्वास है।" उसने धीमे स्वर में कहा मानो ये शब्द उसके मुख से उसकी इच्छा के विरुद्ध निकले।

"तुम क्या बेवकूफों की-सी बातें कर रहे हो ?" लार्ड हेनरी ने मुस्कराकर कहा और हालवर्ड का हाथ पकड़कर वह उसे अन्दर घसीट कर ले गयी।

२

अन्दर घुसते ही दोनों की दृष्टि डोरियन ग्रे पर पड़ी। वह द्वार की ओर पीठ किये प्यानो के पास बैठा रोमान की 'जंगल के दृश्य' नामक पुस्तक के पन्ने उलट रहा था। "बासिल, यह पुस्तक मुझे पढ़ने के लिये दे देना।" उसने कहा—"मैं इन्हें सीखना चाहता हूँ, सचमुच ही ये बहुत सुन्दर हैं।"

"डोरियन, इस पुस्तक का देना तो तुम्हारे आज के बैठने पर निर्भर है।"

"ओह, तुम्हारे चित्र के लिये, इस बैठने से तो मैं तंग आ गया हूँ। मैं अपना पूरा चित्र बनवाना नहीं चाहता।" डोरियन ने प्यानो के पास रखे हुए स्टूल पर घूमते हुए कहा। जब उसने लार्ड हेनरी को देखा तो क्षणभर के लिये उसके कपोल लज्जा से लाल हो गये। वह अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ—"बालिस, मुझे क्षमा करना, मुझे पता नहीं था कि तुम्हारे साथ कोई और सज्जन भी आये हैं।"

"डोरियन, ये मेरे आक्सफोर्ड के मित्र लार्ड हेनरी ब्रटन हैं। मैं अभी इनसे कह रहा था कि तुम कितनी शान्ति से चुपचाप बैठकर अपना चित्र बनवाते हो, परन्तु तुमने सब किये-कराये पर पानी फेर दिया।"

"मि० ग्रे, तुमसे मिलकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई।" लार्ड हेनरी ने आगे बढ़कर ग्रे से हाथ मिलाया—"मेरी चाची प्रायः तुम्हारे विषय में बातें करती रहती हैं। तुम उनके प्रिय मित्रों में से हो, परन्तु मुझे भय है कि उनके शिकारों की सूची में भी तुम्हारा नाम है।"

"आजकल तो श्रीमती अगाथा मुझ से बहुत रुष्ट हैं।" डोरियन ग्रे ने बनावटी पश्चात्ताप प्रकट करते हुए कहा—"पिछले मंगलवार को

मैंने उनके साथ क्लब जाने की प्रतिज्ञा की थी, परन्तु मैं बिल्कुल भूल गया। हम दोनों को वहाँ इकट्ठे तीन गीत मिलकर गाने थे। मुझे पता नहीं कि मुझसे मिलने पर वह मेरे साथ किस प्रकार का बर्ताव करेंगी। मुझे उनके घर जाते भी डर लगता है।"

"अपनी चाची से मैं तुम्हारी संधि करवा दूँगा। वह तुमसे बहुत स्नेह करती हैं। मेरे विचार में तो तुम्हारे न जाने से वे विशेष रुष्ट नहीं हुई होंगी। जब अगाथा प्यानो के साथ गाना गाने बैठती हैं तो उनका स्वर इतना ऊँचा हो जाता है कि लोग उसे दो गाना ही समझते हैं।"

"अपनी चाची के विषय में तुम्हारा यह आरोप उचित नहीं है और दूसरे मेरे साथ भी तुम न्याय नहीं कर रहे हो।" डोरियन ने हंसते हुए उत्तर दिया।

लार्ड हेनरी ने ग्रे की ओर देखा। वह निश्चय बहुत सुन्दर था। उसके तरबूज की भाँति कटे हुए लाल होंठ, स्पष्टता से भरी उसकी नीली आँखें और उसके घुंघराले भूरे बाल कितने सुन्दर दिखाई देते थे! उसके मुख पर कुछ ऐसे भाव झलकते थे जिनको देखकर कोई अनायास ही उन पर विश्वास कर लेता था। उसमें यौवन की स्पष्टता और पवित्रता का अनुभव किया जा सकता था। संसार के अवगुणों और पापों की उस पर कोई छाप नहीं पड़ सकी थी। इन सबको देखकर बासिल की ग्रे के प्रति अपार प्रेम और श्रद्धा से कोई भी आश्चर्यचकित नहीं होता।

"ग्रे, तुम इतने सुन्दर हो कि मनुष्य जाति की भलाई और हित की सोचने की तुमको आवश्यकता नहीं है। ओह! सचमुच ही तुम कितने सुन्दर हो।"

यह कहकर लार्ड हेनरी सोफ़े पर आराम से लेट गया और अपना सिगरेट केस निकाल लिया।

चित्रकार अपने रंगों को मिलाकर ब्रश तैयार कर रहा था। वह तनिक चिन्तित-सा दिखाई दे रहा था। लार्ड हेनरी के अन्तिम वाक्य को

सुनकर, उसने बड़े ध्यान से उसकी ओर देखा और क्षणभर की झिझक के पश्चात् कहा—"हेनरी, इस चित्र को मैं आज समाप्त कर लेना चाहता हूँ। यह अशिष्टता तो अवश्य होगी परन्तु फिर भी मैं तुमसे आज चले जाने का अनुरोध करूँगा।"

लार्ड हेनरी मुस्कराया। उसने डोरियन ग्रे की ओर देखकर कहा—"मि० ग्रे, क्या तुम्हारी भी यही सम्मति है?"

"नहीं-नहीं लार्ड हेनरी! मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि आज बासिल की मुद्रा ठीक नहीं है, और यह मेरे लिये असहनीय बन जाता है। इसके अतिरिक्त मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि मुझे मानवता के हित के विषय में क्यों नहीं सोचना चाहिये।"

"मि० ग्रे, मुझे पता नहीं कि मैं तुम्हें यह सब कुछ बतला सकूँगा या नहीं! यह एक ऐसा गहन विषय है जिस पर गम्भीरता से सोच-विचार करना आवश्यक है। परन्तु जब इस प्रश्न का उत्तर पूछने के लिये तुमने मुझे रोका है तो मैं इसका उत्तर अवश्य दूंगा। बासिल, तुम्हें कोई एतराज़ तो नहीं है? तुम मुझ से प्रायः कहा करते हो कि तुम्हारे मॉडलों के साथ बातें करने वाला कोई हो तो चित्र अच्छा बन सकता है।"

हालवर्ड ने अपने होंठ चबा लिये—"यदि डोरियन की यही इच्छा है, तो तुम अवश्य ठहरो। डोरियन के मुख से निकले वाक्य अपने आप को छोड़कर सबके लिये कानून बन जाते हैं।"

"लार्ड हेनरी ने अपना टोप और दस्ताने उठा लिये—"तुम मुझे रुकने के लिये बाध्य कर रहे हो बासिल, परन्तु मुझे जाना ही होगा। ओर्लियन्स में मुझे एक आदमी से मिलना है। अच्छा ग्रे, मैं चलता हूँ। कर्जन स्ट्रीट में मुझ से किसी दिन दोपहर में आकर मिलना। मैं प्रायः पाँच बजे घर पर ही रहता हूँ। जब तुम आओ, तब मुझे लिखकर सूचित कर देना। आज तुम से बातचीत न करने का मुझे दुःख है।"

"बासिल!" डोरियन ग्रे ने चिल्लाकर कहा—"यदि लार्ड हेनरी

अटन चले जायेंगे तो मुझको भी जाना पड़ेगा। चित्र बनाते समय तुम्हारे मुख से तो एक शब्द भी नहीं निकलता और इतनी देर तक खड़े रहकर प्रसन्न रहने का उपक्रम करते हुए मैं ऊब जाता हूँ। उनसे ठहरने के लिए कहो वासिल !"

"हेनरी, डोरियन के और मेरे कहने पर तुम ठहर ही जाओ।" हालवर्ड ने अपने चित्र की ओर बड़े ध्यान से देखते हुए कहा—"डोरियन ग्रे ने यह बात सच ही कही। चित्र बनाते समय न तो मैं किसी से बातें करता हूँ और न ही मुझे कुछ सुनाई देता है। अतः मेरे चित्र के लिए बैठने वाले बेचारे माडल अवश्य ही ऊब जाते होंगे। मैं तुमसे ठहरने का अनुरोध करता हूँ।"

"लेकिन ओर्लियन्स में जो मेरी प्रतीक्षा कर रहा है, उसका क्या होगा ?"

चित्रकार हँसने लगा—"मैं नहीं सोचता कि तुम्हें इसके लिए कोई विशेष कठिनाई उठानी पड़ेगी। अच्छा हेनरी, अब तुम बैठ जाओ। और डोरियन, तुम अपने पुराने स्थान पर जाकर खड़े हो जाओ। हाँ, अधिक हिलना-जुलना नहीं। लार्ड हेनरी की बातों पर भी अधिक ध्यान नहीं देना। मेरे अतिरिक्त और सब मित्रों पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है।"

डोरियन ग्रे अपने निर्दिष्ट स्थान पर जाकर खड़ा हो गया, मानो कोई ग्रीक युवक अपना बलिदान देने जा रहा हो। उसने लार्ड हेनरी की ओर देखकर कुछ असंतोष का उपक्रम किया, मानो इस प्रकार के बैठने से वह ऊब चुका है। उसका स्वर बहुत ही मीठा था। वह बासिल से कितना भिन्न था। कोई भी दोनों की तुलना बड़े सहज में कर सकता था। कुछ देर पश्चात् लार्ड हेनरी से उसने पूछा—"क्या सचमुच ही तुमने लोगों पर अपना बुरा प्रभाव डाला है ?"

"मि० ग्रे, अच्छा प्रभाव नाम की इस संसार में कोई चीज़ नहीं।

किसी पर कैसा भी प्रभाव डालना वैज्ञानिक रूप से अनैतिकता कहलाता है।"

"कैसे ?"

"क्योंकि किसी को प्रभावित करना मानो उसे अपनी आत्मा को देना है। प्रभावित होकर उसके अपने विचारों का विकास नहीं हो पाता। उसकी स्वाभाविक इच्छाओं और प्रेरणाओं का अपना रूप नहीं रहता। उसके गुणों में सत्य का अंश नहीं रहता। यदि पाप नाम की कोई चीज़ इस संसार में है, तो वे उसके अपने पाप न होकर दूसरों से उधार लिये हुए होते हैं। वह किसी और के संगीत की प्रतिध्वनि बन जाता है। उसको एक ऐसे अभिनेता का पार्ट खेलना पड़ता है जो उसके लिये नहीं लिखा गया था। जीवन का ध्येय आत्म-विकास और आत्म-उन्नति है। अपने स्वभाव को पूर्णरूप से प्राप्त करने के लिये ही हम इस संसार में आये हैं। आजकल लोग अपने आप से ही डरते हैं। अपने प्रति मनुष्य का जो कर्त्तव्य है, उस उच्च कर्त्तव्य को लोग भूल गये हैं। हाँ, दानी तो वे अवश्य हो गये हैं। भूखों को खाना खिलाते हैं और भिखारियों को वस्त्र देते हैं। परन्तु उनकी अपनी आत्मा भूख से तड़पती है, नंगी रहती है। हम सब लोग साहस खो बैठे हैं, शायद हम में कभी था ही नहीं। समाज का भय, जिसको हमने अपनी नैतिकता का आधार बना रखा है और परमात्मा का भय, जो हमारे धर्म का रहस्य बना हुआ है, यही दो बातें हमें हमारे जीवन को राह दिखाकर आगे आगे बढ़ाती हैं। और फिर भी......"

"डोरियन, तनिक अपना सिर दाईं ओर झुकाओ।" चित्रकार ने अपनी तन्मयता में कहा। आज जिस प्रकार के भाव उसे ग्रे के मुख पर दिखाई पड़ रहे थे, ऐसे उसने आज तक कभी नहीं देखे थे।

"परन्तु फिर भी" लार्ड हेनरी ने अपने धीमे संगीतमय स्वर में कहा—"मुझे तो ऐसा विश्वास है कि यदि किसी मनुष्य को अपने जीवन को पूर्णत्व

करना होगा, अपने विचारों को विकसित होने देना होगा और प्रत्येक स्वप्न को वास्तविकता का रूप देना होगा। ऐसी स्थिति में समस्त विश्व एक ऐसे अलौकिक आनन्द और सुख का नया रूप देखेगा कि लोग अपने पुराने दिनों को भूलकर एक अच्छे, ऊँचे और सच्चे लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे। परन्तु हम में से सबसे वीर मनुष्य भी अपने आप से डरता है। प्राचीन समय के असभ्य और जंगली लोगों की क्रूरता के चिह्न अभी तक इन लोगों में व्याप्त हैं, जिनके कारण हम अपने अपनत्व को भूलकर अपना जीवन नष्ट कर डालते हैं। जब हम अपनी इच्छाओं का दमन करने की चेष्टा करते हैं, तब वह हमारे मस्तिष्क में घूमकर वहाँ विष फैला देती हैं। शरीर एक बार पाप करता है और उसकी समाप्ति वहीं हो जाती है। क्योंकि कर्म करना एक प्रकार से अपने आप को पवित्र बनाना है। उस आनन्द की स्मृति के अतिरिक्त और कुछ भी शेष नहीं रह जाता। किसी भी लालच से छुटकारा पाने का सबसे सरल उपाय यह है कि उस मनोवृत्ति को पूरा कर लिया जाये। जिस बात का निषेध करके सामाजिक नियमों ने उसे डरावना और ग़ैरकानूनी घोषित किया है, उस इच्छा को दमन करने से आत्मा विद्रोह कर उठती है और उसको पूर्ण करने की इच्छा बड़ी तीव्रता से जाग्रत हो उठती है। उसका अनुभव करने की कल्पना बड़ी प्रबल हो उठती है। यह प्रायः कहा जाता है कि विश्व की महत्वपूर्ण घटनाओं का जन्म सबसे पहले मस्तिष्क में ही होता है, परन्तु दूसरी ओर विश्व के घोर पापों की योजना भी सर्वप्रथम मस्तिष्क में ही बनाई जाती है। तुम, मि० ग्रे, अपने गुलाब की भाँति लाल यौवन और गुलाब की भाँति श्वेत बालकपन को लिये अपनी इच्छाओं और उमंगों में भयभीत हो गये हो। तुम्हारे विचारों ने तुम को डरा दिया है। दिन और रात को जो तुम स्वप्न देखा करते हो उसकी कल्पना मात्र से ही तुम्हारे गाल लज्जा से लाल हो जाते हैं।......"

...हारी बातें

सुनकर मैं घबड़ा गया हूँ। मुझे तुम्हारी बातों का उत्तर नहीं सूझ रहा है। यद्यपि इतना निश्चय है कि इनका कोई उत्तर है अवश्य। तुम बोलो नहीं, मुझे सोचने दो या सोचने का प्रयास करने दो।"

लगभग दस मिनट तक वह उसी अवस्था में चुपचाप बिना हिले-डुले खड़ा रहा। उसके होंठ खुले हुए थे और आँखों में विचित्र-सी रोशनी चमक रही थी। उसे ऐसा आभास हो रहा था कि उसके भीतर कई नई शक्तियाँ हलचल मचा रही हैं। वासिल के मित्र ने जो कुछ शब्द कहे थे—यद्यपि वे अचानक ही कहे गये थे, परन्तु ग्रे को प्रभावित करना ही उनका मुख्य ध्येय था। उन्होंने उसके हृदय के किसी छिपे हुए तार को छू दिया था। जिससे अभी तक वह अपरिचित था, परन्तु अब उसकी प्रतिध्वनि वह स्पष्ट रूप से अनुभव कर रहा था।

संगीत इसी भाँति ग्रे को प्रभावित किया करता था और कितनी ही बार उसके मन के अन्तर्द्वन्द्वों का कारण बना था। परन्तु संगीत स्पष्ट रूप से इसका रहस्य समझाने में असमर्थ रहा था। शब्द ! केवल शब्द ! परन्तु उन्होंने कैसा तूफान उठा दिया था। कितने स्पष्ट और धुँधले, परन्तु कितने निर्दयी ! कोई भी इनसे छुटकारा नहीं पा सकता था। फिर भी इनमें कैसा जादू भरा पड़ा था। इनमें वीणा से निकलते हुए मधुर संगीत का स्वर भरा पड़ा था। केवल शब्द ! क्या इनसे अधिक वास्तविकता कहीं और हो सकती है ?

हाँ, बचपन में उसके सम्मुख बहुत-सी ऐसी चीज़ें आई थीं जिनकी वह थाह नहीं पा सका था। परन्तु अब उनको वह स्पष्ट रूप से समझ रहा था। जिन्दगी में यकायक उसे आग की लपटें निकलती दिखाई दीं। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह अभी तक आग के शोलों पर चलता आ रहा हो। परन्तु अभी तक इसका अनुभव क्यों नहीं किया था ?

मुस्कराते हुए लार्ड हेनरी बड़ी उत्सुकता से ग्रे की ओर निहार रहा था। वह इन मनोवैज्ञानिक क्षणों को पहचानते थे, जब चुपचाप रहना

उचित होता है। वह ग्रे को बड़ी उत्सुकता से देख रहा था। अपने शब्दों का ग्रे पर इतने शीघ्र ऐसा प्रभाव देखकर वह आश्चर्यचकित रह गये। उसे वह दिन याद आया जब सोलह साल की अवस्था में उसने एक पुस्तक में बहुत-सी ऐसी बातें पढ़ी थीं जिनका उसको पहले ज्ञान नहीं था। तो क्या डोरियन पर भी वही बीत रही है जो उस समय उस पर बीत रही थी। उसने अनजाने में हवा में एक तीर छोड़ा था, क्या उसने अपने लक्ष्य को बेध दिया है? ग्रे कितना आकर्षक और प्रभावशाली था!

हालवर्ड बहुत आत्म-विश्वास और चातुर्य्य से उच्चकोटि की कला की कोमलता लिये अपने चित्र पर गाढ़े रंगों के शक्तिशाली पोचे लगाने में मग्न था। ग्रे की इस चुप्पी का उसको पता नहीं चल सका।

"बासिल, मैं खड़ा-खड़ा थक गया हूँ।" अचानक ही डोरियन ग्रे ने चिल्लाकर कहा—"मैं बाहिर बाग में जाकर बैठूँगा, यहाँ हवा बन्द मालूम पड़ती है।"

"ओह प्रिय ग्रे, सचमुच ही मुझको बहुत दुःख है। चित्र बनाते समय मैं कुछ और सोच ही नहीं सकता। परन्तु आज तक तुम इससे अच्छा नहीं बैठे थे। आज तो तुम बिल्कुल चुपचाप और शान्त थे। तुम्हारे आधे खुले हुए होंठ, तुम्हारी आँखों की अजीब-सी रोशनी, तुम्हारे मुख के भाव, इन सबको आज मैंने पकड़ लिया जिनकी खोज में मैं आज तक था। मुझे पता नहीं कि हेनरी तुमसे क्या बातें कर रहा था। परन्तु तुम्हारे मुख के भाव बिल्कुल नये और विचित्र-से थे। शायद वह तुम्हारी तारीफों के पुल बाँध रहा होगा। तुम्हें उसके कहे एक शब्द पर भी विश्वास नहीं करना चाहिये।"

"नहीं, ये मेरे गुण नहीं गा रहे थे, शायद इसी कारण से जो कुछ भी उन्होंने कहा, मुझे उस पर विश्वास नहीं है।"

"तुम जानते हो कि तुम उस पर विश्वास करते हो।" लार्ड हेनरी ने अपनी मदभरी आँखों से ग्रे की ओर देखते हुए कहा—"मैं भी तुम्हारे

साथ बाहिर बाग में चलता हूँ। स्टूडियो में तो बहुत अधिक गरमी है। बासिल, हमारे लिये कोई बरफ वाला ठंडा शरबत भेज दो।"

"हाँ-हाँ हेनरी, तुम जरा यह घंटी बजा दो। नौकर के आने पर मैं उसको शरबत लाने के लिए कह दूंगा। मुझे अभी इस चित्र की पृष्ठ-भूमि पर रंग लगाना है, इसलिये मैं थोड़ी देर बाद बाहिर आऊँगा। डोरियन को अधिक समय तक बाहर मत रखना। जितना आज मैं चित्र बनाने के मूड में हूँ उतना पहले कभी नहीं था। यह शायद मेरा सर्वोत्तम चित्र होगा।"

लार्ड हेनरी बाग में चला गया जहाँ डोरियन ग्रे फूलों की झाड़ियों में अपना मुँह छिपाये उनकी सुगन्धि-सुधा का पान कर रहा था। वह ग्रे के पास आया और उसके कन्धे पर हाथ रखकर बोला—"चेतना के अतिरिक्त आत्मा का इलाज और किसी से नहीं हो सकता, जिस प्रकार चेतना का इलाज भी आत्मा से ही हो सकता है।"

डोरियन ग्रे घबराकर आश्चर्य से पीछे हट गया। उस समय उसके सिर पर टोपी नहीं थी। अतः पत्तियों ने उसके घुँघराले सुनहरे बालों को तितर-बितर कर दिया था। ग्रे की दृष्टि में भय चमक रहा था, जिस प्रकार जागने के पश्चात् मनुष्य की आँखों में दिखाई देता है। उसके नथुने फड़कने लगे। किसी अज्ञात शक्ति से उसके होठों की लालिमा विलीन हो गई और वे काँपने लगे।

"हाँ," लार्ड हेनरी का वक्तव्य जारी था—"आत्मा का इलाज चेतना से करना और चेतना का आत्मा से—यह जीवन का एक महत्वपूर्ण रहस्य है। तुम प्रकृति की एक अनुपम कृति हो। जितना तुमने अपने ज्ञान के भंडार के विषय में अन्दाज़ लगा रखा है, तुम उससे कहीं अधिक जानते हो। जिस प्रकार जितना तुम जानना चाहते हो, तुम उससे कम ही जानते हो।"

डेरियन ग्रे ने क्रोधित होकर अपना सिर फेर लिया। अपने पास खड़े हुए लम्बे प्रभावशाली युवक लार्ड हेनरी के प्रति चाहकर

भी वह उससे घृणा नहीं कर सका। उसके भूरे रंग के रोमांस भरे चेहरे और थके हुए भावों के प्रति वह विशेष रूप से आकर्षित हुआ। उसके धीमे और शान्त स्वर में न जाने कौन-सा जादू भरा पड़ा था। उसके ठंडे और श्वेत फूलों जैसे हाथ लोगों का ध्यान बरवस अपनी ओर खींच लेते थे। उसके बोलने के साथ-साथ उसके हाथ संगीत की ताल की भाँति हिलते जाते थे। मानो उनकी कोई अपनी अलग ही भाषा हो। परन्तु उसे लार्ड हेनरी से भय लग रहा था, और इसके कारण वह अपने-आप पर लज्जित था। अपने विषय में इतनी ढेर-सी अनजानी बातें एक अपरिचित और नये व्यक्ति द्वारा उसे क्यों पता लगीं ? वह बासिल हालवर्ड को महीनों से जानता है परन्तु उसकी मैत्री ने आज-तक उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया। यकायक ही इस नये व्यक्ति ने उसके जीवन में प्रवेश करके, उसे जीवन का रहस्य बतलाया है। परन्तु डरने की कौन-सी बात है ? वह अब स्कूल का छोटा-सा बच्चा तो रहा नहीं है। इस प्रकार से डरना तो अपनी मूर्खता दिखलाना है।

"चलो, कहीं छाया में चलकर बैठें।" लार्ड हेनरी ने कहा—"नौकर शर्बत के गिलास ले आया है। यदि तुम इस कड़कड़ाती धूप में खड़े रहे तो तुम्हारा चेहरा खराब हो जायेगा और बासिल कभी तुम्हारा चित्र नहीं बनायेगा। तुम्हें अपने आपको सूर्य की प्रखर किरणों में नहीं जलाना चाहिये, यह तुम्हारे लिये ठीक नहीं है।"

"इससे क्या फर्क पड़ता है।" डोरियन ग्रे ने चिल्लाकर कहा और बाग के दूसरे कोने में एक सीट पर बैठकर हँसने लगा।

"वाह, फर्क क्यों नहीं पड़ता। तुम्हारे लिये तो यह बहुत महत्व-पूर्ण है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि तुम्हारे यौवन में एक नवीनता और ताज़गी है, और यौवन ही एक ऐसी वस्तु है जिसको बनाये रखने की इच्छा होती है।"

"लार्ड हेनरी, मैं तो ऐसा अनुभव नहीं करता।"

"हाँ, तुम इस समय अनुभव नहीं कर रहे हो। किसी दिन, जब तुम बूढ़े हो जाओगे, झुर्रियों से तुम्हारी शक्ल बदसूरत हो जायगी, बहुत दिमाग़ी काम करने से तुम्हारे माथे पर रेखायें खिंच जायेंगी, वासनाओं की छिपी हुई आग तुम्हारे होंठों पर नाचेगी, तब तुम उसका अनुभव करोगे। इस समय तो जहाँ कहीं भी तुम जाते हो, वहीं सबको अपनी ओर आर्कषित कर लेते हो, क्या सदा ही ऐसा होता रहेगा ?······मि० ग्रे, तुम्हारा मुख बहुत ही सुन्दर है। अपना मुँह न बनाओ—तुम सचमुच ही सुन्दर हो। सौन्दर्य भी महानता का एक अंग है। शायद इससे भी अधिक, क्योंकि सौन्दर्य को प्रमाणित करने के लिये तर्क-वितर्क नहीं देने पड़ते। यह सूर्य के प्रकाश, बसन्त ऋतु या निर्मल चन्द्रमा की गहरे पानी में छाया की भाँति संसार के प्रत्यक्ष रूपों में से एक है। सौन्दर्य को लेकर विभिन्न मत या वाद-विवाद नहीं हो सकते। इसका अपना अस्तित्व है। तुम मुस्करा रहे हो ? परन्तु इसे खोकर तुम हँसने का साहस नहीं कर सकोगे। कभी-कभी लोग कहते हैं कि सौन्दर्य एक व्यर्थ की चीज़ है, शायद उनका कथन सत्य हो। मेरे लिये तो सौन्दर्य से बढ़कर संसार में कुछ भी नहीं है। छोटे और ओछे हृदय वाले लोग ही अन्य लोगों को उनकी शक्ल-सूरत से नहीं परखते। संसार का सबसे गूढ़ और सच्चा रहस्य प्रत्यक्ष में है कि अप्रत्यक्ष में ! हाँ हाँ, मि० ग्रे, तुम्हें रूप देते समय परमात्मा तुम पर दयालु थे, परन्तु ईश्वर जो कुछ देता है, वह जल्दी से वापिस भी ले लेता है। तुमको केवल कुछ ही वर्षों तक के लिये एक सच्चा, वास्तविक और पूर्ण जीवन व्यतीत करना है। तुम्हारे यौवन के साथ-साथ तुम्हारा सौन्दर्य भी बिलीन हो जायेगा। तब तुमको यकायक पता चलेगा कि तुम्हारे लिये अब और कुछ जीतने के लिये शेष नहीं रह गया है, या छोटे-मोटे मोर्चों को जीत कर ही अपने आपको सन्तुष्ट करना होगा। परन्तु अपनी पुरानी विजय को याद करके तुमको यह पराजय से भी बुरी मालूम पड़ेगी। प्रत्येक महीने के व्यतीत होने के साथ-साथ कोई भयानक वस्तु तुम्हारे समीप आती जा रही है। समय

को भी तुमसे ईर्ष्या हो गई है। अतः उसने तुम्हारी बेलों और गुलाब के फूलों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी है। एक दिन तुहारा मुख पीला पड़ जायेगा, तुम्हारी गालें पिचक जायेंगी और तुम्हारी आँखों का प्रकाश मन्द पड़ जायेगा। तब तुम्हें असीम वेदना और दुःख होगा। इस समय तुम्हारे पास यौवन है, इसलिये तुम अभी इसका अनुभव करो। लोगों के व्यर्थ के उपदेश सुनकर, या अपनी असफलता को सफल बनाने का विफल प्रयास करके, या अपना जीवन अनजान, साधारण और मूर्ख लोगों के बीच में बिताकर अपने सुनहरे दिनों को इस प्रकार न गँवाओ। ये हमारे युग के झूठे और अर्थहीन लक्ष्य हैं। जो सुख और आनन्द की जिंदगी तुममें बसी है, उसी में जीवित रहो। मनोरंजन के नये-नये साधनों की खोज करते रहो। किसी से भी डरो नहीं। मनोरंजन ही जीवन का सबसे मुख्य ध्येय है—यही आज के युग की आवश्यकता है। तुम इसके प्रत्यक्ष प्रतीक हो। अपनी इस शक्ल-सूरत को लिये, संसार में कोई भी ऐसा काम नहीं जो तुम नहीं कर सकते। कुछ दिनों के लिये संसार तुम्हारा गुलाम है। तुमको देखते ही मुझे ऐसा आभास हुआ कि तुम अपने सौन्दर्य से परिचित नहीं हो, और भविष्य में तुम क्या-से-क्या बन जाओगे—इसकी जानकारी भी तुम्हें नहीं है। तुममें कुछ ऐसी शक्ति थी जिसने मुझे अपनी ओर आकर्षित किया और मैंने अनुभव किया कि मुझे तुम्हारे विषय में तुम्हें कुछ बतलाना ही चाहिये। मैंने सोचा कि तुम्हारा जीवन इस प्रकार नष्ट हो जाना तुम्हारे जीवन की बड़ी भारी ट्रेजेडी होगी। क्योंकि तुम्हारा यौवन केवल कुछ ही दिनों के लिये रहेगा। मामूली जंगली फूल मुरझा जाते हैं परन्तु वे पुनः खिलते हैं। अगले जून में फिर इन फूलों पर पीला यौवन छा जायेगा। एक महीने में ही इन बेलों पर जामनी रंग के फूल निकलेंगे और प्रत्येक वर्ष हरी पत्तियों पर ये फूल खिला करेंगे। परन्तु हमारा यौवन हमें वापिस नहीं मिल सकता। बीस वर्ष की अवस्था में हम जिस उल्लास और उत्साह का अनुभव करते हैं वह धीरे-धीरे मन्द होता जाता है।

हमारी नसें कमज़ोर पड़ जाती हैं और इन्द्रियाँ काम करने से जवाब दे देती हैं। हमें अपनी उन पुरानी वासनाओं की याद आती है जिनसे हम इतना डरा करते थे। अतृप्त इच्छाएँ, लालसाएँ हमारे मस्तिष्क में रात-दिन चक्कर लगाया करती हैं। यौवन ! हाँ यौवन जैसी संसार में कोई अन्य वस्तु नहीं है।"

डोरियन ग्रे आश्चर्य में पड़ा हुआ, आँखें खोले सब कुछ सुनता रहा। फूलों का गुच्छा उसके हाथ से छूटकर नीचे घास पर गिर पड़ा। एक मक्खी क्षण भर के लिये उस गुच्छे के चारों ओर भिनभिनाने लगी, तत्पश्चात् वह छोटे-छोटे फूलों के चारों ओर चक्कर लगाने लगी। डोरियन ग्रे ने इस छोटी-सी घटना को भी बहुत महत्व दिया, क्योंकि जब हम बड़ी-बड़ी बातों से भयभीत हो जाते हैं, या किसी नई भावुकता को प्रकट करने में असमर्थ होकर हम सिहर उठते हैं, या कोई डरा देने वाला विचार यकायक हमारे मस्तिष्क को जकड़कर हमें झुक जाने के लिये बाध्य कर देता है, तब ये छोटी-छोटी घटनाएँ भी हमें अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। कुछ समय पश्चात् वह मक्खी उड़ गई और गहरे लाल रंग के एक फूल पर बैठ गई। फूल काँपने लगा और फिर धीरे-धीरे इधर-उधर झूमने लगा।

यकायक चित्रकार स्टूडियो के द्वार पर आकर खड़ा हो गया और इन दोनों को अन्दर आने का संकेत किया। वे दोनों एक दूसरे की ओर मुस्करा दिये।

"मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" उसने चिल्लाकर कहा—"जल्दी अन्दर चले आओ, प्रकाश अब बिल्कुल उपयुक्त है। तुम अपने शर्बत के गिलास भी अन्दर ला सकते हो।"

वे उठ खड़े हुए और मकान की ओर जाने वाले रास्ते पर धीरे-धीरे चलने लगे। दो हरी और श्वेत तितलियाँ उनके पास से फड़फड़ाती हुई आगे निकल गईं। बाग़ के दूर एक कोने में एक पेड़ पर चिड़िया गा उठी।

"मि० ग्रे, मुझसे मिलकर तुम्हें प्रसन्नता हुई मालूम पड़ती है।" लार्ड हेनरी ने उसकी ओर देखते हुए पूछा।

"हाँ, मैं अब खुश हूँ, मुझे आश्चर्य होता है कि क्या इसी प्रकार मैं सदा प्रसन्न रहूँगा ?"

"सदा के लिये—यह तो एक भयानक शब्द है। इसको सुनकर मैं भय से काँप उठता हूँ। स्त्रियों को इसका प्रयोग करने का बहुत शौक है। वे अपने प्रत्येक रोमांस को स्थायी बनाने की चेष्टा करते हुए नष्ट कर डालती हैं। इस शब्द का कोई मतलब नहीं निकलता।"

उनके स्टूडियों में घुसते ही डोरियन ग्रे ने लार्ड हेनरी के हाथ में हाथ डाल दिया—"हमारी मित्रता क्या केवल मेरे विचारों में परिवर्तन होने के कारण से ही हुई है ?" उसने धीमे स्वर में कहा और अपने इस साहस पर उसका मुख लज्जा से आरक्त हो गया। फिर वह अपने निर्धारित स्थान पर जाकर चित्र के लिये खड़ा हो गया।

लार्ड हेनरी एक बड़ी आराम कुर्सी पर आधा लेटकर ग्रे को देखने लगा। रंग घोलकर ब्रश से कैनवस पर लगाने का शब्द वहाँ की निस्तब्धता को भंग कर रहा था। कभी-कभी हालवर्ड अपने मित्र को देखने के लिये कुछ दूरी पर चला जाता था। खुले दरवाजे से सूर्य की तिरछी किरणों में आते सुनहरे धूल के कण नाचते से मालूम पड़ते थे। गुलाब की सुगन्धि सारे स्टूडियो में फैल गई थी।

लगभग पन्द्रह मिनट के पश्चात् हालवर्ड ने चित्र बनाना बन्द कर दिया। वह बहुत देर तक डोरियन ग्रे के मुख की ओर देखता रहा और फिर अपने चित्र की ओर बड़े ध्यान से देखा, वह बड़े-से ब्रश के सिरे को चबा रहा था। "यह लगभग समाप्त हो चुका है।" अन्त में उसने चिल्लाकर कहा और फिर झुककर चित्र की बाईं ओर उसने सिंदूरी रंग में अपना नाम बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दिया। लार्ड हेनरी अपनी जगह से उठकर आया और चित्र को बड़े ध्यान से देखने लगा। यह वास्तव में

कला की ऊंची और निराली कृति थी। ग्रे और इस चित्र में समानता भी बहुत थी।

"प्रिय बासिल, मैं तुम्हें हार्दिक रूप से बधाई देता हूँ।" उसने कहा—"आधुनिक युग का यह सर्वोत्तम चित्र है। ग्रे, यहाँ आकर तनिक अपने ऊपर एक दृष्टि तो डालो।"

डोरियन मानो किसी स्वप्न से जग पड़ा। "क्या सचमुच ही तुमने चित्र समाप्त कर लिया?" वह उस स्थान से नीचे उतरकर धीमे स्वर में बोला।

"हाँ, लगभग समाप्त ही हो चुका है।" चित्रकार ने कहा—"आज के बैठने में तो तुमने कमाल कर दिया है। इसके लिये मैं तुम्हारा अत्यन्त आभारी हूँ।"

"इसका श्रेय तो मुझको मिलना चाहिये।" लार्ड हेनरी ने कहा—"क्यों, सच है न डोरियन?"

डोरियन ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह अधीर होकर चित्र को देखने लगा। चित्र देखकर वह पीछे हट गया और क्षण भर के लिये उसके गाल प्रसन्नता से लाल हो उठे। उसके नेत्रों में आनन्द की एक लहर दौड़ गई, मानो आज पहली बार उसने अपने आपको पहचाना हो। वह बिना हिले-डुले आश्चर्य में वहाँ खड़ा रहा। उसे मालूम था कि हालवर्ड उससे बातें कर रहा है, परन्तु वह उसका एक शब्द भी समझ नहीं पा रहा था। अपने सौन्दर्य का महत्व मानो आज ही उसको बतलाया गया हो। उसने आज से पहले इसका अनुभव कभी नहीं किया था। बासिल द्वारा की हुई अपनी तारीफों को वह मैत्री की अतिशयोक्ति समझता था। वह इनको सुनकर केवल हँस देता था और भूल जाता था। परन्तु इनका उसके स्वभाव पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सका। आज लार्ड हेनरी ने यौवन के विषय में इतनी अजीब-सी बातें कही थीं। उसके महत्व और शक्ति से उसका परिचय कराया था। यह सब सुनकर वह क्षण भर के लिये काँप उठा था। परन्तु अब जब वह खड़ा हुआ अपने

सौन्दर्य की छाया को देख रहा था, उसे वास्तविकता का पता चला। हाँ, एक दिन अवश्य आयेगा जब उसके मुख पर बुढ़ापे की झुर्रियाँ अपना आधिपत्य जमा लेंगी और वह मुर्झा जायेगा, उसके नेत्रों की ज्योति और चमक समाप्त हो जायेगी, उसके होठों की लाली और उसके बालों का सुनहरापन सब कुछ नष्ट हो जायेगा। जिंदगी उसके शरीर को अन्त में कुरूप बनाकर ही छोड़ेगी। वह बदसूरत और भयानक बन जायेगा।

इस प्रकार सोचने से एक भयानक पीड़ा उसके शरीर को तलवार की भाँति चीरती हुई चली गई और उसके हृदय के तार भय से काँप उठे। उसकी आँखों पर से मानो कोई परदा उठ गया और आँसुओं की चादर उन पर फैल गई। उसको ऐसा अनुभव हुआ मानो किसी ने अपना बर्फीला हाथ उसके हृदय पर रख दिया हो।

"क्या यह चित्र तुमको पसन्द नहीं है ?" अन्त में हालवर्ड ने चिल्लाकर पूछा। डोरियन की चुप्पी ने उस पर आघात किया था, परन्तु वह इसका कारण जानने में असमर्थ था।

"हाँ हाँ, पसन्द क्यों नहीं है।" लार्ड हेनरी ने कहा—"इस चित्र की प्रशंसा कौन नहीं करेगा ? आधुनिक कला की यह एक उत्तम कृति है। इसके बदले में जो कुछ तुम माँगो, मैं दे सकता हूँ। मैं इसको अपने पास रखना चाहता हूँ।"

"हेनरी, मैं इसका मालिक नहीं हूँ।"

"तब कौन है ?"

"डोरियन के अतिरिक्त और कौन हो सकता है ?"

"वह बहुत भाग्यशाली है।"

"कितने दुःख की बात है।" डोरियन ग्रे ने धीमे स्वर में कहा। उसके नेत्र अभी तक अपने चित्र पर लगे हुए थे—"इसकी कल्पना ही कितनी दुःखदायी है कि एक दिन मैं बूढ़ा होकर भयानक और डरावना बन जाऊँगा, परन्तु इस चित्र का डोरियन सदा युवक ही रहेगा। उसकी आज की तिथि के पश्चात् एक दिन भी नहीं बढ़ेगा। काश कि ठीक

इसका उल्टा हो सकता। मेरा यौवन स्थायी बना रहता और समय के साथ-साथ यह चित्र बड़ा होता जाता। इसके लिये, हाँ हाँ, इसके लिये मैं अपना सब कुछ दे सकता हूँ। संसार की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो इसके बदले में मैं न दे सकूं। मैं अपनी आत्मा तक देने को तैयार हूँ।"

"बासिल, शायद तुम तो इस शर्त को कभी स्वीकार न करो।" लार्ड हेनरी ने हँसते हुए कहा—"इससे तो तुम्हारा चित्र सदा के लिए समाप्त हो जायेगा।"

"हाँ हेनरी, मुझे तो बड़े जोर से इसका विरोध करना पड़ेगा।" हालवर्ड ने कहा।

डोरियन ग्रे ने मुड़कर चित्रकार की ओर देखा—"बासिल, मुझे विश्वास था कि तुम इसका विरोध करोगे। अपने मित्रों से अधिक तुम अपनी कला से प्रेम करते हो। तुम्हारे लिए तो मेरा निर्जीव मूर्ति से अधिक महत्त्व नहीं है।"

चित्रकार ने आश्चर्य से ग्रे की ओर देखा। डोरियन ने आज पहली बार ऐसी बातें की थीं। आखिर क्या बात हुई है? उसे क्यों क्रोध आ रहा था। उसका चेहरा लाल हो गया था और उसके गाल आग के अंगारों की भाँति जल रहे थे।

"हाँ!" उसने कहा—"तुम्हारे लिए तो मैं हाथी दाँत के बुत से अधिक नहीं हूँ। ये चीजें तुम्हें सदा प्रिय लगती रहेंगी, परन्तु मेरे साथ कहाँ तक तुम्हारी मित्रता बनी रहेगी। जब मेरे मुख पर बुढ़ापे की प्रथम रेखा अंकित होगी, तब तुम मुझसे सारे सम्बन्ध तोड़ दोगे। मैं अब जानता हूँ कि अपना सौन्दर्य खोकर, और सब कुछ होते हुए भी मनुष्य अपना सब कुछ खो बैठता है। यह सब शिक्षा मुझे तुम्हारे चित्र ने ही दी है। लार्ड हेनरी ब्रटन का कथन ठीक ही है कि यौवन ही एक ऐसी वस्तु है जिसको अपने पास रखना चाहिए। जब मुझे पता चलेगा कि बूढ़ा हो रहा हूँ, मैं अपनी हत्या कर लूँगा।"

हालवर्ड का मुख पीला पड़ गया। उसने ग्रे का हाथ पकड़ लिया—

"डोरियन, डोरियन।" उसने चिल्लाकर कहा—"इस तरह से बातें मत करो। मेरा आज तक तुम्हारे जैसा मित्र न तो कोई था और न होगा। क्या तुमको इन निर्जीव वस्तुओं से ईर्ष्या हो रही है? परन्तु तुम तो इन से कहीं बढ़-चढ़ कर हो।"

"मुझे उन सबसे ईर्ष्या हो रही है जिनका सौन्दर्य कभी नष्ट नहीं होता। तुमने जो मेरा यह चित्र बनाया है, मुझे इससे भी ईर्ष्या हो रही है। जिस सौन्दर्य को मैं सदा के लिये नहीं रख सकता, उसे इस चित्र को रखने का क्या अधिकार है? बीतता हुआ प्रत्येक क्षण मुझसे कुछ ले जाता है और इस चित्र को दे देता है। ओह! काश कि ठीक इसका उलटा हो सकता। समय के साथ-साथ यह चित्र बदलता जाता, परन्तु मैं जैसा अब हूँ, वैसा ही रहता। तुमने यह चित्र बनाया ही क्यों? यह मुझे देखकर किसी दिन हँसेगा—हाँ हाँ, बड़ी क्रूर हँसी हँसेगा।" उसकी आँखों में गरम-गरम आँसू भर आये। उसने झटका देकर अपना हाथ छुड़ा लिया और सोफे पर लेट कर अपना मुँहतकिये से छिपा लिया मानो प्रार्थना कर रहा हो।

"हैनरी, यह सब तुम्हारी ही करतूत है।" चित्रकार ने रुँधे स्वर में कहा। लार्ड हैनरी ने अपने कंधे झकझोरे—"जिस दशा में अब इसे तुम देख रहे हो, यही सच्चा डोरियन ग्रे है।"

"नहीं, यह असली डोरियन नहीं है।"

"तो न सही, मेरा इससे क्या बनता-बिगड़ता है।"

"जब मैंने तुम से जाने के लिए कहा था, तब तुम्हें चला जाना चाहिए था।" उसने कहा।

"मैं तो तुम्हारे कहने पर ही रुका था।" लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया।

"हेनरी, मैं एक साथ ही अपने दो अभिन्न मित्रों से नहीं झगड़ सकता। परन्तु तुम दोनों के बीच में पड़कर मैं अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति से घृणा करने के लिए बाध्य हो गया हूँ। मैं इसको नष्ट कर डालूंगा। इसमें

कैनवस और रंगों के अतिरिक्त और रखा ही क्या है। मैं इसको अपने तीनों के बीच में लाकर अपनी मित्रता पर आँच नहीं आने दूँगा।"

डोरियन ग्रे ने अपना सुनहरे बालों वाला सिर तकिये में से उठाया और आँसुओं से भरी आँखें और पीला मुख लिए बासिल की ओर देखा। चित्रकार अपने रंगों वाली मेज की ओर अग्रसर हो रहा था जो मोटे परदे से ढकी खिड़की के नीचे पड़ी थी। वह वहाँ क्या कर रहा था? वह रंगों और सूखे ब्रशों के डिब्बे में किसी चीज की तलाश कर रहा था। वह लोहे के तेज धार वाले चाकू की खोज कर रहा था। अन्त में एक ठंडी साँस लेकर ग्रे सोफे पर से उछल पड़ा और तेजी से हालवर्ड के पास जाकर उसने चाकू छीन लिया और स्टूडियो के दूसरे कोने की ओर उछाल दिया। "बासिल, तुम क्या कर रहे हो।" वह चिल्लाया— "यह तो तुम हत्या कर रहे हो।"

"अन्त में तुम्हें इस चित्र की प्रशंसा करते देख मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई।" आश्चर्य भरी मुद्रा से जगकर बासिल ने उदासीन स्वर में कहा— "मैंने तो कभी नहीं सोचा था कि तुम इसकी तारीफ करोगे।"

"प्रशंसा करना तो एक ओर रहा बासिल, मुझे तो इससे प्रेम हो गया है। मुझे तो यह अपना ही एक अंग प्रतीत होता है।"

"अच्छा, तुम्हारे सूख जाने के पश्चात् तुम पर वार्निश कर दी जायेगी। फिर फ्रेम में मंढ़वाकर तुम्हें घर भेज दिया जायेगा। तब जो कुछ भी करना चाहो, वह करना।" कमरे के दूसरे कोने पर जा कर उसने चाय के लिए घंटी बजाई। "डोरियन, तुम चाय तो पियोगे न? और तुम भी हैनरी, या तुम इन साधारण मनोरंजनों का भी विरोध करते हो?"

"इस प्रकार के मनोरंजनों से तो बहुत प्रेम है।" लार्ड हेनरी ने कहा, "समस्याओं में उलझा हुआ मनुष्य इसे अपने मन बहलाव का अंतिम साधन समझता है। परन्तु मुझे इस प्रकार के अभिनय और दृश्य रंगमंच के अतिरिक्त और कहीं अच्छे नहीं लगते। तुम दोनों ही बिल्कुल मूर्ख

हो । मुझे तो आश्चर्य होता है कि मनुष्य की परिभाषा देते समय किसने किसको युक्तिसंगत पशु कहा है । मनुष्य में और बहुत-सी बातें होती हैं परन्तु वह युक्तिसंगत नहीं हो सकता, यह सोचकर मुझे प्रसन्नता होती है । मैं नहीं चाहता कि इस चित्र को लेकर तुम दोनों परस्पर झगड़ने लगो । वासिल, सबसे अच्छा तो यह होगा कि तुम यह चित्र मुझे दे दो । डोरियन को तो इसकी आवश्यकता नहीं और मैं वास्तव में इसे अपने पास रखना चाहता हूँ ।"

"वासिल, यदि यह चित्र तुमने किसी और को दिया तो मैं तुम्हें कभी क्षमा नहीं करूँगा ।" डोरियन ने चिल्लाकर कहा ।

"डोरियन, तुम यह जानते ही हो कि यह चित्र तुम्हारा हो चुका है । इसके बनाने से पहले ही मैं तुम्हें दे चुका हूँ ।"

"और डोरियन, तुम यह जानते हो कि अब तक तुम थोड़े मूर्ख भी थे । तुम्हारे यौवन और सौन्दर्य का आभास कराने का तुमने कभी विरोध नहीं किया ।"

"लार्ड हेनरी, यदि आज प्रातःकाल तुम ऐसी बातें कहते तो मैं अवश्य ही उनका विरोध करता ।"

"ओह ! तुम आज के सुबह की बात कहते हो ! उस समय से ही तुम वास्तव में जीवित हो ।"

किसी ने दरवाजा खटखटाया और बासिल के नौकर ने चाय की ट्रे एक छोटी-सी जापानी मेज पर रख दी । प्लेटों और प्यालियों की खड़-खड़ाहट से कमरा गूँज उठा । एक दूसरा नौकर चीनी की गोल प्लेटों में खाने के लिए कुछ लाया । डोरियन मेज के पास गया और चाय बनाने लगा । शेष दोनों आदमी धीरे-धीरे मेज की ओर अग्रसर हुए और खाने-पीने के सामान को देखने लगे ।

"आज थियेटर का प्रोग्राम कैसा रहेगा ?" लार्ड हेनरी ने कहा—"कहीं-न-कहीं कोई अच्छा-सा नाटक अवश्य ही हो रहा होगा । आज व्हाइट के साथ भोजन करने का भी मैंने वचन दिया हुआ है, परन्तु वह

मेरा बहुत पुराना मित्र है। अतः मैं उसे अपने बीमार हो जाने की तार डाल दूँगा या किसी और आवश्यक काम हो जाने का बहाना कर दूँगा। हाँ, यही ठीक रहेगा, क्योंकि इसमें मेरी ईमानदारी भी बनी रहेगी।"

"ऐसे स्थानों पर जाने के लिए कपड़े पहनने से तो मुझ को सख्त घृणा है।" हालवर्ड ने कहा।

"हाँ, यह तो ठीक है।" लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया—"उन्नीसवीं शताब्दी की पोशाकों से तो मुझे भी घृणा है। इनको पहनकर मनुष्य निराशावादी बन जाता है।"

"हेनरी, तुमको डोरियन के सामने ऐसी बातें नहीं करनी चाहिएँ।"

"तुम्हारा मतलब कौन-से डोरियन से है? जो चाय बना रहा है उससे या जो चित्र में बैठा हुआ है।"

"दोनों से।"

"लार्ड हैनरी, मैं तुम्हारे साथ थियेटर चलूंगा।" डोरियन ने कहा।

"अच्छा, तो तुम थियेटर चल रहे हो और बासिल, तुम भी चलोगे न?"

"सचमुच मैं नहीं जा सकूंगा। मुझे अभी बहुत-सा काम करना है।"

"अच्छा ग्रे, तब हम और तुम ही चलेंगे।"

"हाँ, मुझे थियेटर जाने में बहुत प्रसन्नता होगी।"

चित्रकार ने असीम वेदना से अपने होंठ चबा लिये और प्याले को हाथ में लिये चित्र के पास गया—"मैं तो वास्तविक डोरियन के साथ ही ठहरूँगा।" उसने उदास स्वर में कहा।

"क्या वह वास्तविक डोरियन है?" डोरियन ग्रे ने चिल्लाकर पूछा—"वह चित्रकार के पास आकर खड़ा हो गया। क्या मैं सचमुच ही इस चित्र जैसा हूँ?"

"हाँ, तुम ठीक इस चित्र जैसे ही हो।"

"ओह बासिल, कितनी खुशी की बात है।"

"कम-से-कम शक्ल-सूरत में तो तुम इसी जैसे हो, परन्तु चित्र सदा

ऐसा ही रहेगा, इसमें कोई परिवर्तन नहीं होंगे।" हालवर्ड ने ठंडी साँस लेकर कहा।

"अच्छे चाल-चलन के विषय में लोग व्यर्थ में ही इतनी बड़ी-बड़ी बातें बनाया करते हैं।" लार्ड हेनरी ने साँस भरकर कहा—"प्रेम करते समय अपनी वासनाओं की पूर्ति ही मनुष्य का मुख्य ध्येय होता है। इसका आत्मा से कोई सम्बन्ध नहीं। युवक अपने प्रेम के प्रति ईमानदार रहना चाहते हैं, परन्तु वे रहते नहीं। बूढ़े लोग विश्वासघात करना चाहते हैं, परन्तु वे ऐसा नहीं कर सकते। इससे अधिक मैं कुछ नहीं कह सकता।"

"डोरियन, आज रात को तुम थियेटर मत जाना।" हालवर्ड ने कहा—"आज मेरे साथ ही भोजन करना।"

"वासिल, मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

"क्यों ?"

'क्योंकि मैंने लार्ड हेनरी को उनके साथ जाने का वचन दिया है।"

"परन्तु लार्ड हेनरी तो कभी यह पसन्द नहीं करेगा कि तुम अपने वचनों पर इतने दृढ़ रहो। वह स्वयं अपने वायदे पूरे नहीं करता। मैं तुमसे यहीं ठहरने का अनुरोध करता हूँ।"

डोरियन ग्रे ने हँसकर अपना सिर हिला दिया।

"मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ।"

डोरियन क्षण भर के लिये झिझका और लार्ड हेनरी की ओर देखने लगा जो चाय वाली मेज़ पर बैठा मुस्कराता हुआ इन दोनों को देख रहा था।

"वासिल, मुझे जाना ही पड़ेगा।" उसने उत्तर दिया।

"अच्छी बात है।" यह कहकर हालवर्ड ने अपना खाली प्याला ट्रे पर रख दिया—"काफी देर हो गई है। तुम लोगों को कपड़े वगैरह पहन कर तैयार होना है। अतः अब तुम्हें अपना समय नष्ट नहीं करना चाहिये। अच्छा हेनरी और डोरियन, नमस्कार। मुझसे जल्दी ही मिलना। कल

ही क्यों नहीं यहाँ आते ?"

"जरूर।"

"भूलोगे तो नहीं ?"

"नहीं, कभी नहीं।" डोरियन ने कहा।

"और······तुम हेनरी।"

"मैं भी आऊँगा वासिल !"

"आज प्रातःकाल बाग़ में जो बातें मैंने तुमसे कही थीं वे सब याद रखना।"

"मुझे तो कुछ भी याद नहीं।"

"मुझे तुम पर विश्वास है।"

"काश कि मुझे अपने पर विश्वास होता।" हेनरी ने हँसते हुए कहा—"चलो ग्रे, बाहर मेरी गाड़ी तैयार खड़ी है। मैं तुम्हें तुम्हारे घर पर छोड़ दूंगा। अच्छा वासिल, नमस्कार। आज की दोपहरी बहुत मनोरंजक रही।"

उनके चले जाने के पश्चात् चित्रकार सोफे पर औंधे मुँह लेट गया और उसके मुख पर वेदना के चिह्न प्रकट हो रहे थे।

३

अगले दिन साढ़े बारह बजे के लगभग लार्ड हेनरी ब्रटन अपने चाचा लार्ड फरमर को देखने के लिये कर्जन स्ट्रीट से अलवानी तक घूमता-घूमता चला आया। लार्ड फरमन एक खुशमिजाज़ बूढ़ा, अविवाहित व्यक्ति था। बाहर वाले लोग उसे स्वार्थी कहा करते थे क्योंकि उन्हें कोई

विशेष लाभ नहीं पहुँचता था। परन्तु समाज उसे सहृदय समझता था क्योंकि अपना मनोरंजन करने वाले लोगों को वह प्रायः खिलाता-पिलाता रहता था। इसके पिता एक समय मेडरिड में अंग्रेजी राजदूत थे, परन्तु पेरिस में राजदूत का स्थान न पाने से उन्होंने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया था। ऊँचे परिवार में उत्पन्न होने के कारण आलस्य वाली आदत और सरकारी पत्र-व्यवहार करने में शुद्ध अंग्रेजी का व्यवहार करने के कारण वे इस पद के लिये अपने आपको सर्वथा योग्य समझते थे। इनका पुत्र ही सेक्रेटरी बनकर अपने पिता का हाथ बँटाया करता था। परन्तु अपने पिता के साथ उसने भी त्यागपत्र दे दिया था और कुछ महीनों पश्चात् वह बहुत गम्भीरता से बेकारी का व्यवसाय अध्ययन करने में मग्न हो गया। शहर में उसके दो बड़े-बड़े मकान थे परन्तु वह वहाँ नहीं रहता था और प्रायः अपना भोजन क्लब में ही खा लिया करता था। दूर देशों में अपनी कोयले की खानों के संगठन में वह वहीं बैठा-बैठा थोड़ा-बहुत हाथ बँटाता रहता था और अपने मित्रों को इस काम करने का कारण बतलाया करता था कि कोयले की खान का यह लाभ है कि मनुष्य चूल्हे में सदा कोयले जला सकता है। राजनैतिक क्षेत्रों में वह अपने आपको टोरी कहा कहता था, परन्तु जब शासन की बागडोर टोरियों के हाथ में होती थी, तब वह उन्हें रेडिकल कहकर उनकी कड़ी आलोचना किया करता था। वह सदा यही कहा करता था कि इंगलैंड पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। उसके सिद्धान्त आज के युग को देखते हुए बहुत पुराने हो गये थे और उसकी मिथ्या धारणायें लोगों के लिये एक कहानी बन गई थीं।

जब लार्ड हेनरी अन्दर आया तो उसके चाचा शिकारी कोट पहने हुए, चुरट मुँह में लगाये 'टाइम्स' समाचार-पत्र पढ़ रहे थे। "कौन हेनरी," उसके चाचा ने कहा—"आज इतनी जल्दी कैसे आ गये ? मैं तो सोचता था कि तुम लोग दो बजे से पहले कभी सोकर उठते नहीं और पाँच बजे से पहले कभी घर से बाहर नहीं निकलते।"

"विश्वास रखिये, केवल परिवार का प्रेम ही मुझे यहाँ घसीट लाया है। मैं आपसे कुछ आवश्यक समाचार लेने आया हूँ।"

"शायद तुम्हें कुछ रुपये की आवश्यकता पड़ गई है।" लार्ड फरमर ने अपना मुँह बनाते हुए कहा—"खैर यहाँ बैठ जाओ और मुझे विस्तार से सारा हाल बताओ। आज के नवयुवक समझते हैं कि उनके जीवन में रुपया ही सब कुछ है।"

"हाँ," लार्ड हेनरी ने अपने कोट के बटन बन्द करते हुए कहा—"और बड़े होकर उन्हें इस बात का सबूत मिल जाता है। परन्तु इस समय मुझे रुपये की आवश्यकता नहीं है। जिनको अपने बिल चुकाने पड़ते हैं, उन्हें ही इसकी जरूरत पड़ती है। मैंने तो कभी आज तक अपने बिल के दाम दिये नहीं। उधार ही परिवार के छोटे पुत्र की पूँजी होती है और इसी के सहारे वह अपने दिन निकालता जाता है। इसके अतिरिक्त मैं तो सदा उन व्यापारियों से सामान खरीदता हूँ जो मुझे बिलों के लिये कभी परेशान नहीं करते। परन्तु आज तो मैं आपसे कुछ सूचना लेने आया हूँ, शायद आपको यह व्यर्थ की ही लगे।"

"यद्यपि आजकल बहुत-सी बे सिर पैर की बातें 'ब्लू बुक' में लिखी जाती हैं। परन्तु जो कुछ भी उसमें लिखा है, मैं वह सब तुम्हें बतला सकता हूँ। जब मैं राजदूत था तब समय दूसरा था, परन्तु अब तो मैंने सुना है कि नवयुवकों को भर्ती करने से पूर्व उनकी परीक्षा ली जाती है। इनसे क्या आशा की जा सकती है? परीक्षायें तो आरम्भ से लेकर अन्त तक एक प्रकार का धोखा हैं। कोई भी भला आदमी इन बातों को जानता है। और यदि वह भला नहीं तो जो कुछ भी वह जानता है, वह उसके लिये बुरा है।"

"परन्तु डोरियन ग्रे का पता 'ब्लू बुक' से नहीं लग सकता।" लार्ड हेनरी ने तनिक सुस्ताते हुए कहा।

"डोरियन ग्रे! वह कौन है?" लार्ड फरमर ने अपनी श्वेत भौहों पर हाथ फेरते हुए कहा।

"यही पूछने तो मैं यहाँ आया हूँ। उसके विषय में थोड़ा-बहुत तो मैं पहले से ही जानता हूँ। वह लार्ड कैल्सो का पोता है। उसकी माँ का नाम लेडी मारगरेट था। मैं उसकी माँ के विषय में कुछ विस्तार से जानना चाहता हूँ। वह देखने-भालने में कैसी लगती थी ? उसका विवाह किससे हुआ था ? अपने समय में आप सब लोगों को जानते थे। शायद उससे भी आपका परिचय था। आजकल मैं डोरियन ग्रे के विषय में बहुत उत्सुक हूँ। अभी हाल ही में मेरा उससे परिचय हुआ है।"

"कैल्सो का पोता।" बूढ़े ने लार्ड हेनरी के शब्दों को दोहराया। "कैल्सो का पोता ! हाँ हाँ—मैं उसकी माँ को अच्छी तरह से जानता था। मारगरेट एक असाधारण सुन्दर बालिका थी। एक निर्धन युवक के साथ भागकर उसने सब लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। वह युवक एक साधारण सिपाही था। मुझे प्रतीत होता है मानो वे कल ही की घटनायें हों। परन्तु विवाह के कुछ महीनों पश्चात् ही वह बेचारा किसी झगड़े में मारा गया। इस विषय में भी लोगों ने तरह-तरह की बातें उड़ाईं। कहते हैं कि कैल्सो ने एक आदमी को रुपया देकर अपने दामाद को मरवा डाला। उसके पश्चात् वह अपनी लड़की को अपने साथ ले आया। जहाँ तक मुझे मालूम है वह उस दिन के बाद अपने पिता से फिर कभी नहीं बोली। एक साल के भीतर-भीतर वह बेचारी भी चल बसी। मैं यह तो भूल ही गया कि उसका एक लड़का भी है, वह देखने-भालने में कैसा लगता है ! यदि अपनी माँ जैसा हुआ तब तो वह बहुत सुन्दर होगा।"

"हाँ, वह सचमुच ही बहुत सुन्दर है।" हेनरी ने अपनी स्वीकृति दी।

"मेरे विचार में उसकी देख-रेख योग्य हाथों में हो रही होगी।" बूढ़ा कह रहा था—"यदि कैल्सो ने अपनी सम्पत्ति किसी और को नहीं दी होगी तो उसका उत्तराधिकारी डोरियन ही होगा। उसकी माँ के पास भी काफी रुपया था, क्योंकि अपने दादा की सारी जायदाद की

मालिक वही थी। उसका दादा कैल्सो से घृणा करता था। एक बार कैल्सो के मैडरिड आने के पश्चात् मुझे उसके कारण कितनी बार लज्जित होना पड़ा। वह गाड़ी वालों से किराये के विषय में सदा झक-झक किया करता था। मुझे आशा है कि उसने अपने पोते के साथ अच्छा व्यवहार किया होगा।"

"मुझे ये सब बातें पता नहीं।" लार्ड हैनरी ने उत्तर दिया—"मेरे विचार में डोरियन भविष्य में बहुत धनी व्यक्ति बनेगा, वह अभी तक बालिग नहीं हुआ है। उसकी माँ की सारी जायदाद उसी को मिली है। क्या उसकी माँ बहुत सुन्दर थी?"

"हेनरी, मारगरेट जैसी सुन्दर युवती मैंने अपने जीवन में आज तक नहीं देखी। इस रहस्य का मुझे आज तक पता नहीं लग सका कि उस निर्धन व्यक्ति के साथ भागने में उसने क्या स्वार्थ देखा। वह किसी से विवाह कर सकती थी। कार्लिङ्गटन उसके पीछे पागल बनकर घूमा करता था। हाँ, उसमें रोमांस भी काफी भरा पड़ा था। इस परिवार के पुरुष तो बहुत सीधे-सादे थे। परन्तु स्त्रियाँ बिल्कुल असाधारण थीं। कार्लिङ्गटन ने गिड़गिड़ा कर उससे प्रेम की भीख माँगी थी, परन्तु वह उसे देखकर केवल हँस पड़ी थी। हेनरी, जानते हो, उस समय लन्दन में कोई भी ऐसी युवती नहीं थी जो कार्लिङ्गटन की दीवानी नहीं थी। अरे, मुझे एक बात याद आई। तुम्हारे पिता से पता चला था कि डार्टमुर एक अमरीकन युवती से विवाह करने वाला है। क्या उसकी दृष्टि में कोई भी अंग्रेज युवती सुन्दर नहीं रही?"

"आजकल अमरीकन युवतियों से विवाह करना एक फैशन हो गया है।"

"मैं तो सारे संसार के विरुद्ध हो जाने पर भी अंग्रेज युवतियों का साथ दूँगा।" उसने ज़ोर से मेज़ पर हाथ पटकते हुए कहा।

"एक पुरुष के साथ बहुत दिनों तक रहने से अमरीकन युवतियाँ उनसे ऊब जाती हैं। बस, घुड़दौड़ जैसे स्थानों में अपने साथ एक अम-

रीकन युवती होने से वह आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। मुझे तो आशा नहीं कि डार्टमूर को अपने प्रयास में सफलता मिलेगी।"

"क्या वह युवती सुन्दर है ?"

"अपने व्यवहार और बातचीत से तो वह यही प्रदर्शन करती है कि वह सुन्दर है। लगभग सब अमरीकन स्त्रियाँ ऐसा ही करती हैं। यही तो उनके आकर्षण और सौन्दर्य का रहस्य है।"

"ये स्त्रियाँ अपने ही देश में क्यों नहीं रह सकतीं ? वे सदा यही कहा करती हैं कि उनका देश स्त्रियों के लिये स्वर्ग के बराबर है।"

"बिल्कुल यही बात है। इसी कारण से तो वे अपने देश से बाहर निकलने की इतनी इच्छुक रहती हैं।" लार्ड हेनरी ने कहा—"अच्छा, अब मैं चलता हूँ। यदि मैं अधिक देर तक ठहरा तो मुझे खाने के लिये देर हो जायेगी। जो सूचना डोरियन के विषय में आपने मुझे दी, उसके लिये आभारी हूँ। मैं अपने नये मित्रों के विषय में विस्तार से सब कुछ जानना चाहता हूँ, परन्तु पुराने मित्रों से सम्बन्धित समाचारों में मुझे उत्सुकता नहीं रहती।"

"हेनरी, तुम भोजन कहाँ कर रहे हो ?"

"अपनी चाची अगाथा के साथ। मैंने डोरियन को भी निमंत्रित किया है। आजकल उनकी ग्रे पर विशेष रूप से कृपा रहती है।"

"हेनरी, अपनी चाची से कहना कि अपने चन्दों के लिए वे मुझे अब अधिक तंग न किया करें। शायद वे सोचती हैं कि उनके चन्दों के लिये चेक काटने के अतिरिक्त मेरे पास और कोई काम नहीं है।"

"मैं उनसे कह दूंगा, परन्तु मेरे विचार में इसका उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। दूसरों का हित सोचने वाले लोग मानवता के सिद्धान्तों को भूल जाते हैं, यही तो उनका विशेष गुण है।"

बूढ़े ने सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति दे दी और नौकर को बुलाने के लिये घंटी बजाई। लार्ड हेनरी बार्लिङ्गटन स्ट्रीट पार करके बर्कले स्क्वायर की ओर मुड़ गया।

यही डोरियन ग्रे के माता-पिता का इतिहास था। यद्यपि यह कहानी उसको ठीक ढंग से नहीं बताई गई थी, परन्तु इस नये आधुनिक रोमांस को सुनकर वह सिहर उठा। एक सुन्दर युवती ने अपने पागल प्रेम के लिये अपना सब कुछ त्याग दिया, परन्तु एक भयानक घटना ने उन दोनों के जीवन को कितना छोटा बना दिया। अपने पति की मृत्यु के पश्चात् कुछ महीने उसने भयंकर वेदना और पीड़ा में व्यतीत किये और अन्त में एक शिशु को जन्म दिया। परन्तु मृत्यु ने बालक से उसकी माँ को छीनकर उसे एक निर्दयी, प्रेमहीन, एकाकी बूढ़े के संरक्ष में छोड़ दिया। यह डोरियन के जीवन की काफी दिलचस्प पृष्ठभूमि थी। संसार की किसी भी वर्तमान सुन्दर वस्तु के पीछे कितना दुःख भरा रहस्य छिपा रहता है! पिछली रात्रि को भोजन के समय वह कितना सुन्दर प्रतीत हो रहा था। आश्चर्य से भरे हुए नेत्र और भययुक्त प्रसन्नता से खुले हुए होंठ लिये वह क्लब में ठीक उसके सामने ही बैठा था। उसके साथ बातें करना मानो एक कोमल वायलिन पर उँगलियाँ चलाना था। तारों को छेड़ते ही उसके मुख से मधुर शब्द निकलते जाते थे। दूसरों को प्रभावित करने की उसमें अद्वितीय शक्ति थी। डोरियन से बातें करते समय व्यक्ति असीम आनन्द का अनुभव करने लगता है, प्रेम और यौवन में ओतप्रोत हुए अपने बौद्धिक विचारों की प्रतिध्वनि सुनने लगता है। जिस प्रकार किसी सुगन्धि का अनुभव बहुत शीघ्र हो जाता है, उसी प्रकार उस व्यक्ति का दृष्टिकोण और मुद्रा भी बदल जाती है। उस समय उसको सच्चा आनन्द प्राप्त होता है। हमारी जैसी सीमित और गन्दी दुनिया में यह आनन्द भी हमें सन्तुष्ट कर देता है। क्योंकि इस युग के सब आनन्द अश्लील और पतित हो चुके हैं। यह युवक (डोरियन) अपने ढंग का एक ही था जिससे अचानक ही बासिल की चित्रशाला में उसका परिचय हुआ था। पुराने ग्रीक लोगों के श्वेत संगमरमर की मूर्तियों की भाँति उसके सौन्दर्य और यौवन की पवित्रता है। उसके साथ रहकर कोई भी संसार के

सारे कार्य करने की क्षमता रखता है। उसकी तुलना बलिष्ठ से बलिष्ठ और कोमल से कोमल वस्तु से की जा सकती है। यह जानकर कितना दुःख होता है कि इस सौन्दर्य का जन्म नष्ट होने के लिये ही हुआ है। और बेचारा बासिल, मनोवैज्ञानिक रूप से उसका अध्ययन करके वह कितना दिलचस्प प्रतीत होता है। अपनी कला में एक नई धारा का प्रवाह, जिन्दगी को एक नये दृष्टिकोण से देखना, यह सब उस एक व्यक्ति का प्रभाव था जिसको वह (डोरियन) स्वयं नहीं जानता था। डोरियन को पाकर बासिल की अन्तरात्मा ने एक अलौकिक प्रकाश देखा था। यह सब कुछ उसे बहुत विचित्र-सा प्रतीत होता था। इसी प्रकार की बातें उसने इतिहास में अवश्य पढ़ी थीं। विचारों के कलाकार प्लैटो ने ही पहले-पहल इनका मनन करके लोगों के सम्मुख रखा था। परन्तु आज के युग में हमें यह सब नया ही जान पड़ता है। वह भी डोरियन के जीवन में वही स्थान ग्रहण करना चाहता है जो बासिल के हृदय में डोरियन का है। वह उस पर पूर्ण रूप से अपना आधिपत्य जमा लेगा। अपने इस प्रयास में उसने आधी सफलता तो प्राप्त कर ही ली है। उसकी विचित्र आत्मा को वह अपने जैसा ही बना लेगा। प्रेम और मृत्यु की इस रचना में कितना आकर्षण भरा पड़ा था।

यकायक वह रुक गया और उसने सड़क पर खड़े मकानों पर एक दृष्टि डाली। उसे मालूम पड़ा कि अपनी इस विचारधारा में वह अपनी चाची का मकान तो पीछे छोड़ आया है। मुस्कराकर वह वापस मुड़ गया। मकान में पहुँचने पर नौकर ने बतलाया कि सब लोग अभी भोजन करने बैठे ही हैं। एक नौकर को अपनी छड़ी और टोप सौंपकर वह खाने वाले कमरे की ओर चल दिया।

"और दिनों की भाँति आज फिर तुमने देर लगा दी हेनरी !" हेनरी को देखकर अपना सिर हिलाते हुए उसकी चाची ने कहा।

हेनरी ने अपने विलम्ब का एक झूठा बहाना बना दिया और उसके पास वाली एक खाली कुर्सी पर बैठकर उसने अन्य लोगों पर एक दृष्टि

डाली। मेज के दूसरे कोने से डोरियन ने लजाकर अपना सिर झुका लिया। उसके गालों की लालिमा उसकी दबी हुई प्रसन्नता की झलक दिखा रही थी। हेनरी के सामने हार्ले की रानी बैठी थी। उसका स्वभाव बहुत ही नम्र और दयालु था। उसके परिचित उसे पसन्द करते थे। उसके दाईं ओर पार्लियामेंट में रेडिकल पार्टी के सर थामस ब्रटन बैठे थे जो अपने सार्वजनिक जीवन में अपनी पार्टी के अध्यक्ष की सत्ता स्वीकार करते थे, परन्तु अपने निजी जीवन में टोरियों के साथ बढ़िया-बढ़िया भोजन खाया करते थे। इनके साथ वाली कुर्सी पर अधेड़ अवस्था के व्यक्ति मि० ट्रेडले बैठे थे।

"लार्ड हेनरी, हम बेचारे डार्टमूर के विषय में बातचीत कर रहे हैं।" रानी ने मेज की दूसरी ओर प्रसन्नता से सिर हिलाते हुए कहा—"तुम्हारा क्या विचार है हेनरी ? क्या वह उस सुन्दर अमरीकन युवती से विवाह कर लेगा ?"

"मेरे विचार में तो वह डार्टमूर के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखने का निश्चय कर चुकी है।"

"कैसी भयानक घटना होने वाली है।" अगाथा ने कहा—"किसी को सचमुच ही बीच में पड़कर इसे रोक देना चाहिये।"

"मैंने अमरीका के कुछ निवासियों को देखा है।" रानी ने कहा—"मैं इतना अवश्य कहूँगी कि वे साधारण रूप से सुन्दर हैं। वे नये-नये फैशन के वस्त्र पहनते हैं। वे पेरिस से अपने वस्त्र मँगवाते हैं। काश कि मैं भी ऐसा ही कर सकती !"

"अमरीका में एक कहावत है कि वहाँ के अच्छे नागरिक मरने के पश्चात् पेरिस पहुँच जाते हैं।" सर थामस ने हँसी की मुद्रा में कहा।

"अच्छा ! और अमरीका के बुरे लोग मरकर कहाँ जाते हैं ?" रानी ने पूछा।

"वे अमरीका में ही रहते हैं।" लार्ड हेनरी बोला।

सर थामस तनिक क्रोधित होकर बोले—"मेरे विचार में तो तुम्हारे

भतीजे ने उस महान देश के प्रति ग़लत धारणा बना ली है ।" उन्होंने अगाथा की ओर मुँह फेरकर कहा—"मैं इस देश में बहुत दूर-दूर तक घूमा हूँ । मैं विश्वास दिलाता हूँ कि वहाँ पर घूमना एक प्रकार से अपने आपको शिक्षा देना है ।"

"तो क्या अपने आप को शिक्षित बनाने के लिये शिकागो जाना आवश्यक है ?" एर्कसाइन ने स्पष्ट शब्दों में कहा—"परन्तु यात्रा करने की मेरी इच्छा तो अब होती नहीं ।"

सर थामस ने तनिक अपना हाथ हिलाते हुए कहा—"मि० एर्कसाइन ने तो सारी दुनिया का ज्ञान पुस्तकों से ग्रहण कर लिया है, परन्तु हम लोग तो आँखों से देखी चीज पर विश्वास करते हैं । अमरीकन लोगों की प्रत्येक बात में तर्क भरा होता है, यही उनकी विशेषता है जो दूसरों में नहीं पाई जाती ।"

"कैसी अजीब बात है ।" लार्ड हेनरी ने चिल्लाकर कहा—"मैं जंगली लोगों की शक्ति समझ सकता हूँ परन्तु उसकी बहस करना असहनीय है ।"

"तुम्हारी बातों को समझना मेरी सामर्थ्य से बाहर है ।" सर थामस ने क्रोध में लाल-पीले होते हुए कहा ।

"हेनरी, मैं सब कुछ समझ रहा हूँ ।" एर्कसाइन ने तनिक मुस्कराकर कहा ।

"तुम्हारी भावनाओं में सत्य का अंश तो अवश्य मालूम पड़ता है परन्तु वे सुनने में अच्छी नहीं लगतीं ।"

"क्या यह कोरी भावुकता ही थी ?" मि० एर्कसाइन ने पूछा । "मैंने तो इसे ऐसा नहीं समझा था । शायद तुम्हारा कथन सत्य हो । भावना और सत्य में कोई अंतर नहीं, वास्तविकता का परखना आसान काम नहीं है ।"

"ओह हेनरी !" अगाथा ने कहा—"तुम पुरुष किस प्रकार वाद-विवाद करने लगते हो । मुझे निश्चय है कि मुझे तुम्हारी बातचीत के

सिर-पैर का पता नहीं लग सकता । हेनरी, तुम्हारी इस प्रकार की बातों से तो मैं ऊब चुकी हूँ । हाँ, तुमने हमारे डोरियन को उस पार्टी में जाने से क्यों मना कर दिया है ? मैं विश्वास दिलाती हूँ कि हमें उसकी नितान्त आवश्यकता है । लोग डोरियन का संगीत सुनकर बहुत प्रसन्न होंगे ।"

"मैं चाहता हूँ वह मुझे अपना संगीत सुनाये ।" लार्ड हेनरी ने मुस्कराते हुए कहा और डोरियन ग्रे की ओर देखकर अपने उत्तर की पुष्टि चाही ।

"परन्तु ह्वाइट चैपल में लोग कितने अप्रसन्न और दुखी हैं, यह तो तुमसे छिपा नहीं है ।" आगाथा बोली ।

"मैं दूसरों के दुःख से सहानुभूति नहीं दिखला सकता ।" लार्ड हेनरी ने अपने कन्धे हिलाते हुए कहा—"मुझे इस प्रकार के लोगों पर दया नहीं आती । यह कितना भयानक, कुरूप और निराश बनाने वाला होता है । आज के युग में किसी से सहानुभूति दिखलाना अत्यन्त भयानक है । मनुष्य को सौंदर्य और जीवन के सुखों से सहानुभूति दिखलानी चाहिए । जीवन की वेदनाओं एवं दुःख के विषय में जितना कम कहा जाए उतना ही अच्छा है ।"

"फिर भी 'ह्वाइट चैपल' एक बड़ी महत्वपूर्ण समस्या है ।" सर थामस ने दुःख में अपना सिर हिलाते हुए कहा ।

"ठीक है ।" हेनरी बोला—"यह दासता की समस्या है और गुलामों का मन बहलाव करके हम इस समस्या को सुलझाना चाहते हैं ।"

"तब किस प्रकार तुम इसे हल करने को कहते हो ?"

लार्ड हेनरी हँस दिया—"ब्रिटेन में मैं मौसम के अतिरिक्त और कोई भी परिवर्तन नहीं देखना चाहता ।" उसने उत्तर दिया—"मैं लोगों की दार्शनिक विचारधारा से पूर्णरूप से संतुष्ट हूँ । १९वीं शताब्दी में लोगों ने अपनी सहानुभूति बिना रोकटोक के खर्च की है, अतः मेरे विचार में हमें विज्ञान से अपील करनी चाहिए कि वह हमें कोई नया

मार्ग दिखाए। भावुकता की विशेषता यह है कि वह हमें किसी निश्चित पथ पर नहीं ले जाती और विज्ञान की यह है कि वह भावुक नहीं होता।"

"परन्तु हमें अपने उत्तरदायित्व का भी अनुभव करना चाहिए।" श्रीमती बैडलेर ने डरते हुए कहा।

"हमारे उत्तरदायित्व सचमुच बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।" अगाथा ने कहा।

लार्ड हेनरी ने एर्कसाइन की ओर देखा। "मनुष्य मानवता के विषय में बहुत गम्भीरता से सोच-विचार करने लगता है। यह संसार का सबसे पुराना पाप है।"

"तुम्हारी बातों से मुझे बहुत आश्वासन मिलता है।" रानी बोली—"मुझे तुम्हारी चाची के 'ह्वाइट चैपल' में तनिक भी दिलचस्पी नहीं है, इस कारण से तुम्हारी चाची से कभी भी मिलने पर मैं अपने आप को अपराधी समझती थी। परन्तु अब भविष्य में मैं कभी लज्जा का अनुभव नहीं करूँगी।"

"हाँ, आपके लिए लजा जाना तो ठीक नहीं।" हेनरी ने कहा।

"यह तो केवल युवतियों के लिए ही है।" रानी ने उत्तर दिया—"मेरे जैसी अधेड़ स्त्री का लजा जाना एक बुराई का द्योतक है। अच्छा हेनरी, काश कि मुझे पुनः युवती बन जाने का कोई उपाय तुम बतला सकते।"

वह क्षण भर के लिए सोचता रहा—"क्या आपको कोई ऐसी महान् ग़लती याद है जो आपने बहुत पहले की हो ?" उसने रानी की ओर देखते हुए पूछा।

"एक क्या, मुझे तो ऐसी बहुत-सी ग़लतियाँ याद हैं।" उसने चिल्ला कर कहा।

"तब एक बार फिर उन सब को दोहराना शुरू कर दो।" उसने गम्भीर मुद्रा में कहा—"अपने यौवन को पुनः प्राप्त करने के लिए मनुष्य

को अपनी पुरानी ग़लतियों को फिर से दोहराना पड़ता है।"

"यह तो तुमने आज एक नई बात बतलाई।" वह बोली—"मैं इसे अवश्य क्रियात्मक रूप दूंगी।"

"परन्तु यह कितनी भयानक है।" सर थामस ने कहा। अगाथा प्रसन्न हुए बिना न रह सकी और एर्कसाइन चुपचाप सुनते रहे।

"हाँ।" लार्ड हेनरी ने पुनः कहा—"यह जिंदगी का सब से बड़ा रहस्य है। आजकल लोगों में इस प्रकार का तनिक-सा साधारण ज्ञान भी नहीं है और वे इसी अनजान अवस्था में अपना जीवन समाप्त कर देते हैं। अपने जीवन के संध्याकाल में उन्हें पता चलता है कि अपनी ग़लतियों पर मनुष्य कभी नहीं पछताता।"

मेज़ के चारों ओर बैठे हुए लोग हँस पड़े।

हेनरी मानो एक विचार पकड़कर उससे खेल रहा था। कभी उसे उछालकर दूर फेंक देता था, और कभी मदारी की भाँति फिर उसे पकड़ लेता था। वह ग़लतियों की प्रशंसा करके उन्हें दर्शन का रूप दे रहा था, और फिर यही दर्शनशास्त्र यौवन का रूप धर कर प्रसन्नता के संगीत में ओतप्रोत हो जीवन की पहाड़ी पर नाच रहा था। जीवन का सत्य और वास्तविकता भयभीत होकर इधर-उधर भागे जा रहे थे। इस प्रकार का असाधारण स्वप्न न जाने क्यों उसे जागृत अवस्था में ही आ गया था। हेनरी ने अनुभव किया कि डोरियन के नेत्र उस पर गड़े हैं। उसको यकायक यह विचार आया कि वहाँ बैठे सब लोगों में से केवल एक व्यक्ति के स्वभाव को प्रभावित करने के लिये ही उसने यह सब कहा है, यह सोचकर उसकी मुद्रा में हँसी का समावेश हो गया और उसकी कल्पना की उड़ान और भी ऊँचे पर पहुँच गई। उसकी कुशाग्र बुद्धि थी और वह लापरवाह था। वह अपने श्रोताओं के ही विचारों से खेलकर उनका मनोरंजन करता था और वे सब उसके साथ ही हँसा करते थे। डोरियन ने अपने नेत्र कभी हेनरी के मुख से नहीं हटाये, वह चित्र-लिखित-सा बैठा था। उसके होठों पर मुस्कान भरी थी

और आँखों में आश्चर्य था।

अन्त में रानी के नौकर ने सूचना दी कि नीचे खड़ी गाड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही है। उसने निराशा में अपने हाथ झकझोरे—"कितने दुख की बात है। मुझे जाना ही पड़ेगा। मैं अपने पति को क्लब से लेकर किसी सभा में जाऊँगी, जहाँ उनको सभापति बनना है। मेरे विलम्ब करने पर वे क्रोधित होंगे और इस प्रकार की पोशाक में मैं उनसे झगड़ा करके दूसरों को तमाशा नहीं दिखलाना चाहती। यह बहुत नाजुक मामला है और कोई भी कड़ा शब्द स्थिति को बिगाड़ देगा। अच्छा अगाथा, मुझे अब जाना ही पड़ेगा। अच्छा हेनरी, तुमसे बातें करके बहुत मनोरंजन होता है। परन्तु ये बातें दूसरों को अनैतिक बना देती हैं। मेरा दृढ़ निश्चय है कि तुम्हारे विचारों के विषय में मुझे कुछ भी पता नहीं। किसी रात को भोजन हमारे साथ ही करना, क्या मंगल-वार को आ सकोगे?"

"तुम्हारे लिये मैं अपने सब प्रोग्रामों को रद्द कर सकता हूँ।" लार्ड हेनरी ने तनिक झुककर कहा।

"ओह! कितनी प्रसन्नता की बात है, परन्तु तुम झूठ कहते हो।" उसने तीव्र स्वर में कहा—"अच्छा, तो मंगल को आना भूलना नहीं।" यह कहकर वह कमरे से बाहर चली गई और उसके पीछे-पीछे अगाथा तथा अन्य स्त्रियाँ भी चली गईं।

लार्ड हेनरी पुनः अपने स्थान पर बैठ गया। मि० एर्कसाइन ने अपनी कुर्सी उसके पास की और हेनरी के हाथ पर अपना हाथ धरकर बोला—"तुम किताबों की भाँति बोलते हो।" वह बोला—"तुम कोई पुस्तक क्यों नहीं लिख डालते?"

"मुझे किताबें पढ़ने में इतना आनन्द आता है कि लिखने की आवश्यकता मैंने कभी महसूस नहीं की। एक उपन्यास लिखने की इच्छा तो अवश्य है, परन्तु वह उपन्यास इतना सुन्दर और आकर्षक हो जितना फ़ारस का कालीन होता है। पर वास्तविकता नाम मात्र को भी न

को अपनी पुरानी ग़लतियों को फिर से दोहराना पड़ता है।"

"यह तो तुमने आज एक नई बात बतलाई।" वह बोली—"मैं इसे अवश्य क्रियात्मक रूप दूँगी।"

"परन्तु यह कितनी भयानक है।" सर थामस ने कहा। अगाथा प्रसन्न हुए बिना न रह सकी और एर्कसाइन चुपचाप सुनते रहे।

"हाँ।" लार्ड हेनरी ने पुनः कहा—"यह जिंदगी का सब से बड़ा रहस्य है। आजकल लोगों में इस प्रकार का तनिक-सा साधारण ज्ञान भी नहीं है और वे इसी अनजान अवस्था में अपना जीवन समाप्त कर देते हैं। अपने जीवन के संध्याकाल में उन्हें पता चलता है कि अपनी ग़लतियों पर मनुष्य कभी नहीं पछताता।"

मेज़ के चारों ओर बैठे हुए लोग हँस पड़े।

हेनरी मानो एक विचार पकड़कर उससे खेल रहा था। कभी उसे उछालकर दूर फेंक देता था, और कभी मदारी की भाँति फिर उसे पकड़ लेता था। वह ग़लतियों की प्रशंसा करके उन्हें दर्शन का रूप दे रहा था, और फिर यही दर्शनशास्त्र यौवन का रूप धर कर प्रसन्नता के संगीत में ओतप्रोत हो जीवन की पहाड़ी पर नाच रहा था। जीवन का सत्य और वास्तविकता भयभीत होकर इधर-उधर भागे जा रहे थे। इस प्रकार का असाधारण स्वप्न न जाने क्यों उसे जागृत अवस्था में ही आ गया था। हेनरी ने अनुभव किया कि डोरियन के नेत्र उस पर गड़े हैं। उसको यकायक यह विचार आया कि वहाँ बैठे सब लोगों में से केवल एक व्यक्ति के स्वभाव को प्रभावित करने के लिये ही उसने यह सब कहा है, यह सोचकर उसकी मुद्रा में हँसी का समावेश हो गया और उसकी कल्पना की उड़ान और भी ऊँचे पर पहुँच गई। उसकी कुशाग्र बुद्धि थी और वह लापरवाह था। वह अपने श्रोताओं के ही विचारों से खेलकर उनका मनोरंजन करता था और वे सब उसके साथ ही हँसा करते थे। डोरियन ने अपने नेत्र कभी हेनरी के मुख से नहीं हटाये, वह चित्र-लिखित-सा बैठा था। उसके होठों पर मुस्कान भरी थी

और आँखों में आश्चर्य था।

अन्त में रानी के नौकर ने सूचना दी कि नीचे खड़ी गाड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही है। उसने निराशा में अपने हाथ झकझोरे—"कितने दुख की बात है। मुझे जाना ही पड़ेगा। मैं अपने पति को क्लब से लेकर किसी सभा में जाऊँगी, जहाँ उनको सभापति बनना है। मेरे विलम्ब करने पर वे क्रोधित होंगे और इस प्रकार की पोशाक में मैं उनसे झगड़ा करके दूसरों को तमाशा नहीं दिखलाना चाहती। यह बहुत नाजुक मामला है और कोई भी कड़ा शब्द स्थिति को बिगाड़ देगा। अच्छा अगाथा, मुझे अब जाना ही पड़ेगा। अच्छा हेनरी, तुमसे बातें करके बहुत मनोरंजन होता है। परन्तु ये बातें दूसरों को अनैतिक बना देती हैं। मेरा दृढ़ निश्चय है कि तुम्हारे विचारों के विषय में मुझे कुछ भी पता नहीं। किसी रात को भोजन हमारे साथ ही करना, क्या मंगल-वार को आ सकोगे?"

"तुम्हारे लिये मैं अपने सब प्रोग्रामों को रद्द कर सकता हूँ।" लार्ड हेनरी ने तनिक झुककर कहा।

"ओह! कितनी प्रसन्नता की बात है, परन्तु तुम झूठ कहते हो।" उसने तीव्र स्वर में कहा—"अच्छा, तो मंगल को आना भूलना नहीं।" यह कहकर वह कमरे से बाहर चली गई और उसके पीछे-पीछे अगाथा तथा अन्य स्त्रियाँ भी चली गईं।

लार्ड हेनरी पुनः अपने स्थान पर बैठ गया। मि० एर्कसाइन ने अपनी कुर्सी उसके पास की और हेनरी के हाथ पर अपना हाथ धरकर बोला—"तुम किताबों की भाँति बोलते हो।" वह बोला—"तुम कोई पुस्तक क्यों नहीं लिख डालते?"

"मुझे किताबें पढ़ने में इतना आनन्द आता है कि लिखने की आवश्यकता मैंने कभी महसूस नहीं की। एक उपन्यास लिखने की इच्छा तो अवश्य है, परन्तु वह उपन्यास इतना सुन्दर और आकर्षक हो जितना फ़ारस का कालीन होता है। पर वास्तविकता नाम मात्र को भी न

हो। परन्तु समाचार पत्र, प्राइमर और एनसाइक्लोपीडिया पढ़ने के अतिरिक्त इंगलैंड में और साहित्यिक जनता है ही नहीं। विश्व की सब जातियों में अंग्रेज ही ऐसे हैं जो साहित्य के सौन्दर्य को परखना नहीं जानते।"

"शायद तुम ठीक कहते हो।" मि० एर्कसाइन ने उत्तर दिया—"मैं भी साहित्यिक जीवन की ऊँची-ऊँची कल्पनाएँ किया करता था परन्तु बहुत दिनों पहले ही मैंने यह विचार सदा के लिये छोड़ दिया। अच्छा भाई, यह बतलाओ कि भोजन करते समय तुमने जो कुछ कहा क्या तुमको उस पर विश्वास है ?"

"मैं जो कुछ कहता हूँ, वह बहुत जल्दी भूल जाता हूँ।" लार्ड हेनरी ने मुस्करा कर कहा—"क्या जो कुछ मैंने कहा, वह सब बहुत बुरा था ?"

"हाँ, बहुत ही बुरा। मैं तुम्हें बहुत भयानक युवक समझने लगा हूँ। और यदि हमारी रानी पर तुम्हारे कहने का कुछ भी प्रभाव पड़ा तो उसका उत्तरदायित्व तुम पर होगा। परन्तु जिन्दगी के विषय में मैं तुमसे कुछ और बातें भी करना चाहता हूँ। जिस युग में मैं पैदा हुआ था, वह आज से बिल्कुल भिन्न था। किसी दिन लन्दन से ऊब जाने पर ट्रेडले चले आना। तब अपनी इस 'प्रसन्नता' का रहस्य मुझे समझाना।"

"ट्रेडले आकर मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। वहाँ आदर-सत्कार के साथ-साथ पुस्तकों की लाइब्रेरी भी मिलेगी।"

"तब तुम अपना वचन पूरा करोगे न ?" एर्कसाइन ने प्रेम से झुक-कर पूछा। "अब मुझे तुम्हारी चाची से विदा लेनी चाहिये। मेरा सोने का समय हो गया है।"

लार्ड हेनरी भी उठ खड़ा हुआ—"मैं बाग़ की सैर करने जा रहा हूँ।" ज्योंही वह दरवाजे से बाहर निकल रहा था तभी डोरियन ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—"मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।"

"परन्तु तुमने तो बासिल के यहाँ आने का उसको वचन दिया था।" लार्ड हेनरी बोला।

"नहीं, मैं तुम्हारे साथ ही चलूँगा। मुझे वचन दो कि सारे रास्ते तुम मुझसे बातें करते चलोगे। कोई भी तुम्हारे समान बातें नहीं कर सकता।"

"ओह! आज के लिये मैं काफी बोल चुका हूँ।" लार्ड हेनरी ने मुस्कराते हुए कहा—"अब मैं जिन्दगी को देखना चाहता हूँ। यदि तुम चाहो तो मेरे साथ तुम भी यह देख सकते हो।"

४

लगभग एक महीने के पश्चात् डोरियन मेफेअर में लार्ड हेनरी के बंगले की छोटी-सी लाइब्रेरी में एक आराम कुर्सी पर आधा लेटा हुआ सुस्ता रहा था। यह कमरा विचित्र ढंग से सजा हुआ था, हल्के पीले रंग से पुती हुई शानदार छत, फर्श पर बिछे हुए बारीक काम वाले फ़ारस के कालीन, इन सब ने मिलकर कमरे की शोभा दुगनी कर दी थी। कीमती लकड़ी से बने हुए छोटे से मेज़ पर क्लौडिन कलाकार द्वारा बनी हुई एक कलामय् मूर्ति रखी थी, उसके पीछे कुछ चुनी हुई विशेष पुस्तकें सजी हुई थीं। कमरे की ब्रैकेट पर बहुत बड़े नीले रंग के चीनी के फूलदान में तोतों की भाँति फूल रखे थे। खिड़की के बाहर गुलाबी रंग की हल्की-हल्की धूप चमक रही थी मानो लन्दन में गर्मियों के आगमन की सूचना दे रही हो।

लार्ड हेनरी अभी तक वापस नहीं लौटा था, वह अपने सिद्धान्त के अनुसार आज भी विलम्ब कर रहा था। क्योंकि उसके विचार में कभी

समय पर काम नहीं करना चाहिये। लार्ड हेनरी के विलम्ब से उकता-कर डोरियन ने एक किताब उठाई और अधीरता से उसकी तस्वीरें पलटने लगा। घड़ी की निरन्तर टिकटिक उसे और भी क्रोधित कर रही थी। एक आध बार उसने बाहर जाने की सोची, परन्तु वह गया नहीं।

अन्त में उसने किसी के पैरों की आहट बाहर सुनी और किसी ने दरवाजा खोला—"तुमने कितनी देर कर दी हेनरी ?" डोरियन ने क्रोधित स्वर में कहा।

"मि० ग्रे, क्षमा कीजिये, मैं हेनरी नहीं हूँ।" एक पतली-सी कर्कश आवाज़ ने उत्तर दिया।

उसने शीघ्रता से अपने चारों ओर देखा और खड़ा हो गया—"मुझे क्षमा कीजिए, मैंने सोचा था···"

'आपने सोचा होगा कि मेरे पति आये हैं, परन्तु उनकी पत्नी आई है। मैं स्वयं ही अपना परिचय देती हूँ। मैं आपको आपकी फोटो के कारण भली भाँति जानती हूँ। मेरे विचार में मेरे पति के पास आपकी सत्रह फोटो हैं।"

"श्रीमती हेनरी, सत्रह फोटो तो नहीं कहनी चाहियें।"

"तब बारह सही, मैंने आपको कल ही आपेरा में पति के साथ देखा था।" बातें करते समय वह घबराहट भरी हँसी हँस रही थी और डोरियन की ओर इस दृष्टि से देख रही थी मानो उसके नेत्र कह रहे हों—"मुझे भूलना नहीं।" यह एक बड़ी विचित्र-सी स्त्री थी जिसके वस्त्र मानो बहुत क्रोध में बनाकर तूफान में उड़ने के लिये छोड़ दिये गये थे। वह सदा ही किसी न किसी से प्रेम किया करती थी, परन्तु अपने प्रेम का उत्तर न पाकर वह सदा अपने आपको धोखे में रखती थी। वह सुन्दर बनने का प्रयास करती थी परन्तु सदा उसके वस्त्र ढीले-ढाले ही दिखाई देते थे। उसका नाम विक्टोरिया था और गिरजाघरों में जाने का उसे ख़ब्त था।

"आपने मुझे लौहनग्रिन में देखा होगा ?"

"हाँ हाँ, लौहनग्रिन में ही देखा था। मुझे वैगनर का संगीत दूसरों से अधिक अच्छा लगता है। यह इतने जोर से बजता है कि तुम निश्चिन्त होकर बातें कर सकते हो और दूसरे लोग तुम्हारी बातचीत को सुन भी नहीं सकते। क्या तुम्हारी राय में यह बड़ा भारी लाभ नहीं हैं ?"

उसके पतले होंठ वही हँसी हँस दिये और उसकी अंगुलियाँ काग़ज काटने वाले हाथीदाँत के चाकू से खेलने लगीं।

डोरियन ने मुस्कराकर अपना सिर हिला दिया—"श्रीमती हेनरी, में आपके इस विचार से सहमत नहीं हूँ। जब कभी अच्छा संगीत होता है तब मैं कभी बातें नहीं करता। यदि कोई बुरा संगीत बज रहा हो, तब सुनने वाले का कर्तव्य है कि वह बातें करके उस संगीत को अनसुना कर दे।"

"ओह मि० ग्रे, क्या यह विचार हेनरी के नहीं हैं ? हेनरी के विचार मैं सदा उनके मित्रों से ही सुना करती हूँ। यही तो उनको समझने का एक साधन है। परन्तु तुम्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि मुझे अच्छा संगीत पसन्द नहीं है। मुझे तो ऐसे संगीत से प्रेम है। परन्तु भय भी लगता है क्योंकि वह मुझे रोमांटिक बना देता है। कभी-कभी मैंने प्यानो बजाने वाले दो संगीतज्ञों को एक साथ ही पूज्य तुल्य समझा है। मुझे यह पता नहीं कि उनमें मुझे कौन-सी विशेषता दिखाई देती है। शायद वे विदेशी होते हैं। यद्यपि वे सब इंगलैण्ड में ही उत्पन्न होते हैं परन्तु कुछ समय पश्चात् वे विदेशी बन जाते हैं। यह उनकी चालाकी समझनी चाहिये। कला के प्रति वे अपनी कृतज्ञता का प्रदर्शन करते हैं। मि० ग्रे, शायद तुम मेरी पार्टियों में कभी नहीं आये ? अब तुमको जरूर आना पड़ेगा। यद्यपि मैं मूल्यवान पौधों को अपने घर में सजा नहीं सकती, परन्तु विदेशियों की आवभगत के लिए मैं कभी कंजूसी नहीं करती। लो, हेनरी आ गये। हेनरी, मैं तुम्हें देखने ही यहाँ आई थी। तुमसे कुछ पूछना भी था परन्तु अब मैं भूल गई हूँ। यहाँ मि० ग्रे से मेरी भेंट हो गई। संगीत के विषय में हमारी मनोरंजक चर्चा भली भाँति

चलती रही। हमारे विचार एक जैसे ही हैं। परन्तु नहीं, हमारे विचार तो एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। मि० ग्रे से बातें करते समय अच्छा दिल-बहलाव हो जाता है। मुझे ग्रे से मिलकर हार्दिक प्रसन्नता हुई।"

"मुझे भी बहुत प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा ग्रे से परिचय हो गया।" हेनरी ने अपनी अर्धचन्द्र के समान भौहों को तनिक ऊपर चढ़ाकर दोनों की ओर मुस्कराकर देखते हुए कहा—"डोरियन, मुझे इस विलम्ब के लिये क्षमा करो। आज मैं वार्डर स्ट्रीट में पुराना ब्राकेट देखने के लिये चला गया था, और उसके लिये घंटों मुझे मोल-तोल करना पड़ा। आजकल लोग सब चीज़ों की कीमतें जानने लगे हैं परन्तु किसी की उपयोगिता नहीं समझते।"

"मुझे अब चलना चाहिए।" हेनरी की पत्नी ने अपनी भद्दी हँसी हँसकर उस नीरवता को भंग करते हुए कहा—"रानी के साथ कहीं जाने का मैंने उन्हें वचन दिया हुआ है। अच्छा मि० ग्रे नमस्कार, हेनरी, मैं चलती हूँ, मेरे विचार में तुम कहीं बाहर भोजन कर रहे हो। हाँ, मेरा खाना भी आज बाहर है, शायद श्रीमती थार्नबरी के यहाँ हमारी भेंट हो।"

"मैं ठीक तरह नहीं कह सकता।" यह कहकर लार्ड हेनरी ने अपनी पत्नी को विदा किया और दरवाज़ा बन्द कर लिया। सारी रात पानी में भीगते हुए स्वर्ग के पक्षी के समान वह भी इत्र की सुगन्धि कमरे में छोड़कर दरवाजे से बाहिर चली गई। तब उसने एक सिगरेट सुलगाई और सोफ़े पर लेट गया।

"डोरियन, तिनकों के रंग के समान बालोंवाली लड़की से कभी विवाह न करना।" उसने सिगरेट के कुछ कश खींच लेने के उपरान्त कहा।

"क्यों हेनरी?"

"क्योंकि ऐसी स्त्रियाँ अत्यन्त भावुक होती हैं।"

"परन्तु मैं तो ऐसे लोगों को बहुत पसन्द करता हूँ।"

"डोरियन, मेरे विचार में तुम कभी विवाह ही न करना। जिंदगी से थककर पुरुष विवाह करते हैं, और स्त्रियाँ इस कारण से विवाह करती हैं जिससे उनकी उत्सुकता शान्त हो जाये। परन्तु दोनों को ही निराश होना पड़ता है।"

"मैं नहीं सोचता कि मैं कभी विवाह भी करूँगा? मैं प्रेम में बहुत नीचे तक डूब चुका हूँ। यह तुम्हारी ही बतलाई हुई एक दिशा है, जहाँ मैं आगे बढ़ रहा हूँ। तुम जो कुछ कहते हो, वह सब मैं करता हूँ।"

"वह कौन है जिससे तुम प्रेम करते हो?" कुछ देर ठहरकर लार्ड हेनरी ने पूछा।

"एक अभिनेत्री से।" डोरियन ने शरमाते हुए कहा।

लार्ड हेनरी ने अपने कंधे झकझोड़े—"यह तो एक बड़ी सर्वसाधारण-सी बात है।"

"हेनरी, यदि तुम उसे देख लो, तो कभी ऐसा न कहोगे।"

"वह है कौन?"

"उसका नाम सिबल वेन है।"

"मैंने तो उसके विषय में पहले कभी नहीं सुना।"

"कोई भी उसे नहीं जानता, लोग किसी दिन जानने लगेंगे। वह एक उच्च कलाकार है।"

"प्रिय मित्र, कोई भी स्त्री उच्च कलाकार नहीं हो सकती। स्त्रियों की जाति ही सजावट की वस्तु है। वे कभी अधिक नहीं कहतीं, परन्तु जो कुछ कहती हैं, वे बहुत आकर्षक ढंग से कहती हैं। जिस प्रकार पुरुष मस्तिष्क की नैतिकता पर विजय का प्रतिनिधित्व करता है उसी प्रकार स्त्री भी विषय की मस्तिष्क पर विजय प्रदर्शन करती है।"

"हेनरी, तुम किस तरह यह सब कह रहे हो?"

"डोरियन, यह सब सत्य है। इस समय मैं स्त्री की विवेचना कर रहा हूँ। अतः मुझे यह सब जानना चाहिये। यह विषय उतना कठिन और उलझा हुआ नहीं है जैसी मैंने कल्पना की थी। अन्त में मैं इस

निश्चय पर पहुँचा हूँ कि स्त्रियाँ दो प्रकार की होती हैं, एक तो सीधी-सादी और दूसरी जो अपने मुँह को रंग लेती हैं। सीधी-सादी स्त्रियाँ बहुत लाभदायक होती हैं। यदि तुम अपने आदर-सम्मान की प्रसिद्धि चाहते हो तब इनको अपने साथ किसी होटल में खाना खिलाने ले जाओ, बस, इतना ही पर्याप्त है। दूसरी प्रकार की स्त्रियाँ बहुत आकर्षक होती हैं। परन्तु वे एक गलती कर बैठती हैं। नवयुवती दिखाई देने के लिये ही वे बनाव-शृंगार करती हैं। बूढ़ी स्त्रियाँ इस कारण से पेन्ट करती हैं जिससे वे ठीक से बातचीत करने का प्रयास कर सकें। किसी जमाने में गालों की लाली का मन के उत्साह से गहरा सम्बन्ध होता था। परन्तु अब वह समाप्त हो चुका है। अपनी पुत्री से दस साल छोटी लगने पर उसे संतोष होता है। लन्दन में केवल पाँच स्त्रियाँ ही बातचीत करने योग्य हैं। परन्तु इनमें से दो के नाम का सभ्य समाज में स्वागत नहीं किया जा सकता। खैर, तुम अपने कलाकार के विषय में बतलाओ, तुम उसे कितने दिनों से जानते हो ?"

"ओह हेनरी, तुम्हारे विचार सुनकर मैं काँप उठता हूँ ?"

"इसकी कोई चिन्ता न करो, कितने दिनों से तुम्हारा उससे परिचय है ?"

"लगभग तीन सप्ताह से।"

"तुम उससे कहाँ मिले ?"

"हेनरी, मैं तुम्हें सब कुछ बतला दूँगा, परंतु इस विषय में मुझे तुम्हारी दया और सहानुभूति की आवश्यकता है। बिना तुमसे परिचय हुए मैं यह रोमांस शायद कभी नहीं देख सकता। जिंदगी के विषय में सब कुछ जानने की प्रबल उत्कण्ठा तुमने मेरे मन में जागृत कर दी थी। तुमसे परिचय होने के पश्चात् कुछ दिनों तक मेरी नसों में एक विचित्र-सी हलचल मची रही। पार्क में घूमते समय या पिकेडमी में बैठकर मैं अपने पास से गुजरने वाले प्रत्येक व्यक्ति की ओर बड़े ध्यान से देखा करता था और पागलों की-सी उत्सुकता लिये यह सोचकर आश्चर्य चकित हुआ

करता था कि ये सब लोग किस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कुछ व्यक्तियों ने विशेष रूप से मुझे अपनी ओर आकर्षित किया, परन्तु कुछ को देखकर मैं भयभीत हो गया। वहाँ की वायु में एक प्रकार का विष मिला हुआ जान पड़ा। चमत्कारों को देखने की प्रबल उत्कण्ठा मुझ में थी।······एक शाम को किसी नये चमत्कार की खोज में मैं बाहर निकल पड़ा। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि लाखों की आबादी वाले लन्दन में जहाँ के लोग विभिन्न तरीकों के पाप करते हैं, मुझे कुछ न कुछ अवश्य देखने को मिलेगा। इस भय का विचार आते ही प्रसन्नता की एक लहर मेरे सारे शरीर में दौड़ गई। हम दोनों ने पहली बार होटल में उस शाम को भोजन किया था। तब के तुम्हारे कहे हुए शब्द मुझे अभी तक याद हैं कि सौन्दर्य की खोज ही जीवन का वास्तविक रहस्य है। मैं नहीं जानता कि उस शाम को मैं क्या पाने की आशा कर रहा था। परन्तु मैं लन्दन के पूर्व की ओर बढ़ता गया और शीघ्र ही सुनसान सड़कों और चौकोर मकानों की भूल-भुलैयों में अपना रास्ता खो बैठा। साढ़े आठ बजे के लगभग मैं एक छोटे-से थियेटर के सामने से गुजरा जिसके सामने गैस के हंडे लगे हुए थे और चमकीले रंगों वाले इश्तहार दीवारों पर चिपके हुए थे। एक भद्दी-सी शक्ल का यहूदी मुँह में सिगार लिये एक बड़ी अजीब-सी वास्कट पहने द्वार पर खड़ा था। उसकी अंगुलियों में मोटी-मोटी अंगूठियाँ थीं और उसकी कमीज में एक बड़ा-सा हीरा चमक रहा था।

"एक बाक्स लीजिये और थियेटर का आनन्द उठाइये।" मुझे देख कर उसने कहा और मेरे प्रति अधिक आदर दिखाने के लिये उसने अपना हैट उतार लिया। इस व्यक्ति में कुछ ऐसी विशेषता थी जिसे देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। उसका डील-डौल भी खूब बड़ा था। तुम मुझ पर शायद हँसने लगो, परन्तु मैं सचमुच ही अन्दर चला गया और एक गिन्नी देकर बाक्स खरीद लिया। मेरा ऐसा करने का क्या कारण था, यह मैं अभी तक नहीं जान सका। हेनरी, यदि मैं ऐसा न करता तो

अपनी जिन्दगी के सब से बड़े रोमांस से वंचित रह जाता। मैं देखता हूँ कि तुम हँस रहे हो, ओह, कितने बुरे हो तुम !"

"डोरियन, मैं हँस नहीं रहा हूँ, कम से कम तुम पर नहीं हँस रहा हूँ। परन्तु तुम इसे अपने जीवन का सब से बड़ा रोमांस न कहो। तुम्हें सदा कोई प्यार करता रहेगा और तुम उसके प्यार से प्यार करते रहोगे। जो व्यक्ति कोई काम नहीं करते उनके लिये यह प्रेम करना साधारण-सी बात है। एक देश में बेकार बैठे लोगों का यही तो एक लाभ है। डरो नहीं, तुम्हारे लिये भविष्य में अभी बहुत कुछ सौन्दर्य भरा पड़ा है, यह तो अभी आरम्भ ही है।"

"क्या तुम मुझे इतनी नीच प्रकृति का मनुष्य समझते हो ?" डोरियन गुस्से में चिल्लाया।

"नहीं, मैं तुम्हारे स्वभाव को बहुत ऊँचा समझता हूँ।"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा।"

"डोरियन, जो व्यक्ति जिंदगी में केवल एक बार ही प्रेम करते हैं, वे नीच प्रकृति के होते हैं। जिसको वे अपनी निष्ठा और पवित्रता कहते हैं, मैं उन्हें पुरानी परिपाटियों और कल्पना का प्रभाव कहता हूँ। मनुष्य के बौद्धिक पहलू के लिये जो स्थिरता का स्थान है वही उसकी भावुकता के लिये प्रेम के प्रति ईमानदारी का है। बस, यह अपनी असफलताओं की स्वीकृति है। ईमानदारी ! किसी दिन मुझे इसकी व्याख्या करनी ही पड़ेगी। संसार में बहुत-सी ऐसी वस्तुएँ हैं जिनको हम इस भय से नहीं फेंकते कि कहीं दूसरे न उठा लें। परन्तु तुम्हारी कहानी में बाधा नहीं डालना चाहता, तुम कहते चलो।"

"हाँ, तो मैं एक छोटे-से प्राइवेट बाक्स में जाकर बैठ गया। मेरे सामने स्टेज पर एक अश्लील चित्र वाला परदा टँगा हुआ था। मैंने हाल में बैठे लोगों पर एक दृष्टि डाली। मुझे सब के मुख पर एक भद्दी-सी छाप दिखाई दी मानो विवाह का सस्ता और गन्दा केक सामने रख

दिया गया हो। ऊपर की गैलरी और नीचे का हाल दर्शकों से खचा-खच भरा पड़ा था, आगे की दो कतारों में कोई भी सूरत दिखाई नहीं देती थी। स्त्रियाँ संतरे और जिंजर की शराब लिये इधर से उधर घूम रही थीं। हाल में बैठे लोग निरन्तर मूँगफलियाँ खाते जा रहे थे।

"तब तो यह पुराने नाटकों की भाँति होगा।"

"उसी प्रकार का निराशाजनक नाटक समझो। नाटक का नाम सुनकर मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही। और मैं सोचने लगा कि मुझे क्या करना चाहिए। हेनरी, तुम बताओ, कौन-सा नाटक वहाँ खेला जा सकता है ?"

"मेरे विचार में 'मूर्ख बालक' या 'गूँगा निरपराध' होगा। हमारे पिता आदि इसी प्रकार के नाटक किया करते थे। डोरियन, इस संसार में अधिक दिनों तक रहते-रहते मुझे ऐसा दृढ़ विश्वास होता जाता है कि जिसको वे अच्छा कहते थे, वह हमारे लिये अच्छा नहीं है।"

"परन्तु हेनरी, वह नाटक हमारे मनोरंजन के लिये बहुत अच्छा था। नाटक 'रोमियो और जुलियट' था। इस सड़े हुए गन्दे स्थान पर शेक्स-पीयर का नाटक खेला जाते देखकर मुझे क्रोध आ गया। परन्तु फिर भी मेरी दिलचस्पी बढ़ती ही गई। मैंने पहला अंक देखने का निश्चय कर ही लिया। एक यहूदी युवक की अध्यक्षता में संगीत-वाद्य बड़े जोर से बज रहे थे। वह युवक टूटे हुए स्थानों पर बड़ी तन्मयता से बजा रहा था। परन्तु अन्त में परदा उठने के पश्चात् नाटक आरम्भ हो गया। रोमियो एक अच्छे डील-डौल का व्यक्ति था, जिसकी भौहें मोटी, आवाज़ दुःखभरी और चेहरा शराब की बोतल की भाँति था। मरकुरो भी उसी की भाँति प्रतीत हो रहा था। ये दोनों वहाँ के दृश्यों के समान ही बेढंगे प्रतीत हो रहे थे। मानो इन दोनों पात्रों को किसी गाँव से लाकर स्टेज पर खड़ा कर दिया हो। परन्तु जूलियट—ओ हेनरी, एक ऐसी युवती की कल्पना करो जिसके सत्रह वर्ष भी अभी पूरे नहीं हुए हैं। फूल की भाँति छोटा-सा सुन्दर मुख, ग्रीक सिर, गहरे भूरे रंग के घुंघराले बाल, प्रेम

के अथाह सागर की भाँति उसके जामनी नेत्र, गुलाव की पंखड़ियों की भाँति उसके होंठ। अपने जीवन में इससे अधिक सौन्दर्य मैंने और कहीं नहीं देखा। तुमने एक बार मुझसे कहा था कि किसी बहुत वड़ी दर्दनाक घटना से भी तुम्हारा हृदय पसीज नहीं सकता। परन्तु सौन्दर्य, केवल सौन्दर्य से ही तुम्हारे नेत्र आँसुओं से भर आते हैं। हेनरी, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि आँसुओं की बाढ़ आ जाने के कारण मैं उसको कुछ समय तक देख नहीं सका। उसका स्वर, ऐसा स्वर मैंने आज तक कभी नहीं सुना। पहले वह बहुत धीरे-धीरे बोल रही थी। मानो सुनने वालों के कानों में संगीत की मधुर ध्वनि घोल रही हो। तनिक तेज होने के पश्चात् उसका स्वर एक संगीतवाद्य या कहीं दूर बजते हुए नग़मे की भाँति प्रतीत होने लगा। बाग वाले दृश्य में उसकी कांपती हुई असीम प्रसन्नता से भरी हुई आवाज़ लोगों को प्रातःकाल में चिड़ियों के गाने की याद दिला रही थी। बाद में कभी-कभी उसके स्वर में वायलिन के स्वर जैसी उत्तेजना भी आ जाती थी। तुम जानते हो कि किसी का स्वर सुनकर मनुष्य सिहर उठता है। तुम्हारी और सिवल वेन की आवाज़ मैं जिन्दगी भर कभी नहीं भूल सकूँगा। अपने नेत्र बन्द करने के पश्चात् मैं दोनों की भिन्न-भिन्न बातें सुनता हूँ। मैं नहीं जानता कि मैं किसका अनुकरण करूँ। मैं उससे क्यों न प्रेम करूँ? हेनरी! मैं उसे प्यार करता हूँ। वह इस जीवन में मेरे लिये सब कुछ है। हर रात्रि को मैं उसका अभिनय देखने के लिये नाटक देखता हूँ। एक बार वह रोज़ीलैंड बनती है और दूसरी बार इमोगैन। मैंने उसे उसके प्रेमी के होठों से विष खींच लेने पर इटली की कब्र पर दुख और निराशा में मरते हुए देखा है। मैंने उसे आर्डन के जंगलों में सुन्दर युवक के भेष में इधर-उधर भटकते हुए देखा है। वह पागल की अवस्था में एक अपराधी राजा के सम्मुख आ जाती है और उसे पहनने के लिये पक्षियों के वस्त्र और खाने के लिये कड़वे फल-फूल देती है। वह निरपराधिनी होती है और ईर्ष्या के वशीभूत होकर उसके पति के निर्दयी काले हाथ किस प्रकार

उसका गला दबा देते हैं, मैंने वह भी देखा है। मैंने उसे लगभग सब अवस्थाओं और सब वेषों में देखा है। साधारण श्रेणी की स्त्रियाँ कभी किसी की कल्पना का स्पर्श नहीं कर पातीं। वे अपने ही काल में सीमित रहती हैं। कितना ही बनाव-शृंगार करने पर भी वे दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने में असमर्थ होती हैं। जिस प्रकार उनके वस्त्रों को लोग भलीभाँति देख लेते हैं, उसी प्रकार उनके विचारों को जानना भी बहुत सहज है। उनमें कोई रहस्य नहीं भरा होता। वे प्रातःकाल घोड़ों पर सवार होकर बागों में घूमती हैं और सन्ध्या समय चाय पार्टियों में लोगों से गप्पें लड़ाती हैं। उनका स्वभाव, बातचीत करने का ढंग और उनकी मुस्कराहट सब नये फैशन में ओतप्रोत होते हैं। उनका यह सब करना अत्यन्त स्वाभाविक है। परन्तु एक अभिनेत्री—वह इनसे कितनी भिन्न है। हेनरी, तुमने मुझे पहले ही क्यों नहीं बतलाया कि अभिनेत्री ही एक ऐसी चीज़ है जिससे प्रेम किया जा सकता है ?"

"क्योंकि मैं बहुत-सी अभिनेत्रियों से प्रेम कर चुका हूँ।"

"हाँ, वही भयानक सूरतें होंगी जो अपनी अवस्था छिपाने के लिये बाल और मुँह रंगा लेती हैं।"

"रंगे हुए बाल और बनावटी शृंगार वाले मुख को तुम इतने निरादर की दृष्टि से क्यों देखते हो ? कभी-कभी उनमें एक असाधारण आकर्षण होता है।" लार्ड हेनरी ने कहा।

"मैं अब सोचता हूँ कि काश सिबलवेन के विषय में मैंने तुम्हें कुछ भी न बतलाया होता।"

"डोरियन, तुम मुझ से सब कुछ कहे बिना रह ही नहीं सकते थे, जीवन में तुम जो-जो काम करोगे, उसकी चर्चा तुम्हें मुझ से करनी ही पड़ेगी।"

"हाँ हेनरी, यह सत्य है। मैं तुमसे कहे बिना रह ही नहीं सकता। तुम्हारा विचित्र प्रभाव मुझ पर छाया हुआ है। यदि मैं कोई भी अपराध या हत्या करूँगा तब मैं तुम्हारे सम्मुख उसे स्वीकार कर लूँगा,

तुम मुझे समझ लोगे ।"

"तुम जैसे सुन्दर और कोमल व्यक्ति हत्याएं नहीं कर सकते, परन्तु तुमने मुझ में जो कुछ अपनत्व दिखलाया है, मैं उसका आभारी हूँ । अब मुझे बतलाओ—जरा दियासलाई तो देना····हाँ धन्यवाद—सिबलवेन से तुम्हारे किस प्रकार के सम्बन्ध हैं ?"

डोरियन झट से उछलकर क्रोध में खड़ा हो गया । उसके कपोल सुर्ख हो गये थे और उसकी आँखें जल रही थीं—"हेनरी, सिबलवेन बिलकुल पवित्र है ।"

"डोरियन, पवित्र वस्तुएँ ही स्पर्श करने योग्य होती हैं ।" लार्ड हेनरी के स्वर में करुणा का आभास था—"परन्तु तुम गुस्से क्यों होते हो ? मेरे विचार में वह किसी दिन तुम्हारी सम्पत्ति बन जायगी । प्रेम करने के नाटक के आरम्भ काल में मनुष्य अपने को धोखा देता है परन्तु उस नाटक का अन्त वह दूसरों को धोखा देकर कर देता है । इसी को संसार रोमांस कहता है । मेरे विचार में तुम सिबलवेन को जानते हो ।"

"हाँ, हाँ, मैं उसे जानता हूँ । उस प्रथम रात्रि को ही वह बूढ़ा यहूदी नाटक समाप्त होने के पश्चात् मेरे बाक्स में आया और मुझसे अन्दर चलने के लिये कहा जिससे कि वह सिबलवेन से मेरा परिचय करा दे । मैं क्रोध में आपे से बाहर होकर उससे बोला कि जूलियट को मरे तो सौ वर्षों से अधिक बीत चुके और अब तो उसका मृत शरीर वैरोना में संगमरमर की श्वेत कब्र में पड़ा होगा । उसकी आश्चर्य से भरी शून्य दृष्टि को देखकर मैं सोचता हूँ कि उसने मेरे बहुत अधिक शराब पी लेने का अनुमान लगाया होगा ।"

"मुझे तो कोई आश्चर्य नहीं हुआ ।"

"तब उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं किसी पत्र का सम्वाददाता तो नहीं हूँ । मैंने उसे बतलाया कि मैं तो कभी समाचार पत्र पढ़ता ही नहीं । यह सुनकर उसे घोर निराशा हुई । उसने कहा कि नाटकों के सब आलो-

चक उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे हैं और वह बारी-बारी से सब को रिश्वत देकर अपने साथ मिला लेगा ।"

"उसकी बातों से तो मुझे वह ठीक ही जान पड़ता है । इन आलोचकों को देखकर तो ऐसा प्रतीत होता है कि ये बहुत सस्ते दामों में खरीदे जा सकते हैं ।"

"परन्तु उसका यह विचार है कि इन आलोचकों को रिश्वत देकर अपने साथ मिलाना उसके वश के बाहर की बात है ।" डोरियन ने हँसकर कहा—"उसके पश्चात् धीरे-धीरे थियेटर की बत्तियाँ बुझने लगीं और मैंने भी जाने की अनुमति मांगी । उसने कुछ सिगारों की प्रशंसा की और मुझे कुछ देने भी चाहे, परन्तु मैंने लेने से इन्कार कर दिया । अगली रात को मैं पुनः उसी स्थान पर आ गया । मुझे देखकर उसने झुककर मेरा अभिवादन किया और मुझे विश्वास दिलाया कि मैं सच्ची कला को परखना जानता हूँ । यह सुनकर मुझे उस यहूदी पर बहुत क्रोध आया । वह शेक्सपीयर का अनन्य भक्त था । उसने एक बार मुझे बतलाया कि उसके ऋण केवल शेक्सपीयर के कारण ही हैं, क्योंकि वह सदा उसी के नाटक इस थियेटर में खेलने देता है । चाहे लोग अधिक संख्या में न आयें । इसमें वह गर्व का अनुभव करता था ।"

"डोरियन, उसका अभिमान करना स्वाभाविक ही है । बहुत से लोग जीवन के लिए भी अपना रुपया लगाकर ऋणी बन जाते हैं । परन्तु कविता में ऋणी हो जाना तो बड़े सम्मान की बात है । परन्तु तुम सिबलवेन से पहले पहल कब बोले ?"

"तीसरी रात्रि को ! उस दिन वह रोजीलैंड का अभिनय कर रही थी । उस रात को स्टेज के पीछे जाये बिना मुझ से नहीं रहा गया । मैंने उसके लिये कुछ फूल फेंके थे और उसने मेरी ओर देखा था । कम से कम मैंने तो यही सोचा था । बूढ़ा यहूदी मुझे अन्दर ले जाने पर तुला हुआ था । अतः मैंने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया । सिबलवेन से परिचय प्राप्त करने की अनिच्छा प्रकट करना कितनी विचित्र और

आश्चर्यजनक बात है।"

"मैं तो इसमें कोई विचित्रता नहीं देखता।"

"क्यों हेनरी ?"

"यह मैं तुम्हें किसी और दिन बतलाऊँगा। इस समय तो मैं उस लड़की के विषय में जानना चाहता हूँ।"

"तुम सिबल की बात पूछते हो। मुझे वह बहुत ही लज्जाशील और सहृदय मालूम पड़ी। उसमें बच्चों की-सी सादगी और पवित्रता है। जब मैंने उसको उसके असाधारण अभिनय के विषय में बतलाया तब उसके नेत्र आश्चर्य से खुले रह गये और उसको अपने गुणों तथा अपनी आकर्षणशक्ति पर सहसा विश्वास न हो सका। मेरे विचार में शायद इस पहली भेंट में हम दोनों ही घबरा से गये थे। कमरे के बाहर वह बूढ़ा यहूदी खड़ा होकर हम दोनों के विषय में बातें कर रहा था और हम बच्चों की भांति एक दूसरे का मुख ताक रहे थे। वह अब भी मुझे 'लार्ड' कहकर पुकार रहा था, परन्तु मैंने सिबल को बतलाया कि मैं इस प्रकार का कोई व्यक्ति नहीं हूँ। उसने बड़ी सादगी से मुझसे कहा—"तुम एक युवराज से लगते हो। अतः मैं तुम्हें इसी नाम से पुकारा करूँगी।"

"ओह डोरियन, सिबल यह जानती है कि किस प्रकार दूसरों को रिझाया जाता है।"

"हेनरी, तुम उसे नहीं समझते। वह तो मुझे भी नाटक का एक पात्र समझती थी। उसे जिन्दगी का कुछ पता नहीं, अधेड़ उम्र की उसकी माँ जीवन के संग्राम में थकी-सी मालूम पड़ती है। मानो उसने भी कभी अच्छे दिन देखे थे।"

"मैं सब समझता हूँ, इससे मुझे बहुत दुःख होता है।" लार्ड हेनरी ने अपनी अँगूठियाँ देखते हुए कहा।

"वह यहूदी मुझे उसका इतिहास बताना चाहता था, परन्तु मैंने उसे बतला दिया कि मुझे इस विषय में कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"तुमने बहुत ठीक किया, दूसरों की ट्रेजेडी में अपना ही स्वार्थ और छिछोरापन झलकता है।"

"मैं तो केवल मिलन के सिबल में ही उत्सुक हूँ, वह कहाँ से आई? उससे मुझे सरोकार नहीं। सिर से पैर तक वह स्वर्गीय पवित्रता की मूर्ति प्रतीत होती है। प्रत्येक रात्रि को मैं उसका अभिनय देखने जाता हूँ, और हर बार उसका अभिनय मुझे पहले से अच्छा मालूम पड़ता है।"

"शायद इसी कारण से तुम अब मेरे साथ कभी भोजन नहीं करते। मैं सोचता था कि तुम किसी विचित्र रोमांस में फँसे होगे और मेरा विचार ठीक निकला। परन्तु मैंने जिस रोमांस की कल्पना की थी, वह इस प्रकार का नहीं है।"

"हेनरी, दोपहर का भोजन तो हम प्रायः एक साथ ही करते हैं और तुम्हारे साथ मैं कितनी ही बार संगीत-घर भी गया हूँ।" डोरियन के नीले नेत्रों में आश्चर्य भरा पड़ा था।

"तुम रात्रि को बड़ी देर में लौटते हो।"

"मैं सिबल के अभिनय से अपने आप को वंचित नहीं रख सकता।" डोरियन ने कहा—"चाहे एक ही अंक क्यों न देखूं। उसकी उपस्थिति के लिए मैं व्याकुल हो उठता हूँ। और जब मैं हाथीदाँत की भाँति उसके श्वेत शरीर में छिपी हुई आत्मा की कल्पना करता हूँ तो सच-मुच काँप उठता हूँ।"

"डोरियन, क्या आज रात को तुम मेरे साथ भोजन कर सकते हो?" उसने अस्वीकृति में अपना सिर हिला दिया—"आज रात को वह इमोगन का अभिनय करेगी।" उसने उत्तर दिया—"कल रात को वह जूलियट बनेगी।"

"वह सिबलवेन कब रहती है?"

"कभी नहीं।"

"मैं तुम्हें बधाई देता हूँ।"

"तुम कितने निठुर हो। उसके अभिनय में संसार की सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्रियों का अभिनय भरा पड़ा है। उसमें बहुतों का व्यक्तित्व छिपा पड़ा है। तुम हँस रहे हो, परन्तु मैं कहता हूँ कि उसमें उच्चकोटि के कलाकार के सब गुण छिपे हुए हैं। मैं उससे प्रेम करता हूँ और यही मैं उससे चाहता हूँ। हेनरी, तुम तो जिन्दगी के बहुत से रहस्य जानते हो, तुम्हीं मुझे बतलाओ कि सिबलवेन को किस प्रकार अपनी ओर आकर्षित किया जाये, जिससे वह मुझसे प्रेम करने लगे। मैं शेक्सपीयर के रोमियो के हृदय में ईर्ष्या की आग सुलगाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि संसार के मृत प्रेमी हमारी उल्लासमयी हँसी सुनकर उदासीन हो जायें। हमारे प्रेम की एक श्वास उनकी धूल में प्राणों का संचार कर दे और उनकी राख को पीड़ा और वेदना में परिवर्तित कर दे। ओह भगवान्! हेनरी, मैं उसकी पूजा करता हूँ।" यह बोलते समय वह कमरे में इधर से उधर घूम रहा था। उसके गाल सुर्ख हो गए थे। वह यकायक बहुत तेज हो गया था। लार्ड हेनरी प्रसन्नता से डोरियन के मुख के भावों का अध्ययन कर रहा था। बासिल हालवर्ड के स्टूडियो में जिस लज्जाशील और भयभीत बालक से उसने प्रथम बार भेंट की थी, आज उसमें कितना महान् अंतर हो गया था। उसका स्वभाव उस पुष्प की भाँति विकसित हो गया था, जिसकी पंखुड़ियाँ आग की लपटों की भाँति बेसुध होकर झूम रही हों। किसी छिपे हुए अदृश्य स्थान से उसकी आत्मा अचानक प्रकट हो गई थी और इच्छायें उसका स्वागत करने के लिए आगे बढ़ रही थीं।

'अब तुम्हारा क्या करने का विचार है?" अन्त में लार्ड हेनरी ने पूछा।

"किसी रात्रि को मैं तुम्हें और बासिल को उसका अभिनय दिखाने के लिए ले जाना चाहता हूँ। परिणाम के विषय में मुझे तनिक भी चिन्ता नहीं है। तुम उसकी कला की प्रशंसा करोगे। उसके पश्चात् उसे उस यहूदी के चंगुल से छुड़ाना होगा। सिबलवेन ने उसके थियेटर

में तीन वर्ष तक काम करने का वचन दिया है। इस समय दो साल और दो महीने अभी तक शेष हैं। मुझे उस यहूदी को कुछ रुपया तो देना ही पड़ेगा। सब कुछ तय होने के उपरान्त मैं एक थियेटर मोल ले लूँगा, जिससे उसकी कला का भलीभाँति प्रदर्शन हो सके। वह संसार को उतना ही पागल बना देगी जितना मुझे बना दिया है।"

"यह उसके लिए असम्भव होगा।"

"नहीं, यह सम्भव है। उसके पास उच्चकोटि की कला ही नहीं बल्कि व्यक्तित्व भी है। तुमने मुझ से कितनी बार कहा है कि युग में परिवर्तन करने के लिए सिद्धान्तों की नहीं, व्यक्तित्व की आवश्यकता है।"

"अच्छा, तो हम किस दिन उसका अभिनय देखने चलें।"

"तनिक ठहरो, आज मंगलवार है, कल का दिन ठीक रहेगा। कल वह जूलियट का अभिनय करेगी।"

"अच्छी बात है, ब्रिस्टेल में आठ बजे मिलना। मैं बासिल को भी अपने साथ लेता आऊँगा।"

"हेनरी, आठ बजे नहीं, साढ़े छः का समय ठीक रहेगा। नाटक आरम्भ होने से पहले ही हमें वहाँ पहुँच जाना चाहिए। तुम पहला अंक अवश्य देखना, जब वह रोमियो से मिलती है।"

"साढ़े छः बजे ! क्या समय चुना है। यह समय तो चाय पीने या अंग्रेजी उपन्यास पढ़ने का होता है। अच्छा, सात बजे ठीक रहेगा। सात बजे से पूर्व कोई भी सभ्य आदमी भोजन नहीं करता। क्या तुम इस बीच में बासिल से मिलोगे? या मैं उसे लिख भेजूँ?"

"ओह, बेचारा बासिल ! एक सप्ताह से मैं उससे नहीं मिल सका हूँ। यह मेरे लिए बहुत लज्जास्पद है। उसने अपने आप ही एक सुन्दर फ्रेम छाँटकर उसमें मेरे चित्र को मढ़कर भेजा है। यद्यपि उस चित्र को देखकर मुझे ईर्ष्या हुई, क्योंकि यह ठीक एक महीना मुझ से छोटा है; परन्तु फिर भी मुझे प्रसन्नता ही हुई। मेरे विचार में तुम ही उसे कल के विषय में लिख देना। मैं उससे एकान्त में मिलना नहीं चाहता।

वह ऐसी बातें करता है जिससे मुझे क्रोध आ जाता है। वह मुझे अच्छे उपदेश देने लगता है।"

लार्ड हेनरी मुस्कराया—"आजकल लोगों को ऐसी चीजें देने का बहुत शौक है, जिनकी उनको नितान्त आवश्यकता होती है। मैं इसे उनकी सहृदयता की गहराई कहता हूँ।"

"ओह, बासिल जैसा निःस्वार्थ व्यक्ति मैंने अपने जीवन में दूसरा नहीं देखा।"

"बासिल में जो कुछ सौन्दर्य है, उसे वह अपनी कला को दान दे देता है। इसका परिणाम यह हुआ कि उसके जीवन में मिथ्या धारणाएँ, उनके सिद्धान्त और साधारण ज्ञान के अतिरिक्त और कुछ भी शेष नहीं रह गया है। मेरेप रिचित कलाकारों में से, जिनका व्यक्तित्व उल्लासमय होता है, उनकी कला उच्चकोटि की नहीं होती। अच्छे कलाकार अपनी रचनाओं में ही जीवित रहते हैं। अतः उनका व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त नीरस होता है। एक महान् कवि के जीवन में अन्य लोगों की अपेक्षा सबसे अधिक कविता का अभाव होगा। परन्तु साधारण श्रेणी के कवि प्रथम दृष्टि में ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। जितनी नीरस उनकी कविताएँ होती हैं उतने ही अच्छे वे देखने में लगते हैं। साधारण कोटि की कुछ कविताओं का संग्रह प्रकाशित कर वे अपने आप को बहुत बड़ा समझने लगते हैं। वे उन कविताओं में मग्न रहते हैं जिनको वे लिख नहीं सकते। उच्चकोटि के कवि ऐसी कविताएँ लिखते हैं जिनका अनुभव करने का वे साहस भी नहीं कर सकते।"

"हेनरी, क्या वास्तव में यह सत्य है?" डोरियन ने मेज़ पर रखी बड़ी-सी बोतल से अपने रूमाल में सुगन्धि छिड़कते हुए कहा—"यदि तुम्हारे ये विचार हैं तो ठीक ही होंगे। अच्छा, अब मैं चलता हूँ। इमोगेन मेरी प्रतीक्षा कर रही है। कल के विषय में भूलना नहीं, अच्छा नमस्कार।"

डोरियन के बाहर चले जाने के पश्चात् लार्ड हेनरी अपनी आँखें नीचे झुकाकर कुछ सोचने लगा। जितना डोरियन से बातचीत करते समय उसका मनोरंजन होता है उतना अन्य किसी व्यक्ति से नहीं होता। परन्तु फिर भी किसी अन्य व्यक्ति के प्रति उसका इतना आगाध प्रेम और अनुराग देखकर उसे तनिक भी क्रोध या ईर्ष्या नहीं हुई। उसे यह जानकर प्रसन्नता ही हुई। डोरियन में उसकी उत्सुकता और दिलचस्पी पहले से और भी बढ़ गई। प्राकृतिक विज्ञान के सिद्धान्तों से वह अत्यंत प्रभावित हुआ था, परन्तु अब उसके विषय का कोई महत्व नहीं रह गया था। दूसरों के व्यक्तित्व का अध्ययन उसने समाप्त कर दिया है परन्तु अब उसने अपनी व्याख्या करके अपना अध्ययन आरम्भ कर दिया है। मानव-जीवन—इसका अनुसंधान करने की ही उसकी प्रबल इच्छा हुई। इसके बराबर की कोई दूसरी वस्तु संसार में है! यह सत्य है कि जिन्दगी को सुख और दु:ख—इन दो पहलुओं में देखकर मनुष्य विना प्रभावित हुए नहीं रहता। भाँति-भाँति के विचार और विभिन्न परिस्थितियों का उस पर विशेष प्रभाव पड़ता है। कुछ विषय ऐसे होते हैं जिनको जानने के लिए स्वयं ही परिश्रम करना पड़ता है। कुछ रोग इस प्रकार के होते हैं जिनका पहले अपने ऊपर उपयोग किये बिना उनको विस्तार से समझना असम्भव है। उसका पारिश्रमिक उसे क्या मिलता है—उसके लिए संसार एक विचित्र रूप धारण कर लेता है। प्रेम और किसी बुद्धिमान मनुष्य की भावुकता भरी रंगीन जिन्दगी के तर्क-वितर्क का अध्ययन करना—कहाँ ये दोनों मिलते हैं, कहाँ पृथक् हो गए हैं, कहाँ इन दोनों में सामंजस्य है और कहाँ उनमें संघर्ष होता है। उसमें कितनी प्रसन्नता मिलती है, इसकी क्या कीमत देनी पड़ती है। इसका कोई महत्व नहीं। किसी भी सनसनीदार घटना का मूल्य चुकाया ही नहीं जा सकता।

वह इनसे परिचित था—उसके संगीतमयी भाषा में कहे मधुर शब्दों ने ही डोरियन की आत्मा को इस सुन्दर लड़की के सम्मुख झुकने

के लिए बाध्य किया है—इस विचार से उसके भूरे नेत्र प्रसन्नता से चमक उठे। बहुत कुछ हद तक तो डोरियन उसकी अपनी कृति ही है। समय से पहले ही उसने डोरियन को सब कुछ बतला दिया है। साधारण श्रेणी के आम लोग उस दिन की प्रतीक्षा करते हैं जब जिन्दगी स्वयं अपने रहस्य उनको बतलायेगी, परन्तु इने-गिने कुछ लोगों को ये सारे भेद यवनिका उठने से पहले ही पता चल जाते हैं। कभी-कभी यह कला का परिणाम होता है—विशेषतः साहित्य की कला का जो प्रेम और बुद्धि दोनों से एक साथ ही सम्बन्धित है। परन्तु कभी-कभी उलझा हुआ व्यक्तित्व कला का भार अपने ऊपर ले लेता है। वास्तव में व्यक्ति ही तो कला की वास्तविक और उच्च कृति है। क्योंकि कविता, मूर्तिकला और चित्रकला की भाँति जिन्दगी भी एक कला है।

हाँ—डोरियन समय से पहले ही सब कुछ जान चुका है। वसंत की ऋतु में ही उसने अपनी उपज काटनी आरम्भ कर दी है। यौवन की सिहरन और वासना उसके जीवन में उपस्थित है, जिनका आभास भी उसे मिल चुका है। उसके चरित्र का अध्ययन करने में प्रसन्नता मिलती है। उसके असाधारण सौन्दर्य और उसकी सुन्दर आत्मा को देखकर आश्चर्य होने लगता है। इसका अंत क्या होगा—इसका कोई महत्व नहीं। यह नाटक के उस सुन्दर अभिनेता की भाँति था जिसके सुख और जिसकी प्रसन्नता से मनुष्य प्रभावित नहीं होता, परन्तु जिसकी पीड़ा और वेदना दर्शकों के अन्तःस्थल का स्पर्श करती है।

आत्मा और शरीर, शरीर और आत्मा—दोनों कितने रहस्यमय हैं! आत्मा में कभी-कभी पशुता दिखाई देती है और शरीर में धार्मिक नैतिकता की झलकें देखने को मिलती हैं। इंद्रियाँ कभी आदर्शमय बन जाती हैं और बुद्धि का पतन हो सकता है। कौन कह सकता है कि कहाँ शारीरिक प्रेम का अंत होकर नैतिक प्रेम का आरम्भ होता है? साधारण श्रेणी के मनोवैज्ञानिक इसकी उचित परिभाषा नहीं दे सके हैं, विचित्र धाराओं में से किसी एक को स्वीकार कर लेना मनुष्य के

लिए बहुत कठिन है। क्या आत्मा एक छाया है जो पाप में मिली हुई है? या शरीर आत्मा में स्थित है? सूक्ष्म का स्थूल से पृथक् होना एक रहस्य है और उनका एक हो जाना भी एक भेद मालूम पड़ता है।

वह आश्चर्यचकित होकर सोचने लगा कि क्या हम मनोविज्ञान को एक ऐसा पृथक् विज्ञान बना सकते हैं जिसमें जिन्दगी का प्रत्येक पहलू साफ समझ में आ जाये। हम अपने आप को गलत समझते हैं और दूसरों को समझाने की तो शक्ति ही नहीं है। अनुभवों का कोई नैतिक लाभ नहीं है। अपनी गलतियाँ छिपाने के लिए हम उन्हें यह नाम दे देते हैं। नैतिक लोग इसे चेतावनी का द्योतक सतझते हैं। चरित्र को बनाने के लिये इसे आत्मिक बल कहते हैं। इसकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि इससे पता चलता है कि हमें क्या करना चाहिये और किस पथ का अनुकरण नहीं करना चाहिये। परन्तु अनुभव में वह शक्ति नहीं है जो हमारे हृदय पर अपना आधिपत्य जमा सके। अनुभवों से तो हमें यही ज्ञात हो सकता है कि हमारा भविष्य भी हमारे अतीत जैसा होगा। एक बार जिस पाप को हमने अपनी आत्मा का विरोध करके किया है, अब वही हम बहुत बार प्रसन्नता से करेंगे।

उसके लिये यह स्पष्ट हो गया था कि वासनाओं की वैज्ञानिक रूप से व्याख्या करने के लिये अनुभवों का ही सहारा लेना पड़ता है। इस समय डोरियन ही उसके पास एक ऐसा शिष्य था जिससे अच्छे और लाभदायक परिणाम पाने की आशा की जा सकती है। सिबलवेन के प्रति उसका अचानक प्रेम मनोवैज्ञानिक रूप से कम महत्व का नहीं था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि नये अनुभवों के लिये डोरियन की उत्सुकता और इच्छा का यहाँ पर एक विशेष स्थान है, परन्तु उसकी उत्सुकता साधारण न होकर बहुत उलझी हुई थी। उसका यौवन का यह प्रेम केवल वासनाओं की पूर्ति के लिये ही नहीं था। बल्कि अपनी कल्पना के सहारे उसने इसे बदल दिया था, और इसी के कारण स्थिति बहुत भयानक बन गई थी। वासनाओं की उत्पत्ति के विषय में हम सदा अपने

आपको धोखा देते रहते हैं; जिससे हम सदा इनसे भयभीत रहते हैं। प्राय: यह देखने में आता है कि जब हम दूसरों पर अनुभव करते हैं तब वास्तव में इसका अपने ऊपर ही अनुभव किया करते हैं।

लार्ड हेनरी इन्हीं विचारों के स्वप्न ले रहा था, तभी उसका नौकर आया जिसने भोजन के लिये तैयार हो जाने की याद कराई। उसने कुर्सी से उठकर खिड़की में से बाहर सड़क पर झाँका। सामने वाले मकान की खिड़कियाँ अस्त होते सूर्य की पीली किरणों में चमक रही थीं। खिड़कियों के शीशे गरम सोने की भाँति चमक रहे थे, ऊपर आकाश मुरझाये गुलाब के रंगों में मचल रहा था। उसने डोरियन की यौवन भरी जिंदगी के विषय में सोचा और यह सोचकर आश्चर्यचकित हुआ कि इसका अन्त कैसे होगा?

साढ़े बारह के लगभग घर पहुँचने पर उसने एक तार देखी। खोलने पर मालूम पड़ा कि डोरियन ने ही यह तार भेजी थी। लार्ड हेनरी को सूचित किया गया था कि उसने सिबलवेन से विवाह करने का निश्चय कर लिया है।

५.

"माँ, माँ, आज मैं बहुत खुश हूँ।" जीवन और संसार से थकी हुई उस स्त्री की गोद में अपना मुँह छिपाकर सिबल ने धीरे से कहा। अंधेरे कमरे में रखी हुई एक आराम कुर्सी पर बिजली के धुंधले प्रकाश की ओर पीठ किये वह स्त्री बैठी थी। "आज मुझे कितनी प्रसन्नता हो रही है।" उसने अपने शब्दों को दोहराया। "और मेरे साथ तुम्हें भी खुश होना चाहिये माँ।"

श्रीमती वेन अपने पतले-पतले गोरे हाथ सिवल के सिर पर रख चौकन्ने स्वर में बोली—"खुश" मानो सिवल के शब्द की प्रतिध्वनि थी। "मैं तो तभी प्रसन्न होती हूँ जब तुमको अभिनय करते देखती हूँ। तुम्हें भी अपने अभिनय के अतिरिक्त अन्य किसी विषय पर सोचना नहीं चाहिये। मि० ईसाक ने हमारे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया है और दूसरे हम पर उसका उधार भी है।"

सिबल ने उदास मुद्रा में अपना मुख ऊपर उठाया "रुपया—माँ ?" वह चिल्लाई—"धन का क्या महत्व है! प्रेम रुपये से कहीं बढ़कर है।"

"अपना पुराना कर्ज चुकाने के लिये और जेम्स के लिये उचित व्यवस्था करने के लिये मि० ईसाक ने हमें ५० पौंड उधार दिये हैं। ५० पौंड एक बड़ी भारी पूँजी है। मि० ईसाक ने हम पर बहुत दया की है।"

"माँ, वह एक भला आदमी नहीं है और जिस ढंग से वह मुझ से बातचीत करता है, मैं उसे घृणा करती हूँ।" सिवल ने खड़े होकर कहा और खिड़की के पास चली गई।

"मैं नहीं समझती कि उसके बिना हम किस प्रकार अपना निर्वाह कर सकती थीं।" बूढ़ी स्त्री ने संदिग्ध स्वर से उत्तर दिया।

सिबलवेन अपना सिर हिलाकर हँस दी—"माँ, अब हमें उसकी अधिक आवश्यकता नहीं रही। हमारी जिन्दगी अब युवराज (डोरियन) के हाथों में है।" इतना कहकर वह रुक गई। उसे अपने रक्त के प्रवाह में गुलाब बहते जान पड़े जिनकी प्रतिछाया उसके कपोलों पर दिखाई पड़ी। जल्दी-जल्दी श्वास लेने के कारण उसके होंठ खुल गये और काँपने लगे। दक्षिण से आती हुई हवा से वह अपने प्रेम की कल्पना में सिहर उठी और उसके वस्त्र हवा में उड़ने लगे। "मैं उसे प्यार करती हूँ।" उसने सहज भाव में कहा।

"मेरी बच्ची, तुम मूर्ख हो।" तोते की भाँति रटा हुआ उत्तर उसने दोहरा दिया। जिस ढंग से उसने नकली हीरों वाली अंगूठियों से सुसज्जित

अपनी उँगलियाँ नचाईं, उससे स्पष्ट हो गया कि उसके शब्दों में कितना झूठ और आडम्बर भरा था।

सिवल पुनः हँसने लगी, उसके स्वर में पिंजरे में बन्द पक्षी की प्रसन्नता भरी पड़ी थी। उसकी आँखों में संगीत की मधुर ध्वनि गूँज रही थी, जिससे उसके नेत्र चमकने लगे थे। उसने क्षण भर के लिए अपने नेत्र बन्द कर लिये जिससे वे उसका रहस्य न बता दें। जब उसने अपनी आँखें पुनः खोलीं तब उस अद्भुत स्वप्न की छाया वहाँ शेष नहीं रही थी।

पुरानी कुर्सी पर बैठी उसकी माँ अपने पतले-पतले होंठों से अपनी विद्वत्ता जताने लगी। उपदेशों में कायरता स्पष्ट रूप से झलक रही थी और साधारण ज्ञान का पूर्णरूप से अभाव था। सिबल ने अपनी माँ की बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। वह अपने प्रेम के पिंजरे में स्वतन्त्रता का अनुभव कर रही थी, जहाँ उसका युवराज उसके साथ था। अपनी स्मृति के आधार पर वह डोरियन की काल्पनिक मूर्ति का पुनः निर्माण कर रही थी। उसने अपनी आत्मा को उसे ढूँढने के लिये भेजा था और वह अपने प्रयास में सफल हुई थी। वह उसके चुम्बन का अपने मुख पर अनुभव कर रही थी और उसके श्वास से उसकी पलकें गरम हो रही थीं।

सिबल की माँ ने यकायक अपने बातचीत के रुख को बदल दिया और उसकी विद्वत्ता नये अनुसन्धान करने लगी। शायद यह युवक धनी हो, यदि यह सत्य है तो विवाह की बात उठाई जा सकती है। उसने सिबल के पतले होंठों को हिलते और मुस्कराते हुए देखा।

अचानक सिबल ने कुछ कहने की आवश्यकता अनुभव की। यह चुप्पी उसे असह्य जान पड़ी। "माँ···माँ···" उसने चिल्लाकर कहा—"वह मुझे इतना प्यार क्यों करता है? अपने प्यार करने का कारण मैं जानती हूँ, क्योंकि उसकी शक्ल-सूरत प्रेम की मूर्ति जैसी है। परन्तु उसे मुझ में ऐसी कौन-सी विशेषता दिखाई देती है। मैं उसके योग्य नहीं हूँ।

परन्तु फिर भी मैं यह नहीं जानती कि अपने-आप को उसके सम्मुख इतना छोटा समझने पर भी मैं यह अनुभव नहीं करती। मुझे तो अपने पर अभिमान होने लगता है। माँ, क्या तुम भी पिता जी को इतना ही प्यार करती थीं जितना मैं अपने युवराज को करती हूँ।"

सस्ते पाउडर की सतह के नीचे से उसके कपोलों का पीला रंग स्पष्ट रूप से झलकने लगा और किसी अज्ञात वेदना से उसने अपने मुर्झाये हुए होंठ दाँतों में दबा लिये। सिबल बड़ी शीघ्रता से अपनी माँ की ओर गई और उसके गले में दोनों हाथ डालकर चूम लिया। "माँ, मुझे क्षमा करो। मैं जानती हूँ कि पिताजी के विषय में बातें करने से तुम्हें कितना दुःख होता है, परन्तु इसका कारण यही है कि तुम उन्हें बहुत प्यार करती थीं। माँ, इतनी उदास मत हो। मैं आज उतनी ही प्रसन्न हूँ जितनी तुम बीस वर्ष पहले थीं। ओह, मुझे सदा के लिये खुश रहने दो।"

"मेरी बच्ची, प्रेम का नाटक खेलने के लिये तुम अभी बहुत छोटी हो। फिर इस युवक के विषय में अभी तुम जानती ही क्या हो? तुम उसका नाम तक नहीं जानतीं। तुम्हारा यह रोमांस इस समय परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है। जेम्स आस्ट्रेलिया जा रहा है और मेरे सामने अन्य गम्भीर समस्याएँ हैं। इस समय मैं इतना अवश्य कहूँगी कि इस नाटक का आरम्भ करने से पूर्व तुम्हें तनिक और सोचना-विचारना चाहिये था। जैसा अभी मैंने कहा—यदि वह अमीर है तो···"

"ओह माँ···माँ···मुझे खुश रहने दो।"

नाटक में अभिनय करने वाला जिस प्रकार प्रतिदिन के कामों में भी झूठा अभिनय करने लगता है क्योंकि यह उसका दूसरा स्वभाव बन जाता है, उसी प्रकार श्रीमती वेन ने सिबल की ओर देखा और अपने गले से लगा लिया। इसी समय कमरे का द्वार खुला और सूखे हुए भूरे बालों वाला एक युवक अन्दर आया। उसका शरीर दुबला-पतला था, परन्तु उसके हाथ-पाँव काफी बड़े थे जो चलते समय भद्दे लगते थे। वह अपनी बहन की भाँति सभ्य-समाज का अंग प्रतीत नहीं होता था। उन दोनों

को देखकर उनके भाई-बहन के सम्बन्ध की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। श्रीमती वेन ने उसे बड़े ध्यान से देखा। उसने अपनी कल्पना से अपने पुत्र को दर्शकों की श्रेणी में स्थान दिया था और अपने अभिनय की सफलता पर गर्वित हो रही थी।

"ओह सिबल, अपने कुछ प्यार मेरे लिये भी रख छोड़ना।" युवक ने बनावटी क्रोध दिखलाते हुए कहा।

"परन्तु प्रिय, तुम तो यह पसन्द ही नहीं करते।" उसने चिल्लाकर कहा और अपने भाई के गले से लिपट गई।

जेम्स वेन ने अपनी बहन की ओर बड़े स्नेह से देखा—"सिबल, आज मैं तुम्हारे साथ कहीं घूमने के लिये जाना चाहता हूँ। मैं नहीं सोचता कि इस भयानक लन्दन को देखने का अवसर मुझे फिर कभी मिलेगा। इतना मुझे विश्वास है कि फिर यहाँ आने की मेरी इच्छा नहीं है।"

"बेटा, ऐसी डरावनी बातें क्यों मुँह से निकालते हो ?" श्रीमती वेन ने एक लम्बी साँस खेंचते हुए कहा और नाटक की एक पुरानी पोशाक की मरम्मत करने में मग्न हो गई। उसे निराशा हो रही थी, क्योंकि उसके अभिनय में जेम्स ने उसका साथ नहीं दिया था, अन्यथा दृश्य बहुत सुन्दर बन गया होता।

"क्यों न कहूँ माँ ? मैं यही चाहता हूँ।"

"तुम्हारी बातें सुनकर मुझे दुःख होता है। मुझे विश्वास है कि आस्ट्रेलिया से तुम एक उच्च पदवी पाकर लौटोगे। मेरे विचार में वहाँ सोसाइटी नाम की कोई चीज़ नहीं है, इसलिए धन कमाकर सभ्य बनने के लिए तुम्हें लन्दन ही वापिस आना पड़ेगा।"

"सोसाइटी !" युवक ने कहा—"मैं इस विषय में कुछ भी जानना नहीं चाहता। मै उतना धन कमाना चाहता हूँ जिससे तुम्हें और सिबल को इस नाटक मंडली से बाहर निकाल सकूँ। मैं इससे घृणा करता हूँ।"

"ओह प्रिय !" सिबल ने हँसते हुए कहा—"तुम कितने कठोर हो ! परन्तु क्या वास्तव में तुम मेरे साथ घूमने चल रहे हो ? कितनी अच्छी बात है । मैं तो समझती थी कि तुम अपने मित्रों से विदा लेने जाओगे—टाम हार्डी, जिसने तुम्हें वह भद्दा-सा पाइप भेंट स्वरूप दिया था, या नेगलेंगटन जो वह पाइप पीने पर तुम्हारी हँसी उड़ाया करता है । मुझे बहुत प्रसन्नता है कि अन्तिम सन्ध्या तुमने मेरे साथ बिताने का निश्चय किया है । कहाँ घूमने चलें ? अच्छा पार्क चलो ।"

'पार्क जाने योग्य मेरे वस्त्र नहीं हैं ।" उसने कृत्रिम क्रोधित स्वर में कहा, "वह तो केवल धनाढ्य लोगों के लिए ही है ।"

'प्रिय, पागलों-सी बातें न करो ।" उसने जेम्स की बाँह को ऊपर उठाते हुए कहा ।

वह क्षण भर के लिए झिझका—"अच्छी बात है ।" अन्त में उसने कहा—"लेकिन तुम कपड़े पहनने में अधिक समय न लगाना ।" यह सुनकर वह नाचती हुई कमरे से बाहर चली गई । सीढ़ियाँ चढ़ते समय उसके गाने का स्वर कमरे में स्पष्ट रूप से सुनाई दे रहा था, उसके दौड़ने की आहट जेम्स के कानों में गूँजने लगी ।

वह दो-तीन बार कमरे में इधर से उधर घूमा, फिर कुर्सी पर बैठी शान्त और स्थिर मूर्ति की ओर बढ़ा—"माँ, क्या मेरा सब सामान तैयार हो गया है ?" उसने पूछा ।

"जेम्स, सब तैयार है ।' अपने काम में ही आँखें गड़ाये उसने उत्तर दिया । पिछले कुछ महीनों से जब वह अपने अक्खड़ और कठोर पुत्र के साथ अकेली होती थी, उसके मन में एक प्रकार की अशान्ति-सी होने लगती थी । उससे आँखें मिलाने पर उसका झूठा और बनावटी स्वभाव सिहर उठता था । कभी-कभी वह सोचा करती थी कि उसके पुत्र को उस पर सन्देह तो नहीं होता । उसकी चुप्पी उसके लिए असह्य बन जाती थी । अतः वह स्वयं ही जेम्स पर दोषारोपण करने लगती थी । जिस प्रकार स्त्रियाँ अचानक ही एक विचित्र ढंग से दूसरों पर प्रहार

करती हैं, उसी भाँति अपना बचाव करने के लिये वे स्वयं पहले दूसरों पर आक्रमण कर देती हैं—"जेम्स, मेरे विचार में तुम अपने समुद्री-जीवन से संतुष्ट रहोगे।" उसने कहा—"इतना याद रखना, कि यह रास्ता तुमने स्वयं ही चुना है, तुम एक वकील के दफ्तर में भी काम कर सकते थे। वकील सम्मानित और उच्च श्रेणी में गिने जाते हैं और देश के उच्च परिवारों के साथ भोजन करने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त होता है।"

"मुझे दफ्तर और क्लर्कों से घृणा है।" उसने उत्तर दिया—"परन्तु तुम ठीक कहती हो, अपने जीवन का मार्ग मैंने स्वयं चुना है। मैं तो तुमसे बस इतना अनुरोध करूँगा कि तुम सिबल की देखभाल करना, उस पर किसी प्रकार की विपत्ति या दुःख न आये। माँ, तुम उसकी निगरानी करना।"

"जेम्स, आज तुम कैसी बातें कर रहे हो ? मैं तो सदा से सिबल की देखभाल करती हूँ।"

"मैंने सुना है कि एक आदमी थियेटर में रोज आता है और अन्दर जाकर सिबल से बातें करता है। क्या यह सच है ? इसका क्या मतलब ?"

"जेम्स, तुम ऐसी बातें कर रहे हो जिन्हें तुम नहीं समझते। इस पेशे से दूसरों की कृपादृष्टि पाने के हम आदी हो गये हैं। एक दिन मेरे पास भी कितने ही युवक मिलने आया करते थे। परन्तु उस समय लोग अभिनय की वास्तविक कला को समझने लगे थे। मुझे अभी तक निश्चित रूप से पता नहीं चला है कि सिबल का इस युवक के साथ कैसा सम्बन्ध है। परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह युवक बहुत सज्जन और उच्च परिवार का है। वह मेरे साथ सदा अत्यन्त नम्रता का व्यवहार करता है। उसकी वेशभूषा से वह बहुत धनी मालूम पड़ता है। उसके भेजे हुए फूल बहुत सुन्दर होते हैं।"

"और तुम उसका नाम तक नहीं जानतीं !" उसने कड़े स्वर में पूछा।

"नहीं।" उसने शान्त मुद्रा में कहा—"उसने अभी तक अपना असली नाम नहीं बताया है, यह बात मुझे बहुत रोमांटिक-सी लगती है, शायद वह धनाढ्य-समाज का एक सदस्य है।"

जेम्स वेन ने अपने होंठ चबा लिये—"माँ, सिवल के ऊपर कड़ी नज़र रखना।" उसने चिल्लाकर कहा, "उसकी देखभाल करना।"

"बेटा, तुम मुझे बहुत दुःख देते हो। सिबल पर सदा मेरी कड़ी दृष्टि रहती है। यदि यह युवक धनी है, तो मेरी समझ में नहीं आता कि सिबल क्यों न उससे अपना मेल-जोल बढ़ाये। मैं तो उसे उच्च परिवार का एक धनी युवक समझती हूँ। उसको देखने से यह सत्य प्रतीत होता है। सिवल का इससे अच्छा सौभाग्य क्या होगा यदि उसका विवाह एक युवक से हो जाये, दोनों का जोड़ा बहुत भला प्रतीत होगा। उसके चेहरे का सौन्दर्य सचमुच ही सराहनीय है। लोग उसे घूर-घूरकर देखने लगते हैं।"

जेम्स अपने-आप मन ही मन बुड़बुड़ाता रहा और खिड़की के शीशे पर अपनी उंगलियों से किसी वाद्य का स्वर निकालता रहा। वह कुछ कहने के लिए मुड़ा ही था, तभी सामने के द्वार से सिबल भागती हुई आई।

"तुम दोनों कितने गम्भीर बन गये हो।" उसने चिढ़कर कहा—"बात क्या है?"

"कुछ नहीं।" उसने उत्तर दिया, "मेरे विचार में मनुष्य को कभी-कभी गम्भीर भी रहना चाहिये। अच्छा माँ, मैं पाँच बजे भोजन करूँगा, मेरी कमीजों के अतिरिक्त सारा सामान बँध चुका है, तुम कोई चिन्ता न करना।"

"चिरंजीव रहो।" उसने अभिमान भरे स्वर में अपने पुत्र को आशीर्वाद दिया। जिस ढंग से उसका पुत्र उससे बातचीत कर रहा था, उससे वह अत्यन्त क्रोधित हो गई थी। जेम्स की दृष्टि ने उसे भयभीत भी बना दिया था।

"माँ, मेरा चुम्बन लो।" सिबल बोली। फूलों के समान उसके होठों ने उसके मुरझाये हुए कपोल को चूमकर उसके क्रोध को शान्त कर दिया।

"मेरी बच्ची, मेरी बच्ची।" श्रीमती वेन चिल्लाईं और छत की ओर ताकने लगीं, मानो नाटक-गृह की गैलरी की कल्पना कर रही हों।

"सिबल, चलो।" उसके भाई ने और अधीर होकर कहा। अपनी माँ के इस प्रेम-प्रदर्शन से उसे घृणा थी।

तेज़ हवा चलने से सूर्य की किरणें सीधी न पड़कर बीच में ही तितर-बितर हो जाती थीं। सुनसान यूस्टन रोड पर वे दोनों चले जा रहे थे। रास्ते में गुजरते हुए लोग आश्चर्यचकित होकर इन दोनों की ओर देख रहे थे। एक ओर था अक्खड़ और कठोर यौवन, उदासीन मुख, ढीले-ढीले कपड़े और दूसरी ओर सिबल का इतना सभ्य, आकर्षक और स्वर्गीय सौन्दर्य, मानो एक साधारण-सा माली गुलाब के फूल के साथ घूम रहा हो।

लोगों के इस प्रकार ध्यान से देखने पर जेम्स आपे से बाहर हो जाता था। जिस प्रकार अपने जीवन के सायंकाल में उच्च प्रसिद्ध कलाकार किसी को अपनी ओर घूरते देखकर क्रुद्ध हो उठते हैं वही दशा उसकी भी थी। सिबल पर उसका क्या प्रभाव पड़ रहा है, वह इससे अनभिज्ञ था। उसका प्रेम हँसी बनकर उसके होठों पर नाच रहा था। वह अपने युवराज के विषय मे सोच रही थी और इसी प्रकार उसकी कल्पना करते रहना चाहती थी। इसी कारण से वह उसकी चर्चा न करके जेम्स से अन्य विषयों पर बातें कर रही थी—वह कौन से जहाज में जायेगा। जेम्स को उस द्वीप में कितना सोना मिलेगा, लाल कमीज़ें पहने डाकुओं से वह जिस राजकुमारी की जान बचायेगा, वह कैसी होगी? उसे केवल मल्लाह या सामान ढोते रहने का ही काम नहीं करते रहना है। जिन्दगी भर तक मल्लाह का जीवन बिताना तो सचमुच ही भयानक है। एक जहाज में ही रात-दिन काम करना, जहाँ बाहर समुद्र

की उत्ताल चिल्लाती हुई लहरें सदा अन्दर आने को उत्सुक रहती हैं, भयानक तेज़ हवा के झोंके जिसके मस्तूलों को रिबन के छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़ने का सदा प्रयत्न करते रहते हैं। मैलबॉर्न पहुंचकर कप्तान को नमस्कार करके वह सोने की खोज में खेतों में चला जायेगा। एक सप्ताह के भीतर ही उसे सोने का एक बड़ा भारी ढेला मिलेगा, जिसे गाड़ी में रखकर वह छः पुलिस वालों की सहायता से किनारे पर ले आयेगा। डाकू उस पर तीन बार आक्रमण करेंगे और तीनों बार वह उन्हें मार भगायेगा। परन्तु नहीं, यह सब नहीं होगा। वह सोने के खेतों में कभी जायेगा ही नहीं। वे बहुत भयानक स्थान होते हैं, जहाँ लोग शराब के नशे में चूर होकर एक-दूसरे पर गोलियां चलाते हैं और गालियां निकालते हैं। वह एक भला किसान बनेगा और एक शाम को घोड़े पर सवार होकर घर लौटते समय एक चोर को सुन्दर राजकुमारी को काले घोड़े पर भगाते देखकर उसे बचा लेगा। स्वभावतः दोनों एक-दूसरे से प्रेम करने लगेंगे और दोनों का विवाह हो जायेगा। फिर वे वापस लौटकर लन्दन के एक बहुत बड़े मकान में रहने लगेंगे। उनका भविष्य सचमुच ही बहुत सुन्दर है। परन्तु उसे एक सज्जन पुरुष बनना पड़ेगा, वह कभी क्रोध नहीं करेगा और व्यर्थ में अपना धन खर्च नहीं कर डालेगा। यद्यपि उम्र में वह उससे केवल एक वर्ष बड़ी है परन्तु उसने जिन्दगी के बहुत से पहलू देख रखे हैं। वह हर मेल से उसे पत्र लिखेगा और सोने से पूर्व रोज़ प्रार्थना किया करेगा। भगवान् बहुत अच्छे हैं और वे उसकी देख-भाल करेंगे। वह उसके लिये भगवान् से प्रार्थना करेगी और कुछ वर्षों में वह धन कमाकर वापस लौट आयेगा।

जेम्स उदास मुद्रा में अपनी बहन की सब बातें सुन रहा था। उसने इनका कोई उत्तर नहीं दिया। अपना घर छोड़ते समय उसे दुःख हो रहा था।

उसके उदास तथा दुःखी होने का केवल यही एक कारण नहीं था। यद्यपि संसार के अनुभव उसे प्राप्त न थे, परन्तु उसकी अनुपस्थिति में

सिबल पर क्या संकट पड़ सकते हैं, इसका अनुमान वह लगा रहा था। जो लड़का सिबल से प्रेम कर रहा है, वह उसका भला नहीं करेगा। वह एक सज्जन पुरुष है और इसी कारण से उसके लिये वह घृणा का पात्र है, क्योंकि इस श्रेणी के सब लोगों से वह घृणा करता है। वह अपनी माँ के खोखले स्वभाव से भी परिचित था और इसी में उसने सिबल और उसकी प्रसन्नता के लिए बड़ा भारी खतरा देखा। बच्चे आरम्भ में अपने माता-पिता को प्यार करते है, ज्योंही वे बड़े हो जाते हैं तब उनको न्याय की दृष्टि से परखने लगते हैं और कभी-कभी क्षमा भी कर देते हैं।

उसकी माँ! वह उससे कुछ बातें पूछना चाहता था जो इतने महीनों से उसके मस्तिष्क में चक्कर लगा रही थीं। गसने थियेटर में इस विषय में कुछ सुना था। एक रात को जब वह स्टेज के द्वार पर खड़ा था, उसकी भनक उसके कानों में पड़ी थी और भाँति-भाँति के विचार उसके मन में दौड़े थे। जिस प्रकार शिकारी कोड़े से किसी के मुख पर वार करे, उसे वैसा ही अनुभव हुआ था। उसकी भौंहें बीच में परस्पर मिल गई थीं। वेदना से उसने अपने होंठ चबा लिये थे।

"जेम्स, जो कुछ मैं कह रही हूँ, तुम उसका एक शब्द भी नहीं सुन रहे हो। कुछ तो कहो।"

"मैं क्या कहूँ ?"

"ओह ! यही कि तुम सदा एक अच्छे लड़के रहोगे और हम लोगों को कभी नहीं भूलोगे।" उसने मुस्कराकर उत्तर दिया।

उसने अपने कंधे हिलाये "मुझसे अधिक तो तुम्हारी मुझे भूल जाने की सम्भावना है।"

उसका मुख लज्जा से आरक्त हो गया। "प्रिय, तुम्हारा मतलब क्या है ?" उसने पूछा।

"मैंने सुना है कि तुमने एक नया मित्र बनाया है। वह कौन है ? तुमने उसके विषय में मुझे क्यों नहीं बतलाया ? वह तुम्हारा भला नहीं चाहता।"

"प्रिय चुप रहो।" उसने कहा। "उसके विरुद्ध कुछ भी नहीं कहो। मैं उससे प्रेम करती हूँ।"

"तुम उसका नाम तक नहीं जानतीं।" लड़के ने उत्तर दिया। "वह कौन है ? यह जानने का मुझे अधिकार है।"

"उसका नाम युवराज है। क्या तुम्हें यह नाम पसन्द नहीं ? कभी यह मत भूलना कि अभी तक तुम मूर्ख ही हो। एक बार उसे देख लेने पर तुम उसे संसार का सबसे अनोखा व्यक्ति समझने लगोगे। आस्ट्रेलिया से वापस लौट आने पर किसी दिन मैं तुम्हें उससे मिलाऊँगी। तुम उसे बहुत पसन्द करोगे। सब लोग उसे पसन्द करते हैं और मैं.... मैं उसे प्यार करती हूँ। काश कि आज रात को तुम थियेटर में आ सकते। वह आज आएगा और मैं जूलियट का अभिनय करूंगी। ओह ! मैं कैसे अपना पार्ट खेलूंगी। प्रिय, एक ऐसे आदमी की कल्पना करो जो प्रेम करता हो और फिर नाटक में जूलियट का अभिनय करे। वह वहाँ बैठा होगा और उसकी प्रसन्नता के लिये मैं अभिनय करूंगी। मुझे भय है कि कहीं मेरे अस्वाभाविक अभिनय से नाटक कम्पनी डर न जाये। प्रेम में मनुष्य अपनी सुध-बुध भूल जाता है। बेचारा ईसाक शराबगृह में अपने अवारा मित्रों के सम्मुख मुझे एक उच्च कलाकार कहता है, अभी तक वह मुझे एक सिद्धान्त बतलाता आता है, परन्तु आज उसे मेरी वास्तविकता प्रकट करनी होगी। मैं यह सब अनुभव कर रही हूं, इसका कारण मेरा युवराज, मेरा सुन्दर प्रेमी है। परन्तु फिर भी मैं निर्धन हूँ निर्धन ? इसका क्या महत्व है ? जब गरीबी द्वार पर खड़ी होकर रास्ता रोक लेती है, तब प्रेम खिड़की की राह अन्दर आ जाता है। हमारे मुहावरे फिर से लिखे जाने चाहिएं। वे सर्दियों में लिखे गये थे, परन्तु अब गर्मियाँ आ गई हैं। युग बदल गया है। मेरे लिये बसन्त ऋतु है, नीले आकाश में मुझे फूल नाचते दिखाई पड़ रहे हैं।

"वह बहुत ही सज्जन और भला युवक है ?" उसने उदास स्वर में पूछा।

"एक युवराज।" उसने संगीत भरे स्वर में कहा—"तुम इससे अधिक क्या चाहते हो ?"

"वह तुम्हें कड़ियों में बाँध लेना चाहता हो ?"

"स्वतन्त्र रहने की कल्पना से ही मैं कांप उठती हूँ।"

"मैं चाहता हूँ कि तुम उससे सावधान रहो।"

"उसको देखना ही उसकी पूजा करना है और उसको जानना उस पर विश्वास करना है।"

"सिबल, उसने तुम्हें पागल बना दिया है।"

सिबल ने हँसकर उसका हाथ पकड़ लिया—"ओह प्रिय, तुम तो सौ साल के बूढ़ों जैसी बातें करते हो। एक दिन तुम स्वयं प्रेम करने लगोगे तब तुम इसका महत्व समझ सकोगे। इतने उदास न हो। यह सोचकर तो तुम्हें प्रसन्नता होनी चाहिये कि तुम मुझे उतना सुखी छोड़े जा रहे हो जितना मैं पहले कभी नहीं थी। अब तक जिन्दगी हम दोनों के लिये बड़ा कठिन संघर्ष बनी रही है, परन्तु अब ऐसा नहीं होगा। तुम एक नई दुनियाँ में जा रहे हो और मैंने एक दुनियाँ खोज निकाली है। ओह ! यहाँ दो कुर्सियाँ पड़ी हैं। आओ, यहाँ बैठकर जाते हुए लोगों को देखें।"

लोगों की भीड़ में वे कुर्सियों पर बैठ गये। सड़क के पार लाल फूलों की चादर गोलाकार आग-सी प्रतीत हो रही थी। श्वेत रंग की धूल तेज हवा के कारण आकाश में झूल रही थी। स्त्रियों की गहरे रंग की छतरियाँ बड़ी-बड़ी तितलियों की भाँति नाच रही थीं।

बातों-बातों में उसने अपने भाई को विवश कर दिया कि वह अपने विषय में, अपने भविष्य और अपने उद्देश्य की बातें करे। वह धीरे-धीरे अपने-आपसे संघर्ष करके बोल रहा था। जिस प्रकार किसी खेल में खिलाड़ी परस्पर उड़ते हुए संकेत करते हैं उसी प्रकार वे दोनों भी रुक-रुककर बातें कर रहे थे। अपनी प्रसन्नता को प्रकट न कर सकने के कारण वह कुछ-कुछ निराश-सी हो रही थी। वह जेम्स के मुख पर

पूर्ण उल्लास की प्रतिछाया देखने के बदले, मुस्कान की धुंधली-सी रेखा देखने में ही सफल होती थी। कुछ समय के पश्चात् वह चुप हो गई। अचानक ही उसे सुनहरे भूरे बालों और किसी के हंसते हुए होठों की एक झलक दिखाई दी। एक खुली गाड़ी में डोरियन दो स्त्रियों के साथ चला जा रहा था।

वह उछलकर खड़ी हो गई। "वह जा रहा है।" वह चिल्लाई।

"कौन ?" जेम्स वेन ने पूछा।

"युवराज !" उसने गाड़ी की ओर देखते हुए उत्तर दिया।

वह झट से खड़ा हो गया और जल्दी से उसका हाथ पकड़कर बोला—"मुझे उसे दिखाओ। वह कौन-सा है ? यहीं से बता दो। मैं उसे अवश्य देखूंगा।" उसने कहा परन्तु उसी क्षण बर्विक के ड्यूक की चार घोड़ों वाली बहुत बड़ी गाड़ी आ गई, जिससे वे कुछ भी नहीं देख सके। उसके हटने पर डोरियन की गाड़ी पार्क के बाहर जा चुकी थी।

"वह चला गया।" सिबल ने उदास स्वर में कहा—"काश, तुम उसे देख लेते।"

"मेरी भी यही इच्छा थी। जिस प्रकार स्वर्ग में परमात्मा का होना सत्य है, उसी प्रकार मेरी यह प्रतिज्ञा भी बहुत सच्ची होगी कि यदि उसने तुम्हारे साथ कोई विश्वासघात किया तो मैं उसकी हत्या कर डालूंगा।"

उसने भयभीत होकर अपने भाई की ओर देखा। जेम्स ने अपनी प्रतिज्ञा दोहराई। उसके शब्द तलवार की भाँति हवा को चीरते गये। लोग आश्चर्य से उन दोनों को बड़े ध्यान से देखने लगे। पास ही खड़ी एक स्त्री हँस दी।

"प्रिय चलो" उसने धीरे से कहा। वह भीड़ को चीरती हुई आगे चली जा रही थी और जेम्स उसके पीछे-पीछे चुपचाप चला जा रहा था। उसे अपनी प्रतिज्ञा पर प्रसन्नता हो रही थी।

जब वे बुत के पास पहुँच गये तो सिबल घूमकर खड़ी हो गई।

उसकी आँखों में दया और सहानुभूति भरी पड़ी थी जो हँसी बनकर उसके होठों पर नाच उठी। उसने भाई की ओर ध्यान से देखा—"प्रिय, तुम बिल्कुल बेवकूफ हो। बहुत जल्दी आपे से बाहर होकर अपनी सुध-बुध खो बैठते हो। तुम कैसे इतनी भयानक बातें अपने मुँह से निकाल सकते हो। तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो। तुम ईर्ष्या के वशीभूत होकर कठोर बन गये हो। ओह! मैं चाहती हूँ कि तुम भी किसी से प्रेम करते होते। प्रेम मनुष्य को भला आदमी बना देता है और जो कुछ तुमने कहा है वे नीच लोगों की बातें हैं।"

"मैं सोलह साल का हो चुका हूँ।" उसने उत्तर दिया—"जो कुछ मैं सोच रहा हूँ, मैं उसका मतलब भली भाँति समझता हूँ। माँ तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकेंगी। वह तुम्हारी देखभाल करना भी नहीं जानतीं। मैं सोचता हूँ कि मैं आस्ट्रेलिया न जाता तो अच्छा था। मैं नहीं जाऊँगा। यदि कागजों पर हस्ताक्षर इत्यादि न किये होते तो मैं कभी न जाता।"

"ओह जेम्स! इतने गम्भीर न बनो। तुम उन पुराने नाटकों में नायक का अभिनय कर रहे हो जिनमें अभिनय करना माँ को बहुत पसन्द है। मैं तुमसे झगड़ा नहीं करूँगी। मैं उसे जानती हूँ और उसे देखकर पूर्णरूप से प्रसन्न हूँ। हम परस्पर कभी झगड़ा नहीं करेंगे। मैं जानती हूँ कि जिसे मैं प्यार करती हूँ, तुम उसे कभी हानि नहीं पहुँचाओगे।"

"हाँ, जब तक तुम उसे प्यार करती रहोगी।" उसने उदास स्वर में उत्तर दिया।

"मैं उसे सदा प्यार करती रहूँगी।" उसने चिल्लाकर कहा।

"और वह?"

"वह भी सदा के लिये मुझे प्यार करता रहेगा।"

"उसे करना चाहिये।"

वह उससे अलग होकर खड़ी हो गई। तब हँसकर उसने उसका हाथ

पकड़ लिया। वह अभी तक निरा बालक ही तो था।

उसी बुत के सामने उन्होंने एक बस पकड़ी जिसने उनको उनके छोटे-से मकान के सामने उतार दिया। पाँच बज चुके थे और नाटक में अभिनय करने से पूर्व उसे कुछ घंटों तक आराम करना था। जेम्स ने उसे वैसा करने के लिये विवश किया। उसने कहा कि वह शीघ्र ही अब उससे विदा लेगा क्योंकि इस समय माँ नहीं है, माँ अवश्य ही कोई ऐसा दृश्य बना देगी जिससे वह घृणा करता है।

सिबल के कमरे में दोनों एक दूसरे से अलग हुए। जेम्स के हृदय में इस नये व्यक्ति के प्रति ईर्ष्या तथा बहुत भयानक घृणा उत्पन्न हो गई थी क्योंकि वह उन दोनों के बीच में दीवार बनकर आ गया था। परन्तु फिर भी जब सिबल की बाहों ने उसकी गर्दन को घेर लिया, जब उसकी अंगुलियाँ जेम्स के बालों में उलझ गईं, तब उसका हृदय पिघल गया और उसने बड़े स्नेह और सच्चे प्यार से अपनी बहन को चूमा। जब वह नीचे आ रहा था, तब उसकी आँखों में आँसू भरे पड़े थे।

उसकी माँ नीचे प्रतीक्षा कर रही थी। ज्योंही वह आया, वह उसके विलम्ब पर झुँझलाने लगी। उसने कोई उत्तर नहीं दिया और खाना खाने में मग्न हो गया। मेंज के चारों ओर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं और धब्बों से भरे टेबल-क्लाथ पर बैठ रही थीं। बाहर बसों के दौड़ने की गड़गड़ाहट और गाड़ियों के खुलने और बन्द होने के स्वर में वह भिनभिनाने की आवाज स्पष्ट रूप से सुन रहा था जो उसका एक-एक क्षण कम कर रही थी।

कुछ समय पश्चात् उसने प्लेटें आगे खिसका दीं और अपने सिर को हाथों में पकड़ लिया। वह अनुभव कर रहा था कि उसको यह सब जानने का अधिकार था। जिस प्रकार का सन्देह वह अब तक करता आया था, वह सबसे पहले ही पता लग जाना चाहिये था। भयभीत मुद्रा में उसकी माँ उसे निहार रही थी। शब्द मशीन की भाँति उसके मुख से निकल रहे थे। लेस लगा हुआ, फटा-सा रुमाल उसकी

अँगुलियों में फँसा हुआ था। छः के घंटे सुनकर वह उठ खड़ा हुआ और द्वार तक गया। फिर वापस मुड़कर उसने अपनी माँ की ओर देखा। उन दोनों की आंखें परस्पर मिलीं, माँ की आँखों में उसने दया और क्षमा-याचना का आर्तनाद देखा, जिससे उसे और भी क्रोध आ गया।

"माँ, मुझे तुमसे कुछ पूछना है।" उसने कहा। बिना किसी लक्ष्य के वह चुपचाप अपने चारों ओर देखने लगी, उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

"मुझे सच-सच बताओ, मुझे जानने का अधिकार है। क्या तुमने मेरे पिता से विवाह किया था?"

उसने एक लम्बी सांस ली, इस सांस में उसका संतोष प्रकट होता था। जिस भयानक क्षण की कल्पना उसने रात और दिन, हफ्तों और महीनों की थी, वह आज सामने आ गया था, परन्तु वह भयभीत नहीं हुई। जेम्स के इस प्रश्न से तो उसे कुछ निराशा ही हुई। इस प्रकार के स्पष्ट प्रश्न का स्पष्ट उत्तर ही हो सकता है। स्थिति का विकास धीरे-धीरे न होकर यकायक ही हो गया था। इस घटना से उसे ऐसा प्रतीत होने लगा मानो किसी नाटक का रिहर्सल ठीक तरह से नहीं हो सका है।

"नहीं।" उसने उत्तर दिया।

"तब मेरे पिता एक आवारा व्यक्ति थे?" अपनी मुट्ठियाँ कसकर जेम्स चिल्लाया।

उसने अपना सिर हिलाकर उसका विरोध किया—"मैं जानती थी कि वह स्वतंत्र नहीं था। यदि वह जीवित होता तो हमारे निर्वाह के लिये कुछ न कुछ अवश्य करता। उसके विरुद्ध कुछ न कहो बेटा, वह तुम्हारा पिता था और बहुत भला आदमी था। वह एक उच्च परिवार का सदस्य था।"

"मुझे अपनी चिन्ता नहीं।" उसने कहा—"परन्तु सिबल को···

वह भी तो एक भला आदमी है जो सिवल से प्रेम करता है, या प्रेम करने का दावा करता है ? वह भी उसी समाज का एक सदस्य है।"

क्षण भर के लिये उसकी माँ ने यह अनुभव किया कि उसका अपमान हुआ है। उसका सिर नीचे झुक गया, उसने कांपते हाथों से अपने आंसू पोंछ डाले। "सिबल के पास उसकी मां है।" उसने धीमे स्वर में कहा—"मेरी मां भी नहीं थी।"

यह सुनकर जेम्स का हृदय पसीज गया। वह उसके पास गया और झुककर उसका चुम्बन लिया। "यदि पिता के विषय में पूछकर मैंने तुम्हें कोई ठेस पहुँचाई है तो मुझे उसके लिये क्षमा करना।" उसने कहा—"परन्तु इसके अतिरिक्त दूसरा कोई भी चारा नहीं था। अच्छा, मुझे अब चलना चाहिये। अच्छा...विदा...यह मत भूलना कि अब तुम्हें केवल एक ही बच्चे की देखभाल करनी है और इतना मेरा विश्वास करो कि यदि उस व्यक्ति ने मेरी बहन का कुछ भी बिगाड़ा, तो मैं उसका पता लगाऊँगा और कुत्ते की भाँति उसकी हत्या कर डालूंगा, मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा है।"

अपने पुत्र की यह धमकी उसे मूर्खता-सी दिखाई दी। उसके शब्दों में जितना उत्साह, पागल का-सा संगीत भरा पड़ा था, उससे उसे अपना भविष्य अधिक दुःखदायी प्रतीत होने लगा। वह उस वातावरण से परिचित थी। वह पहले से अधिक स्वतन्त्रता का अनुभव कर रही थी और इतने दिनों में आज पहली बार उसने मन ही मन अपने पुत्र की प्रशंसा की। वह कुछ और देर तक भावनाओं से परिपूर्ण इस दृश्य को जारी रखना चाहती थी। परन्तु उसका पुत्र जल्दी में था। सामान को अभी नीचे उतारना था, जिससे मकान में थोड़ा शोरगुल अवश्य हुआ। गाड़ी वाले से किराया तय किया गया। जब उसका पुत्र गाड़ी में जा रहा था तब उसने अपना रूमाल हिलाया। परन्तु उसके हृदय में निराशा भरी पड़ी थी। वह जानती थी कि उसने अपने पुत्र से आवश्यक बातें करने का एक सुनहला अवसर खो दिया...। उसने सिबल से यह कह-

कर अपने को आश्वासन दिया कि अब केवल एक ही सन्तान की निग-रानी करने की कल्पना से ही उसे कितना दुःख होता है। अपने पुत्र के शब्द उसे अभी तक याद थे। उसने जेम्स की प्रतिज्ञा के विषय में उससे कुछ नहीं कहा। वह अनुभव कर रही थी कि एक दिन लोग यह सुनकर हँसने लगेंगे।

६

"बासिल, मेरे विचार में तुमको सारे समाचार मिल चुके हैं?" ब्रिस्टल होटल के छोटे-से प्राइवेट कमरे में हालवर्ड के आने पर लार्ड हेनरी ने पूछा। मेज पर तीन व्यक्तियों के भोजन का प्रबन्ध किया हुआ था।

"नहीं हेनरी।" सलाम करते हुए बैरे को अपनी टोपी और कोट देते हुए चित्रकार ने उत्तर दिया—"बात क्या है? राजनीति की तो चर्चा नहीं है न? इसमें मुझे कोई दिलचस्पी नहीं। पार्लियामेंट का एक भी सदस्य ऐसा नहीं जिसका चित्र बनाया जा सके। हाँ, बहुत से सदस्यों को चूने से रंगे जाने की आवश्यकता है।"

"डोरियन ग्रे का विवाह होने वाला है।" लार्ड हेनरी ने कलाकार की ओर देखते हुए कहा।

हालवर्ड हक्का-बक्का रह गया। फिर तनिक क्रोधित स्वर में बोला—"डोरियन का विवाह होने वाला है।" उसने चिल्लाकर कहा—"असम्भव!"

"यह बिल्कुल सच है।"

"लेकिन किससे उसका विवाह होगा?"

"किसी अभिनेत्री या उसी प्रकार की किसी अन्य स्त्री से।"

"मैं विश्वास नहीं कर सकता, डोरियन में कहीं अधिक बुद्धि है।"

"हां बासिल, डोरियन में इतनी बुद्धि है कि वह बार-बार ये बुरे काम न किया करे।"

"हेनरी, विवाह कोई ऐसी घटना नहीं जो बार-बार की जाये।"

"लेकिन अमरीका में तो यह भी सम्भव है।" लार्ड हेनरी ने सुस्ताते हुए कहा—"मैंने यह कब कहा कि उसका विवाह हो चुका है। मैं तो यह कहता हूँ कि उसका विवाह होने वाला है। दोनों बातों में तो बहुत अन्तर है। मुझे अपने विवाह की याद अवश्य है, परन्तु यह याद नहीं कि विवाह से पूर्व मेरी सगाई भी हुई थी या नहीं, मैं तो सोचता हूँ कि कभी मेरी सगाई हुई ही नहीं।"

"परन्तु डोरियन का सम्मानित परिवार, समाज में उसका स्थान और उसकी अतुल सम्पत्ति का तो विचार करो। अपने परिवार से इतने नीचे विवाह करना उसकी मूर्खता होगी।"

"बासिल, यदि तुम डोरियन का इसी लड़की से विवाह करवाना चाहते हो तो उससे यही बात कह देना। तब वह अवश्य ही विवाह करेगा। जब कभी कोई मनुष्य बुरी बात करता है तो उसका उद्देश्य ऊँचा और निःस्वार्थ होता है।

"हेनरी, मेरे विचार में यह लड़की सभ्य और सुसंस्कृत ही होगी। मैं डोरियन को किसी साधारण लड़की से बँधे नहीं देखना चाहता, जो उसके स्वभाव और बुद्धि को नष्ट कर दे।"

"ओह, वह साधारण लड़कियों से कहीं अच्छी है—वह सुन्दर है। लार्ड हेनरी ने संतरे के रस के गिलास को मुँह से लगाते हुए कहा—"डोरियन कहता है कि वह सुन्दर है और इस प्रकार के मामलों में वह ग़लती नहीं कर सकता। जब से तुम ने उसका चित्र बनाया है, तब से उसकी दूसरों का सौन्दर्य परखने की शक्ति बढ़ गई है। इस चित्र का उस पर यह कितना अच्छा प्रभाव पड़ा है। यदि डोरियन अपना वचन

न भूला तो वह उस लड़की को आज हमें दिखलायेगा।"

"क्या तुम सच कह रहे हो ?"

"हां वासिल, जितना गम्भीर मैं इस समय हूँ, यदि उससे अधिक गम्भीर होने की बात सोच सकता तो मुझे बड़ा दुःख होता।"

"परन्तु हेनरी, क्या तुम इस विवाह से सहमत हो ?" चित्रकार ने कमरे में इधर से उधर घूमते हुए अपने होंठ चबाकर पूछा—"मेरे विचार में तुम इस विवाह में अपनी स्वीकृति नहीं दे सकते। यह डोरियन का अस्थायी रोमांस है।"

इस समय मेरा स्वीकृति या अस्वीकृति का प्रश्न ही नहीं उठता। इस जिन्दगी के लिये अपना कोई निश्चित दृष्टिकोण बना लेना निरा पागलपन है। वर्षों पुराने नैतिक सिद्धान्तों पर चलने के लिये ही संसार में हमारा जन्म नहीं हुआ है। साधारण लोग क्या कहते हैं, मैं कभी इस बात की चिन्ता नहीं करता और सुन्दर व्यक्ति क्या काम कर रहे हैं, मैं उसमें कभी बाधा नहीं डालता। जब मैं किसी व्यक्ति के प्रति आकर्षित हो जाता हूँ तब उसकी प्रत्येक मुद्रा मुझे भली ही मालूम पड़ती है। डोरियन एक ऐसी सुन्दर लड़की के प्रेम में पड़ गया है जो जूलियट का अभिनय करती है और फिर उसी से विवाह करना चाहता है। वह ऐसा क्यों न करे ? यदि वह किसी अन्य लड़की से विवाह करने को तैयार हो जाता तब भी उतनी ही उत्सुकता पैदा होती। तुम जानते ही हो कि मैं विवाह का पक्षपाती नहीं हूँ। विवाह का एक वास्तविक दोष यह है कि वह मनुष्य को निःस्वार्थ बना देता है, और स्वार्थहीन लोगों की जिन्दगी नीरस होती है। उनमें अपनत्व की मात्रा बिल्कुल नहीं होती। मनुष्य के स्वभाव के कुछ ऐसे पहलू होते हैं जो विवाह के उपरान्त और भी उलझ जाते हैं। वे 'अहम्' को बहुत अधिक महत्व देने लगते हैं। एक से अधिक जिन्दगी व्यतीत करने के लिए वे बाध्य हो जाते हैं। उनकी जिन्दगी बहुत ही स्थिर और नियमित हो जाती है और मेरे विचार में यही मनुष्य के जीवन का उद्देश्य है। प्रत्येक अनुभव अपना महत्व रखता है और विवाह

के विरुद्ध चाहे कोई कितना ही क्यों न कहे, परन्तु वह भी जिन्दगी का एक अनुभव है। मैं आशा करता हूँ कि इस लड़की को अपनी पत्नी बनाकर डोरियन इससे छः महीने तक प्यार करता रहेगा, और फिर यकायक किसी दूसरी लड़की के प्रति आकर्षित हो जायेगा। तब उसके व्यक्तित्व का अध्ययन करना सचमुच अत्यन्त सुन्दर होगा।"

"हेनरी, जो कुछ तुमने कहा है, तुम उसके एक शब्द पर भी विश्वास नहीं करते। तुम जानते हो कि यह सब झूठ है। यदि डोरियन किसी ग़लत रास्ते पर चला तो तुमसे अधिक दुःख शायद और किसी को नहीं होगा। जिस प्रकार से तुम अपने चरित्र का प्रदर्शन करते हो, तुम उससे कहीं अधिक अच्छे हो।"

लार्ड हेनरी हँस दिया। "दूसरों के प्रति अच्छे विचारों की कल्पना करने का कारण यह है कि हम अपने आपसे डरते हैं। आशावाद की जड़ें भय पर ही तो निर्भर हैं। अपने पड़ोसियों के गुणों का बखान करके हम अपने आपको बहुत सहृदय और सज्जन कहने लगते हैं, परन्तु वास्तव में उनके गुणों से अपनी स्वार्थसिद्धि की बात ही हम सोचा करते हैं। हम बैंक के मैनेजर की प्रशंसा इसलिए करते हैं कि वह हमें रुपया उधार दे, और सड़क पर जेबकतरों की तारीफें करने का कारण अपनी जेबों को सुरक्षित रखना है। जो कुछ मैंने कहा, उसके प्रत्येक शब्द पर मुझे विश्वास है। आशावाद से मुझे अत्यधिक घृणा है। और जब तक किसी व्यक्ति की महानता की समाप्ति नहीं हुई है तब तक उसकी जिन्दगी बिगड़ी नहीं है। यदि किसी व्यक्ति के स्वभाव को बिगाड़ना चाहते हो तो उसमें केवल परिवर्तन की आवश्यकता है। विवाह को मैं तो मनुष्य की मूर्खता ही समझता हूँ। विवाह के अतिरिक्त पुरुष और स्त्री में और भी कितने सम्बन्ध हो सकते हैं। मैं तो इस प्रकार के सम्बन्धों को उत्साहित करूँगा, क्योंकि उनमें आधुनिक फैशन का सौन्दर्य भरा होता है। लो, डोरियन आ गया, वह मुझसे अधिक बतला सकेगा।"

"हेनरी, वासिल, तुम दोनों को ही मुझे बधाई देनी चाहिये।"

डोरियन ने अपना कोट और टोपी उतारकर कुर्सी पर उछाल दी और दोनों मित्रों से वारी-वारी से हाथ मिलाते हुए कहा—"आज तक मैं इतना प्रसन्न कभी नहीं हुआ। वास्तव में सुख देने वाली घटनाएँ अचानक ही घट जाती हैं। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि इसी के लिये मैं जिन्दगी भर प्रतीक्षा कर रहा था।" वह प्रसन्नता से अधीर होकर कनपटियों तक सुर्ख हो गया और असाधारण रूप से सुन्दर दिखाई देने लगा।

"मेरे विचार में डोरियन, तुम सदा इसी भाँति सुखी रहोगे।" हालवर्ड ने कहा—"परन्तु अपने रोमांस के विषय में आज तक मुझे अन्धकार में रखने के लिए मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता। तुमने हेनरी को सब कुछ बतला दिया।"

"और मैं तुम्हें भोजन में विलम्ब करने के लिये क्षमा नहीं कर सकता।"

लार्ड हेनरी ने अपना हाथ उसके कन्धे पर रखकर मुस्कराते हुए कहा—"चलो अब भोजन के लिये बैठ जायें और तब तुम यह सारी कहानी सुनाना।"

"यह कोई लम्बी-चौड़ी कहानी नहीं है।" डोरियन ने कहा। तीनों व्यक्ति छोटे-से गोलमेज के चारों ओर बैठ गये—"बस, केवल यह बात हुई। हेनरी, कल शाम को तुमसे विदा लेकर, मैंने कपड़े पहने और रुपर्ट स्ट्रीट के छोटे-से इटैलियन रेस्तरां—जिसका परिचय तुमने दिया था—में खाना खाया और आठ बजे के लगभग थियेटर चला गया। उस रात को सिबल रोजलिन का अभिनय कर रही थी। मंच का प्राकृतिक दृश्य बहुत ही भयानक था, परन्तु सिबल—काश कि कल तुम देखते। जब वह पुरुष की वेश-भूषा में आई तो वह सचमुच ही बहुत सुन्दर लग रही थी। वह जामनी रंग की जाकेट, छोटी-सी हरी टोपी और उस पर जड़े हीरे पर एक लटकता हुआ पंख, वह आज तक मुझे कभी इतनी सुन्दर नहीं दिखाई दी थी। बासिल, जैसा तुम्हारे स्टूडियो

में वह चित्र लटक रहा है न, उसी प्रकार उसमें भी कोमलता और सौन्दर्य था। उसके बाल उसके मुख पर इस प्रकार बिखर रहे थे मानो पीले गुलाब पर गहरे रंग की पंक्तियाँ बिखरी हों। और उसका अभिनय—वह तुम स्वयं अपनी आँखों से आज रात को देख लोगे। वह तो जन्म से ही कलाकार है। मैं छोटे-से अंधेरे बाक्स में मूर्तिवत बैठ रहा। मैं यह भूल गया कि मैं उन्नीसवीं शताब्दी में लन्दन में हूँ। मैं अपनी प्रेयसी के साथ एक ऐसे जंगल में विचरण कर रहा था जिसे कोई नहीं जानता था। नाटक के पश्चात् मैं अन्दर गया और उससे बातें कीं। जब हम दोनों अन्दर एक साथ बैठे हुए थे, उस समय अचानक उसकी आँखों में एक ऐसी चमक दिखलाई पड़ी जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। मेरे होंठ उसकी ओर बढ़े और हम दोनों ने एक-दूसरे का चुम्बन किया। मैं बता नहीं सकता कि उस समय मैं क्या अनुभव कर रहा था। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो मेरी जिन्दगी अलौकिक प्रसन्नता के एक बिन्दु पर केन्द्रित हो गई है। वह एक कोमल श्वेत पुष्प की भाँति काँप रही थी। तब वह यकायक घुटनों के बल बैठ गई और उसने मेरे हाथों को चूम लिया। मैं जानता हूँ कि विस्तार से यह सब बतलाना ठीक नहीं, परन्तु मैं अपने आपको रोक नहीं सका था। हम लोग एक-दूसरे से विवाह करने जा रहे हैं, यह बात अभी तक किसी को पता नहीं। उसने अपनी माँ तक को अभी यह नहीं बतलाया है। मैं नहीं जानता कि यह समाचार सुनकर मेरे अभिभावक क्या कहेंगे। लार्ड रैडले तो अवश्य ही क्रोधित होंगे, परन्तु मैं इसकी चिन्ता नहीं करता। मेरे बालिग हो जाने में एक वर्ष से भी कम समय है और तब मैं अपनी मनमानी कर सकूँगा। बासिल, क्या कविता में से अपना प्रेम और शेक्सपीयर के नाटकों में से अपनी पत्नी चुनकर मैंने ठीक नहीं किया? जिन होठों को शेक्सपीयर ने बोलना सिखलाया था उन्होंने चुपके से सारा भेद बतला दिया। रोजलैं की बाहें मेरे गले को घेरे थीं और जूलियट के होठों का मैंने चुम्बन किया था।"

"हाँ डोरियन, मैं सोचता हूँ कि तुमने ठीक ही किया।" हालवर्ड ने धीरे से कहा—

"क्या तुम उससे आज मिले थे ?" लार्ड हेनरी ने पूछा।

डोरियन ग्रे ने अस्वीकृति दिखलाते हुए अपना सिर हिला दिया, "मैं कल उसे आर्डन के जंगलों में छोड़ आया और आज उसे विरोना के बाग में पाऊँगा।"

लार्ड हेनरी चुपचाप सोचते हुए अपना शराब का गिलास खाली कर रहा था।

"डोरियन, तुमने अपनी बातचीत में कब सिबल से विवाह का प्रस्ताव किया था ? और उसने क्या उत्तर दिया था ? शायद यह सब तुम भूल चुके हो ?"

"हेनरी, मैं इसे कोई व्यापार नहीं समझता और इसीलिए मैंने कभी स्पष्ट रूप से विवाह का प्रस्ताव उसके सामने नहीं रखा। मैंने उससे कहा कि मैं उसे प्यार करता हूँ और उत्तर में उसने कहा कि वह मेरी पत्नी बनने के योग्य नहीं है। योग्य नहीं है ? क्यों ? उसके सामने यह सारा संसार मुझे तुच्छ दिखाई देता है।"

"किसी भी विचार को क्रियात्मक रूप देने में स्त्रियाँ बहुत चतुर होती हैं।" लार्ड हेनरी ने कहा—"इसमें वे इससे कहीं आगे होती हैं। इस प्रकार की स्थिति में हम विवाह की बात बिल्कुल भूल जाते हैं परन्तु वे हमें उसकी याद दिला देती हैं।"

हालवर्ड ने अपना हाथ डोरियन की बांह पर रखते हुए कहा—"हेनरी, ऐसा न कहो। तुम्हारी बातों ने डोरियन को उदास बना दिया है। वह अन्य लोगों की भाँति नहीं है। वह किसी के ऊपर कभी विपत्ति नहीं लायेगा, उसका स्वभाव ऐसे लोगों से कहीं अच्छा है।"

लार्ड हेनरी ने मेज़ की दूसरी ओर देखते हुए कहा—"डोरियन मुझ से कभी नाराज़ नहीं होता।" उसने उत्तर दिया—"यह प्रश्न पूछने का मेरा केवल एक ही कारण है और वह है मेरी उत्सुकता। एक मैं इस

पर भी दृढ़ विश्वास करता हूँ कि स्त्रियाँ ही पुरुषों से विवाह का प्रस्ताव करती हैं। पुरुष कभी पहले ऐसा नहीं करते। हाँ, समाज के मध्यवर्ग की बात दूसरी है क्योंकि वे लोग आधुनिक विचारों वाले नहीं होते।"

डोरियन ने हँसकर अपना सिर हिला दिया--"हेनरी, तुम्हारी बातों को ग़लत नहीं कहा जा सकता। मैं तुम्हारी बातों से नाराज़ नहीं होता। यह मेरे लिए बिल्कुल असम्भव है। जब तुम सिबल वेन को देख लोगे, तब अनुभव करोगे कि जो मनुष्य उसके साथ विश्वासघात कर सकता है, वह मनुष्य नहीं जानवर है—एक हृदयहीन जानवर। मैं यह नहीं समझ सकता कि जिससे मनुष्य प्यार करता है, उसे भला दूसरों की दृष्टि में वह कैसे नीचे गिरा सकता है। मैं सिबल वेन से प्रेम करता हूँ। मैं उसे सोने के ढेर पर खड़ा कर देना चाहता हूँ। और लोगों को उस स्त्री की पूजा करते हुए देखना चाहता हूँ जो मेरी है। विवाह आखिर है क्या? एक ऐसी प्रतिज्ञा, जो तोड़ी नहीं जा सकती। ओह ! तुम हँसो मत। मैं भी यही प्रतिज्ञा करता जा रहा हूँ जिसे जिन्दगी भर न तोड़ूं। मेरे ऊपर उसका विश्वास मुझे ईमानदार बनाए रखेगा और उसकी श्रद्धा से मैं सदा अच्छा ही बना रहूँगा। जैसा कि तुम मुझे पहले जानते थे मैं उससे बदल गया हूँ। जब मैं उसके साथ होता हूँ तब जो कुछ तुमने मुझे सिखाया है, उस पर मुझे दुख होता है। मैं बदल चुका हूँ और सिबल वेन का केवल स्पर्श ही मुझे तुम्हारी गलत, आकर्षक, विष से भरी हुई और मनोरंजक धारणायें भुला देता है।"

"और ये धारणाएँ···? लार्ड हेनरी ने खाते हुए पूछा।

"इस जिन्दगी का सिद्धान्त, प्रेम और सुख के विषय में तुम्हारी धारणायें, हेनरी, तुम्हारी सारी धारणायें।"

"सुख ही संसार की एक ऐसी चीज है जिसके विषय में मनुष्य कोई धारणा बना सकता है।" उसने मीठे स्वर में धीरे से कहा—"परन्तु मुझे भय है कि इसको मैं अपनी निजी धारणा नहीं कह सकता। यह तो प्रकृति की अपनी देन है, मेरी नहीं। प्रसन्नता ही प्रकृति की

परीक्षा है, उसकी स्वीकृति का द्योतक है। जब हम प्रसन्न होते हैं तब सदा अच्छे दिखाई देते हैं और जब अच्छे होते हैं तब सदा प्रसन्न नहीं होते।"

"परन्तु यहाँ अच्छा होने से तुम्हारा क्या तात्पर्य है ?" बासिल हालवर्ड ने पूछा।

"हाँ !" डोरियन ने बासिल के प्रश्न को दोहराया। अपनी कुर्सी को आराम से पीठ का सहारा बनाकर मेज़ पर रखे नीले फूलों के गुच्छों के पार लार्ड हेनरी की ओर देखते हुए उसने पूछा—"हेनरी, अच्छा बनने से तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"अच्छा होने का मतलब अपने से सामंजस्य होना है।" अपनी लम्बी और पीली सुन्दर अंगुलियों से मेज़ के शीशे का किनारा स्पर्श करते हुए उसने कहा—"मनुष्य की अपनी जिंदगी। इससे बढ़कर मनुष्य के लिये संसार में और किसी वस्तु का महत्व नहीं। यदि किसी का पड़ोसी जुआरी, चोर, बदमाश, धार्मिक या एक सज्जन मनुष्य बनना चाहता है, तब उसके विषय में वह अपने विचार प्रकट कर सकता है, परन्तु वास्तव में उनका उससे कोई सम्बन्ध नहीं। हाँ, लोग 'अपनत्व' का एक धरातल बना लेते हैं। मेरे विचार में कभी भी सांस्कृतिक मनुष्य को अपने युग के एक नैतिक धरातल को स्वीकार कर लेना ही सबसे अधिक अनैतिकता है।"

"परन्तु हेनरी, यदि कोई मनुष्य केवल अपने लिये ही जीवित रहे तो उसको इसकी बड़ी भारी कीमत देनी पड़ती है।" चित्रकार ने कहा।

"हाँ, परन्तु आज कल तो प्रत्येक वस्तु के लिये हमसे कितने ऊँचे दाम माँगे जाते हैं। मैं गरीब लोगों की सबसे बड़ी दीनता यह समझता हूँ कि वे केवल अपनी इच्छाओं का दमन ही कर सकते हैं, क्योंकि उनके पाप नहीं होते। सुन्दर वस्तुओं की भाँति सुन्दर पापों पर भी धनी लोगों का ही अधिकार होता है।"

"धन को छोड़कर दूसरे रूप में ही इसका मूल्य चुकाना पड़ता है।"

"वे कौन से तरीके हैं बासिल ?"

"ओह, मेरे विचार में पश्चात्ताप, आत्मवेदना, घोर पीड़ा और अपने पतन का ज्ञान हो जाना।"

लार्ड हेनरी ने अपने कंधे हिलाये। "मेरे मित्र, मध्ययुग की कला यद्यपि सुन्दर है परन्तु उस युग की भावनाएँ समय से बहुत पीछे रह गई हैं। केवल उपन्यासों में ही इनका उपयोग किया जा सकता है। परन्तु उपन्यासों में तो वही बातें लिखी जाती हैं जो मनुष्य के दैनिक-जीवन में नहीं घटतीं। मेरा विश्वास करो, कोई भी सभ्य मनुष्य आनन्द उठाकर उसके लिये पश्चात्ताप नहीं करेगा ौर कोई भी असभ्य व्यक्ति यह नहीं जानता कि आनन्द और सुख क्या है।"

"मैं जानता हूँ कि सुख क्या है।" डोरियन ने चिल्लाकर कहा—"किसी को प्यार करना ही इस संसार का सब से बड़ा सुख है।"

"हाँ, यह किसी व्यक्ति द्वारा प्यार किये जाने की अपेक्षा अवश्य ही अच्छा है।" उसने कुछ फलों से खेलते हुए उत्तर दिया—"किसी के प्यार से मनुष्य ऊब जाता है। स्त्रियाँ हमारे साथ उसी प्रकार का व्यवहार करती हैं जैसा लोग परमात्मा से करते हैं। वे हमारी पूजा करती हैं और सदा ही अपने लिये कुछ करने की हमसे प्रार्थना किया करती हैं।"

"मैं तो यह कहूँगा कि वे जो कुछ हमसे माँगती हैं वह तो वे पहले ही हमको दे चुकी होती हैं।" डोरियन ने तनिक धीमे स्वर में कहा—"वे हमारे स्वभाव में प्रेम का प्रादुर्भाव करती हैं, उसे वापस माँगने का उन्हें अधिकार है।"

"डोरियन की बात में बिल्कुल सत्य भरा है।" हालवर्ड ने कहा।

"कोई भी बात बिल्कुल सच्ची नहीं होती।" लार्ड हेनरी ने कहा।

"परन्तु यह पूर्णरूप से सच्ची है।" डोरियन ने बीच में टोककर कहा—"हेनरी, तुम्हें यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि स्त्रियाँ अपने जीवन का सारा अमृत पुरुषों को दे डालती हैं।"

"शायद" उसने साँस लेकर कहा—"परन्तु वे इसको थोड़ी-थोड़ी

मात्रा में पुरुषों से वापस माँगती हैं। यही तो सारी मुसीबत है। किसी फ्रैंच मज़ाक करने वाले ने एक बार कहा था कि स्त्रियाँ संसार का सब से महत्वपूर्ण काम करने की इच्छा को हमारे मन में जन्म देती हैं परन्तु उसे क्रियात्मक रूप देने के लिये सदा रोकती हैं।"

"हेनरी, तुम कैसी भयानक बातें कर रहे हो, मैं नहीं जानता कि मैं क्यों तुम्हें इतना अधिक पसन्द करता हूँ।"

"डोरियन, तुम मुझे सदा पसन्द करते रहोगे।" उसने उत्तर दिया "क्या तुम लोग थोड़ी काफी पियोगे ? अच्छा बैरा, काफी लाओ, अच्छी सी शराब और कुछ सिगरेट भी। लेकिन सिगरेट रहने दो, मेरे पास हैं। बासिल, मैं तुम्हें सिगार नहीं पीने दूंगा। तुम्हें सिगरेट पीनी पड़ेगी। सिगरेट ही पूर्ण आनन्द उठाने का एक साधन है। यह मनुष्य को कभी सन्तुष्ट नहीं होने देती। इससे अधिक क्या चाहिये ? हाँ डोरियन, तुम मुझे सदा पसन्द करोगे। मैं तुम्हारे सामने उन सब पापों का प्रतिनिधित्व करता हूँ जिनको करने का कभी तुम्हें साहस भी नहीं हो सकता।"

"हेनरी, तुम कैसी व्यर्थ की बातें कर रहे हो।" डोरियन ने कहा। मेज पर बैरा द्वारा रखे गए चांदी के बर्तन की आग से उसने अपनी सिगरेट सुलगाई—"चलो, अब थियेटर चलना चाहिये। जब तुम सिबल को मंच पर देखोगे तब तुम जिन्दगी का एक नया उद्देश्य देखोगे। वह तुम्हें उन बातों का दिग्दर्शन करायेगी जिनको तुमने आज तक नहीं जाना।"

"मैं सब कुछ जान चुका हूँ।" लार्ड हेनरी की आँखों में थकान दिखाई दे रही थी। परन्तु नई भावुकता के लिए मैं सदा तत्पर रहता हूँ। मुझे भय है कि यह सब शायद मेरे लिये सत्य न हो। परन्तु फिर भी तुम्हारी प्रेयसी मुझ में एक सिहरन पैदा कर सकती है। मुझे अभिनय से प्रेम है क्योंकि यह जिन्दगी से अधिक सच्चा और वास्तविक है। बासिल, मुझे बड़ा शोक है कि इस गाड़ी में केवल दो व्यक्ति ही बैठ सकते हैं, इसलिये तुम्हें दूसरी गाड़ी में हमारे पीछे आना पड़ेगा।"

तीनों खड़े हो गये और सबने अपने-अपने कोट पहन लिये। ये खड़े

होकर ही काफी पीने लगे। चित्रकार चुप था और अपने विचारों में खोया हुआ था। उसके मुख पर उदासी के भाव स्पष्ट रूप से झलक रहे थे। वह डोरियन के इस विवाह से सहमत नहीं था, परन्तु फिर भी वह इसे अन्य भयानक घटनाओं से अच्छा समझता था। कुछ समय पश्चात् ये तीनों नीचे पहुँच गये। जैसा कि तय हुआ था, वह अपनी गाड़ी में अकेला आगे बढ़ रहा था और अपने सामने जाती हुई डोरियन की गाड़ी के पहियों को देख रहा था। वह ऐसा अनुभव करने लगा मानो उसकी कोई प्रिय वस्तु खो गई हो। उसे प्रतीत हुआ कि पिछले दिनों में डोरियन उसके जितना समीप था, वह भविष्य में उतना कभी नहीं हो सकेगा। जिन्दगी उन दोनों के बीच में आ गई थी। उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया और लोगों की भीड़ से भरी सड़कें उसके लिये धुंधली हो गईं। जब उसकी गाड़ी थियेटर तक पहुँची तब उसने ऐसा अनुभव किया कि उसकी आयु कितने ही वर्ष अधिक बढ़ गई है।



किसी कारणवश उस रात को थियेटर में अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक भीड़ थी। थियेटर का मैनेजर—मोटा यहूदी—उन्हें द्वार पर मिल गया था और मुस्कराकर उनसे बातें कर रहा था। वह अंगूठियों से भरे अपने हाथों को हिलाता हुआ, अपनी पूरी आवाज़ में चिल्लाकर बातें करता हुआ उन्हें बाक्स तक छोड़ने आया। आज उसके स्वर में अपनी सफलता पर अभिमान भरा पड़ा था। डोरियन हमसे आज जितना कभी नहीं ऊबा था। वह ऐसा अनुभव कर रहा था कि वह किसी राजकुमारी से मिलने आया हो परन्तु उसके बदले किसी प्रेत से उसकी मुठभेड़ हो

गई हो। लार्ड हेनरी को मैनेजर बुरा नहीं जँचा। कम से कम प्रकट रूप में तो उसने ऐसा ही प्रदर्शन किया। उसने उसका हाथ हिलाकर उसे विश्वास दिलाया कि उसे एक ऐसे व्यक्ति का परिचय पाकर अभिमान हो गया है जिसने एक सच्चे कलाकार को ढूँढ निकाला और एक कवि की लेखनी पर अपना सब कुछ बलिदान कर दिया। हालवर्ड नीचे हाल में बैठे लोगों को देखकर अपना मनोरंजन कर रहा था। उस दिन गर्मी की तीव्रता अपनी सीमा पार कर चुकी थी। गैलरी में बैठे नवयुवकों ने अपने कोट और बासकटें उतारकर दीवारों पर टाँग दिये थे। वे परस्पर बातचीत कर रहे थे और अपने पीछे बैठी हुई लड़कियों पर सन्तरे उछाल रहे थे। नीचे हाल में बैठी कुछ स्त्रियाँ हँस रही थीं। उनकी आवाजें बड़ी कड़ी और एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न थीं। शराबघर में बोतलों के खुलने का स्वर बाहर तक सुनाई दे रहा था।

"तुमने भी कैसे स्थान में दुनियाँ का स्वर्ग खोज निकाला ?" लार्ड हेनरी ने कहा।

"हाँ।" डोरियन ने उत्तर दिया—"यहीं मैंने उसको पाया था और उसमें जितनी स्वर्गीयता है उतनी संसार की किसी वस्तु में भी नहीं है। उसका अभिनय देखकर तुम सब कुछ भूल जाओगे। यहाँ पर बैठे हुए साधारण लोग, इनके अनपढ़ चेहरे और असभ्य और अश्लील मुद्राएँ—इन सब में सिबल के मंच पर आने के उपरान्त परिवर्तन हो जाता है। ये चुपचाप बैठकर उसको निहारते रहते हैं, उसकी इच्छा के अनुसार ही ये हँसने और रोने लगते हैं। वह सब पर एक ऐसा जादू कर देती है जिससे सब अपने अपनत्व को भूलकर एक हो जाते हैं।"

"अपने अपनत्व को भूलकर एक हो जाते हैं। मैं तो इस प्रकार की आशा नहीं करता।" लार्ड हेनरी ने गैलरी में बैठे लोगों की ओर ध्यान से देखते हुए कहा।

"डोरियन, हेनरी की बातों पर ध्यान मत दो।" चित्रकार ने कहा—" मैं तुम्हारा तात्पर्य समझ गया हूँ और मुझे इस लड़की में पूर्ण

विश्वास है। जिस लड़की से तुम प्रेम करते हो वह अवश्य ही असाधारण होगी और जिस लड़की ने तुमको इस प्रकार प्रभावित किया है, उसमें भी कोई विशेषता होगी। इस प्रकार अपने अभिनय से लोगों पर जादू डालना कोई आसान काम नहीं है। यदि यह लड़की उन लोगों को आत्मा प्रदान कर सकती है जिनमें कोई आत्मा नहीं थी, जिन लोगों की जिन्दगी सदा कुरूपता और अशान्ति से भरी हुई थी, यदि उनमें सौन्दर्य की भावना भर सकती है, अपने निजी स्वार्थ का विचार छोड़कर यदि यह लड़की दूसरों के दुःखों के लिए लोगों की आँखों में आँसू और हृदय में पीड़ा भर सकती है, तब निश्चय रूप से वह तुम्हारी प्रेम-पात्र है, संसार की प्रियवस्तु है। यह विवाह बिल्कुल ठीक है। पहले-पहल मुझे यह कुछ उचित नहीं जँचा था, परन्तु अब मेरा विचार बदल गया है। भगवान् ने सिबल को तुम्हारे लिये ही बनाया है, उसके बिना तुम अधूरे ही रहते।"

"धन्यवाद बासिल !" डोरियन ने उसका हाथ दबाते हुए कहा—"मैं जानता था कि तुम मुझे समझ जाओगे। हेनरी को तो सब में दोष ही दिखाई देते हैं। उसकी बातें सुनकर मुझे भय लगने लगता है। लो, यह वाद्य संगीत आरम्भ हो गया, इससे मुझे सख्त घृणा है, परन्तु यह केवल पाँच मिनट तक ही बजेगा। उसके पश्चात् परदा उठेगा और तुम उस लड़की को देखोगे जिसको मैं अपनी सारी जिन्दगी देने जा रहा हूँ, जिसको मैं अपना सब कुछ दे चुका हूँ।"

लगभग १५ मिनट पश्चात् लोगों की तालियों के बीच में सिबल वेन मंच पर आई। हाँ—वह देखने में अत्यन्त सुन्दर लग रही थी। लार्ड हेनरी सोच रहा था कि उसने जिन्दगी में ऐसा सौन्दर्य पहले कभी नहीं देखा था। उसकी चौकन्नी आँखों में लज्जा से भरी हुई परियों के समान दृष्टि चमक रही थी। ज्योंही उसने उत्साही दर्शकों की भीड़ की ओर देखा तभी शरम से उसके कपोल सुर्ख हो गये। मानो किसी गुलाब के फूल की छाया चाँदी के शीशे पर पड़ रही हो। वह कुछ कदम पीछे हटी

और उसके होंठ काँपते हुए दिखाई पड़े। बासिल हालवर्ड उछलकर खड़ा हो गया और प्रसन्नता से तालियाँ बजाने लगा। डोरियन ग्रे इतना स्थिर होकर उसकी ओर देख रहा था मानो कोई स्वप्न देख रहा हो। लार्ड हेनरी अपनी ऐनक के शीशों में से देखता हुआ बोला—"सुन्दर, बहुत सुन्दर।"

कंपलेट के घर के हाल का दृश्य हो रहा था। रोमियो यात्री की पोशाक पहने मरकुरो तथा अन्य मित्रों के साथ आया। बैंड ने कुछ समय के लिये थोड़ा संगीत बजाया और तब नृत्य आरम्भ हो गया। ढीले ढाले वस्त्र पहने अभिनेताओं की भीड़ में से सिबल वेन मानो किसी दूसरी दुनियाँ से आती दिखाई दी। नाचते समय उसका शरीर इस प्रकार झूम रहा था मानो पानी में कोई पौधा हिल रहा हो। उसके हाथ हाथी दाँत के बने हुए प्रतीत होते थे। उसकी गर्दन एक श्वेत फूल की भाँति झूमती थी।

परन्तु सबसे आश्चर्य की बात यह थी कि उसमें घबराहट नाममात्र को भी न थी। जब उसने रोमियो को देखा तो उसकी आँखों में उल्लास की छाया तक नहीं थी। वह केवल कुछ लाइनें ही कह सकी।

इसके पश्चात् उसने जो कुछ कहा उसमें कृत्रिमता और अस्वाभाविकता भरी पड़ी थी। उसका स्वर बहुत सुरीला और शक्तिशाली था, परन्तु बातें करने का ढंग बिल्कुल बनावटी मालूम होता था। कवि द्वारा लिखित वाक्य प्राणहीन और शक्तिहीन मालूम होते थे। इस कारण से उसके भाव और उसकी मुद्रा झूठी लगती थी।

डोरियन ग्रे उसके इस प्रकार के अभिनय को देखकर पीला पड़ गया। वह स्वयं ही इसकी वास्तविकता को न समझकर चिन्तित हो रहा था। उसके मित्र भी उससे कुछ कहने का साहस नहीं कर पा रहे थे। वह उन सबको अपने पार्ट के अयोग्य जान पड़ी और सब के सब बहुत निराश हुए।

परन्तु फिर भी वे तीनों ऐसा अनुभव कर रहे थे कि जूलियट की

वास्तविक परीक्षा दूसरे अंक के बालकनी वाले दृश्य में ली जायेगी और वे उस दृश्य की प्रतीक्षा करने लगे। यदि सिबल वहाँ भी अपने अभिनय में असफल रही तो उसमें इस कला का एक अंश तक नहीं है।

इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं थी कि चाँदनी रात में जब वह आई तब वह बहुत सुन्दर दिखाई दे रही थी। परन्तु उसके अभिनय का झूठा प्रदर्शन असहनीय था और ज्यों-ज्यों वह अपना पार्ट कहती जाती त्यों-त्यों तीनों निराश होते जाते थे। उसके इशारे और भाव बिल्कुल अस्वाभाविक थे। वह जो कुछ कहती थी उस पर आवश्यकता से अधिक महत्व देती थी।

उसने समस्त कथोपकथन इस प्रकार कहे मानो इनका उसके लिए कोई मतलब नहीं। यह उसकी घबराहट नहीं थी, उलटे उसके मुख पर आत्मविश्वास झलक रहा था। यह उसका असफल अभिनय था, उसने सबको निराश कर दिया।

हाल और गैलरी में बैठे साधारण श्रेणी के अनपढ़ लोगों तक की नाटक में कोई उत्सुकता शेष नहीं रही। वे अधीर हो गये, अतः जोर-जोर से बातचीत करने लगे और सीटियाँ बजानी आरम्भ कर दीं। सबसे पीछे खड़ा हुआ वह यहूदी मैनेजर भी क्रोध में लाल-पीला होकर पाँव पटकने लगा। बस, केवल वह लड़की ही बिल्कुल शान्त और स्थिर रही।

दूसरे अंक के समाप्त होने पर लोग हल्ला मचाने लगे और तब लार्ड हेनरी अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और अपना कोट पहनने लगा।

"यह लड़की बहुत सुन्दर है।" उसने कहा—"परन्तु यह अभिनय नहीं कर सकती। अब हमें चलना चाहिये।"

"मैं तो सारा नाटक देखकर ही लौटूंगा।" डोरियन ने दुःख भरे कड़े स्वर में कहा। "हेनरी, मुझे बहुत शोक है कि मेरे कारण तुम्हारी यह सन्ध्या नष्ट हो गई। मैं इसके लिए तुम दोनों से क्षमा माँगता हूँ।"

"डोरियन, मेरे विचार में शायद सिबल बीमार थी।" हालवर्ड ने कहा—"हम किसी और दिन यह नाटक देखने आयेंगे।"

"काश कि वह सचमुच बीमार होती ।" डोरियन बोला—"परन्तु मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी सारी सुधबुध खो बैठी है। वह बिल्कुल बदल गई है। कल रात तक यह एक महान् कलाकार थी। परन्तु आज शाम को यह साधारण श्रेणी की एक अभिनेत्री ही रह गई है।"

"डोरियन, जिसे तुम प्यार करते हो, उसके विषय में ऐसे शब्द न कहो। कला की अपेक्षा प्रेम अधिक महत्व की वस्तु है।"

"दोनों ही कृत्रिमता के दो रूप हैं।" लार्ड हेनरी ने कहा—"लेकिन अब हमें जाने दो। डोरियन, तुम्हें भी अधिक समय तक यहाँ पर नहीं ठहरना चाहिये। बुरे अभिनय को देखना मनुष्य के नैतिक विचारों के लिए अच्छा नहीं होता। लेकिन मैं सोचता हूँ कि विवाह के उपरान्त तुम अपनी पत्नी से अभिनय करने के लिये तो नहीं कहोगे। अतः यदि वह जूलियट का पार्ट एक लकड़ी की गुड़िया की भाँति खेलती है तो उससे तुम्हें क्या मतलब ? वह बहुत सुन्दर है और यदि वह जिन्दगी के विषय में उतना ही कम जानती है जितना कि अभिनय के विषय में, तब तो तुम्हारे लिये यह बहुत मनोरंजक अनुभव होगा। संसार में केवल दो प्रकार के लोग ही दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं—वे लोग जो सब कुछ जानते हैं और जो कुछ भी नहीं जानते। अरे डोरियन, इस प्रकार की दुःखी मुद्रा न बनाओ। युवक बने रहने का एक रहस्य यह है कि कोई भी भावना तुमको प्रभावित न कर सके। हम दोनों के साथ क्लब चलो। हम वहाँ सिगरेट पियेंगे और सिबल वेन के सौन्दर्य के लिये शराब पियेंगे। वह सुन्दर है, इससे अधिक तुम्हें और क्या चाहिये ?"

"हेनरी, तुम जाओ।" डोरियन ने चिढ़कर कहा—"मैं अकेला रहना चाहता हूँ। बासिल, तुम भी जाओ। ओह ! क्या तुम नहीं देखते कि मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े हुआ जा रहा है ?" उसकी आँखों में गरम-गरम आँसू भर आये। उसके होंठ काँपने लगे और बाक्स के पीछे जल्दी से जाकर वह दीवार के सहारे खड़ा हो गया और अपना मुख अपनी बाँहों में छिपा लिया।

"बासिल चलो।" लार्ड हेनरी के स्वर में बड़ी विचित्र-सी नम्रता भरी हुई थी। वे दोनों बाहर चले गये।

कुछ समय पश्चात् हाल में अंधेरा हुआ और तीसरा अंक आरम्भ हो गया। डोरियन अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया। उसका मुख पीला पड़ गया था, परन्तु अभिमान और उदासीनता की झलक स्पष्ट रूप से दिखलाई दे रही थी। नाटक उसी प्रकार बिना किसी परिवर्तन के जैसे-तैसे आगे बढ़ता गया। हाल में से आधे दर्शक फर्श पर जूते पटकते हुए हँस-हँस कर बाहर चले गये थे। सारा नाटक ही बच्चों का खेल मालूम पड़ रहा था। अन्तिम अंक के समय तो लगभग सारी बेंचें खाली ही थीं। और जब परदा बन्द हुआ तो कुछ लोगों ने लम्बी साँसें लीं।

ज्योंही ड्रामा समाप्त हुआ, डोरियन परदे के पीछे अन्दर चला गया। सिबल वहाँ अकेली ही खड़ी थी, उसके मुख पर विजय का उल्लास चमक रहा था। उसकी आँखों में एक अजीब-सी चमक थी। उसके खुले हुए होंठ अपने रहस्य पर मुस्करा रहे थे।

डोरियन को अन्दर देखते ही उसके मुख पर प्रसन्नता की एक लहर-सी दौड़ गई। "डोरियन, आज मैंने कितना बुरा अभिनय किया!" उसने चिल्लाकर कहा।

"बहुत ही बुरा।" उसने आश्चर्य में सिबल की ओर देखते हुए कहा—

"बहुत ही गिरा हुआ अभिनय! क्या तुम बीमार हो? शायद तुम्हें इसका विचार तक नहीं आया कि तुम क्या कर रही हो? मुझ पर क्या बीती, शायद इसकी तुमने कल्पना नहीं की।"

सिबल मुस्कराई। "डोरियन!" उसने उत्तर दिया। इस नाम में उसके स्वर में एक ऐसा संगीत भरा था मानो उसके लाल होठों के लिये यह नाम शहद से भी बढ़कर मीठा हो। "डोरियन, तुम्हें वास्तविकता को समझ लेना चाहिए था। परन्तु अब तो तुम इसकी सत्यता को समझ गये हो न?"

"क्या समझ गया हूँ ?" उसने क्रोध में पूछा।

"कि मैंने आज रात को इतना बुरा अभिनय क्यों किया ? मैं भविष्य में अब इसी तरह अभिनय किया करूँगी। मैं अब कभी अपना पार्ट अच्छी तरह अदा नहीं करूँगी।"

उसने अपने कन्धे हिलाए—"मेरे विचार में तुम बीमार हो। जब तुम बीमार होओ तब तुम्हें अभिनय नहीं करना चाहिए। तुम अपने आपको दूसरों की दृष्टि में हँसी का पात्र बना लेती हो। मेरे मित्र तुम्हारा अभिनय देखकर ऊब गये, मैं भी तंग आ गया।

परन्तु उसने मानो डोरियन की बातें सुनी ही नहीं। वह प्रसन्नता से फूली नहीं समा रही थी। वह मानसिक रूप से स्वर्गीय प्रसन्नता का अनुभव कर रही थी।

"डोरियन, डोरियन !" उसने चिल्लाकर कहा—"तुमसे परिचय होने से पूर्व अभिनय ही मेरी जिन्दगी की वास्तविकता थी। थियेटर ही एक ऐसा स्थान था जहाँ मैं अपने आप को जीवित पाती थी। मैं इसी को सत्य समझती थी। एक रात्रि को मैं रोजेलो बनती थी तो दूसरी रात को पोर्शिया का रूप धर लेती थी। बीटराइस की प्रसन्नता मेरी अपनी प्रसन्नता थी और कार्डेला का दुःख मुझे चिन्तित बना देता था। मैं सब में विश्वास करती थी। जो साधारण लोग मेरे साथ अभिनय करते थे, मैं उनको परमात्मा का रूप समझती थी। तूलिका में रंगे हुए प्राकृतिक दृश्य ही मेरी दुनियाँ थे। परछाइयों के अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं जानती थी। मैं उन्हें सच्चा समझती थी। फिर तुम आये"'ओह, मेरे सुन्दर प्रेम"'और तुमने मेरी आत्मा को कारागार से मुक्त किया। तुमने मुझे वास्तविकता का असली रूप दिखलाया। आज रात को, अपनी जिन्दगी में पहली बार मुझे यह आभास हुआ कि रोमियो का पार्ट एक घृणित व्यक्ति खेल रहा है और ऊपर चन्द्रमा की चाँदनी के रूप में बिजली का प्रकाश झूठा है। बनावटी प्राकृतिक दृश्य सब व्यर्थ के हैं, और जो शब्द मुझे कहने पड़ते थे वे सब झूठे हैं, वे मेरे अपने नहीं, मैं

जो कुछ कहना चाहती हूँ, वे नहीं। तुम मेरे लिए इससे कोई ऊँची वस्तु लाये थे। कला जिसकी केवल छायामात्र है। तुमने मुझे समझाया कि वास्तव में प्रेम क्या होता है। मेरे प्यार...मेरे प्रेम···मेरे युवराज···मेरी जिन्दगी के राजकुमार। मैं परछाइयों से ऊब गई हूँ। जो कुछ कला मेरे लिए है, तुम उससे बढ़कर हो। नाटकों में झूठा अभिनय करना मेरी समझ में नहीं आया। आज जब मैं मंच पर आई तो मुझे पता नहीं लग सका कि कैसे मुझमें से सब कुछ लुप्त हो गया। मैं सोचती थी कि मैं बड़ी सफलता से अपना पार्ट अदा करूँगी, परन्तु मैंने अनुभव किया कि मैं कुछ भी नहीं कर सकती। अचानक ही मेरी आत्मा ने इसकी वास्तविकता को समझ लिया। इस ज्ञान का मुझ पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। अपने अभिनय के समय मैंने लोगों को सीटियाँ बजाते देखा और मैं मुस्करा दी। वे हमारे जैसे प्रेम के विषय में क्या जान सकते हैं ? डोरियन, मुझे अपने साथ ले चलो, जिससे हम एकान्त में रह सकें। मुझे रंगमंच से घृणा है। मैं जिस प्रेम का अनुभव नहीं करती, उसका झूठा अभिनय कर सकती हूँ परन्तु जो रात-दिन मुझे जलाता रहता है उसका तिरस्कार कैसे करूँ ? ओह डोरियन···डोरियन···तुम अब इसका महत्व समझे ?" वह सोफे पर उछलकर बैठ गया और अपना मुख दूसरी ओर फेरकर बोला—"तुमने मेरे प्यार की हत्या कर डाली है।"

सिबल ने उसकी ओर बहुत आश्चर्य से देखा और हँस दिया। उसने कोई उत्तर ही नहीं दिया। वह दूसरी ओर उसके सामने आकर बैठ गई और अपनी अंगुलियों से उसके गाल सहलाने लगी। उसने झुककर डोरियन के हाथ अपने होठों से दबा लिये। डोरियन ने अपने हाथ एक ओर खींच लिये और उसका शरीर सिहर उठा।

वह यकायक उठ खड़ा हुआ और दरवाजे तक चला गया। "हाँ" उसने चिल्लाकर कहा—"तुमने मेरे प्रेम की हत्या कर डाली है। तुम मेरी कल्पना में एक बवण्डर उठा देती थीं, परन्तु अब तुम्हें देखकर मेरी

उत्सुकता भी शान्त रहती है। तुम्हारा मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मैं तुमको इसलिए प्यार करता था, क्योंकि तुम एक अजीब शक्ति थीं, तुममें महानता और बुद्धि थी, तुम महान् कवियों के स्वप्नों का अनुभव करती थीं और कथा की परछाइयों को सत्य का रूप देती थीं। परन्तु अब तुमने सब को अपने से दूर फेंक दिया है, तुम बेवकूफ और बहुत साधारण लड़की बन गई हो। हे भगवान्—क्या तुम्हें प्यार करते समय मैं पागल था ? मैं कितना मूर्ख था। तुम मेरे लिए अब नहीं के समान हो। मैं अब तुम्हारा मुँह कभी नहीं देखूँगा। मैं तुम्हारे विषय में जरा भी नहीं सोचूँगा। मैं तुम्हारा नाम तक कभी नहीं लूँगा। तुम नहीं जानतीं एक दिन तुम मेरे लिए क्या थीं। ओह ! मैं इसके विषय में सोच ही नहीं सकता। अच्छा होता कि मेरी आँखें तुम्हें न देखतीं। तुमने मेरी जिन्दगी का रोमांस नष्ट कर दिया। तुम प्रेम के विषय में कितना कम जानती हो। तुम्हारी कला के बिना तुम कुछ भी नहीं हो। मैं तुम्हें प्रसिद्ध कर देता, एक महान् कलाकार बना देता। संसार तुम्हारी पूजा करता और तुम्हारा नाम मेरे काम के साथ जुड़ता। अब तुम क्या हो ? तीसरे दर्जे की एक सुन्दर अभिनेत्री।"

सिबल का मुख सफेद पड़ गया और वह काँपने लगी। उसने अपने दोनों हाथों को कसकर जकड़ लिया और ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसका स्वर गले से बाहर नहीं निकल रहा था। "डोरियन, जो कुछ तुमने कहा वह होश में नहीं कहा।" उसने धीरे से अस्फुट स्वर में कहा—"तुम अभिनय कर रहे हो।"

"अभिनय ! वह तो मैंने तुम पर छोड़ दिया है। तुम बहुत सुन्दर अभिनय करती हो।" उसने ताने के स्वर में उत्तर दिया।

वह खड़ी हो गई, अपने मुख पर पीड़ा और विषाद के भाव लिये वह कमरे के दूसरी ओर डोरियन के पास आकर खड़ी हो गई। उसने अपना हाथ उसकी बांह पर रखा और उसकी आँखों में देखने लगी। उसने सिबल को पीछे धकेल दिया और—"मुझे मत छुओ।" उसने चिढ़कर कहा।

एक हल्की-सी चीख उसके मुख से निकली और वह उसके पैरों पर मसले हुए पुष्प की भाँति गिर पड़ी। "डोरियन, डोरियन, मुझे मत छोड़ जाओ।" उसने धीरे से कहा—"मुझे बहुत अफसोस है कि मैं ठीक तरह से अभिनय नहीं कर सकी। मैं सारे समय तुम्हारे विषय में ही सोच रही थी। परन्तु मैं कोशिश करूँगी। अब मैं पूरा प्रयास करूँगी। तुम्हारे लिए ही यह सब कुछ ढोंग रचने का विचार मेरे मन में अचानक आया था। यदि तुम मेरा चुम्बन न लेते, यदि हम एक-दूसरे को न चूमते तो शायद यह विचार कभी मेरे मन में न आता। ओह डोरियन, मुझे फिर से चूमो। मुझ से दूर मत जाओ। मैं इसको सहन नहीं कर सकती। मेरे भाई ने कहा''''नहीं'''उसकी बातों का ध्यान न करो, उसका मतलब यह सब कुछ नहीं था, वह जोश में था। परन्तु तुम—क्या तुम मुझे आज रात के लिए क्षमा नहीं कर सकते। मैं बहुत मेहनत करूँगी और अपने अभिनय में उन्नति करने का पूरा प्रयास करूँगी। मुझ पर इसलिये निर्दयी न बनो कि मैं संसार में सबसे अधिक तुमको प्यार करती हूँ। आज पहली बार ही तो मैं तुमको प्रसन्न नहीं कर सकी हूँ।

"परन्तु डोरियन तुम ठीक कहते हो। मुझे अपने-आपको एक कलाकार के रूप में अधिक प्रकट करना चाहिए था। यह मेरी मूर्खता थी, परन्तु मैं कुछ भी न कर सकी। ओह! ओह! मुझे मत छोड़ो। मुझे मत छोड़ो।" सिसकियाँ लेने के कारण उसका गला रुंध गया। वह एक घायल शिकार की भाँति फ़र्श पर पड़ी हुई थी और डोरियन अपनी सुन्दर आँखों से उसे देख रहा था। उसके होंठ किसी मूर्ति की भाँति स्थिर थे मानो डोरियन के लिए अब सिबल का कोई महत्त्व शेष नहीं रहा था। किसी व्यक्ति के प्रति प्रेम नष्ट हो जाने के पश्चात् उसके भावों का अध्ययन करना बहुत हास्यास्पद प्रतीत होता है। उस समय सिबल वेन उसको नाटक की एक पात्री-सी प्रतीत हो रही थी। उसके आँसू और सिसकियों से वह और भी क्रोधित हो गया।

"मैं जा रहा हूँ।" आखिर उसने अपने शान्त और स्पष्ट स्वर में कहा—"मैं निठुर या निर्दयी बनना नहीं चाहता, परन्तु अब मैं तुम्हें कभी देख नहीं सकता। तुमने मुझे निराश कर दिया है।"

वह चुपचाप रोती रही। उसने कोई उत्तर नहीं दिया और धीरे-धीरे डोरियन के समीप खिसक कर आ गई। उसने अंधे की भाँति अपने दोनों हाथ डोरियन की सहायता पाने के लिए बढ़ाये। वह उससे हटकर कमरे से बाहर हो गया। कुछ ही क्षणों में वह थियेटर से बाहर था।

वह कहाँ जा रहा था, इसका उसे तनिक भी ज्ञान न था। धुँधले प्रकाश में चमकती हुई गलियाँ, रात्रि के अन्धकार में डूबे हुए प्राचीन खंडहर और टूटे-फूटे डरावने मकानों को पार करता हुआ डोरियन आगे बढ़ता जा रहा था। अजीब से स्वर और विकृत हँसी वाली स्त्रियाँ उस पर ठहाके लगाती थीं। शराब के नशे में मस्त लोग गालियाँ निकालते हुए और परस्पर अश्लील मजाक करते हुए आगे बढ़ जाते थे। मकानों के द्वार के बाहर भयानक शक्लों वाले बच्चे एक-दूसरे से सटे बैठे थे। उदासी की छाप लिये अदालतों में से लोगों के चिल्लाने की आवाजें और सौगन्धें खाने के स्वर उसे सुनाई दे रहे थे।

प्रातःकाल सूर्य की प्रथम किरण चमकने पर डोरियन ने अपने आपको कन्वेन्ट के बाग के सामने पाया। अन्धकार का आवरण हटने के उपरान्त आकाश में विभिन्न रंग इस प्रकार चमकने लगे मानो ऊपर आग लग गई हो। खाली सुनसान सड़कों पर बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ झूमते हुए फूलों के गमले लिये आगे घिसटती जा रही थीं। हवा फूलों की सुगन्धि से लदी थी। उस समय के सौन्दर्य ने डोरियन की वेदना पर मरहम का काम किया। बाजार में पहुँचकर उसने लोगों को गाड़ियों में से सामान उतारते देखा। एक दुकान वाले ने उसे कुछ चेरी खाने को दीं। डोरियन ने उसका धन्यवाद किया, परन्तु यह सोचकर उसे आश्चर्य होने लगा कि उस दुकानदार ने चेरियों के बदले पैसे क्यों नहीं लिये? वह जल्दी-जल्दी चेरी खाने लगा। आधी रात के समय चेरी पेड़ों में से तोड़ी गई

थीं और चाँद की शीतलता उनमें समा गई थी। पीले और लाल गुलाब तथा अन्य फूल लिये लड़कों की एक लम्बी कतार उसके सामने से सब्जियों के ढेर में से आगे निकल रही थी। बाजार के एक कोने में नंगे सिर कुछ लड़कियाँ नीलाम समाप्त हो जाने की प्रतीक्षा कर रही थीं। कुछ पियाज़ा में काफी हाउस के खुलते और बन्द होते दरवाजों के पास भीड़ लगाये थीं। गाड़ियों के खुले हुए घोड़े पत्थरों पर फिसल और कूद रहे थे, जिससे उनकी घंटियाँ बज उठती थीं। कुछ ड्राइवर बोरियों के ढेर पर नींद में मग्न थे। कबूतर इधर-उधर दाना चुग रहे थे।

कुछ समय पश्चात् उसने एक गाड़ी किराये पर ली और घर की ओर चल पड़ा। कुछ देर तक वह द्वार के आस-पास ही घूमता रहा और निस्तब्ध मुहल्ले की बन्द खिड़कियों के चमकते हुए शीशे देखता रहा। आकाश साफ और पीले रंग में रंगता जा रहा था और उसके प्रकाश में मकानों की छतें चांदी की भाँति चमक रही थीं। सामने की चिमनी से कुछ धुएँ के बादल ऊपर की ओर उड़े जा रहे थे।

अपनी टोपी और ओवरकोट मेज पर फेंककर वह पुस्तकालय से होता हुआ अपने सोने वाले कमरे की ओर बढ़ गया। उसका शयनकक्ष मकान की पहली मंजिल में पुराने ढंग से सजा हुआ था जहाँ दीवारों पर राजाओं के समय के विचित्र पुराने ढंग के बहुत कीमती परदे टँगे हुए थे, जिन पर बारीक कलामय काम हुआ था। ज्योंही दरवाजा खोलने के लिए उसका हाथ दरवाजे के हैंडल की ओर बढ़ा, तभी उसकी दृष्टि उसके चित्र पर पड़ी जो बासिल हालवर्ड ने बनाया था। वह आश्चर्य से पीछे हट गया। उसके पश्चात् मन ही मन कुछ सोचता हुआ वह अपने कमरे की ओर बढ़ गया। अपने कोट के बटन खोलता हुआ वह यकायक रुक गया। अन्त में वह उसी चित्र के पास वापस लौट आया और बड़े ध्यान से उसे देखने लगा। पीले रंग के रेशमी परदों में से आती हुई धुंधली किरणों के प्रकाश में उसे चित्र का मुख कुछ बदला हुआ जान पड़ा। उस चित्र की मुद्रा में परिवर्तन हो गया था। कोई भी व्यक्ति यह

कह सकता था कि चित्र की आकृति में निर्दयता के भाव झलकते हैं। कैसी अनोखी बात थी।

वह मुड़ा और खिड़की के पास जाकर उसने परदा हटा दिया। प्रभात का सम्पूर्ण प्रकाश कमरे में आ गया और पहले जो अजीब-सी परछाइयाँ बनी हुई थीं, वे अब कोनों में हटकर कांपने लगीं। परन्तु चित्र के चेहरे पर जो भाव उसने पहले देखा था, वह उसी प्रकार जमा रहा, बल्कि और भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। सूर्य की झिलमिलाती किरणों में उस चेहरे पर निर्दयता की रेखायें उतनी ही स्पष्टता से दिखाई दे रही थीं जैसे कोई भयानक अपराध करके मनुष्य को दर्पण में अपनी शक्ल दिखाई देती है।

वह पीड़ा में एक कदम पीछे हटा और पास ही पड़े लार्ड हेनरी के उपहार स्वरूप दिये हुए शीशे में शीघ्रता से अपना मुख देखा, परन्तु उसके लाल होठों पर इस प्रकार की भयानकता के कोई चिह्न नहीं दिखाई दिये। इसका क्या मतलब है ?

उसने अपनी आँखें मलीं और चित्र के पास आकर उसे पुनः ध्यान से देखा। जब बासिल ने यह चित्र बनाया था तब तो उसने कभी इस-प्रकार के भाव नहीं देखे थे, परन्तु अब उस मुद्रा में घोर परिवर्तन हो गया है। यह उसकी कोरी कल्पना ही नहीं थी, यह एक भयानक सत्य था।

वह कुर्सी पर धम से बैठ गया और सोचने लगा। अचानक ही उसके मस्तिष्क में एक विचार बिजली की भाँति दौड़ गया और उसे वह दिन याद आने लगा जिस दिन चित्र समाप्त होने के पश्चात् उसने बासिल से बातें की थीं। हाँ, उसे सब कुछ अच्छी तरह याद था। उसने एक पागलों की-सी इच्छा प्रकट की थी कि वह तो युवक ही बना रहे और उसका चित्र समय के साथ-साथ अवस्था के अनुसार बदलता रहे। उसके अपने सौन्दर्य में तो काल की विकृत छाया कोई परिवर्तन न कर सके परन्तु कैन्वस पर बने हुए चेहरे पर उसकी इच्छाओं और पापों की प्रति-

छाया पड़ती रहे। दुःख और सोचने-विचारने के कारण चेहरे की मुद्रा को बदलने वाली रेखायें केवल चित्र पर ही पड़ सकीं। परन्तु उसकी युवावस्था की कोमलता के भाव और सौन्दर्य उसी प्रकार बने रहें। क्या उसकी यह इच्छा पूर्ण हो गई है ? परन्तु ये बातें तो असम्भव हैं। ऐसे तो विचार भी आने भयानक हैं, परन्तु उसके सामने तो चित्रकार द्वारा बनाया हुआ चित्र खड़ा था, जिसके मुख पर निर्दयता के भाव स्पष्ट रूप से झलक रहे थे।

निर्दयता ! क्या उसने एक निर्दयी की भाँति व्यवहार किया था ? यह उस लड़की का ही अपराध था, उसका अपना कोई कसूर नहीं। वह उस लड़की के एक कुशल कलाकार होने के स्वप्न देखा करता था। उसने अपना प्रेम इस कारण से उसे दिया था क्योंकि वह एक कलाकार थी। परन्तु उसने उसे निराश कर दिया था। वह बहुत खोखले स्वभाव की एक अयोग्य लड़की प्रमाणित हुई। परन्तु फिर भी उस दृश्य के विषय में सोचकर उसे बहुत दुःख हुआ जब वह उसके पैरों पर गिरी हुई एक बच्चे की भाँति सिसक-सिसक कर रो रही थी। उसे याद आया कि पत्थर के समान कठोर बनकर तब वह सिबल को देख रहा था। वह क्यों इतना निर्दयी बन गया था ? उसकी आत्मा इतनी कठोर क्यों बन गई थी ? परन्तु उसे भी तो कम वेदना नहीं हुई है। पूरे तीन घंटों तक नाटक देखते समय उसे ऐसा प्रतीत हुआ था कि वह दुःख और असह्य पीड़ा शताब्दियों तक वह सहता आ रहा है। उसकी अपनी जिन्दगी सर्वथा सिबल के योग्य थी। यदि उसने सिबल पर बहुत दिनों तक के लिये यह प्रहार किया है तो उसने क्षण भर के लिये यह प्रहार किया है और क्षण भर के लिये ही डोरियन को नारकीय पीड़ा का स्वाद चखने को दिया है। फिर, पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक दुःख सहन कर सकती हैं। स्त्रियाँ बहुत भावुक होती हैं और केवल अपनी भावनाओं के विषय में ही सोचा करती हैं, अपना प्रेमी बनाने का उनका केवल यह एक ही उद्देश्य होता है कि वे उनके साथ खेल खेल सकें। लार्ड हेनरी ने ही उसे

यह सब कुछ बतलाया है और वह स्त्रियों को भलीभांति जानता है। वह सिबल वेन के विषय में सोचकर अपने आप को क्यों दुखी बनाये ? उसके लिये उसका अब कोई महत्व नहीं रहा।

परन्तु वह चित्र ? वह उसके विषय में क्या कहेगा ? उसकी जिंदगी का रहस्य इस चित्र में छिपा हुआ है और यही उसके जीवन की कहानी है। इस चित्र ने ही उसे अपने सौन्दर्य से प्रेम करना सिखलाया है। क्या अपनी आत्मा को एक बोझ समझना भी यही सिखलायेगा ? क्या वह फिर इस चित्र को देखेगा ?

नहीं, विचारों में उथल-पुथल हो जाने से ही उसे धोखा हुआ है। कल की भयानक रात्रि ने उसके मस्तिष्क में डरावनी आकृतियाँ बना दी हैं। यकायक उसके मस्तिष्क में वह विचार घुड़दौड़ लगाने लगा था जो मनुष्य को पागल बना देता है। चित्र में कोई परिवर्तन हुआ है। ऐसा विचार करना भी उसकी मूर्खता है।

फिर भी वह चित्र उसकी ओर देख रहा था, उसके सुन्दर मुख पर वे विकृत रेखायें और निर्दयता से भरी हुई मुस्कान। चित्र के बाल सूर्य की प्रथम किरणों में चमक रहे थे। उसकी नीली आँखें उसकी ओर देख रही थीं। अपने लिये नहीं, वरन अपने चित्र के लिये उसके मन में सहानुभूति और दया उत्पन्न हुई। वह बदल चुका था और उसमें अन्य परिवर्तन होने की संभावना भी थी। इस चित्र की चमक और सुनहरा-पन धीरे-धीरे धुँधला होता जायेगा, इसके लाल और श्वेत गुलाब के फूल धीरे-धीरे मुरझा जायेंगे। क्योंकि उसके प्रत्येक पाप का एक-एक दाग उस चित्र के सौन्दर्य को नष्ट करता जायेगा। परन्तु अब वह कोई भी पाप नहीं करेगा। यह चित्र—चाहे उसमें परिवर्तन हों या न हों—सदा उसके लिये उसकी आत्मा का दर्पण बना रहेगा। वह अपने मन में जागृत होती हुई इच्छाओं का विरोध करेगा। वह लार्ड हेनरी से अब नहीं मिलेगा—कम-से-कम वह उसकी उस जहर उगलती हुई विचार-धारा पर ध्यान न देगा जो उसने बासिल हालवर्ड के बाग़ में उसे पहले-

पहल सुनाई थी और जिसको सुनकर वह असम्भव चीज़ों को पाने की लालसा करने लगा था। वह सिबल वेन के पास जाकर उससे क्षमा माँग लेगा—उससे विवाह करके उससे पुनः प्रेम करने लगेगा। हां, ऐसा करना उसका कर्त्तव्य है। सिबल को उसकी अपेक्षा अधिक दुःख हुआ होगा। वह बेचारी निरी बच्ची है! उसने बहुत स्वार्थ और निर्दयता का व्यवहार उसके साथ किया है। सिबल ने जो उस पर जादू डाल रखा था, वह अब पुनः वापस लौट आयेगा। वे फिर से प्रसन्न होकर रहने लगेंगे। सिबल के साथ उसकी जिंदगी सुन्दर और पवित्र बन जायेगी।

वह अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और चित्र के ऊपर एक बड़ा-सा परदा डालकर उसे ढक दिया। चित्र को देखते ही वह कांप उठा। 'कितना भयानक' उसने अपने आपसे कहा और खिड़की के पास जाकर उसे खोल दिया।

कमरे के बाहर घास पर चहलकदमी करते हुए उसने शांति की सांस ली। प्रातः की ठंडी हवा ने उसके मन में उठते विचारों को पूर्णतया शान्त कर दिया। वह केवल सिबल के विषय में ही सोचने लगा। अपने प्रेम की धीमी प्रतिध्वनि उसे सुनाई दी। उसने सिबल का नाम बार-बार दोहराया। ओस से भीगे हुए बाग में पक्षी भी फूलों को सिबल के विषय में ही बतला रहे थे।

८

अगले दिन जब डोरियन सोकर उठा तो सूर्य आकाश के बीच में चमक रहा था। उसका नौकर चुपचाप दबे पाँव कितनी ही बार कमरे में आकर उसे देख गया था कि वह अभी तक उठा या नहीं और वह

आश्चर्य-चकित हो रहा था कि डोरियन अभी तक जागा क्यों नहीं ! आखिर डोरियन ने घंटी बजाई और नौकर चाय का एक प्याला और चीनी की प्लेट में आये हुए पत्रों का एक पुलन्दा लेकर धीरे-धीरे आया और सामने की तीन बड़ी-बड़ी खिड़कियों पर से परदे हटा दिये, जिनके चारों ओर लगी हुई नीली डोरी चमक रही थी।

"साहब आज बहुत देर तक सोते रहे।" उसने मुस्कराते हुए कहा।

"विक्टर, क्या समय हुआ होगा ?" डोरियन ग्रे ने ऊँघते हुए कहा।

"सवा बज चुका है साहब !"

कितनी देर हो गई थी। वह उठकर बैठ गया और चाय का कुछ घूँट पीकर अपने पत्रों को देखने लगा। एक पत्र लार्ड हेनरी का था, और उसी प्रातःकाल किसी के हाथ भिजवाया गया था। वह क्षण भर के लिये झिझका और उस पत्र को एक ओर रख दिया। दूसरे पत्रों को बड़ी लापरवाही से वह खोलता चला गया। उनमें पहले की भाँति कार्ड, खाने के लिये निमन्त्रण-पत्र, विशेष निजी जलसों के टिकट, चन्दों के लिये किये जाने वाले जलसों के प्रोग्राम इत्यादि थे जो हर प्रातःकाल फैशनेबुल युवकों को भेजे जाते थे। चांदी के एक कीमती टापलेट सेट का बिल भी था, जिसको अभी तक उसने अपने माता-पिता को भेजने का साहस नहीं किया था क्योंकि वे अभी तक बहुत पुराने विचारों वाले लोग थे और यह अनुभव नहीं करते थे कि हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं जहाँ अनावश्यक वस्तुएँ ही हमारी प्रतिदिन की आवश्यकतायें हैं। जर्मिन बाजार के उधार देने वाले व्यापारियों ने बड़े नम्र शब्दों में उसे सूचित किया था कि बहुत थोड़े सूद की दर पर वे एक मिनट के नोटिस पर उसे उसकी आवश्यकता के अनुसार रुपया उधार दे देंगे।

लगभग दस मिनट के पश्चात् वह उठ खड़ा हुआ और सिल्क से कढ़ा हुआ एक काश्मीरी ऊनी गाउन पहनकर गुसलखाने में चला गया। इतनी देर तक सोने के उपरान्त ठंडे पानी ने उसकी सारी सुस्ती दूर कर दी। पिछली रात और प्रातःकाल की सारी घटनायें वह भूल चुका था।

किसी अजीब-सी ट्रेजेडी में भाग लेने का एक आध बार उसे धुँधला-सा आभास हुआ। परन्तु एक स्वप्न की-सी अवास्तविकता उसे प्रतीत हुई।

कपड़े इत्यादि पहनकर वह पुस्तकालय में चला गया और हल्का-सा नाश्ता करने के लिये बैठ गया। खुली खिड़की के पास छोटे-से गोल-मेज़ पर नाश्ता पहले से ही लगाया जा चुका था। आज का दिन बहुत सुन्दर था। गरम हवा फूलों की सुगन्धि से भरी हुई थी। एक मक्खी अन्दर आकर नीले फूलदान में सजे हुए पीले गुलाब के फूल पर भिन-भिनाने लगी। वह पूर्ण रूप से प्रसन्न दिखाई दे रहा था।

अचानक ही उसकी दृष्टि सामने वाले परदे पर पड़ी जो उसने अपने चित्र के ऊपर डाल दिया था, उसे देखकर वह सिहर उठा।

"साहब को शायद बहुत सर्दी लग रही है ?" उसके नौकर ने आम-लेट मेज़ पर रखते हुए कहा—"मैं खिड़की बन्द किये देता हूँ।"

डॉरियन ने अपना सिर हिला दिया—"नहीं, मुझे सर्दी नहीं लग रही है।" उसने धीमे स्वर में कहा।

क्या वह सब सत्य था ? क्या वह चित्र सचमुच बदल गया था ? या वह केवल उसकी कल्पना ही थी जिसने उसकी प्रसन्न मुद्रा को भी शोकमयी मुद्रा में परिवर्तित कर दिया था। निश्चित रूप से एक चित्र बदल नहीं सकता। यह सोचना भी महान् मूर्खता है। यह कहानी वह किसी दिन बासिल को सुनायेगा जो उसे हँसा देगी।

सारी घटना की याद भी बहुत धुँधली-सी हो गई थी। प्रातः की पहली किरणों में और फिर चमकते हुए सूर्य के प्रकाश में उसने निर्दयता का आभास चित्र के होंठों में देखा था। वह जानता था कि नौकर के बाहर जाने पर उसे भय लगने लगेगा। वह जानता था कि अकेला होने पर वह चित्र का निरीक्षण अवश्य करेगा। इस विषय में कोई निश्चित धारणा बनाते हुए उसे मन ही मन भय लग रहा था। क़ाफी और सिग-रेट रखने के उपरान्त नौकर कमरे के बाहर जाने लगा, नौकर को वहीं खड़े रहने का आदेश देने की तीव्र इच्छा उसके मन में उठी। ज्योंही वह

दरवाजा बन्द करने वाला था, उसने उसे बुलाया। नौकर उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा। डोरियन क्षण भर तक उसकी ओर देखता रहा। "विक्टर, मैं आज किसी से मिल नहीं सकूँगा।" उसने एक साँस लेकर कहा। नौकर ने झुककर सलाम किया और चला गया।

तब वह मेज़ छोड़कर उठ खड़ा हुआ, एक सिगरेट सुलगाई और परदे के सामने रखी हुई एक गद्दे वाली कोच पर बैठ गया। परदा बहुत पुराना था, वह ध्यान से उसे देखने लगा और यह सोचकर हैरान होने लगा कि क्या कभी पहले भी इसने किसी मनुष्य की जिन्दगी का रहस्य छिपाया होगा ?

क्या वह उसे हटा दे ? वहीं क्यों न वह उस चित्र के ऊपर पड़ा रहे ? उन सब बातों को जानने का लाभ ही क्या है ? यदि यह सब कुछ सत्य है तो सब कुछ बहुत ही डरावना होगा, यदि यह सत्य नहीं तब इस विषय में अपने आपको चिन्तित करने से क्या फ़ायदा ? परन्तु यदि भाग्य से किसी अन्य व्यक्ति की दृष्टि इस चित्र पर पड़ गई और उसने यह परिवर्तन देख लिया ? यदि बासिल ही अपने बनाये हुए चित्र को एक बार देखना चाहे तो वह क्या उत्तर देगा ? बासिल निश्चित रूप से इस चित्र को फिर देखना चाहेगा। नहीं, इसको इसी क्षण फिर देखना होगा। सन्देह की इस अवस्था से कोई भी प्रहार अच्छा होगा।

वह उठ खड़ा हुआ और उसने दोनों दरवाज़े बन्द कर लिये। अपने निन्दनीय कार्य का परिणाम देखने के लिए कम से कम केवल उसे ही उपस्थित रहना चाहिये। तब उसने परदे को एक ओर हटा दिया और चित्र को बहुत पास से देखा। वह बिल्कुल सत्य था। चित्र बदल चुका था।

पहले-पहल तो वह एक वैज्ञानिक की भाँति उत्सुकता से उस बदले हुए चेहरे को देखता रहा। इतना परिवर्तन देखकर उसे अपनी आँखों पर सहसा विश्वास ही न हो सका। परन्तु यह सब कुछ सत्य था। क्या केन्वस पर लगाये हुए रंगों के परमाणुओं में और उसकी अपनी आत्मा

में कोई पारस्परिक सम्बन्ध था ? क्या जो कुछ उसकी आत्मा सोचती थी उसका अनुभव रंग लेते थे ? जो कोई स्वप्न उसकी आत्मा देखती थी, उसको वह सत्य का रूप दे देते थे ? या इसका कोई और भयानक कारण है ? वह काँप उठा और भयभीत होकर कौच पर लेट गया और वहीं से भयत्रस्त मुद्रा में चित्र को देखने लगा।

उसने अनुभव किया कि इस चित्र में यह परिवर्तन हो जाने से कम से कम उसकी यह धारणा तो दृढ़ हो गई है कि उसने सिबल वेन के साथ कितनी निर्दयता का व्यवहार और कितना अन्याय किया है, परन्तु वह इसके लिए पश्चात्ताप करेगा। वह अब भी उसकी पत्नी बन सकती है। उसका अपना अवास्तविक और स्वार्थपूर्ण प्रेम किसी बड़ी भारी शक्ति के वशीभूत होकर एक पवित्र प्रेम का रूप धारण कर लेगा और बासिल हालवर्ड द्वारा बनाया हुआ यह चित्र जिन्दगी भर तक उसका मार्गप्रदर्शक बना रहेगा। कुछ लोगों के लिए धर्म का जो महत्व होता है, कुछ के लिए आत्मा का जो स्थान होता है और कुछ लोगों के लिए परमात्मा के भय का जो महत्व होता है वह उसके लिए इस चित्र का होगा। पाप करके पश्चात्ताप करने वालों के लिये अफीम से भरी ऐसी दवायें होती हैं जो लोगों की चेतनाशक्ति को सुला देती हैं परन्तु यहाँ तो जीता-जागता एक ऐसा चिह्न है जो उसके बुरे कामों का सूचीपत्र तैयार करता रहेगा। यह तो उसकी आत्मा के पतन का द्योतक रहेगा।

साढ़े तीन के पश्चात् चार और फिर साढ़े चार बज गये परन्तु डोरियन अपने स्थान से नहीं हिला। वह अपनी जिन्दगी की तारों की सहायता से एक ऐसा वस्त्र बुन देना चाहता था जिसके बीच से वह अपना रास्ता निकाल सके।

वह नहीं जानता था कि वह क्या करे और क्या सोचे ! अन्त में वह मेज के पास गया और सिबल को एक प्रेमपत्र लिखा जिसमें उससे क्षमा माँगी थी और कल रात के अपने पागलपन पर अपने को कोसा था। असीम दुःख और वेदना के शब्दों से उसने पन्ने पर पन्ने लिख

डाले। आत्म-प्रताड़ना में भी कभी सुख मिलता है। अपने आपको हम दोषी स्वीकार करके कुछ ऐसा अनुभव करने लगते हैं कि अब किसी दूसरे को हमें दोषी ठहराने का अधिकार नहीं है। अपने पापों को स्वयं स्वीकार करने में जितनी शान्ति मिलती है उतनी कोई धार्मिक उपदेशक नहीं दे सकता। पत्र लिखकर डोरियन ने ऐसा अनुभव किया कि उसे क्षमा कर दिया गया है।

अचानक ही उसने किसी के द्वार खटखटाने की आवाज सुनी और उसने लार्ड हेनरी का स्वर सुना। "मुझे तुम से एक आवश्यक बात कहनी है, मुझे एकदम अन्दर आने दो। मैं तुम्हें इस प्रकार कमरे में बन्द नहीं देख सकता।"

उसने पहले-पहल कोई उत्तर नहीं दिया, परन्तु बिल्कुल शान्त और स्थिर खड़ा रहा। दरवाजे पर निरन्तर खड़खड़ाहट होती रही और वह धीरे-धीरे बढ़ती गई। लार्ड हेनरी को कमरे में अन्दर बुला लेना ही उसने उचित समझा, जिससे वह भविष्य में जो नई जिन्दगी बिताने जा रहा है उसके विषय में उसे समझा दे। यदि लार्ड हेनरी से झगड़ा करना आवश्यक समझा गया, तो वह आज झगड़ लेगा। यदि यह मैत्री तोड़नी पड़ी तो सदा के लिए वह यह बन्धन तोड़ देगा। वह उछलकर खड़ा हो गया और चित्र के ऊपर परदा डालकर दरवाजे को खोल दिया।

"डोरियन, मुझे इसके लिए बहुत ही शोक है।" लार्ड हेनरी ने कमरे में घुसकर कहा—"परन्तु तुम्हें इस विषय में अधिक सोचना नहीं चाहिये।"

"क्या तुम्हारा तात्पर्य सिबल वेन से है?" डोरियन ने पूछा।

"हाँ, और क्या?" लार्ड हेनरी ने कुर्सी पर बैठकर अपने दस्ताने उतारते हुए कहा—

"यह सब कितना भयानक हुआ, परन्तु इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। हाँ, क्या तुम नाटक समाप्त होने के पश्चात् उससे मिलने के लिए अन्दर गये थे?"

"हाँ।"

"मेरा भी दृढ़ विश्वास था। क्या तुम्हारा उससे कुछ झगड़ा हुआ था ?"

"मैं जानवर बन गया था हेनरी—पूरा जानवर ! परन्तु अब सब कुछ ठीक हो गया है। जो कुछ भी हो चुका है मुझे उसके लिए तनिक भी शोक नहीं है। इससे मुझे यह शिक्षा मिली है कि मैं अपने आपको अच्छी तरह समझ सकूँ।"

"ओह डोरियन, मुझे कितनी खुशी है कि तुम इस घटना को तनिक भी महत्व नहीं दे रहे। मुझे तो भय था कि तुम पश्चात्ताप की आग में जल रहे होगे और अपने सुन्दर वस्त्रों को नोचते होगे।"

"मैं यह सब पहले ही कर चुका हूँ।" डोरियन ने अपना सिर हिला कर मुस्कराते हुए कहा। "मैं अब पूर्णरूप से प्रसन्न हूँ। मुझे यह पता चल गया है कि आत्मा क्या चीज है, जो कुछ तुमने बतलाया था वह सत्य नहीं है। यह हम में सबसे पवित्र चीज है। हेनरी, मेरी बात पर हँसो नहीं, कम से कम मेरे सामने तो ऐसा मत करो। मैं अच्छा बनना चाहता हूँ। मैं यह सहन नहीं कर सकता कि मेरी आत्मा एक भयानक रूप धारण कर ले।"

"एथिक्स के लिए ये बहुत कलात्मक विचार हैं डोरियन ! मैं तुम्हें बधाई देता हूँ। परन्तु तुम इसका आरम्भ किस प्रकार करोगे ?"

"सिबल वेन से विवाह करके !"

"सिबल वेन से विवाह।" लार्ड हेनरी ने खड़े होकर चिल्लाकर कहा और आश्चर्यचकित होकर इसी उधेड़बुन में डोरियन को देखा—"लेकिन डोरियन—"

"हाँ हेनरी, मैं जानता हूँ कि तुम क्या कहना चाहते हो। विवाह के विषय में कोई भयानक विचार ! परन्तु यह सब मत कहो। मुझसे कभी इस प्रकार की बातें न कहना। दो दिन पूर्व मैंने सिबल से विवाह करने

के लिए कहा था। मैं अपनी बात वापस नहीं ले सकता । वह मेरी पत्नी बनेगी।"

"तुम्हारी पत्नी ! डोरियन ! क्या तुम्हें मेरा पत्र नहीं मिला ? मैंने प्रातः ही पत्र लिखकर अपने आदमी के हाथ तुम्हें भिजवाया था।"

"तुम्हारा पत्र ? अरे हाँ, मुझे याद आ गया। हेनरी, मैंने, अभी तक इसे पढ़ा नहीं है। मुझे भय था कि उस पत्र में तुमने कुछ ऐसी बातें न लिखी हों जो मुझे पसन्द नहीं, तुम अपने शब्दों में जीवन की धज्जियाँ उड़ा देते हो।"

"तब तुम कुछ भी नहीं जानते ?"

"तुम्हारा मतलब किससे है ?"

लार्ड हेनरी कमरे के दूसरी ओर चला गया और डोरियन ग्रे के पास बैठकर उसके दोनों हाथों को अपने हाथों में ले लिया और उन्हें जोर से पकड़ लिया। "डोरियन" वह बोला—"मेरा पत्र—तुम डरो नहीं—मेरे पत्र मे यह लिखा था कि सिबल वेन की मृत्यु हो गई है।"

डोरियन दुःख में चीख उठा। लार्ड हेनरी के हाथों से अपने हाथ छुड़ाकर वह उछलकर खड़ा हो गया। "मर गई सिबल, मर गई । यह एक भयानक झूठ है, तुम यह सब कहने का साहस कैसे रखते हो ?"

"डोरियन, यह बिलकुल सच है।" लार्ड हेनरी ने उदास मुद्रा से कहा—"यह संवाद आज सब समाचारपत्रों में छपा है। मैंने अपने पत्र में लिखा था कि मेरे आने के पूर्व तुम किसी से न मिलना। इस मृत्यु की जाँच-पड़ताल होगी और तुमको इससे दूर ही रहना होगा । पेरिस में तो इस प्रकार की घटनाएँ मनुष्य को प्रसिद्ध बना देती हैं परन्तु यहाँ लन्दन में लोगों ने अपनी ही ऐसी धारणाएँ बना रखी हैं। इसलिये इन मामलों में दूर रहना ही ठीक है। थियेटर में वहाँ के लोग शायद तुम्हारा नाम तो नहीं जानते। यदि यह ठीक है तो कोई भय नहीं ! क्या कल रात को किसी ने तुम्हें उसके कमरे में जाते हुए देखा था ? यह बात तो बहुत महत्व रखती है।"

डोरियन ने कुछ क्षणों तक कोई उत्तर नहीं दिया। भय के कारण वह चित्रलिखित-सा वहीं पर खड़ा रहा। अन्त में उसने घुटे हुए स्वर में हकलाते हुए कहा "हेनरी, क्या तुम जाँच-पड़ताल की वात कह रहे थे ? तुम्हारा इससे मतलब क्या था ? क्या सिबल ? ओह हेनरी, मैं इसे सहन नहीं कर सकता। लेकिन मुझे अभी सब कुछ बतलाओ।"

"डोरियन, मेरा ऐसा विश्वास हैं कि अनजाने में ही यह मृत्यु नहीं हुई है। यद्यपि लोगों के सामने इस पर जोर डाला जायेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि जब वह अपनी माँ के साथ रात को साढ़े बारह बजे के लगभग थियेटर से जा रही थी तब सिबल ने कहा कि वह कोई चीज ऊपर भूल आई है। वे नीचे कुछ देर तक उसकी प्रतीक्षा करते रहे परन्तु सिबल पुनः वापस नहीं लौटी। अन्त में उन्होंने उसे अपने कमरे में मरे हुए पाया। उसने भूले से कोई ऐसी जहरीली चीज खा ली थी, जो थियेटर में किसी काम आती है। मुझे नहीं मालूम कि वह क्या चीज थी, परन्तु उसमें प्रसिकएसिड या सिक्का मिला हुआ था। मेरे विचार में तो उसमें प्रसिकएसिड ही था क्योंकि वह खाते ही उसी क्षण मर गई थी।"

"हेनरी, हेनरी, यह सब कितना भयानक है।" डोरियन ने चिल्लाकर कहा।

"हाँ, यह भयानक अवश्य है, परन्तु तुम्हें अपने-आपको इससे दूर ही रखना होगा। मुझे 'स्टैंडर्ड' के समाचार से पता चला है कि उसकी अवस्था १७ वर्ष के लगभग थी। मुझे तो वह इससे भी कम उम्र की जान पड़ती थी। वह तो बिल्कुल बच्ची दिखाई देती थी और अभिनय के विषय में भी बहुत कम जानती थी। डोरियन, इस घटना का तुम पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये। तुम मेरे साथ भोजन करना और फिर हम 'ऑपरा' चलेंगे। आज की रात तो बहुत सुन्दर है और लगभग सब लोग वहाँ पर उपस्थित होंगे। तुम मेरी बहन के बाक्स में आ सकते हो, आज उसके साथ कुछ अन्य स्त्रियाँ भी होंगी।"

"तो सिबल वेन की हत्या मेरे ही हाथों हुई है।" डोरियन ने अपने-आप से ही कहा।

"जिस प्रकार मैं चाकू से उसकी छोटी-सी गर्दन काट डालता, उसी प्रकार मैंने यह हत्या की है। यह सब कुछ होते हुए भी गुलाब के फूल कम सुन्दर नहीं दिखाई देते। पक्षी उसी प्रकार प्रसन्नता से मेरे बाग में गा रहे हैं और आज रात को मैं तुम्हारे साथ भोजन करूँगा, तब आपरा जाऊँगा और उसके पश्चात् फिर कहीं कुछ खाऊँगा। जिन्दगी किस प्रकार एक अजीब ड्रामा की भाँति है। हेनरी, यदि वह सब मैं किसी पुस्तक में पढ़ता, तो शायद मैं बहुत रोता। और अब, जबकि यह घटना वास्तव में घटी है, तो इस पर आँसू भी नहीं बहते। अपनी जिन्दगी में मैंने यह पहला प्रेमपत्र लिखा है। कैसे आश्चर्य की बात है कि मेरा पहला प्रेमपत्र ही एक मृतक लड़की के नाम लिखा गया है। क्या पीले पड़े हुए चुपचाप लोग जिन्हें हम मरा हुआ कहते हैं यह सब अनुभव कर सकते हैं? सिबल! क्या वह अनुभव कर सकती है, या कुछ जान सकती है या कुछ सुन सकती है? ओह हेनरी, मैंने एक बार उसे कितना प्यार किया था। मुझे अब वे सब वर्षों पुरानी बातें मालूम पड़ रही हैं। वह मेरे लिये सब कुछ थी तब वह भयानक रात आई। क्या वह सचमुच कल की ही रात थी? जब उसने कितना बुरा अभिनय किया था और मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े हो गया था। उसके बाद उसने मुझे सब कुछ समझाया। वह सब कुछ वास्तव में अत्यन्त हृदय-विदारक था, परन्तु मैं तनिक भी नहीं पसीजा, मैंने उसे समझा नहीं। अचानक ही एक ऐसी घटना घटी जिसने मुझे भयभीत बना दिया। मैं तुम्हें समझा नहीं सकता कि वह क्या था। परन्तु वह बहुत भयानक था। मैंने कहा कि मैं उसके पास वापस न जाऊँगा। मैं अनुभव कर रहा था कि मैंने गलती की है, और अब वह मर चुकी है। हे भगवान्! हेनरी, मुझे क्या करना चाहिए? तुम नहीं जानते कि मैं किस खतरे में हूँ और कोई भी मुझे उससे बचा नहीं सकता। उसे अपनी हत्या करने का कोई अधिकार नहीं था, यह उसका स्वार्थ था।"

"मेरे प्यारे डोरियन" लार्ड हेनरी ने केस में से एक सिगरेट और सोने के केस वाली दियासलाई की डिबिया निकालते हुए कहा—"स्त्री के पास पुरुष को बदलने का केवल एक ही साधन है कि वह उसे इतना तंग करे, जिससे वह उस स्त्री से ऊब जाए और जिन्दगी में कोई दिलचस्पी न ले। यदि तुम इस लड़की से विवाह कर लेते तो तुम्हारी जिंदगी बहुत भयानक बन जाती। इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम उसके साथ अच्छा व्यवहार करते। मनुष्य उन व्यक्तियों के साथ अवश्य ही नम्रता का व्यवहार कर सकता है जिनमें उसको कोई दिलचस्पी नहीं होती। परन्तु उसको शीघ्र ही पता चल जाता है कि तुम उसकी ओर से कितने उदासीन हो। जब किसी स्त्री को अपने पति के विषय में यह पता चलता है तो या तो वह बहुत भयानक वस्त्र पहनना आरम्भ कर देती है या इतने कीमती और सुन्दर वस्त्र पहनती है कि जिसके दाम अन्य स्त्री के पति को चुकाने पड़ते हैं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यह विवाह पूर्णरूप से असफल होता।"

"मैं भी यही सोचता हूँ।" डोरियन ने कमरे में इधर से उधर घूमते हुए कहा, उसका मुख बहुत पीला पड़ गया था। "परन्तु मैं सोचता था कि यह मेरा कर्तव्य है। इसमें मेरा कोई अपराध नहीं है। इस ट्रेजेडी ने मुझे वह काम करने से रोक दिया जो सही था। मुझे एक बार तुम्हारे कहे हुए वे शब्द अभी तक याद हैं कि अच्छे विचारों को क्रियात्मक रूप देने का अवसर नहीं आता—अथवा वे बहुत देर में दृढ़ बन पाते हैं। मेरे मन में भी यह विचार बहुत देर से जागा।"

"अच्छे विचार वैज्ञानिक नियमों के रास्ते में बाधा डालने का विफल प्रयास करते हैं। उनका उदय होना अपने स्वार्थ और अभिमान का प्रतीक है। इनका परिणाम नहीं के बराबर होता है। ये विचार हमारे अन्दर ऐसी व्यर्थ की भावनाओं को जन्म देते हैं जिनका आकर्षण निर्बल लोगों के लिए अधिक होता है। बस, यह सब कहना ही पर्याप्त होगा।

ये वे चेक हैं जिनको उन बैंकों के नाम काटा जाता है जहाँ उनका कोई रुपया नहीं होता।"

"हेनरी !" डोरियन ने उसके पास आकर बैठकर कहा—"इसका क्या कारण है कि जितना इस ट्रेजेडी का शोक मैं करना चाहता हूँ उतना नहीं कर सकता ? मेरे विचार में मैं हृदयहीन तो नहीं हूँ। तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"पिछले पन्द्रह दिनों में तुमने मूर्खता भरे जो काम किये हैं उन्हें देखते हुए तुम्हें हृदयहीन नहीं कहा जा सकता।" लार्ड हेनरी ने मुस्कराते हुए कहा।

डोरियन ने खीजकर अपना सिर हिलाया—"हेनरी, मुझे तुम्हारी यह व्याख्या समझ में नहीं आई।" वह बोला—"परन्तु मैं प्रसन्न हूँ, कि तुम मुझे हृदयहीन नहीं समझते। मैं जानता हूँ कि मैं इस प्रकार का व्यक्ति नहीं हूँ। परन्तु फिर भी मैं यह बात स्वीकार करता हूँ कि जितना इस घटना का मुझ पर प्रभाव पड़ना चाहिए था, वह नहीं पड़ता। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि एक आश्चर्यजनक नाटक का अजीब-सा अन्त हो गया। एक ग्रीक ट्रेजेडी की भाँति वह सौन्दर्य इस नाटक में भी है। एक ट्रेजेडी जिसमें मैंने भाग लिया, परन्तु जिससे मैं घायल नहीं हुआ।"

"यह बहुत दिलचस्प प्रश्न है।" लार्ड हेनरी ने कहा, वह डोरियन के मुख से अपनी आतमप्रशंसा को सुनकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहा था—"बहुत ही दिलचस्प प्रश्न है। मेरे विचार में इसका वास्तविक उत्तर यह है कि प्रायः यह देखने में आता है जिन्दगी की वास्तविक ट्रेजेडी इतने कलाहीन ढंग से घटती है कि उसकी भयानक हिंसा, तात्पर्यहीन, जिनमें परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं, से हमें बहुत धक्का पहुँचता है। जैसा अश्लीलता का हम पर प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार हम इससे भी प्रभावित होते हैं। इनको देखकर हमें पशुओं की बर्बरता की याद आ जाती है और हम विद्रोह कर उठते हैं। कभी-कभी एक ऐसी ट्रेजेडी

जिसमें सौन्दर्य का कुछ अंश होता है, हमारी जिन्दगी में आती है। यद्यपि ये सौन्दर्य के अंश वास्तविक होते हैं फिर भी सारी घटना एक नाटक की भाँति प्रतीत होने लगती है। अचानक ही हमें मालूम पड़ता है कि हम इस नाटक में अभिनय करने वाले ऐक्टर नहीं बल्कि इसे देखने वाले दर्शक हैं। या हम दोनों ही हैं। हम अपने आपको ध्यान से देखते रहते हैं परन्तु हम देखने से ही सिहर उठते हैं। इस वर्तमान घटना में क्या क्या हुआ है ? तुम्हारे प्रति प्रेम रखते हुए किसी ने अपने आप को मार डाला। मैं चाहता हूँ कि काश मुझे भी कोई ऐसा अनुभव हो सकता जिससे अपने बचे हुए जीवन में मैं भी प्रेम से प्यार करने लगता। जिन लोगों ने मुझे प्यार किया है उनकी संख्या अधिक नहीं है, परन्तु कुछ ऐसे हैं जिन्होंने मुझे प्यार करना छोड़ दिया था। जिनको मैंने प्यार करना बन्द कर दिया, परन्तु फिर भी वे अभी तक इस संसार में जीवित हैं। अब उनसे बातें करते समय मैं ऊब जाता हूँ और जब कभी उनसे मिलता हूँ तब सारी पुरानी स्मृतियाँ सजग हो उठती हैं। नारी की वह भयानक स्मृति ! कितनी भय से भरी ई। यह बौद्धिक-पतन का प्रतीक है। मनुष्य को जिन्दगी के रंग में अपने-आप को रंग देना चाहिए। विस्तार से सब कुछ जानने की आवश्यकता नहीं है। विस्तार से कही जाने वाली बातें सदा अश्लील होती हैं।"

"मैं अपने बाग में 'पौपी' के फूल अवश्य बोऊँगा।" डोरियन ने कहा।

"इसकी तो कोई आवश्यकता नहीं" लार्ड हेनरी ने उसका उत्तर देते हुए कहा—"जिन्दगी सदा ही अपने हाथों में 'पौपी' लाती है। हाँ, यदा-कदा स्थिति बदलती रहती है। एक बार पूरे मौसम भर मैं 'वायलर' के फूल ही लगाता रहा, क्योंकि कभी न समाप्त होने वाले एक रोमांस के लिए मैं कलात्मक ढंग से शोक मनाना चाहता था। परन्तु अन्त में यह रोमांस समाप्त हो गया, इसका कारण मुझे याद नहीं रहा। मेरे ख्याल में शायद मेरे लिए वह सारे संसार का त्याग करने को कह

रही थी। वह मेरे लिए बहुत भयानक क्षण था। मेरा हृदय अमरत्व के भय से भर गया। क्या तुम इस पर विश्वास करोगे ? लेडी डैम्प-शायर के घर एक सप्ताह पूर्व यही स्त्री भोजन के समय मेरी बगल में बैठी हुई थी। उसने वह रोमांस फिर से आरम्भ करने के लिए मुझ पर जोर दिया, अतीत को दोहराकर भविष्य में वही जिन्दगी व्यतीत करने के लिए मुझ से कहा। मैंने अपना रोमांस फूलों के नीचे दबा दिया था, उसने उसे वहाँ से उखाड़ लिया और मुझे विश्वास दिलाया कि मैंने उसका जीवन नष्ट कर दिया। मुझे यह कहना पड़ेगा कि उसने आव-श्यकता से अधिक मात्रा में भोजन किया था। अतः मैंने उसकी कोई चिन्ता नहीं की। परन्तु उस स्त्री ने अपने स्वभाव का कैसा परिचय दिया। अतीत का एक यही तो गुण है कि वह अतीत ही बना रहता है, परन्तु स्त्रियाँ कभी यह नहीं जानतीं कि कब नाटक के समाप्त होने पर परदा गिर चुका है। वे सदा छठे अंक की प्रतीक्षा करती रहती हैं और ज्योंही नाटक की भारी उत्सुकता समाप्त हो जाती है, तब भी वे उसे जारी रखना चाहती हैं। यदि उनकी बात मान ली जाये तो प्रत्येक कामेडी का ट्रेजिक अन्त हो और प्रत्येक ट्रेजेडी हास्यरस से भरी हुई दिखाई दे। स्त्रियाँ प्रदर्शन करना अच्छी तरह जानती हैं परन्तु उनमें कलात्मक भाव बिलकुल नहीं होते। तुम मुझ से अधिक भाग्यशाली हो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ डोरियन, कि अपनी परिचित स्त्रियों में से एक भी मेरे लिए वह सब कुछ नहीं कर सकती थी जो सिबल वेन ने तुम्हारे लिए किया। साधारण स्त्रियाँ सदा अपने आप को सान्त्वना देती रहती हैं। कुछ भावु-के रंग में रंगकर ऐसा करती हैं। किसी ऐसी स्त्री पर कभी विश्वास न करना जो जामनी रंग पसन्द करती हो चाहे उसकी अवस्था कितनी ही हो और ३५ वर्ष से ऊपर की स्त्री, जिसे गुलाबी रिबन अच्छे लगते हों। इन चिन्हों से प्रतीत होता है कि उनका एक अपना इतिहास है। कुछ स्त्रियाँ अचानक अपने पति में गुण देख कर आपको सांत्वना देती हैं। धर्म भी बहुत को शान्ति देता है। एक स्त्री ने एक बार मुझसे कहा था

कि धर्म के रहस्यों में भी सौन्दर्य भरा होता है; मैं इसका तात्पर्य समझता हूँ। यदि किसी व्यक्ति को कहा जाये कि वह पापी है तो उसे पश्चात्ताप होने लगता है। आधुनिक जिन्दगी में स्त्रियाँ जिन साधनों से सान्त्वना पाती हैं उनका कोई अन्त नहीं, परन्तु अभी तक मैंने सबसे महत्वपूर्ण साधनों की चर्चा नहीं की है।

"वह क्या है हेनरी ?" डोरियन ने अधीर होकर पूछा।

"वह बहुत स्वाभाविक और साधारण साधन है। अपने प्रेमी के बिछुड़ जाने पर किसी दूसरे प्रेमी को हथिया लेना। सभ्य-समाज में ऐसा करके स्त्री अपने अतीत के कलंकों को धो डालती है। परन्तु डोरियन, सिबल वेन इन स्त्रियों से कितनी भिन्न थी। उसकी मृत्यु के विषय में भी मुझे एक सौन्दर्य दिखाई देता है। मुझे यह सोचकर प्रसन्नता होती है कि मैं एक ऐसे युग में रह रहा हूँ जहाँ ऐसी आश्चर्यजनक घटना घटती है। रोमांस, वासना और प्रेम—जिनको हम खिलौना समझते थे, उन्हीं को वास्तविक समझकर उनमें विश्वास करना पड़ता है।"

"तुम यह भूल जाते हो कि मैंने उसके साथ बहुत निर्दयता का व्यवहार किया।"

"मुझे भय है कि स्त्रियाँ सबसे अधिक प्रशंसा निर्दयता की करती हैं। उनमें अभी तक पुरानी भावनाएँ भरी पड़ी हैं। हमने उनमें परिवर्तन करने का प्रयास किया है परन्तु फिर भी वे अपने मालिकों का मुंह ताकती रहती हैं। उनके ऊपर किसी का शासन सर्वप्रिय है। मेरा विश्वास है कि तुमने सिबल के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया था। मैंने तुमको कभी सचमुच क्रोधित होते नहीं देखा, परन्तु मैं तुम्हारे उस रूप की कल्पना कर सकता हूँ। परसों तुमने जो कुछ मुझ से कहा था, उस समय तो मैं उसको तुम्हारी कोरी कल्पना ही समझा था परन्तु अब मुझे वह सत्य दिखाई दे रहा है और भारी समस्या का हल मेरी समझ में अब आ गया है।"

"वह क्या बात हेनरी ?"

"तुमने मुझसे कहा था कि सिबल वेन रोमांस की सब अभिनेत्रियों का प्रतिनिधित्व करती है—कि वह एक रात को डैस्डेमोना बनती है तो दूसरी रात को ओफेलिया का रूप धर लेती है, यदि जूलियट बनकर वह मरती है तो हमोगन के रूप में पुन: जीवित हो उठती है।"

"वह अब कभी जीवित नहीं होगी।" डोरियन ने अपना मुख अपने हाथों में छिपाते हुए कहा।

"नहीं, अब वह फिर कभी नहीं लौटेगी। वह अपना अन्तिम पार्ट खेल चुकी है। परन्तु तुम्हें भी यह सोचना चाहिये कि अपने कमरे में उसकी मृत्यु भी नाटकों की एक ट्रेजेडी की भाँति हुई। वास्तव में वह लड़की कभी जीवित नहीं रही, इसलिये वह कभी मरी नहीं। कम-से-कम तुम्हारे लिये तो वह एक स्वप्न से अधिक न थी—एक छाया जो शेक्स-पीयर के नाटकों में चलती-फिरती थी और अपनी उपस्थिति से उन्हें सुन्दर और आकर्षक बनाती थी; एक बांसुरी जिसमें से शेक्सपीयर का संगीत कहीं अधिक सुन्दर और प्रसन्नता में भरा हुआ जान पड़ता था। जिस क्षण उसने वास्तविक जिन्दगी का स्पर्श किया, उसने उस जिन्दगी को नष्ट कर दिया और जिन्दगी ने उसे समाप्त कर दिया और वह चली गई। यदि चाहो तो ओफ़ेलिया के लिये शोक मना सकते हो, कार्डेलिया की हत्या पर अपने सिर के ऊपर राख रख सकते हो, स्वर्ग के विरुद्ध चीत्कार कर सकते हो क्योंकि ब्रेबेंणे की पुत्री मर गई है, परन्तु सिबल वेन के लिये अपने आँसुओं को नष्ट मत करो। वह इन आँसुओं से भी अधिक अवास्तविक थी।

एक निस्तब्धता छा गई। कमरे के भीतर सन्ध्या गहरी हो गई। चुपचाप विना कोई शब्द किये परछाइयाँ बाग में से प्रवेश कर गईं। वस्तुओं का रंग धुँधला पड़ गया।

कुछ समय पश्चात् डोरियन ग्रे ने ऊपर देखा—"हेनरी, तुमने मुझे समझा दिया है।" उसने तनिक सन्तोष की साँस लेते हुए कहा—"जो कुछ तुमने कहा है मैं उसका अनुभव करता हूँ परन्तु मुझे भय लगता था

और मैं भलीभाँति अपने को स्पष्ट भी नहीं कर सकता था। तुम मुझे कितनी अच्छी तरह से जानते हो, परन्तु जो कुछ बीत चुका है, अब उसके विषय में हम अधिक बातचीत नहीं करेंगे। यह मेरा सबसे आश्चर्य-जनक अनुभव है। मैं सोचता हूँ कि क्या जिन्दगी में मुझे इससे बढ़कर कोई अनुभव हो सकेगा !"

"डोरियन, जिन्दगी में बहुत कुछ भरा पड़ा है। इतने सुन्दर होते हुए कोई भी ऐसा काम नहीं जो तुम नहीं कर सकते।"

"लेकिन जरा सोचो हेनरी ! जब मैं भद्दा हो जाऊँगा, बूढ़ा और झुर्रियों वाला, तब क्या होगा ?"

"ओह तब !" लार्ड हेनरी ने जाने के विचार से उठते हुए कहा—"तब डोरियन, तब तुम्हें अपनी विजय के लिये संघर्ष करने पड़ेंगे। इस समय तो विजय स्वयं तुम्हारे द्वार पर आती है। परन्तु डोरियन तुम्हें अपना सौन्दर्य स्थायी रखना पड़ेगा। हम एक ऐसे युग में रहते हैं जहाँ लोग इतना पढ़ते हैं कि वे बुद्धिमान नहीं बन सकते, और इतना सोचते हैं कि उनको सुन्दर भी नहीं कहा जा सकता। इसलिये तुम्हारे जैसे युवक को हम अपने हाथों से निकलने नहीं देंगे। अच्छा, अब तुम कपड़े पहनो और क्लब चलो। हमें देर हो रही है।"

"मैं सोचता हूँ हेनरी कि मैं तुम्हें 'अपरा' में ही मिल जाऊँगा। मैं इतना थक गया हूँ कि मेरी कुछ भी खाने को तबियत नहीं है तुम्हारी बहन के बाक्स का नम्बर क्या है ?"

"शायद सत्ताईस नम्बर है। तुम दरवाजे पर उसका नाम देख लेना। परन्तु मुझे शोक है कि तुम मेरे साथ चलकर भोजन नहीं कर रहे।"

"मेरी तबियत नहीं है" डोरियन ने अनमना होकर कहा—"परन्तु जो कुछ तुमने मुझसे कहा है उसके लिये मैं तुम्हारा आभारी हूँ। तुम निश्चित रूप से मेरे सबसे घनिष्ठ मित्र हो। जितना तुम मुझे समझ सके हो, उतना अब तक कोई नहीं समझा।"

"डोरियन, हम तो अभी इस मैत्री के प्रवेश-द्वार पर ही हैं।" लार्ड हेनरी ने उसका हाथ हिलाते हुए कहा—"अच्छा, मैं तुम्हें साढ़े नौ से पहले ही मिलूँगा, याद रखना कि आज यही गा रही है।"

हेनरी के जाते ही डोरियन ने घंटी बजाई और थोड़ी देर बाद विक्टर लैंप लेकर आया और परदे गिरा दिये। डोरियन बड़ी अधीरता से उसके जाने की राह देखने लगा, वह अनुभव कर रहा था कि नौकर प्रत्येक काम में आवश्यकता से अधिक समय लगा रहा है।

नौकर के जाते ही वह बड़ी तेज़ी से उसी परदे के पास गया और उसे ऊपर उठा दिया। नहीं—चित्र में कोई और परिवर्तन नहीं हुआ था। सिबल वेन की मृत्यु की सूचना चित्र को उससे पहले ही मिल गई थी। जिन्दगी की घटनाओं का पता चित्र को मिलता रहता था। चित्र में उसके मुख पर जो निर्दयता की रेखा चमक रही थी वह उसी समय खिच गई थी, जब सिबल वेन ने विष खाया था। या इस चित्र को घटनाओं के परिणामों से कोई तात्पर्य नहीं है? क्या जो कुछ आत्मा अनुभव करती है, केवल उसी का प्रभाव इस चित्र पर पड़ता है। वह आश्चर्य में सोचने लगा कि किसी दिन वह अपनी आँखों से चित्र में परिवर्तन होते देखेगा। इसकी कल्पना से ही वह काँप उठा।

बेचारी सिबल! कैसा रोमांस हुआ। स्टेज पर उसने कितनी ही बार मृत्यु का झूठा प्रदर्शन किया था। परन्तु अब सचमुच ही मृत्यु ने स्पर्श किया और उसे अपने साथ ले गई। ऐसे भयानक अन्तिम दृश्य में उसने किस प्रकार अभिनय किया होगा? मरते समय क्या सिबल ने उसको कोसा होगा? नहीं, वह तो उसके प्रेम के लिये मरी और उसके लिये प्रेम सदा ही एक पवित्र वस्तु रहेगी। अपनी जिन्दगी का बलिदान करके उसने सब कुछ पा लिया। उस रात को थियेटर में अपने अभिनय द्वारा सिबल ने उसके मन में जो घृणा के भाव उत्पन्न किए थे उनके विषय में वह अधिक नहीं सोचेगा। आज के पश्चात् जब कभी सिबल का विचार उसके मन में आयेगा तब वह उसे विश्व के स्टेज पर प्रेम की

वास्तविकता का प्रतीक दिखाई देगी। एक दुःख भरी मूर्ति ? सिबल की बच्चों के समान दृष्टि, अजीब सा उसका व्यवहार और शर्म से भरा हुआ उसका नारीत्व—इन सबकी कल्पना करके उसकी आँखें भर आईं। उसने शीघ्र ही अपने आँसू पोंछ डाले और पुनः चित्र की ओर देखने लगा।

उसने अनुभव किया कि अब सचमुच वह समय आ गया है जब कि उसे अपना मार्ग चुनना होगा। या उसका चुनाव पहले ही किया जा चुका है ?

हाँ, जिन्दगी ने पहले से ही उसका पथ निर्धारित कर दिया है। जिन्दगी—और जिन्दगी को जानने और समझने की उसकी अपनी उत्सुकता ! अमर यौवन, शक्तिशाली वासनायें, प्रकट और रहस्यमयी प्रसन्नता, अजीब-अजीब खुशियाँ और भयानक पाप—वह अपने जीवन में इन सबको अपनायेगा। और उसकी पापमयी करतूतों का सारा भार चित्र उठायेगा, यही सब कुछ होगा।

कैन्वस पर बने हुए इतने सुन्दर चेहरे का भविष्य कितना भयानक और विकृत है, इसका विचार आते ही उसके हृदय में वेदना उमड़ पड़ी। प्रत्येक प्रातःकाल वह इस चित्र के सामने बैठकर इसके सौन्दर्य पर आश्चर्यचकित हुआ करता था, और कभी-कभी तो वह उसके वशीभूत होकर चित्रलिखित-सा खड़ा रह जाता था। अब वह अपनी जिस इच्छा के सम्मुख झुकेगा, क्या उन सबका प्रभाव इस चित्र पर पड़ेगा ? क्या यह चित्र इतना विकृत बन जायेगा कि इसको बन्द कमरे में रखने की आवश्यकता पड़े। जिस सूर्य की किरणें अपने सुनहरे प्रकाश से इस चित्र के भूरे बालों को चमकाया करती थीं, क्या अब उसी रोशनी को रोक दिया जाएगा ? यह कैसी बात है !

क्षण भर के लिये उसने परमात्मा से प्रार्थना की कि उसके और चित्र के बीच में जो घनिष्ठता और प्रेम का सम्बन्ध स्थापित हो गया है वह किसी प्रकार समाप्त हो जाये। एक बार प्रार्थना करके उसकी ईर्ष्या

प्रेम में परिवर्तित हो गई थी और अब शायद घृणा में बदल जाये। जिन्दगी के विषय में एक व्यक्ति कितना ही क्यों न जानता हो, वह सदा युवक बने रहने के लालच को कभी नहीं छोड़ेगा, चाहे यह लालच कितना ही पागलपन से भरा क्यों न हो, और चाहे इसके परिणाम कितने ही भयंकर क्यों न हों। और क्या वास्तव में यह सब उसकी इच्छा पर निर्भर करता है? क्या वह उसकी प्रार्थना ही का परिणाम है कि उसका यौवन सदा अमर बना रहेगा और समय के साथ-साथ चित्र में परिवर्तन होंगे?

शायद इसका कोई वैज्ञानिक कारण हो? क्या हमसे बाहर की कोई वस्तु हमारी इच्छाओं और वासनाओं के वशीभूत होकर उन्हीं के अनुसार बदल सकती है? परन्तु इसका कारण इतना महत्वपूर्ण नहीं था। वह कभी अब प्रार्थना करके कोई अद्भुत चमत्कार पाने का प्रयास नहीं करेगा। यदि चित्र को बदलना ही था तो वह अवश्य बदलेगा। अब इस रहस्य की छानबीन करने की क्या आवश्यकता है?

इस चित्र में जो परिवर्तन होते जायेंगे उनका ध्यान से अध्ययन करने में वास्तविक प्रसन्नता मिलती है। वह अपने मस्तिष्क की रहस्यमयी बातों को ध्यान से समझ सकेगा। यह चित्र उसके लिये जादूभरे दर्पण से कम नहीं होगा। जिस प्रकार दर्पण में मनुष्य अपना शरीर भलीभाँति देख सकता है उसी प्रकार इस चित्र में उसकी आत्मा की परछाईं दिखाई देगी। जब इस चित्र का पतझड़ आयेगा तब वह उसी-प्रकार बसन्त मनाता रहेगा। जब इस चित्र के मुख की लाली समाप्त हो जायेगी और केवल पीला जर्द चेहरा और अन्दर धँसी हुई आँखें ही रह जायेंगी, तब भी यौवन उसके मुख पर नाचा करेगा। उसके सौंदर्य का एक अंश भी लुप्त नहीं होगा। उसके शरीर की एक नस भी निर्बल नहीं बनेगी। यूनानियों के परमात्मा की भाँति वह शक्तिशाली और प्रसन्न बना रहेगा। कैन्वस पर बने चित्र पर क्या बीतती है, इससे उसे क्या मतलब? वह तो सुरक्षित रहेगा। उसके लिए यही सबसे बढ़कर था।

उसने पुनः चित्र के ऊपर परदा डाल दिया और मुस्कराने लगा। फिर वह अपने सोने वाले कमरे में चला गया जहाँ उसका नौकर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। एक घंटे पश्चात् ही वह ऑपरा में था और लार्ड हेनरी उससे बातें कर रहा था।

६

अगले दिन प्रातःकाल के समय जब डोरियन नाश्ता खा रहा था तब वासिल हालवर्ड कमरे में आया।

"तुम्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हुई डोरियन !" उसने उदास स्वर में कहा—"मैं कल रात को भी आया था और मुझे पता चला कि तुम ऑपरा गये हुए हो, मैं जानता था कि यह सर्वथा असम्भव है। काश कि तुम अपने नौकर से कह जाते कि तुम वास्तव में कहाँ जा रहे थे। मेरी शाम बहुत बुरी तरह से गुजरी। मुझे भय लग रहा था कि कहीं एक ट्रेजेडी के पश्चात् दूसरी न हो जाये। मेरे विचार में तुम्हें मुझे उसी समय तार द्वारा सूचना दे देनी थी जब तुमने यह दुःखद समाचार सुना। मुझे बहुत देर पश्चात् 'ग्लोब' के समाचार में इसका पता चला। मैं क्लब से सीधा यहाँ आया और तुम्हें यहाँ न पाकर और भी उदास हुआ। मैं तुम्हें बतला नहीं सकता कि इस घटना से मेरे हृदय पर क्या प्रभाव हुआ है। मैं जानता हूँ कि तुम पर क्या बीत रही होगी। परन्तु कल तुम थे कहाँ ? क्या तुम उसकी माँ से मिलने गये हुए थे ? क्षण भर के लिए मैंने तुम से वहीं मिलने की सोची थी। समाचार-पत्र में उसका पता छपा हुआ था, कहीं यूस्टन रोड में उनका मकान है न ? परन्तु मुझे भय

था कि तुम्हारे शोक को कम करने की अपेक्षा मैं कहीं अधिक बढ़ा न दूं। वह बेचारी माँ ! उसकी क्या दशा होगी ? उसकी इकलौती लड़की ! वह इस विषय में क्या कहती थी ?"

"बासिल, मैं यह सब कैसे जान सकता हूँ ?" डोरियन ग्रे ने प्याले में पीले रंग की शराब पीते हुए कहा। बासिल की बातों से वह ऊब चुका दिखाई देता था। "मैं तो ऑपरा गया हुआ था। तुम भी वहीं चले आते। हेनरी की बहन लेडी ग्वैन्डोलन से मैं पहली बार मिला। हम उसी के बाक्स में बैठे थे। वह बहुत सुन्दर है और अतिसुन्दर गाती है। किसी भी भयानक विषय पर मुझ से बातचीत मत करो। यदि कोई किसी घटना के विषय में बातचीत नहीं करता तो वह घटना कभी हुई मालूम नहीं देती। जैसा कि हेनरी कहता है कि केवल हाव-भाव द्वारा ही घटना को वास्तविकता का रूप दिया जा सकता है। मैं इतना कहना चाहता हूँ कि केवल सिबल ही अपनी माँ की इकलौती सन्तान नहीं थी। उसका एक लड़का भी है, और वह भी मेरे विचार में एक सुन्दर व्यक्ति है। परन्तु वह स्टेज पर काम नहीं करता। वह जहाज में मल्लाह है। अब तुम मुझे अपने विषय में बतलाओ, तुम आजकल कौन-सा चित्र बना रहे हो ?"

"तुम ऑपरा गये थे ?" हालवर्ड ने धीमे स्वर में कहा, उसकी आवाज में वेदना भरी हुई मालूम देती थी—"जब सिबल वेन का मृत शरीर किसी मकान में पड़ा हुआ था तब तुम ऑपरा गये ? जिस लड़की से तुम प्रेम करते थे उसे कब्र में शान्ति से सुला देने के पूर्व ही तुम मुझ से अन्य स्त्रियों के सौन्दर्य और उनके संगीत की चर्चा कर सकते हो। क्यों डोरियन, सिबल के कोमल श्वेत शरीर का भविष्य कितना अन्धकार-मय है ?"

"बासिल, चुप हो जाओ ! मैं यह सब कुछ नहीं सुन सकता।" डोरियन ने खड़े होकर चिल्लाते हुए कहा—"तुम्हें मुझे इस प्रकार की बातें नहीं बतलानी चाहियें। जो हो चुका, वह हो चुका।"

"तुम कल की घटना को अतीत कहते हो !"

"अतीत का समय के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। कमज़ोर लोगों को ही एक घटना सुना देने के लिए वर्षों की आवश्यकता पड़ती है। अपने ऊपर नियंत्रण रखने वाला व्यक्ति अपने दुःख को उसी प्रकार आसानी से भुला देता है, जिस प्रकार किसी नये सुख की खोज करने में उसे अधिक समय नहीं लगता। मैं अपनी भावुकता के अधीन नहीं रहना चाहता। मैं उसका लाभ उठाना चाहता हूँ, उससे सुख प्राप्त करना चाहता हूँ और उसको अपने वश में रखना चाहता हूँ।"

"डोरियन, तुम बहुत भयानक बातें कर रहे हो ! तुम बिल्कुल बदल गये मालूम पड़ते हो। आज भी तुम मुझे उसी प्रकार के युवक दिखाई दे रहे हो जो प्रतिदिन अपना चित्र बनवाने के लिये मेरे घर आया करता था। परन्तु उस समय तुम बहुत सीधे-सादे, स्वाभाविक और स्नेह करने वाले व्यक्ति थे। सारे संसार में तुम सबसे कम बिगड़े हुए थे। मुझे पता नहीं कि अब तुमको क्या हो गया है ! तुम इस प्रकार से बातें करते हो मानो तुम में हृदय नहीं है ! तुम्हें अपने ऊपर दया नहीं आती ? मैं जानता हूँ कि यह सब हेनरी का ही प्रभाव पड़ा है।"

डोरियन का मुख लज्जा से आरक्त हो गया और खिड़की के पास जाकर कुछ क्षणों तक बाग में सूर्य की रोशनी से चमकती हुई हरियाली को देखता रहा। "बासिल, मैं हेनरी का बहुत अहसानमन्द हूँ।" अन्त में वह बोला—"जितना कि तुम्हारा नहीं। तुमसे तो केवल मैंने अभिमानी बनना ही सीखा है।"

"डोरियन, मुझे उसका दण्ड मिल चुका है या किसी दिन मिल जायेगा।"

"बासिल, मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा।" उसने घूमकर बासिल की ओर देखते हुए कहा—"मैं नहीं जानता कि तुम क्या चाहते हो। तुम चाहते क्या हो ?"

"मैं उस डोरियन को चाहता हूँ जिसका मैं चित्र बनाया करता था।" कलाकार ने उदास स्वर में कहा।

"बासिल," डोरियन ने उसके पास जाकर उसके कन्धे पर अपना हाथ रखते हुए कहा—"तुमने बहुत देर कर दी है। कल, जब मुझे पता चला कि सिबल वेन ने आत्महत्या कर ली है—"

"आत्महत्या ! हे भगवान्, क्या यह समाचार सत्य है ?" हालवर्ड ने भयभीत हुई मुद्रा में डोरियन की ओर देखते हुए चिल्लाकर पूछा।

"मेरे बासिल, क्या तुम यह सोच रहे थे कि भूल से उसने कुछ खा लिया था। उसने आत्महत्या ही की है।"

बासिल ने अपना सिर अपने हाथों से पकड़ लिया। "कितनी भयानक घटना !" उसने धीमे स्वर में कहा और वह भय से काँप उठा।

"नहीं।" डोरियन ग्रे ने कहा—"इसमें भयानकता की कौन-सी बात है। यह तो आज के युग की रोमांस से भरी हुई महत्त्वपूर्ण ट्रेजेडी है। यदि सच पूछा जाये, तो अभिनय करने वाले व्यक्ति बड़ी साधारण-सी आम जिन्दगी बिताते हैं। वे अच्छे पति या आज्ञाकारी स्त्रियाँ या इसी प्रकार के नीरस लोग होते हैं। तुम मेरा मतलब समझ गये न ! मध्यमवर्ग के लोगों में जो गुण होते हैं, वही उनमें विद्यमान हैं। परन्तु सिबल इन सबसे कितनी भिन्न थी ! उसने अपने अभिनय की ट्रेजेडी को अन्त तक निभाया। वह सदा ही नायिका बनी रही। अन्तिम रात्रि जब उसने अभिनय किया था—जिस रात को तुमने उसे देखा था—तब उसने बहुत बुरा अभिनय किया, क्योंकि वह प्रेम की वास्तविकता को समझ गई थी। परन्तु जब उसे इसकी अवास्तविकता का पता चला तब वह मर गई, जैसे जूलियट मर जाती है। वह फिर कला की दुनिया में विलीन हो गई। इसमें उसके बलिदान होने की कुछ झलक दिखाई देती है। बलिदान में जो व्यर्थवाद होता है उसमें सहानुभूति है और नष्ट किये हुए सौन्दर्य पर शोक है। परन्तु जैसा कि अभी मैं कह चुका हूँ, तुम्हें यह कदापि न सोचना चाहिए कि मुझे इसका दुःख नहीं हुआ। यदि कल तुम साढ़े पाँच बजे के लगभग आते, तब तुम मुझे आँसुओं में डूबा हुआ पाते। हेनरी भी—जो यह समाचार लाया था—वह भी अनुभव नहीं

कर सका कि मुझ पर क्या बीत रही है। मैंने कम पीड़ा सहन नहीं की है। परन्तु वह समय अब निकल चुका है। मैं एक भावुकता को दोहरा नहीं सकता। शायद भावुक लोगों के अतिरिक्त कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। और बासिल, तुम मुझ पर सर्वथा अन्याय कर रहे हो। तुम मुझे सान्त्वना देने आये हो, उसके लिए मैं तुम्हारा आभारी हूँ। तुम मुझे शान्त देखते हो और तुम क्रोधित हो उठते हो। यह तुम्हारी कैसी सहानुभूति है? और मेरे बासिल, यदि सचमुच तुम मुझे सान्त्वना देना चाहते हो तो जो कुछ बीत चुका है उसे भूलने की राह बताओ या उस घटना को कला की दृष्टि से देखना सिखाओ। मुझे अभी तक याद है कि एक बार तुम्हारे स्टूडियो में मैंने गौरियट की एक पुस्तक में इसी विषय पर कुछ पढ़ा था। एक बार मार्लो में तुमने मुझसे एक ऐसे युवक की चर्चा की थी जो संसार की विपत्तियों से बचने के लिये पीली साटन के वस्त्र पहनने का आदेश दिया करता था। मुझे ऐसी सुन्दर चीजों से बहुत प्रेम है जिसका स्पर्श किया जा सके। पुराने काम वाले फीते, हरे रंग की ताँबे की मूर्तियाँ, हाथीदाँत पर खुदा हुआ काम, प्रदर्शन का सामान, भोगविलास की सामग्री, इन सब का उपयोग किया जा सकता है। परन्तु मस्तिष्क में जिस प्रकार का कलामय वातावरण ये भर देते हैं, उसको मैं अधिक महत्व देता हूँ। जैसा कि हेनरी कहता है कि अपनी जिंदगी को देखने वाला जिंदगी की विपत्तियों से छुटकारा पा लेता है। मैं जानता हूँ कि मुझे इस प्रकार बोलते देखकर तुम आश्चर्य में पड़ गये होगे। तुमने यह अनुभव नहीं किया कि इन विचारों का विकास मुझ में किस प्रकार हुआ है। जब तुम्हारा परिचय मुझ से हुआ तब मैं स्कूल के लड़कों की भाँति सीधा-सादा अज्ञान बालक था। मैं अब आदमी हो गया हूँ। मेरी नई इच्छाएँ हैं, नये विचार हैं। मैं बदल गया हूँ परन्तु इस कारण तुम्हारे प्रेम में कोई अन्तर नहीं आना चाहिए। निःसन्देह मैं हेनरी को बहुत पसन्द करता हूँ परन्तु मैं जानता हूँ कि तुम उससे कहीं अधिक अच्छे हो। तुम शक्तिशाली नहीं हो—तुम जिन्दगी से बहुत डरते

हो—परन्तु तुम अच्छे हो। हम दोनों एक समय कितने प्रसन्न थे। बासिल, मेरा साथ मत छोड़ना और मुझसे झगड़ा भी मत करना। मैं जो कुछ हूँ वही हूँ। इससे अधिक कुछ भी नहीं कहा जा सकता।"

चित्रकार को बड़ा अजीब-सा लगा। डोरियन उसको बहुत प्रिय था और उसके व्यक्तित्व ने उसकी कला की दिशा मोड़ दी थी। वह डोरियन को अधिक अपराधी नहीं ठहराना चाहता था। शायद उसकी उदासीनता डोरियन की एक ऐसी मुद्रा थी जो समय के साथ बदल जायेगी। अब भी उसमें बहुत कुछ 'अच्छा' और 'सौजन्य' था। "अच्छा डोरियन!" आखिर उसने शोकमयी मुद्रा में मुस्कराकर कहा—आज के पश्चात् मैं इस विषय पर कोई चर्चा नहीं करूँगा। मुझे विश्वास है कि इस घटना के साथ तुम्हारा नाम नहीं जोड़ा जायेगा। उसकी आत्महत्या की जाँच-पड़ताल आज दोपहर को होगी। क्या उन्होंने तुम्हें बुलाया है?"

उसने नकारात्मक भाव से अपना सिर हिला दिया, परन्तु 'जाँच-पड़ताल' का शब्द सुनकर उसे तनिक क्रोध आ गया। "वे मेरा नाम नहीं जानते।" उसने उत्तर दिया।

"परन्तु वह तो जानती थी?"

"उसे मेरा पूरा नाम मालूम नहीं था, और मेरे विचार में वह भी उसने किसी को नहीं बतलाया होगा। एक बार उसने मुझे बतलाया था कि सब लोग मेरे विषय में जानने के लिए बहुत उत्सुक हैं परन्तु उसने उन्हें मेरा नाम 'प्रिंस चार्मिंग' बतलाया था। इसके लिए मैं उसका आभारी हूँ। बासिल, तुम मेरे लिये एक सिबल का चित्र बना देना। उसके कुछ चुम्बन और मर्मस्पर्शी शब्दों से अधिक महत्वपूर्ण कोई स्मृतिचिन्ह मैं अपने पास रखना चाहता हूँ।"

"डोरियन, यदि इससे तुम प्रसन्न होंगे तो मैं अवश्य प्रयास करूँगा। परन्तु तुम्हें उसके लिये मेरे स्टूडियो में आकर बैठना पड़ा करेगा। मैं तुम्हारे बिना नहीं बना सकता।"

"बासिल, मैं अपने चित्र के लिए तुम्हारे स्टूडियो में कभी नहीं बैठूंगा, यह सर्वथा असम्भव है।" उसने चौकन्ने होकर कहा।

चित्रकार ने डोरियन को ध्यान से देखा, "क्या मूर्खों की सी बातें कर रहे हो ?" उसने चिल्लाकर पूछा—"क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि तुम्हें मेरा बनाया हुआ चित्र पसन्द नहीं है। वह चित्र कहाँ है ? तुमने उसके ऊपर परदा क्यों डाल दिया ? मुझे यह देखने दो। यह मेरी सर्वोत्तम कृति है। डोरियन, यह परदा उतार लो। तुम्हारे नौकर के लिए बड़ी लज्जा की बात है कि उसने मेरी कला को इस प्रकार छिपा दिया है। मैंने आते ही अनुभव किया था कि कमरे में अवश्य ही कोई परिवर्तन हुआ है।

"बासिल, यह मेरे नौकर का काम नहीं है। क्या तुम समझते हो कि मैं उससे अपना कमरा सजाने के लिये कहता हूँ। कभी-कभी वह फूल अवश्य सजा देता है, बस इससे अधिक कुछ नहीं। मैंने ही इस पर परदा डाला है क्योंकि चित्र पर प्रकाश बड़ी तेजी से पड़ता था।"

"रोशनी तो बिलकुल तेज नहीं हो सकती ? इस स्थान पर तो प्रकाश इस चित्र के बिल्कुल उपयुक्त है। मुझे ज़रा देखने दो।" यह कहकर हालवर्ड चित्र की ओर बढ़ा।"

डोरियन के होठों से एक भययुक्त चिल्लाहट निकली और वह चित्रकार और चित्र के बीच जाकर खड़ा हो गया। "बासिल !" वह बोला, उसका मुख पीला पड़ गया था—"तुम इसे मत देखो, मैं यह नहीं चाहता।"

"अपने ही बनाये हुए चित्र को न देखूँ ! तुम शायद गम्भीर नहीं हो। भला बताओ, मैं क्यों न अपनी कृति को देखूं।" बासिल ने हँसकर पूछा।

"बासिल, यदि तुमने इस चित्र को देखने का प्रयास किया तो मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि जब तक जीवित रहूँगा तब तक तुमसे बात नहीं करूँगा। मैं बहुत गम्भीर । मैं तुम्हें इसका कोई कारण भी

नहीं बतलाऊँगा और तुम पूछना भी नहीं। परन्तु इतना याद रखना कि यदि तुमने इस परदे को छुआ तो हम दोनों का साथ सदा के लिये छूट जायेगा।"

हालवर्ड सुन्न रह गया। उसने डोरियन ग्रे की ओर अत्यन्त आश्चर्य से देखा। आज तक उसने डोरियन की ऐसी मुद्रा कभी नहीं देखी थी। क्रोध से डोरियन का मुख पीला पड़ गया था। उसकी मुट्ठियाँ बँध गई थीं और उसके नेत्रों की पुतलियाँ नीली आग के समान चमक रही थीं। वह सिर से लेकर पैर तक काँप रहा था।

"डोरियन !"

"मुझसे मत बोलो।"

"लेकिन बात क्या है ? यदि तुम नहीं चाहते कि मैं चित्र को देखूँ तो कभी नहीं देखूँगा।" बासिल ने बड़े उदासीन भाव से कहा। इसके पश्चात् वह खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया—"लेकिन यह बड़े दुःख की बात है कि मैं अपनी ही कृति को न देख सकूँ, और विशेष-कर उस समय जब इस पतझड़ में मैं इसे पैरिस की प्रदर्शिनी में भेज रहा हूँ। वहाँ भेजने से पूर्व शायद एक बार मुझे इस पर वार्निश भी करनी पड़े। एक दिन मुझे इस चित्र को देखना ही पड़ेगा, इसलिये आज ही क्यों न देखूँ ?"

"क्या इसे प्रदर्शिनी में भेजोगे ? तुम इसे लोगों को दिखाना चाहते हो ?" डोरियन ने पूछा। एक भय की लहर उसके शरीर में दौड़ गई। क्या उसका भेद संसार को दिखाया जायेगा ? क्या लोग उसकी जिंदगी का रहस्य देखेंगे ? यह असम्भव है। कुछ न कुछ तत्काल ही करना चाहिये।

"हाँ, मेरे विचार में तुम इसका विरोध नहीं करोगे। जार्ज पेरिट मेरे बढ़िया चित्रों की प्रदर्शिनी पैरिस में अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में करवा रहा है। यह चित्र केवल एक मास के लिए ही तुमसे अलग रहेगा। मेरे विचार में इतने समय के लिये तुम अवश्य ही इसे दे सकोगे।

उस समय तुम भी शहर से बाहर ही होगे। यदि तुम इस चित्र को परदे के पीछे रखते हो तो इससे स्पष्ट है कि तुम्हें इसकी चिन्ता नहीं।"

डोरियन ने अपने हाथ से माथा पोंछा। पसीने की बूंदें वहाँ चमक रही थीं। उसने अनुभव किया कि उसके सम्मुख बड़ा भारी खतरा है। "एक महीना पहले तुमने कहा था कि तुम इस चित्र को किसी भी प्रदर्शिनी में नहीं भेजोगे।" उसने चिल्लाकर कहा—"अब तुमने अपना इरादा क्यों बदल दिया है? तुम कलाकार तो अपने विचारों की स्थिरता का दावा करते हो, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि तुम भी अपनी मुद्रा के साथ-साथ बदलते जाते हो। अन्तर केवल इतना ही है कि तुम्हारी मुद्रा तात्पर्यहीन होती है। तुमने जो मुझे विश्वास दिलाया था कि संसार की कोई शक्ति भी तुम्हें इस चित्र का प्रदर्शन करने पर बाध्य नहीं कर सकती। तुमने हेनरी से भी ठीक यही कहा था।" वह यकायक चुप हो गया और उसकी आँखों में एक अजीब-सी रोशनी चमकने लगी। उसे याद आया कि एक बार हेनरी ने कुछ मजाक से और कुछ गम्भीर बनकर कहा था—'यदि तुम कोई नया अनुभव प्राप्त करना चाहते हो तो बासिल से पूछना कि वह यह चित्र प्रदर्शित करना क्यों नहीं चाहता। उसने मुझे इसका कारण बतला दिया है।' हाँ, शायद बासिल का भी अपना रहस्य है। वह उससे पूछने का प्रयास करेगा।

"बासिल!" डोरियन ने उसके बिलकुल समीप आकर उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा—"हम दोनों का एक-एक रहस्य है। तुम अपना बतलाओ और फिर मैं अपना रहस्य बता दूंगा। इस चित्र को प्रदर्शित न करने का तुम्हारा क्या कारण था?"

चित्रकार एक बार काँप उठा। "डोरियन, यदि मैंने तुम्हें बता दिया तब तुम मुझे इतना पसन्द नहीं करोगे और मुझ पर हँसने लगोगे। मैं इन दोनों बातों में से कोई भी सहन नहीं कर सकता। यदि तुम कहो कि मैं इस चित्र को कभी न देखूं, तो इस बात को मैं स्वीकार कर सकता हूँ। चित्र के बदले मैं तुम्हें देख सकता हूँ। यदि तुम चाहते हो

कि मेरा सब से सुन्दर चित्र संसार की दृष्टि से छिपा रहे तो उसे भी मैं मान सकता हूँ। तुम्हारी मैत्री मुझे इस प्रसिद्धि की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़कर है।"

"नहीं बासिल, तुम मुझे ज़रूर बताओ।" डोरियन ने जोर देकर कहा—"मैं सोचता हूँ कि मुझे जानने का अधिकार है।" उसके मन से भय भाग गया था और उसके बदले उत्सुकता बढ़ चली थी। वह बासिल हालवर्ड का रहस्य जानने का दृढ़ निश्चय कर चुका था।

"डोरियन, बैठ जाओ।" चित्रकार के मुख पर वेदना के भाव झलक रहे थे—"तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो। क्या तुमने चित्र में कोई विचित्रता देखी है? कोई ऐसी बात जो तुमने पहले न देखी हो परन्तु फिर अचानक ही उस बात का पता चला हो?"

"बासिल!" डोरियन ने काँपते हाथों से कुर्सी को पकड़कर चिल्ला-कर कहा। वह चौकन्ना होकर आश्चर्यचकित नेत्रों से उसकी ओर देख रहा था।

"तो तुमने वह विचित्रता देखी है। बोलो नहीं, मुझे अपनी बात समाप्त कर लेने दो। डोरियन, जिस क्षण से मेरा-तुम्हारा परिचय हुआ है, तब से तुम्हारे व्यक्तित्व ने मुझ पर बड़ा भारी प्रभाव डाल रखा है। मेरी आत्मा, मेरा मस्तिष्क और मेरी शक्ति सब को तुमने अपने अधीन कर लिया। जिस अदृश्य उद्देश्य के हम कलाकार रात-दिन स्वप्न देखा करते हैं, उसी के प्रत्यक्ष प्रतीक बनकर तुम मेरे सामने आए। तुम जिस किसी व्यक्ति से बातें करते मैं उससे ईर्ष्या करने लगता था। मैं तुम्हारी पूजा करता था। मैं तुम्हें केवल अपने लिए ही छिपाकर रखना चाहता था। जब मैं तुम्हारे साथ रहता था तभी मुझे प्रसन्नता मिलती थी। जब तुम मुझसे दूर होते थे तब भी तुम मेरी कला में विद्यमान रहते थे। यह ठीक है कि यह सब मैंने तुम्हें कभी नहीं बतलाया। यह मेरे लिए असम्भव था। तुम इसे समझ भी नहीं सकते थे। मैं स्वयं ही पूर्णरूप से इसकी तह तक पहुँच नहीं सका। मैंने चेहरे की पूर्णता को

देख लिया था और यह संसार मेरे लिए अत्यन्त सुन्दर बन गया था—कितना अजीब ! कदाचित् इस प्रकार की पागलों-सी पूजा और प्रेम में एक भय बना रहता है, उस वस्तु को खो देने का भय। यह भय उस वस्तु को स्थायी रूप से अपने पास रखने के खतरे से किसी प्रकार भी कम नहीं होता। इस प्रकार कितने ही सप्ताह व्यतीत हो गए और मैं प्रतिदिन अपने-आपको तुममें भुलाता रहा। तब इस कार्यक्रम का नया विकास हुआ। मैंने पहले-पहल तुम्हारा पैरिस के एक फौजी अफसर के रूप में चित्र बनाया था, मानो कमल के फूलों से लदे हुए तुम एक जंगल में बैठे शान्त सरोवर के चाँदी के समान चमकते हुए जल में अपना मुख निहार रहे थे। वह चित्र आधुनिक चित्रकला का प्रतिनिधित्व करता था। एक दिन मैंने निश्चय किया कि जिस प्रकार के तुम हो, उसी रूप में तुम्हारा चित्र बनाऊँ। पुराने युग की वेशभूषा में नहीं, बल्कि तुम्हारे समय की वेशभूषा में तुम्हारी आकृति बनाऊँ। या तो यह मेरी कला की वास्तविकता थी या फिर तुम्हारे अद्भुत व्यक्तित्व का प्रभाव था जिसने स्पष्ट रूप से वास्तविक चित्रकला का दिग्दर्शन मुझे कराया। परन्तु मैं जानता हूँ कि काम करते समय प्रत्येक रंग मुझे मेरा रहस्य बताता जान पड़ता था। मुझे भय लगता था कि दूसरे लोग मेरी तुम्हारे प्रति इस अनन्य भक्ति और श्रद्धा को जान जायेंगे। डोरियन, मैं अनुभव करता था कि बहुत कुछ चित्र में बतलाता जा रहा हूँ मानो मैं अपने विषय में कुछ स्पष्ट रूप से प्रकट कर रहा हूँ। उसी समय मैंने निश्चय किया था कि मैं कभी इस चित्र का प्रदर्शन नहीं करूँगा। तुम्हें थोड़ा क्रोध भी आया था, परन्तु तुमने कभी यह अनुमान नहीं लगाया था कि इसका मेरे लिए क्या महत्व है। हेनरी से मैंने इस विषय पर बातचीत की परन्तु वह हँसने लगा। मैंने उसकी कोई चिन्ता नहीं की। चित्र समाप्त होने के पश्चात् जब मैं अकेला उसके पास बैठा था तब मैंने अनुभव किया कि मैं ठीक था। कुछ दिनों के पश्चात् चित्र मेरे स्टूडियो से चला गया, ज्योंही मैंने उसके असहनीय आकर्षण से छुटकारा पाया.

मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि चित्र में मैंने तुम्हारी अत्यन्त सुन्दर शक्ल-सूरत बनाई थी, इसके अतिरिक्त और किसी की कल्पना करना भी मुझे मूर्खता लगी। अब भी मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि—चित्र की रचना करते समय चित्रकार जो कुछ अनुभव करता है वही उसके चित्र में भी प्रकट हो—यह सोचना एक बड़ी भारी ग़लती है। कला के विषय में हम जैसा अनुमान लगाते हैं वह उतनी स्पष्ट नहीं है। मुझे तो प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि कला चित्रकार को दिखलाने की अपेक्षा उसे छिपा लेती है। इसलिए जब पैरिस की प्रदर्शिनी के अधिकारियों ने मुझे निमंत्रण भेजा तब मैंने तुम्हारा यह चित्र ही अपनी कला का सर्वोत्तम नमूना भेजने का निश्चय किया। मुझे कभी यह भास भी न हुआ था कि तुम इस प्रस्ताव को ठुकरा दोगे। मुझे अब पता चला कि तुम ठीक कहते थे। चित्र का प्रदर्शन नहीं किया जा सकता। डोरियन, मैंने जो कुछ तुमसे कहा है उससे नाराज मत होना। जैसा कि एक बार मैंने हेनरी से कहा था कि तुम्हारी तो पूजा की जानी चाहिए।"

डोरियन ग्रे ने शान्ति की साँस ली। उसकी गालों की लालिमा पुनः वापस लौट आई और उसके होठों पर मुस्कान नाचने लगी। खतरा समाप्त हो गया था। उस समय के लिए वह निश्चिन्त हो गया। परन्तु फिर भी चित्रकार के प्रति उसके मन में बहुत दया उमड़ने लगी, जिसने अभी उसके सम्मुख अपना रहस्य प्रकट किया था और उसे आश्चर्य होने लगा कि क्या कभी वह भी अपने किसी मित्र के व्यक्तित्व से इतना अधिक प्रभावित हो सकता है। लार्ड हेनरी में वह आकर्षण था जो उसे भयभीत बना देता था, बस इससे अधिक कुछ नहीं। हेनरी इतना चालाक और स्वार्थी था कि कोई उसके प्रति आकर्षित नहीं हो सकता था। क्या उसकी जिन्दगी में कोई ऐसा व्यक्ति आयेगा जिसके प्रति उसके मन में पूजा और श्रद्धा के भाव उमड़ेंगे। क्या उसकी जीवन-गाथा में कोई ऐसा व्यक्ति छिपा है?

"यह बड़े अचम्भे की बात है डोरियन।" हालवर्ड ने कहा—"कि

तुमने यह सब इस चित्र में देखा। क्या तुमने वास्तव में इस रहस्य को देखा है?"

"मैंने कुछ ऐसी चीज़ इसमें पाई है।" उसने उत्तर दिया—"कुछ ऐसी जो मुझे बड़ी अजीब-सी लगी।"

"अच्छा तो अब मेरे इस चित्र को देखने में तुम्हें कोई एतराज तो न होगा।"

डोरियन ने अपना सिर हिला दिया, "बासिल, तुम इसके लिए मुझसे न कहो। मैं तुम्हें इस चित्र के सम्मुख खड़े हुए नहीं देख सकता।"

"शायद किसी दिन तुम इसका विरोध नहीं करोगे।"

"मैं कभी यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकता।"

"शायद तुम ही ठीक हो। अच्छा नमस्कार डोरियन! मेरी जिन्दगी में एक तुम ही ऐसे व्यक्ति हो जिसने सचमुच मेरी कला को प्रभावित किया है। मैंने जो कुछ सुन्दर बनाया है उसका श्रेय तुम्हीं को जाता है। ओह डोरियन, तुम नहीं जानते कि जो कुछ मैंने तुम्हें बतलाया है, उसके लिए मुझे कितना कष्ट उठाना पड़ा है।"

"मेरे बासिल!" डोरियन ने कहा—"तुमने मुझे क्या बतलाया है? केवल यही कि तुम मेरी बहुत प्रशंसा करते हो।"

"यह मेरा रहस्य था। अब, जब मैंने तुम्हें यह सब बतला दिया है, तब मुझे ऐसा अनुभव होता है कि कोई वस्तु मुझ से बाहर निकल गई है। शायद अपनी श्रद्धा और पूजा के भावों को शब्दों में व्यक्त करना नहीं चाहिए।"

"तब तो यह बहुत ही निराशाजनक रहस्य था।"

"क्यों? डोरियन, तुम कैसे रहस्य की आशा कर रहे थे? तुमने चित्र में क्या और कुछ भी देखा है? उसमें देखने के लिए और था ही क्या?"

"हाँ, उसमें और कुछ भी नहीं था। तुम यह प्रश्न क्यों पूछते हो? परन्तु तुम पूजा और श्रद्धा की चर्चा मत करो। यह मूर्खता है। बासिल,

मैं और तुम दोनों मित्र हैं और हमें सदा ही मित्र बने रहना चाहिये।"

"तुम्हारा मित्र तो हेनरी पहले से ही है।" चित्रकार ने उदास होकर कहा।

"ओह, हेनरी !" डोरियन ने हँसते हुए कहा—"हेनरी दिन के समय ऐसी बातें करता है जिन पर सहसा विश्वास नहीं किया जा सकता और शाम को ऐसे काम करता है जो संभव नहीं होते। ऐसी ही जिंदगी मैं भी बिताना चाहता हूँ। परन्तु फिर भी मैं सोचता हूँ कि कोई दुःख पड़ने पर मैं हेनरी के पास नहीं जाऊँगा। बासिल, मैं तुम्हारे पास आना अधिक पसन्द करूँगा।"

"क्या तुम फिर मेरे सामने मेरे स्टूडियो में अपने चित्र के लिये बैठोगे ?"

"असम्भव !"

"डोरियन, मेरी बात को ठुकराकर तुम मेरी चित्रकार की जिंदगी खराब कर रहे हो। कोई भी मनुष्य ऐसी स्थिति में नहीं होता जब उसके पास दो उद्देश्य हों। केवल एक उद्देश्य भी कुछ ही लोगों के पास होता है।"

"मैं तुम्हें समझा नहीं सकता बासिल, परन्तु मैं कभी तुम्हारे सामने चित्र बनवाने के लिये नहीं बैठूँगा। मनुष्य का चित्र कभी-कभी उसके लिये एक बड़ा भारी शत्रु बन जाता है। चित्र की एक अपनी जिंदगी होती है। मैं तुम्हारे घर आकर तुम्हारे साथ चाय पियूँगा। उसमें भी तो तुम्हें उतनी ही प्रसन्नता मिलेगी।"

"उसमें तुम्हें ही सुख मिलेगा।" हालवर्ड ने उदास होकर धीमे स्वर में कहा—"अच्छा नमस्कार ! मुझे दुःख है कि तुम मुझे एक बार यह चित्र देखने की आज्ञा नहीं देते। परन्तु दूसरा कोई चारा नहीं। मैं जानता हूँ कि तुम चित्र के प्रति क्या अनुभव करते हो।"

बासिल के जाने के उपरान्त डोरियन मन-ही-मन मुस्कराया। बेचारा बासिल ! वास्तविक कारण का उसे आभास नहीं है। और यह कितनी

विचित्र घटना घटी कि अपना रहस्य बतलाने पर बाधित हो जाने की अपेक्षा उसने अपने ही मित्र का रहस्य अचानक पा लिया। बासिल के रहस्य ने उसे क्या-क्या बतला दिया था ! चित्रकार के मन में उठती हुई ईर्ष्या की भावनायें, उसकी असीम श्रद्धा, उसकी अतिशयोक्ति से भरी डोरियन की प्रशंसा, अचानक ही उसकी चुप्पी—वह अब सब कुछ समझ गया और उसको तनिक दुःख हुआ। उसे अनुभव हुआ कि रोमांस से भरी हुई इस मित्रता में कोई दुःख अवश्य छिपा है।

उसने एक ठंडी सांस ली और घंटी बजाई। चित्र को किसी भी कीमत पर छिपा देना होगा। किसी के देखे जाने का इतना बड़ा खतरा वह उठा नहीं सकता। एक घंटे के लिये भी इस चित्र का इस कमरे में रखे रहना उसकी मूर्खता होगी क्योंकि इस कमरे में उसके सब मित्र इच्छानुसार आते-जाते हैं।

१०

नौकर के अन्दर आने पर डोरियन ने उसे ध्यान से देखा और सोचने लगा कि क्या परदे के पीछे छिपे हुए चित्र को देखने की भावना इस नौकर के मन में उठी है ? नौकर इस ओर से बिल्कुल उदासीन था और डोरियन की आज्ञा की बाट जोह रहा था। डोरियन ने एक सिगरेट सुलगाई और शीशे के पास जाकर अपना मुख देखने लगा। उसे विक्टर के मुख की परिछाईं स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। वहाँ पर डोरियन की आज्ञा का पालन करने के भाव विद्यमान थे। उसको किसी प्रकार का भय नहीं करना चाहिये। परन्तु फिर भी उसको सतर्क रहना चाहिये।

बहुत धीमे स्वर में उसने विक्टर से मकान की देखभाल करने वाली स्त्री को उसके पास भेज देने के लिये कहा। और उसके पश्चात् कहा कि फ्रेम बनाने वाले की दुकान पर जाकर वहाँ से दो आदमी लाने होंगे। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि कमरे से बाहर जाते समय नौकर ने अपनी आँखें छिपे हुए चित्र की ओर दौड़ाई थीं। या यह केवल उसकी कोरी कल्पना ही थी?

कुछ क्षणों के पश्चात् काली सिल्क की पोशाक पहने, अपने झुर्रियों वाले हाथों को मलती हुई श्रीमती लीफ़ पुस्तकालय में आई। डोरियन ने उससे ऊपर के स्कूल के कमरे की चावी माँगी।

"वह पुराना स्कूल का कमरा मि० डोरियन?" उसने आश्चर्य से कहा—"वह तो धूल से भरा हुआ होगा। मैं तुम्हारे जाने से पहले झाड़-पोंछकर उसे साफ़ करवा दूँगी। इस दशा में तो उसे देखना भी उचित नहीं जान पड़ता।"

"मैं उसे ठीक नहीं करवाना चाहता, मैं केवल उसकी चावी चाहता हूँ।"

"यदि तुम अन्दर गये तो मकड़ियों के जालों में फँस जाओगे। पाँच वर्ष पूर्व जब तुम्हारे दादा की मृत्यु हुई थी तब से यह कमरा खोला नहीं गया है।"

अपने दादा की बात सुनकर वह तनिक उदास-सा हो गया। उससे संबंधित पुरानी स्मृतियों से डोरियन को एक प्रकार की घृणा-सी थी। "उसकी कोई बात नहीं है।" उसने उत्तर दिया—"मैं केवल उस स्थान को एक बार देखना चाहता हूँ। मुझे उसकी चावी दे दो।"

"यह रही चावी।" श्रीमती लीफ़ ने काँपते हुए हाथों से चावियों के गुच्छे को टटोलते हुए कहा—"यह है चावी, मैं इसे अभी गुच्छे से निकाले देती हूँ। परन्तु तुम वहाँ रहने की तो नहीं सोच रहे हो, यहाँ तो तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं है।"

"नहीं-नहीं," उसने घबराकर कहा—"धन्यवाद लीफ़, अब तुम जा सकती हो।"

वह कुछ क्षणों तक वहीं खड़ी रही और कुछ घरेलू मामलों में डोरियन की राय लेने लगी। उसने उकताकर कहा कि वही अपनी इच्छा के अनुसार मामलों को निबटा ले। मुस्कराती हुई वह कमरे के बाहर चली गई।

दरवाज़ा बन्द होने पर उसने वह चाबी अपनी जेब में रख ली और कमरे में चारों ओर एक निगाह दौड़ाई। उसकी नज़र एक सत्रहवीं शताब्दी वाले गुलाबी रंग के भारी परदे पर पड़ी, जिस पर भारी सोने का काम किया हुआ था और जिसको उसके दादा ने बोलोना में एक कनवेंट से खरीदा था। हाँ—इसमें उस भयानक चित्र को छिपाया जा सकता है। शायद मृत व्यक्ति को ढकने के लिये भी इसी का उपयोग किया जाता था। और अब यह उसके दोषों और पापों को छिपाने में सहायता देगा। भयानक पाप चित्र में प्रकट होंगे परन्तु वह चित्र कभी मर नहीं सकेगा। मुर्दे को समाप्त करने के लिये जिस प्रकार कीड़े होते हैं उसी प्रकार कैन्वस पर बनाये चित्र के लिये उसके पाप होंगे। वे उसके सौन्दर्य और उसकी कोमलता नष्ट कर देंगे। वे इसको विकृत बनाकर लज्जा से झुका देंगे। इतना होने पर भी यह चित्र सदा जीवित रहेगा।

वह काँप उठा और क्षण भर के लिये उसे इस बात पर शोक हुआ कि उसने बासिल को चित्र न दिखाने का वास्तविक कारण क्यों न बतला दिया। बासिल लार्ड हेनरी के प्रभाव को कम करने में उसकी सहायता करता और स्वयं उसकी मुद्रा से जो विषमय प्रभाव उस पर अधिकार जमाते हैं, उनको दूर करने का प्रयास करता। उसका डोरियन के प्रति जो प्रेम है—वास्तव में उसे 'प्रेम' ही कहना पड़ेगा—उसमें स्वर्गीयता और बौद्धिकता भरी पड़ी है। यह प्रेम सौन्दर्य की शारीरिक प्रशंसा के कारण ही नहीं उपजा है, क्योंकि यदि ऐसा होता तो वह इन्द्रियों की थकान के साथ-साथ समाप्त हो गया होता। यह माइकल ऐंगलो, मौंटेन, विकन्समन, और शेक्सपीयर के प्रेम के समान है। हाँ, बासिल उसे बचा सकता था। परन्तु अब बहुत देर हो चुकी थी। अतीत को भुलाया जा

सकता है। प्रायश्चित करके, अपने को वश में रखकर और भुलाकर हम अतीत को अपनी स्मृति से विलीन कर सकते हैं। परंतु भविष्य को टाला नहीं जा सकता। उसके मन में जो वासनायें और इच्छायें हैं वे अपनी पूर्ति का साधन खोज निकालेंगी, उसके स्वप्न पाप की काली छाया को वास्तविकता का रूप दे देंगे।

उसने सोफा पर से गुलाबी रंग का कपड़ा उतारा और उसे लेकर चित्र के सामने चला गया। क्या कैन्वस के चित्र की शक्ल पहले से भी अधिक विकृत हो गई है। उसने अनुभव किया कि उसमें कोई और परिवर्तन नहीं हुआ है परन्तु फिर भी उसका दुःख पहले से भी अधिक बढ़ गया। सुनहरे बाल, नीली आँखें और गुलाब के फूल के समान होंठ सब कुछ वैसे ही थे। केवल शक्ल की मुद्रा बदल गई थी। वह अत्यन्त क्रूर और निर्दयी बन गई थी। उसकी अपनी आत्मा चित्र से झाँक रही थी और उससे अपनी करतूतों की जाँच करने के लिये कह रही थी। उसके मुख पर वेदना की एक गहरी छाया पड़ गई और उसने वह कीमती वस्त्र चित्र पर डाल दिया। उसी समय किसी ने द्वार खटखटाया। द्वार खोलने पर उसका नौकर अन्दर आया।

"मालिक, फ्रेम की दूकान से लोग आ गये हैं।"

उसने अनुभव किया कि नौकर से किसी प्रकार इसी क्षण छुटकारा पाना चाहिये। उसे यह पता नहीं लगने देना चाहिये कि चित्र को कहाँ रखा जा रहा है। नौकर में जासूसीपन का तनिक आभास उसे मिला और उसके नेत्रों में कोई भयानक छाया घूम गई है। लिखने वाली मेज के सामने बैठकर उसने लार्ड हेनरी को एक संक्षिप्त पत्र लिखा, जिसमें उसे कोई पुस्तक भेजने के लिये कहा गया था और उस शाम को सवा आठ बजे मिलने के वायदे को दोहराया गया था।

"इसका उत्तर लेकर आना।" उसने वह पत्र नौकर को देते हुए कहा—"और उन आदमियों को यहाँ मेरे पास भेज दो।"

दो या तीन मिनट पश्चात् फिर किसी ने द्वार खटखटाया और

आडले स्ट्रीट का फ्रेम बनाने वाला प्रसिद्ध कलाकार हबार्ड एक अपने दूसरे साथी के साथ अन्दर आया। हबार्ड एक स्वस्थ और सुन्दर युवक था। उसका नियम था कि वह कभी अपनी दुकान से बाहर नहीं जाता था। वह लोगों से अपनी दुकान पर ही मिलता था। परन्तु डोरियन के साथ वह इस नियम का उपयोग नहीं करता था। डोरियन में कुछ इस प्रकार की आकर्षण-शक्ति थी जिससे सब लोग प्रभावित हो जाते थे। उसको देखने में भी लोग आनन्द अनुभव करते थे।

"डोरियन, मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूँ?" उसने अपने पीले हाथों को मलते हुए कहा---"मैंने सोचा कि मैं स्वयं ही क्यों न आकर तुम्हारे दर्शन करूँ। मेरे पास एक अत्यन्त सुन्दर फ्रेम आया है। एक नीलाम में मैंने उसे खरीदा था। फ्लोरेंस की प्राचीन कला का एक अच्छा नमूना है। मेरे विचार में किसी धार्मिक विषय के चित्र के लिये वह फ्रेम बहुत उपयुक्त होगा।"

"मि० हबार्ड, तुमने स्वयं आने का जो कष्ट किया है उसके लिये धन्यवाद! मैं अवश्य ही कभी दुकान पर आकर फ्रेम देखूंगा। यद्यपि मुझे धार्मिक चित्रों में कोई दिलचस्पी नहीं है। परन्तु आज···आज तो मैं अपना एक चित्र ऊपर के कमरे में ले जाना चाहता हूँ। वह काफी भारी है इसलिए मैंने तुम्हारी दुकान से कुछ आदमियों को बुला भेजने के लिए कहा था।"

"इसमें कष्ट की कौन-सी बात है। तुम्हारा कोई काम करके मुझे प्रसन्नता ही होगी। वह चित्र कहाँ है?"

"यह रहा।" डोरियन ने परदा हटाकर पूछा—"क्या इसी प्रकार से लिपटे हुए इस चित्र को ऊपर ले जाया जा सकता है? परन्तु ऊपर तक जाने से यह किसी प्रकार से खराब नहीं होना चाहिये।"

"इसमें कोई कठिनाई नहीं पड़ेगी।" फ्रेम बनाने वाले व्यक्ति ने कहा और तत्क्षण अपने साथी की सहायता से उसकी जंजीरें खोलने लगा,

जिनके सहारे चित्र लटक रहा था। फिर बोला—"डोरियन, इसे कहाँ ले जाना होगा?"

"यदि तुम मेरे पीछे-पीछे आने का कष्ट करो तो मैं तुमको रास्ता दिखा दूंगा। या फिर तुम आगे-आगे चलो। मकान के सबसे ऊपरी भाग में इसे ले जाना होगा। हम सामने के जीने से ऊपर चढ़ेंगे, क्योंकि वह तनिक चौड़ा है।"

उसने उन दोनों के लिये दरवाज़ा खोल दिया और वे हाल को पार करके ऊपर चढ़ने लगे। मोटे फ्रेम के कारण चित्र बहुत भारी हो गया था। यद्यपि हावर्ड ने कुशल व्यापारी के नाते कितनी ही बार डोरियन की सहायता लेने का विरोध किया, परन्तु फिर भी कभी-कभी डोरियन उन दोनों को सहारा लगा ही देता था।

"काफी बोझ था।" ऊपर की मंजिल पर पहुँचकर उसने हाँफते हुए कहा और चमकते हुए माथे से पसीना पोंछ लिया।

"यह चित्र बहुत भारी था।" यह कहकर डोरियन ने कमरे का ताला खोल दिया। जहाँ पर उसकी जिन्दगी का अजीब-सा रहस्य छिपा पड़ा था और जहाँ उसकी आत्मा को लोगों की आँखें देख नहीं सकेंगी।

इस कमरे में आये उसे चार वर्ष से अधिक हो गये थे। जब वह बच्चा था तब इस कमरे में वह खेला करता था और थोड़ा बड़ा हो जाने पर उसने इसे पढ़ने का कमरा बना लिया था। यह एक बड़ा-सा खुला कमरा था, जिसको अन्तिम लार्ड कैल्सो ने अपने पोते के लिए बनवाया था क्योंकि वह अपनी माँ से बहुत मिलता-जुलता था, और अन्य कारणों से घृणा करके वह उसे अपने से दूर ही रखना चाहता था। डोरियन को इस कमरे में अधिक परिवर्तन नहीं दिखाई पड़े। एक कोने में संदल की लकड़ी का किताबों का केस रखा था, जिसमें उसकी स्कूल की पुस्तकें पड़ी थीं। उसके पीछे दीवार पर एक परदा रंगा हुआ था जहाँ राजा और रानी बाग में शतरंज खेल रहे थे और बाजार में पक्षी बेचने वाले लोग अपने साथ परिन्दे लिये आगे बढ़ रहे थे। यह सब उसे कितनी

अच्छी तरह से याद था। कमरे में चारों ओर देखकर उसे अपने एकाकी बचपन का प्रत्येक क्षण याद आने लगा। उसे अपने बचपन की पवित्रता याद आई और इसी कमरे में यह चित्र छिपाया जायेगा, इसका विचार आते ही वह काँप उठा। उन अतीत के दिनों में उसने कभी अपने भविष्य के विषय में नहीं सोचा था।

परन्तु अपने ही घर वालों की उत्सुक दृष्टि से उस चित्र को छिपाने का इससे अधिक सुरक्षित स्थान कोई दूसरा नहीं हो सकता था। चाबी उसके पास रहेगी और घर का कोई अन्य व्यक्ति अन्दर नहीं आ सकेगा। उस गुलाबी रंग के कपड़े में छिपा हुआ कैन्वस पर उसका चित्र कितना ही विकृत, भयानक और पशु के समान बदल सकता है। उसका अब क्या महत्त्व है ? कोई इसे देख नहीं सकेगा। वह स्वयं भी नहीं देखेगा। वह अपनी आत्मा के भयानक पापों का निरीक्षण क्यों करे ?

उसका अपना यौवन सदा के लिये बना रहेगा, यह उसके लिये पर्याप्त था और शायद उसका स्वभाव पहले से अच्छा ही हो जाये। यह आवश्यक नहीं कि उसका भविष्य कुकृत्यों से भरा हुआ हो। शायद उसकी जिन्दगी में कोई प्रेम की लहर आये जो उसे पवित्र करके उन पापों से रोके जिनका प्रादुर्भाव अभी से होने लगा है। वे ऐसे अदृश्य और विचित्र-से पाप थे जिनका रहस्य ही उन्हें आकर्षित कर लेता था। शायद किसी दिन चित्र के गुलाबी गम्भीर चेहरे से वह मुद्रा विलीन हो जाये और बासिल हालवर्ड की महान् कृति वह संसार को दिखा सके।

नहीं, यह असम्भव था। प्रत्येक घण्टे और प्रत्येक सप्ताह कैन्वस पर बना हुआ चित्र बूढ़ा बनता जा रहा था। शायद यह उसके पापमय जीवन से छुटकारा पा जाए, परन्तु बुढ़ापे की विकृत छाया से तो बच नहीं सकता। गाल गड्ढों की भाँति अन्दर घुस जायेंगे। मुरझाई हुई आँखें पीली पड़ती जायेंगी और एक दिन बहुत भयानक दिखाई देने लगेंगी। बालों की चमक समाप्त हो जायगी, मुख नीचे लटकने लगेगा और बूढ़े लोगों की भाँति उसमें मूर्खता के भाव झलकने लगेंगे। गले और हाथों

में झुर्रियाँ पड़ जायेंगी, शरीर एक ओर को झुक जाएगा जैसा कि उसके दादा का था जो उसके साथ बड़ा कड़ा व्यवहार किया करते थे। चित्र को किसी न किसी प्रकार छिपाना ही पड़ेगा, इसके अतिरिक्त कोई और चारा नहीं था।

"मि० हबार्ड, इस चित्र को अन्दर ले आओ।" उसने थककर घूमते हुए कहा—"मुझे शोक है कि तुम्हें इतनी देर तक बाहर खड़े रखा। मैं किसी दूसरे विषय पर सोचने लगा था।"

"मि० ग्रे, आराम मिलने पर मुझे सदा खुशी होती है।" फ्रेम बनाने वाले ने कहा। यद्यपि वह अभी तक सांस लेने का प्रयास कर रहा था—"इस चित्र को कहाँ रख दें ?"

"ओह ! कहीं रख दो, यहाँ······हाँ यहाँ ठीक रहेगा। मैं इसे टाँगना नहीं चाहता, इसे दीवार के सहारे खड़ा कर दो। धन्यवाद !"

"क्या मैं कला के इस नमूने को देख सकता हूँ ?"

डोरियन चौंका। "मि० हबार्ड, इसे देखकर तुम्हें कोई खुशी नहीं मिलेगी।" उसने हबार्ड की ओर देखते हुए कहा। यदि उसने उस वस्त्र को हटाने का प्रयास किया तो वह उसे दूर फैंक देगा, वह अपनी जिन्दगी के सदस्य को दूसरों को नहीं दिखा सकता। "अब मैं तुम्हें अधिक कष्ट नहीं दूंगा, तुम्हारे यहाँ तक आने के लिए मैं बहुत आभारी हूँ।"

"मि० ग्रे, इसमें आभारी होने की कौन-सी बात है। तुम्हारे लिये मैं कोई भी काम कर सकता हूँ।" और मि० हबार्ड अपने साथी के साथ सीढ़ियों पर नीचे उतर आया और उसने आश्चर्य-चकित नेत्रों से डोरियन की ओर देखा। उसने जिन्दगी में डोरियन से अधिक सुन्दर कोई युवक नहीं देखा था।

जब उन दोनों के पैरों की आहट समाप्त हो गई, तब डोरियन ने कमरे का ताला लगा दिया और चाबी अपनी जेब में रख ली। अब उसे किसी बात का भय नहीं था। कोई अब इस भयानक चित्र को नहीं देख

सकेगा, उसके अतिरिक्त और किसी की आँखें अब उसके पापों को नहीं देख सकेंगी।

पुस्तकालय में पहुँचकर उसे पता चला कि पाँच बज चुके हैं और नौकर जलपान रख गया है। सामने लेडी रेडले द्वारा भेंट किये हुए छोटे-से कीमती मेज पर लार्ड हेनरी का पत्र पड़ा था और उसी के पास पीले कागज में लिपटी हुई एक पुस्तक रखी थी जिसकी जिल्द फटी हुई-सी थी और जिसके कोने पुराने हो चुके थे। "सेन्ट जेम्स गजेट" की एक प्रति चाय की ट्रे के पास रखी थी। उसे विश्वास हो गया कि विक्टर वापस लौट आया है। वह सोचने लगा कि क्या विक्टर ने फ्रेम बनाने वाले और उसके साथी को मकान से बाहर जाते देख उनके आने का वास्तविक कारण जान लिया है ? चित्र को कमरे में न देखकर उसको उसकी अनुपस्थिति खटकेगी, और शायद चाय के बर्तन रखते समय ही उसने यह बात जान ली हो। परदे को उसके स्थान पर फिर से नहीं लगाया गया है और दीवार पर खाली जगह आँखों में खटक रही थी। शायद किसी रात को वह विक्टर को ऊपर के कमरे में झाँकते हुए देखे और अन्दर जाने का प्रयास करते हुए उसे पकड़ ले। अपने ही घर में किसी जासूस का रहना भय से खाली नहीं है। उसने सुन रखा है कि अमीर लोगों के घरों में कोई पत्र पढ़कर, कोई बातचीत सुनकर, किसी का पता जानकर, तकिये के नीचे मुरझाया हुआ फूल देखकर या लस का टुकड़ा पाकर, नौकर किस प्रकार अपने मालिकों की जिन्दगी भर जासूसी करते हैं।

उसने एक साँस ली और प्याले में चाय डालकर लार्ड हेनरी का पत्र पढ़ने लगा। उसमें केवल इतना ही लिखा था कि वह उसे शाम का समाचार-पत्र, और उसके जी बहलाव के लिए एक पुस्तक भेज रहा है। सवा आठ बजे वह उसे क्लब में मिलेगा। उसने "सेंट जेम्स" समाचार-पत्र खोला और सुस्ती से देखने लगा। पाँचवें पन्ने पर लाल पेंसिल का निशान देखकर अचानक वह उस ओर आकर्षित हुआ। वह निम्नलिखित पैरा था :—

'एक अभिनेत्री की मृत्यु की जाँच-पड़ताल—आज प्रातः हौक्सरन रोड पर सिबल वेन के शरीर की मि० डैनबी द्वारा जाँच-पड़ताल की गई। सिबल रायल थियेटर हालबर्न की एक जवान अभिनेत्री थी। 'गलती से मौत' का सर्टिफिकेट दे दिया गया है। उसकी माँ के प्रति सबकी सहानुभूति प्रकट की गई है जो अपना बयान देते समय बहुत दुःखी दिखाई देती थी। डा० बिरेस ने मृत शरीर का निरीक्षण किया था।

उसने क्रोधित होकर समाचार-पत्र के दो टुकड़े कर डाले और कमरे के बाहर जाकर उन्हें उछाल दिया। कितना भयानक किस्सा था। उसे क्रोध आया कि क्यों लार्ड हेनरी ने उसे यह समाचार-पत्र भेजा! लाल पेंसिल से उस पर निशान लगाना उसकी मूर्खता थी। विक्टर उसे पढ़ लेता तब…? वह थोड़ी-बहुत अंग्रेजी जानता है।

शायद उसने समाचार-पत्र की यह घटना पढ़ ली है और उस पर सन्देह करने लगा है, परन्तु इसका महत्त्व क्या है? सिबल वेन की मृत्यु से उसका क्या सम्बन्ध है? इसमें डरने की कौन-सी बात है। उसने सिबल की हत्या नहीं की है।

उसकी दृष्टि उस पीली पुस्तक की ओर गई जो लार्ड हेनरी ने उसे भेजी थी। वह पुस्तक किस विषय पर हो सकती है। वह पुस्तक उठाकर एक आराम कुर्सी पर बैठ गया और उसके पन्ने उलटने लगा। कुछ ही मिनटों में वह उसमें मग्न हो गया। ऐसी विचित्र पुस्तक उसने आज तक नहीं पढ़ी थी। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि बड़े सुन्दर भड़कीले वस्त्रों में और संगीत-वाद्य के कोमल स्वर में छिपे हुए संसार के पाप चुपचाप उसके सामने आगे बढ़े जा रहे हैं। जिन चीज़ों के उसने धुँधले से स्वप्न देखे थे वे ही यकायक वास्तविक बनकर उसके सामने आ गये। जिनकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी वे धीरे-धीरे सत्य बनकर उसे दिखाई दिये। यह एक बिना प्लाट से उपन्यास था, जिसमें एक ही चरित्र था। इसमें पैरिस के एक युवक का मनोवैज्ञानिक अध्ययन था जो १९वीं

शताब्दी की सारी वासनाओं और सुखों से तृप्त होना चाहता था परन्तु अपने वर्तमान समय के सुखों का ज्ञान जिसे नहीं था। अस्वाभाविक रूप से जिन सुखों से मनुष्य अपने को वंचित रखता है उसे मूर्खतावश लोग 'गुण' कहकर पुकारते हैं और स्वाभाविक ढंग से जिन सुखों का मनुष्य भोग करता है, उसे लोग 'दोष' कहते हैं। ये सब गुण और दोष उस उपन्यास के चरित्र में विद्यमान थे। पुस्तक के लिखने का ढंग बहुत पुराना था। वासनाओं की पूर्ति को जिन्दगी की रहस्यमयी दार्शनिकता बतलाया गया था। पुस्तक को पढ़कर पाठक को सन्देह होने लगता था कि वह किसी संन्यासी के स्वर्गीय आनन्द का अनुभव कर रहा है या आधुनिक व्यक्ति के विकृत-पापों का आभास पा रहा है। उसके प्रत्येक शब्द में विष भरा पड़ा था। उसके पत्रों में एक ऐसी सुगन्धि भरी पड़ी मालूम देती थी जिससे मस्तिष्क में हलचल मच जाती थी। वाक्यों का प्रवाह और उनके बार-बार दोहराये जाने से पुस्तक के परिच्छेदों को पढ़ने के साथ-साथ डोरियन इस प्रकार मग्न हो गया मानो वह स्वप्न देख रहा हो। उसे पता नहीं चला कि कब दिन समाप्त हो गया और कब परछाइयाँ लम्बी हो गईं।

हरे रंग का आकाश खिड़की में से झाँक रहा था जहाँ बादल नहीं थे और केवल एक तारा चमकता हुआ दिखाई दे रहा था। वह उसकी धुंधली रोशनी में पढ़ता गया, जब तक पूर्ण रूप से अंधकार फैल नहीं गया। नौकर से बहुत बार देर हो जाने की चेतावनी पाकर वह उठ खड़ा हुआ और दूसरे कमरे में जाकर मेज पर पुस्तक रख दी और भोजन के लिये तैयार होने लगा।

जब वह क्लब पहुँचा तो रात्रि के नौ बज चुके थे। लार्ड हेनरी एक कमरे में अकेला बैठा हुआ उसकी प्रतीक्षा करते करते थक गया मालूम देता था।

"मुझे बहुत शोक है हेनरी!" उसने कहा—"लेकिन इसमें दोष

तुम्हारा ही है। तुमने जो पुस्तक भेजी थी, मैं उसमें इतना मग्न हुआ कि मैं समय भूल गया।"

"हाँ, मैंने सोचा था कि तुम उसे पसन्द करोगे।" उसने कुर्सी से उठते हुए कहा।

"यह मैंने कब कहा कि मुझे वह किताब पसन्द आई है, मैंने तो कहा था कि उसने मुझे अपनी ओर आकर्षित किया है। दोनों बातों में बहुत अन्तर है।"

"ओह, तुमको यह अन्तर पता चल गया है?" लार्ड हेनरी ने धीरे स्वर में कहा और दोनों खाने वाले कमरे में चले गये।

११

वर्षों तक डोरियन पर उस पुस्तक का प्रभाव जमा रहा। या यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि उसने ही कभी पुस्तक की छाया को निकालकर फैंक देना नहीं चाहा। उसने पेरिस से उस पुस्तक की नौ प्रतियाँ मँगवाईं और उनको विभिन्न रंगों की जिल्दों में मढ़वा लिया जिससे कि प्रत्येक रंग उसकी मुद्रा और स्वभाव के बदलते हुए पहलुओं, जिन पर कभी-कभी वह अपना थोड़ा-सा नियन्त्रण भी रख नहीं सकता था—के उपयुक्त रह सके। पुस्तक का नायक एक पैरिस का युवक था जिसमें रोमांस और वैज्ञानिक मुद्राओं का इस प्रकार समावेश हो गया था जिसका अनुभव करके वह अपने स्वभाव को भी वैसा ही बनाये जा रहा था।

एक बात में वह उपन्यास के नायक से भी आगे बढ़ा हुआ था। ड़ोरियन ने यह कभी नहीं जाना, उसे जानने का मौका ही नहीं मिला,

किस प्रकार नायक के जीवन में इतनी जल्दी संसार के ऐश्वर्य, यौवन और सौन्दर्य आये थे, परन्तु कितनी शीघ्र ही उसका आकर्षक सौन्दर्य मुरझा गया। उसे उपन्यास के अन्तिम भाग पढ़ने में एक प्रकार की प्रसन्नता होती थी क्योंकि नायक ने जिस वस्तु को दूसरे लोगों में और संसार में इतना महत्व दिया था उसे अपने आप में ही नष्ट होते देख उसे बड़ा दुःख और घोर निराशा हुई।

उसका सौन्दर्य—जिसने बासिल हालवर्ड और कितने ही अन्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया था—कभी उससे दूर नहीं भागा। जिन लोगों ने उसके विषय में भाँति-भाँति की अफवाहें सुनी थीं, लन्दन में उसकी पतित जिंदगी की गाथाओं की चर्चा क्लबों में सुनी थी, वे भी जब डोरियन को देखते थे तब उन सब कहानियों पर विश्वास नहीं कर सकते थे। उसकी दृष्टि में कुछ ऐसी चमक थी जिसे देखकर किसी को भी उस पर कलंक लगाने का साहस नहीं पड़ता था। वे आदमी जो डोरियन के विषय में निरन्तर उसके चरित्र की चर्चा किया करते थे, डोरियन को उस स्थान पर आते देखकर चुप हो जाते थे। उसके चेहरे पर पवित्रता की कुछ ऐसी झलक थी जिसे देखकर लोग अफवाहों को झूठा समझने लगते थे। उसकी उपस्थिति से ही लोगों को मन ही मन इस प्रकार की ग्लानि होने लगती थी मानो वे पवित्रता पर व्यर्थ का कलंक लगा रहे थे। वे आश्चर्य किया करते थे कि डोरियन जैसा सुन्दर और आकर्षक युवक भला युग के वर्तमान दोषों से किस प्रकार अपने को बचा सका है।

रहस्यमयी और बहुत देर की लंबी अवधि तक लन्दन से अनुपस्थित रहकर जब वह वापस लौटता तब वे लोग जो अपने को डोरियन का मित्र कहते थे, उनके मन में भी भाँति-भाँति की शंकायें उठने लगती थीं और स्वयं डोरियन भी ऊपर के बन्द कमरे को खोलकर उसमें घुस जाता और बासिल हालवर्ड के बनाये हुए चित्र को शीशे में देखकर कैन्वस की शक्ल पर समय और पाप की रेखाओं को देखता और फिर अपने ताजे

और जवान चेहरे को देखता। दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर देख-कर उसका मन प्रसन्नता से फूला नहीं समाता। वह और भी अपने सौन्दर्य के वशीभूत हो जाता और अपनी पापों में अधिक उत्सुकता दिखलाता। वह बड़ी सावधानी से, और कभी-कभी भयानक प्रसन्नता से झुर्रियों से भरे माथे की विकृत रेखाओं और वासना से पूर्ण मुख का निरीक्षण करता और आश्चर्य से सोचने लगता कि पाप के चिह्न और अवस्था की रेखाएँ इन दोनों में से अधिक कौन भयानक और विकृत है। वह अपने श्वेत हाथ चित्र के रक्त में सने हाथों के सम्मुख रख देता और मुस्कराता। वह भद्दी शक्ल और निर्वल हड्डियों का उपहास करता। कभी-कभी किसी रात को ऐसे क्षण भी आते जब अपने मकान के कोमल और नर्म गद्दों पर या तट के समीप किसी बदनाम होटल के एक कमरे में लेटकर वह सोचा करता था कि उसकी आत्मा का कितना पतन हो चुका है। परन्तु ये क्षण बहुत कम ही आते थे। बासिल के बाग में बैठकर जब पहले-पहल जिन्दगी को जानने की उत्सुकता लार्ड हेनरी ने उसमें जगाई थी वह समय के साथ बढ़ती ही जा रही थी। जितना अधिक वह जानता था उतना ही अधिक जानने की उत्कंठा उसके मन में तीव्र होती जाती थी। उसकी भूख खाने के साथ-साथ बढ़ती ही जाती थी।

फिर भी वह अपनी सोसायटी के प्रति उदासीन नहीं था। सर्दियों के महीने में दो-तीन बार और प्रत्येक बुधवार की संध्या को वह अपना सुन्दर मकान लोगों के लिए खोल देता था और अपने महमानों के मनो-रंजन के लिए प्रसिद्ध संगीतकारों की कला का दिग्दर्शन कराता था। उसकी छोटी-छोटी भोजन की दावतें—जिसमें लार्ड हेनरी सदा उसकी सहायता किया करता था—चुने हुए महमानों की महफिल, मेज की सजावट में सावधानी, फूलों के गुलदस्ते सजाने में सतर्कता, कढ़े हुए काम वाले कपड़े और कारीगरी वाली सोने और चाँदी की प्लेट इन सब के लिए प्रसिद्ध थीं। कुछ लोग—विशेषकर—कुछ युवक—डोरियन ग्रे के व्यक्तित्व में वह विशेषता देखते थे जिसकी कल्पना आक्सफोर्ड या ऐरन विश्वविद्या-

लय में की थी—जिसमें एक पढ़े लिखे विद्वान् का ज्ञान और विश्व के नागरिक के सब गुणों का समावेश हो। इन लोगों के लिए डोरियन डान्टे के उन लोगों में से था जो सौन्दर्य की पूजा करके पूर्णता प्राप्त कर लेते हैं, या गौटियर के उन लोगों में से था जिनके लिए दृश्य संसार ही सब कुछ था।

और डोरियन के लिए जिन्दगी सब कलाओं में से पहली और महत्वपूर्ण कला थी और शेष सब कलायें अपूर्ण थीं। विचित्र फैशन—जिससे मनुष्य अस्वाभाविक-सा बन जाता है परन्तु क्षण भर के लिए वह विश्वव्यापी बन जाता है। युवावस्था का प्रदर्शन जो सौन्दर्य को आधुनिक बना देता है—डोरियन इन सब की ओर बहुत आकर्षित था। उसका कपड़े पहनने का ढंग और प्रतिदिन के बदलते हुए फैशन, मेफेयर नृत्य के युवकों और पौलमाल क्लब की दुकानों पर अपना प्रभाव छोड़ जाते थे जो डोरियन की वेशभूषा और उसके नये फैशनों की नक़ल किया करते थे।

डोरियन को सोसायटी ने जो आसन दिया, वह उसने तत्क्षण स्वीकार कर लिया। उसने अनुभव किया कि अपने समय में लन्दन में उसका उतना ही महत्व है जितना कि एक दिन रोम के लिए, सत्यरिकन के लेखक का था। परन्तु मन ही मन उसकी आकांक्षा थी कि लोग उससे उनके हीरे-जवाहरातों, नकटाई की गाँठ और उसके फैशनों के अतिरिक्त कुछ और भी पूछें, उसकी राय जानने का प्रयास करें। वह जिन्दगी की एक ऐसी योजना बनाने में मग्न था जिसमें जिन्दगी की तर्कयुक्त दार्शनिकता और स्थिर सिद्धान्तों का समावेश हो और वासनाओं का अध्यात्मवाद ही उसका सबसे ऊँचा उद्देश्य हो।

इन्द्रियों का दास हो जाने को लोग बहुत उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। वासनाओं और इच्छाओं के प्रति स्वभावतः लोग बड़े भय से देखते थे। क्योंकि वे उनसे अधिक शक्तिशाली थीं। परन्तु डोरियन ऐसा अनुभव करता था कि वासनाओं के विषय में कोई भी भली-भाँति अभी तक

समझ नहीं सका है। अपने को वश में रखकर या नाटकीय वेदना से उनको रोककर लोगों ने उन वासनाओं को जंगली और पशुवृत्ति समझा है। आध्यात्मिक रूप से उनका उपयोग यदि किया जाये तो उसका मुख्य धर्म सौन्दर्य की रचना हो सकता है। मानव के इतिहास पर दृष्टि डालने से उसे तीव्र दुःख हुआ। व्यर्थ के उद्देश्य के लिए उसने अपनी शक्ति का भंडार खाली कर डाला। लोगों ने सुख और ऐश्वर्य को ठुकराया, भय के कारण अपने को कष्ट दिया और संसार के सुखों से वंचित रखा। अज्ञानवश जिस पतन से उन्होंने छुटकारा पाया वह उनके वास्तविक पतन के सम्मुख बहुत कम महत्व का था। सुखों से भाग जाने वाले साधु को प्रकृति ने जंगलों में आ पटका जिससे वह जंगली जानवरों के साथ भोजन करे और उन्हीं को अपना साथी समझे।

जैसा कि लार्ड हेनरी ने कहा था कि एक नई धारा—मानव का धर्म, सुख की खोज करती है। यह जिन्दगी को एक नया जन्म देगी और हमारे युग में जिस प्राचीन धार्मिक दार्शनिकता को पुनः जन्म देने का प्रयास किया जा रहा है—उससे संसार को बचा लेगी। बौद्धिकता की सेवा करना ही इस धारा का मुख्य उद्देश्य होगा। परन्तु यह ऐसी कोई नीति कदापि स्वीकार नहीं करेगी जिसके अनुसार किसी इच्छा को पूर्ण करके एक नया अनुभव प्राप्त करने की मनाही हो। इसका उद्देश्य स्वयं अनुभव प्राप्त करना होगा, उस अनुभव का फल मीठा या कड़वा होता है, इससे उसका कोई प्रयोजन नहीं। अपने ऊपर कड़ा नियंत्रण लगाकर अपनी इन्द्रियों का दमन करना और नैतिक पतन हो जाने पर प्रत्येक पाप करना दोनों में कोई अंतर नहीं है। अतः यह दार्शनिकता इस नई धारा में प्रचारित नहीं की जायेगी। यह लोगों को सिखायेगी कि वे अपना ध्यान जिन्दगी के कुछ क्षणों पर एकाग्र करें जो जिन्दगी स्वयं ही एक क्षण के समान है।

इसमें से केवल कुछ ही लोग ऐसे हैं जो प्रातः के पहले कभी नहीं जागे। वह स्वप्नहीन रात या तो इस प्रकार की होती है कि जब मृत्यु को

छाया उस पर पड़ चुकी होती है या एक भयानक और विचित्र सी प्रसन्नता में भरी रात, जब वास्तविकता से भी अधिक डरावनी परछाइयाँ मस्तिष्क से निकलकर उसके चारों ओर घूमती हैं। ये काली और विकृत परछाइयाँ कोनों में चुपचाप अपना स्थान ग्रहण कर लेती हैं। बाहर पेड़ों में पक्षियों का कलरव होने लगता है, लोग अपने काम पर जाते हैं, पहाड़ों से आती हुई हवा के झोंके आहें और सिसकियाँ भरते हैं और मकान के चारों ओर चक्कर लगाते हैं कि कहीं अन्दर सोने वालों की नींद में बाधक न बन जायें, परन्तु फिर भी निद्रा को वापस ले जाना भी आवश्यक होता है। धीरे-धीरे सारे धुँधले परदे हमारी आँखों के सामने से हटते जाते हैं और वस्तुएँ अपना पुराना रूप धारण कर लेती हैं। तब हम उस प्रातःकाल को देखते हैं, जो संसार की एक नई आकृति बना रहा होता है। धुँधले शीशों में जिन्दगी की छाया स्पष्ट हो जाती है। बुझा हुआ लैम्प उसी प्रकार अपने स्थान पर रखा रहता है, उसके पास खुली हुई किताब वैसी ही पड़ी रहती है, या वह फूल जिसको कल रात हमने कोट पर लगाया था, या वह पत्र जिसको पढ़ने से हम डर रहे थे या जिसको हमने बहुत बार पढ़ा था, कोई भी वस्तु हमको बदली हुई दिखाई नहीं देती। रात्रि की अवास्तविक परछाइयों के बदले हमारी परिचित जिन्दगी हमारे सामने आ जाती है। जिस जिन्दगी को हमने जहाँ कल रात को छोड़ा था, फिर वहीं से हम उसे जारी कर देते हैं। उन्हीं पुरानी आदतों को फिर दोहराने में हम शक्ति की आवश्यकता का अनुभव करते हैं या हमारे मन में एक ऐसी अजीब-सी इच्छा उठती है कि किसी प्रातः हम एक ऐसी दुनिया को देखें जो रात्रि के अन्धकार में अपने को बदल चुकी हो—एक ऐसी दुनिया जिसमें नई आकृतियाँ हों, नये रंग हों, जिनको बदला जा सकता हो या जिसमें दूसरे रहस्य हों—एक ऐसा संसार जिसमें अतीत बिल्कुल न हो या उसका बहुत कम महत्व हो, या जिसके विषय में सोचकर प्रसन्नता या दुःख न होता हो।

इस प्रकार के संसारों का निर्माण करना ही डोरियन की जिन्दगी

का लक्ष्य—या एक प्रमुख लक्ष्य प्रतीत हुआ। नई और सनसनीदार घटनाओं में, जिनमें एक प्रकार की नवीनता और विचित्रता हो—क्योंकि रोमांस के लिए ये आवश्यक होती हैं—का अनुभव उठाने के लिए अपने स्वभाव के विरुद्ध भी डोरियन ऐसी मुद्राएँ बना लेता था जिनके रंग में पूर्ण रूप से रंगकर अपनी बौद्धिक उत्सुकता को शान्त कर लेता था और फिर उनके प्रति उदासीन होकर उन्हें छोड़ देता था।

एक बार उसके विषय में यह अफ़वाह फैली कि वह रोमन कैथोलिक धर्म को अपना रहा है और सचमुच ही इस धर्म के सिद्धान्तों ने उसे अपनी ओर आकर्षित किया था। प्रतिदिन का उनका त्याग प्राचीन काल के त्याग से कहीं अधिक भयानक था; इन्द्रियों की स्वाभाविक क्रिया को दमन करना और मानवता की ट्रेजेडी को प्रदर्शित करना अत्यंत दुष्कर कार्य था। पूजा के स्थान पर पादरी को विभिन्न धार्मिक काम करते हुए देखना उसे बड़ा अच्छा लगता था। सुगन्धि के बर्तनों में से वायु में उड़ते हुए फूलों की भाँति सुगन्धि को उड़ता हुआ देखकर वह मंत्रमुग्ध-सा हो जाता था। जब वह वहाँ से गुजरता था तो आश्चर्य-चकित होकर काले वस्त्र पहने हुए उन लोगों को देखता था जो पादरी के सम्मुख अपने पाप स्वीकार करने के लिए आते थे। उसकी भी बड़ी तीव्र इच्छा होती थी कि उन लोगों की छाया में बैठकर वह उनके जीवन की सच्ची कहानियाँ सुने।

परन्तु कभी उसने किसी एक धारा या धर्म को मानकर मानसिक विकास को रोकने की ग़लती नहीं की। उसने कभी स्थाई रूप से रहने के मकान को रात्रि के कुछ घेरे बिताने के लिए होटल का एक कमरा नहीं समझा। साधारण वस्तुओं में भी विचित्रता डोरियन को दिखाई देती थी और किसी भी नैतिक सिद्धान्त पर उसे विश्वास नहीं था, परन्तु यह सब केवल कुछ काल ही की दिनचर्या होती थी, वह कुछ काल के लिये जर्मनी के भौतिकवादी सिद्धान्तों का अनुकरण करता था, मनुष्य की भावनाओं और इच्छाओं का मस्तिष्क से क्या सम्बन्ध है, इसकी

खोज किया करता था। आत्मा के पूर्णरूप से शारीरिक स्थिति पर निर्भर होने में उसे बड़ी प्रसन्नता मिलती थी। जिन्दगी के विषय में कोई भी निश्चित सिद्धान्त 'जिन्दगी' की अपेक्षा उसके लिए कम महत्व रखते थे। यह वह स्पष्ट रूप से अनुभव करता था कि कर्म और अनुभवों से पृथक् होकर बौद्धिक विकास का कोई महत्व नहीं है। वह जानता था कि आध्यात्मिक रहस्य प्रकट करने में आत्मा के साथ-साथ इन्द्रियाँ भी पीछे नहीं हैं।

अतः वह विभिन्न प्रकार की सुगन्धि और उनके बनाने के उपायों का अध्ययन किया करता था। वह इस परिणाम पर पहुँचा कि मस्तिष्क की कोई भी ऐसी मुद्रा नहीं है जिसका सम्बन्ध वासना को तृप्त करने वाली जिंदगी से न हो। अतः इन दोनों का सच्चा सम्बन्ध जानने का उसने प्रयास किया। उसे यह जानकर आश्चर्य होता था कि एक सुगन्धि से मनुष्य रहस्यमय बन जाता है, दूसरी से उसकी वासनायें जग जाती हैं, तीसरी से उसके पुराने रोमांस फिर से ताज़े हो जाते हैं, चौथी से मस्तिष्क को पीड़ा होने लगती है, पांचवीं से उसकी कल्पना में परिवर्तन हो जाते हैं। इन सुगन्धियों का पूरा मनोवैज्ञानिक अध्ययन करके उसने मीठी खुशबू वाली जड़ों, सेंट की सुगन्धि वाले फूलों, काली और चमकदार लकड़ी का प्रभाव देखा और पता चलाया कि कौन-सी सुगन्धि से मनुष्य बीमारी का अनुभव करता है, किस से वह पागल-सा बन जाता है और किससे उसकी आत्मा की सारी उदासी दूर हो जाती है।

एक समय उसने अपनी सारी दिनचर्या संगीत में लगा दी। लाल और पीले रंग की छत और हरे रंग की दीवारों वाले एक बड़े से कमरे में वह लोगों के सम्मुख संगीत-सम्मेलन पेश किया करता था, जिसमें हब्शी अपने संगीत-वाद्यों से भयानक संगीत बजाते थे, या पीले रंग के ट्यूनिसियन लोग बड़े-बड़े वाद्यों की तारों से अजीव स्वर निकालते थे, छोटे कद वाले हब्शी ढोलकों पर दूसरों को उबा देने वाला एक-सा संगीत बजाते थे, लाल रंग की चटाइयों पर पगड़ियाँ पहने हिन्दुस्तानी लम्बी-

लम्बी बांसुरियों से साँपों को नचाते थे। कभी-कभी इस प्रकार के संगीत से वह सिहर उठता था। शूबर्ट की भावुकता, चोपन का सुन्दर उदासी से भरा हुआ और बीथोवन के सामंजस्य भरे संगीत में भी उसे उतना आनन्द नहीं मिलता था। उसने संसार के सब कोनों में से—भूत जातियों की कब्रों में से और विदेशी सभ्यता से सम्बन्ध रखने वाली जंगली जातियों से सब प्रकार के अजीब-अजीब संगीत-वाद्य एकत्रित किये और उनका स्पर्श करने में भी उसे आनन्द मिलता था। उसने भारतीय हब्शियों के वे वाद्य लिये—जिनको देखने की आज्ञा स्त्रियों को नहीं है और व्रत रखे बिना कोई युवक भी जिसे नहीं देख सकता था—मिट्टी के बर्तन जिनमें से पक्षियों का स्वर निकलता था, मनुष्य की हड्डियों की बांसुरियाँ, दो रंग की बीन जिनमें से बहुत मीठी आवाज़ निकलती थी—ये सब वाद्य उसने अपने पास रखे। इन वाद्यों की विचित्र रूप-रेखा से ही वह उनकी ओर आकर्षित हो गया था और यह सोचकर उसे बहुत प्रसन्नता होती थी कि प्रकृति की भाँति इस कला के भी बड़े भयानक और विकृत रूप हैं जिनसे अजीब स्वर निकलते हैं।

इसके पश्चात् उसे हीरे-जवाहरातों का ख़ब्त हुआ और एक नृत्य के समय वह फ्रेंच सैनिक अफ़सर की वेश-भूषा में पाँच सौ साठ हीरे अपने कोट में लगाकर आया। यह शौक उसे वर्षों तक रहा या यह कहना उचित होगा कि इस शौक को वह जिन्दगी भर छोड़ नहीं सका। कभी-कभी उनको विभिन्न संदूकड़ियों में रखने में वह अपना सारा दिन व्यतीत कर देता था। आमस्टरडम से उसने तीन इतने बड़े-बड़े हीरे मँगवाये जो किसी के पास भी नहीं थे।

उसने इन हीरे-जवाहरातों के विषय में नाना कथायें भी खोजीं। कौन-सा हीरा किस व्यक्ति ने कब और किस अवसर पर पहना था या पाया था, उसका सारा इतिहास उसने मालूम किया।

यह जिन्दगी किसी समय कितनी सुन्दर थी! इसका प्रदर्शन और इसकी सजावट कितनी आकर्षक थी! मृत लोगों के विषय में पढ़ना भी

बड़ा आश्चर्यमय प्रतीत होता है। तब उसने अपना ध्यान कलामय कसीदे की ओर दिया। जिस विषय को वह लेता था उसमें वह पूर्णरूप से मग्न हो जाता था। अतः इस विषय के अनुसंधान में भी उसे यह जान कर बहुत दुःख हुआ कि समय ने कितनी सुन्दर और आश्चर्यमय वस्तुओं पर अपनी काली छाया डाल दी है। कम से कम वह तो उससे बचा हुआ था। गर्मियों के पश्चात् गर्मियाँ बीतती चली गईं, पीले फूल कितनी बार खिले और मुरझा गये, भयानक रातों में उसने कितने ही लज्जास्पद काम किये, परन्तु उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सका था। कोई भी सर्दी उसकी फूल जैसी शक्ल पर अपना कोई चिह्न नहीं छोड़ सकी। उसमें और दूसरी वस्तुओं में कितना अन्तर था! उनका क्या हुआ? उन सब पुरानी ऐतिहासिक वस्तुओं का क्या हुआ?

पूरे साल भर तक वह विभिन्न देशों से कपड़े में काम वाली चीजें तलाश करता रहा। जिस प्रकार गिर्जे से सम्बन्धित उसे सब वस्तुओं में दिलचस्पी थी, उसी प्रकार पादरियों की पोशाकों का भी न जाने क्यों उसे मर्ज लगा। उसने प्राचीन काल से लेकर आज तक के विभिन्न पादरियों की पोशाकों को एकत्रित किया। उन भेद भरे दफ्तरों में जहाँ वह यह सब सामान रखता था—उसमें कुछ ऐसा आकर्षण था जिससे उसकी कल्पना को पर लग जाते थे।

अपने मकान में ये सब वस्तुएँ एकत्रित करके वह अपने-आप को भूल जाता था। कभी-कभी उस पर ऐसा भयानक नशा छा जाता था जिसका भय सहन करना उसके लिये असम्भव हो जाता था। उसी भय से वह कुछ काल के लिये इन वस्तुओं के ध्यान में अपने को खोकर मुक्त हो जाता था। ऊपर वाले बन्द कमरे में—जहाँ उसने अपना बचपन बिताया था—उसने अपने ही हाथों से वह भयानक चित्र लटका रखा था जिसके परिवर्तन उसके पतन के प्रतीक बनते थे और जिस चित्र के ऊपर उसने लाल और पीले रंग का परदा लटका रखा था। कितने ही सप्ताहों तक वह उस कमरे के अन्दर न जाकर उस विकृत चित्र को भूल जाता

था। अपना मन हल्का रखता था और स्वर्गीय प्रसन्नता का अनुभव करता था। वह केवल अपने जीवित रहने में ही मग्न हो जाता था। तब अचानक एक रात को वह अपने मकान से बाहर निकल कर ब्लूगेट के पास भयानक स्थानों पर कितने ही दिन व्यतीत कर देता था, जब तक उसे वहाँ से निकाला नहीं जाता था। वापस लौटकर वह चित्र के सामने बैठ जाता था, कभी उसे देखकर ऊब जाता था और कभी-कभी अपने पापों से ही गर्वित होकर, प्रसन्नता से मुस्करा कर उस कुत्सित छाया पर हँसा करता था, जिसे उसके सारे बोझ उठाने पड़ते थे।

कुछ वर्षों के पश्चात् वह इंगलैंड से दूर रहने का विचार सहन नहीं कर सकता था। अतः हाविल में लार्ड हेनरी के साथ जिस मकान में रहता था, उसे छोड़ दिया। अलजियर में सफेद दीवारों वाला मकान भी, जहाँ उसने सर्दी के दिन बिताये थे, उसने छोड़ दिया। वह उस चित्र से अलग रहकर अपनी जिन्दगी से घृणा करने लगता था क्योंकि यह चित्र उसके जीवन का इतना आवश्यक अंग बन गया था। उसे भय था कि उसकी अनुपस्थिति में कोई उस कमरे में न आ जाये, यद्यपि दरवाजे पर उसने लोहे की सलाखें तक लगवा दी थीं।

उसे इस बात का दृढ़ विश्वास था कि इस चित्र से लोगों को वास्तविकता का पता नहीं चल सकेगा। इसमें कोई सन्देह भी नहीं कि चित्र की शक्ल में इतनी कुरूपता और भयानकता आ जाने पर भी वह उसकी शक्ल से बहुत-कुछ मिलता-जुलता था, परन्तु उससे लोगों को क्या पता चल सकता है? यदि कोई भी इस चित्र को देखकर उसके विषय में अफवाहें उड़ाये तो वह उन पर हँस देगा। उसने यह चित्र नहीं बनाया है। उसकी बला से, यदि चित्र की मुद्रा इतनी लज्जास्पद और पतित है। यदि वह उन्हें सच बात बता भी दे तो क्या लोग उसका विश्वास करेंगे?

फिर भी उसे भय लगा रहता था। कभी-कभी नौटिंगमशायर के बड़े से मकान में जहाँ वह अपनी ही श्रेणी के अपने दूसरे नवयुवक साथियों

के साथ मनोरंजन किया करता था, जहाँ अपनी जिंदगी के ठाठ-बाट और भोग-विलास से गाँव के सौंदर्य को दुगना कर देता था, से यकायक अपने मित्रों को वहीं छोड़कर वह शहर वापस लौट आता था और देखा करता था कि किसी ने दरवाजा खोलने का प्रयास तो नहीं किया और वह चित्र तो इस कमरे में पूर्णरूप से सुरक्षित है। यदि किसी ने इसे चुरा लिया तो क्या होगा ? उसके विचार से ही वह भय से कांप उठता। परन्तु उसे विश्वास था कि संसार उसके रहस्य को जान लेगा। शायद संसार उस पर सन्देह करने लगा था।

यद्यपि वह दूसरों का मनोरंजन करता था परन्तु उस पर अविश्वास करने वाले लोग भी कम नहीं थे। यद्यपि वेस्टऐंड क्लब में अपने परिवार और समाज में स्थान होने से वह उसका सदस्य बनने का पूर्ण रूप से अधिकारी था परन्तु यह कहा जाता है कि एक बार जब वह अपने मित्र के साथ सिगरेट पीने वाले कमरे में आया तब ड्यूक आफ़ बर्विक और एक सज्जन उठकर खड़े हो गये और कमरे से बाहर चले गये। उसकी २५वीं वर्षगांठ के पश्चात् उसके विषय में भाँति-भाँति की कहानियाँ प्रचलित हो गईं। लोगों में यह अफ़वाह फैली कि वाइट-चेपल के दूसरे भागों में वह विदेशी मल्लाहों के साथ बड़े अश्लील और बदनाम मकानों में देखा गया है और उसकी संगति चोरों और झूठे सिक्के बनाने वालों के साथ है जिससे वह उनका सारा व्यापार समझ गया है। अपनी इस प्रकार की असाधारण अनुपस्थिति से वह बदनाम हो गया और अब कभी वह सोसाइटी में वापस लौटता तो लोग परस्पर कानाफूसी करने लगते थे, उसकी ओर देखकर मुस्कराते थे या उसे देखकर वास्तविकता का पता लगाने का प्रयास करते थे, मानो उसके रहस्य का पता लगाने पर वे तुले हुए थे।

लोगों के इन अपमान भरे संकेतों की वह तनिक भी चिन्ता नहीं किया करता था और बहुत से लोगों की राय में उसका स्पष्ट व्यवहार, उसकी आकर्षक मुस्कान, उसका अनन्त यौवन जो उसकी जिन्दगी को

कभी छोड़ता हुआ नहीं जान पड़ता था—ये सब, लोगों की अफवाहों और आशंकाओं के उत्तर थे। यह भी देखा गया कि उसके परिचित लोग जो किसी दिन उसके अभिन्न मित्र थे, कुछ समय के पश्चात् डोरियन से अलग-अलग रहने लगे। वे स्त्रियाँ जो उसे प्यार करती थीं और जिसके कारण उन्होंने समाज के सारे नियमों का उल्लंघन किया था, डोरियन को उस कमरे में आते देख लज्जा या भय से पीली पड़ जाती थीं।

बहुत से लोगों की दृष्टि में इन अफवाहों के कारण डोरियन का विचित्र और भयानक आकर्षण और भी तीव्र हो गया। समाज, कम से कम सभ्य समाज तो धनी और सुन्दर लोगों के विरुद्ध कही बातों पर कभी विश्वास नहीं कर सकता। यह समाज अनुभव करता है कि नैतिकता से अधिक महत्व व्यवहारों और बोल-चाल के ढंग का है। जो व्यक्ति पार्टी में अच्छा स्वादिष्ट भोजन नहीं देता या शराब अच्छी नहीं होती तो यह कहना कि वह अपनी प्राइवेट जिन्दगी बड़ी पवित्रता से बिताता है—इससे उसका खोया हुआ सम्मान लौट नहीं आता। अच्छी सोसायटी के मुख्य सिद्धान्त वही होते हैं—या होने चाहियें—जो कला के होते हैं। इसके लिये आकृति का होना आवश्यक है।

यही डोरियन ग्रे के विचार थे। वह उन लोगों के उन खोखले मनोविज्ञान की हँसी उड़ाया करता था जिनकी राय में मनुष्य की 'अहंभावना' एक सीधी सादी, स्थायी, विश्वसनीय और आवश्यक भावना है, उसके लिये एक मनुष्य में अनगिनत जीवन और अनेक सनसनीदार भावनायें होती हैं, एक ही शरीर के अन्दर विभिन्न विचार और वासनायें होती हैं और उसके शरीर का मांस मृत व्यक्तियों के रोगों से भरा हुआ होता है। वह अपने गाँव वाले मकान की चित्रशाला में घूम-घूम कर उन चित्रों को देखकर बहुत प्रसन्न होता था जिनका रक्त उसकी नाड़ियों में बह रहा था। फिलिप हर्बर्ट का चित्र टंगा था, जिसका आसबर्न ने अपनी पुस्तक में इस प्रकार वर्णन किया था—"वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसके सुन्दर मुख के कारण कोर्ट सदा उसका आदर किया करता था परन्तु वह अधिक

दिनों तक जी नहीं सका।" क्या उस जवान हर्बर्ट की जिन्दगी ही तो वह नहीं बिता रहा था ? क्या कोई विषैला कीड़ा एक शरीर से दूसरे शरीर में तो नहीं फैल रहा ? क्या खोये हुए सौन्दर्य की भावना के वशीभूत होकर ही बासिल हालवर्ड के स्टूडियो में उसने एकाएक वह उन्माद भरी प्रार्थना नहीं की थी, जिसने उसकी जिन्दगी को इतना बदल डाला है ? उसके पास वड़े मूल्यवान वस्त्र पहने, कोट में हीरे जड़े हुए सर एथनी शीरंड का चित्र था। क्या उसके कर्म उन मृत लोगों के स्वप्न थे जिनको पूरा करने का साहस वे नहीं कर सके थे ? धुंधली कैन्वस पर लेडी एलिजाबेथ का चित्र था। वह उसकी ज़िन्दगी के विषय में और उसके प्रेमियों की विचित्र प्रचलित कहानियों को जानता था। क्या उसके स्वभाव की कोई झलक तो डोरियन में नहीं आगई ? जार्ज विलघबी की शक्ल चित्र में कितनी खराब थी। उसके वासनामय होंठ किस प्रकार मुस्करा रहे थे। अंगूठियों से भरे हुए उसके पतले-दुबले पीले हाथों पर कोमल लेस लटक रही थी।

जिस प्रकार साहित्य में पुराने लेखकों का प्रभाव दूसरे लेखकों पर रहता है उसी प्रकार अपने पुरखों का स्वभाव, उनकी आदतें और उनका प्रभाव बहुत कुछ उनकी आने वाली सन्तानों पर होता है। बहुत बार डोरियन को ऐसा प्रतीत होता था कि पिछला सारा इतिहास उसके जीवन की घटनाओं से भरा हुआ है—वे ऐसी घटनाएँ नहीं हैं जो उस पर बीती हों, परन्तु ऐसी घटनाएँ हैं जिनकी कल्पना वह किया करता था और जो उसके मस्तिष्क और वासनाओं से उपजती थीं। वह ऐसा अनुभव करता था कि विश्व के रंगमंच से जितनी मूर्तियाँ गुजरी हैं—जिन्होंने पाप को इतना आश्चर्यमय और बुराई को इतना सुन्दर रूप दे दिया था—वह उन सब को जानता आया है। उसे ऐसा प्रतीत होता था कि किसी रहस्यमय ढंग में उसकी ज़िन्दगी भी उस जैसी ही है।

उस आश्चर्यजनक उपन्यास का नायक—जिसने उसकी जिन्दगी को

इतना प्रभावित किया था—वह भी इस कल्पना को जानता था। पुस्तक के सातवें परिच्छेद में वह नायक यही बतलाता है।

डोरियन इस अजीब-से परिच्छेद को बार-बार पढ़ा करता था। इससे अगले दो परिच्छेदों में भी उन लोगों का वर्णन है जिनकी सुन्दर आकृतियों को उनके पाप, उनका रक्त और थकावट उन्हें बड़ा विकृत और पागल बना देती है। इस प्रकार के कितने ही उदाहरण यहाँ दिये गए थे।

इन सब में एक बड़ा भयानक आकर्षण था। वह उनको रात्रि को देखा करता था और वे दिन में उसकी कल्पना को तंग किया करते थे। डोरियन ग्रे पर इस पुस्तक का बड़ा विषैला प्रभाव पड़ा था। कभी-कभी उसके जीवन में ऐसे क्षण आते थे जब वह पाप और बुराई की मुद्रा को उस दृष्टि से देखता था जिसमें उसके सौन्दर्य की कल्पना होती थी।

१२

उस दिन नौ नवम्बर की सन्ध्या थी और डोरियन की बत्तीसवीं वर्षगांठ थीं। यह शाम वह अपनी जिन्दगी में कभी भूल नहीं सका।

वह रात्रि के ग्यारह बजे के लगभग लार्ड हेनरी के मकान से खाना खाकर वापस लौट रहा था। रात ठंडी और कोहरे से भरी हुई थी और वह मोटे फरों में लिपटा हुआ था। ग्रासवेनर स्केयर और साउथ एडले स्ट्रीट के चौराहे पर एक व्यक्ति बहुत तेजी से कदम बढ़ाता हुआ चला जा रहा था, उसके कोट के कालर कानों तक ऊपर उठे हुए थे। उसके हाथ में एक बेग था। डोरियन ने उसे पहचान लिया, वह बासिल हालवर्ड था। न जाने क्यों एक प्रकार का भय उसके मन में समा गया।

उसने ऐसा प्रदर्शन किया मानो उसने बासिल को देखा नहीं और तेजी से अपने मकान की ओर बढ़ गया।

परन्तु हालवर्ड ने उसे देख लिया था। डोरियन ने पहले उसे फुटपाथ पर रुकते हुए देखा और फिर तेज़ी से अपनी ओर आते देखा। कुछ ही क्षणों में उसका हाथ डोरियन की बाँह पकड़े था।

"डोरियन, मेरी बड़ी अच्छी किस्मत थी। मैं नौ बजे से तुम्हारे पुस्तकालय में प्रतीक्षा कर रहा था। अन्त में मुझे तुम्हारे थके हुए नौकर पर दया आई और मकान से बाहर आकर मैंने उससे सोने के लिये चले जाने को कहा। मैं आज रात को पैरिस जा रहा हूँ और जाने से पूर्व मैं तुमसे मिलना चाहता था। तुम्हें सड़क पर जाते देख तुम्हारे फर वाले कोट को देखकर मुझे तुम्हारे जाने का आभास हुआ था, परन्तु मेरा विचार दृढ़ नहीं था। क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना था?"

"इस कोहरे में बासिल? मैं तो ग्रासवेनर स्केयर तक को नहीं पहचान सकता। मेरा विचार है कि मेरा मकान यहीं कहीं होगा, परन्तु मुझे पूरा भरोसा नहीं है। मुझे शोक है कि तुम बाहर जा रहे हो, मैं तुमसे कितने ही दिनों से नहीं मिला। लेकिन शायद तुम शीघ्र ही वापस लौट आओगे?"

"नहीं, मैं इंगलैंड से छः महीनों के लिये जा रहा हूँ। पैरिस में एक स्टूडियो लेने का मेरा विचार है। मेरे मस्तिष्क में एक चित्र का विषय चक्कर लगा रहा है, जब तक मैं उसका चित्र नहीं बना लूंगा तब तक मैं स्टूडियो में ही बन्द रहूँगा। परन्तु मैं तो अपने विषय में बातें करने नहीं आया हूँ। लो, तुम्हारा मकान आ गया। मुझे कुछ समय के लिये अन्दर आने दो। मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

"मुझे प्रसन्नता ही होगी, परन्तु तुम्हारी गाड़ी तो नहीं छूट जाएगी?" सीढ़ियाँ चढ़ते हुए डोरियन ने सुस्ताकर कहा और चाबी से कमरे का दरवाजा खोला।

लैंप का प्रकाश कोहरे के साथ संग्राम करने में मग्न था। हालवर्ड

ने अपनी घड़ी में समय देखा—"मेरे पास बहुत समय है ?" उसने उत्तर दिया—"गाड़ी सवा बारह जाती है और अभी ग्यारह ही बजे हैं। मैं तुमसे मिलने के लिये क्लब ही जा रहा था। अब अचानक सड़क पर तुमसे भेंट हो गई। मुझे अपने सामान की चिन्ता नहीं है क्योंकि वह मैं पहले ही भेज चुका हूँ। मेरे पास जो कुछ है वह इस बेग में है, मैं बीस मिनट में विक्टोरिया से स्टेशन पहुँच सकता हूँ।"

डोरियन ने उसकी ओर देखा और मुस्करा दिया—"अमीर चित्रकार कैसी शान के साथ यात्रा करता है। हाथ में बेग और ओवरकोट ! अन्दर चले आओ, नहीं तो कोहरा मकान में आ जायेगा। लेकिन देखो, किसी गम्भीर विषय पर चर्चा न करना। आजकल कुछ भी गम्भीर नहीं है, कम से कम किसी विषय को भी गम्भीर नहीं होना चाहिये।"

कमरे में घुसते ही हालवर्ड ने अपनी गर्दन हिलाई और डोरियन के पीछे-पीछे पुस्तकालय में चल दिया। बड़ी-सी चिमनी में लकड़ियाँ जल रही थीं। छोटी-सी मेज पर सोडा की बोतलें और शीशे के गिलास रखे हुए थे। कमरे का लैम्प भी जल रहा था।

"तुमने देखा कि तुम्हारे नौकर ने मुझे सब प्रकार का आराम देने की कोशिश की थी। तुम्हारी सबसे अच्छी सुनहरी सिगरेटों से लेकर मैंने जो कुछ मांगा, वह सब उसने दिया। तुम्हारा नौकर खातिरदारी में बहुत आगे बढ़ा हुआ है। तुम्हारे उस पुराने फ्रेंच नौकर से मुझे यह कहीं अधिक अच्छा लगता है। उसका क्या हुआ ?"

डोरियन ने अपने कंधे हिलाये। उसने लेडी रेडले की नौकरानी से विवाह कर लिया था और अब दोनों पैरिस में अंग्रेजी फैशन की पोशाक बनाते हैं। यहाँ के कुछ फैशन वहाँ बहुत प्रचलित हो गये हैं। मुझे तो फ्रेंच लोगों की मूर्खता ही दिखाई देती है। लेकिन तुम्हें मालूम है कि वह खराब नौकर नहीं था। यद्यपि उसे मैंने अभी पसन्द नहीं किया परंतु उसके विषय में मुझे कोई शिकायत नहीं थी। कभी-कभी मनुष्य के दिमाग में ऐसे विचार आते हैं जिनके सिर-पैर नहीं होते। वह मेरा अनन्य

भक्त था और जाते समय बहुत उदास दिखाई देता था। आओ, ब्रांडी और सोडा पियो।"

"धन्यवाद, मैं कुछ नहीं पीऊँगा।" चित्रकार ने कहा और अपनी टोपी और कोट उतार कर कोने में रखे हुए अपने बैग पर उछाल दिया—"अब, अब मेरे डोरियन, मैं कुछ गम्भीर बातें करना चाहता हूँ। इस प्रकार क्रोधित मुद्रा न बनाओ। मेरे लिए बात करना कठिन हो जायेगा।"

"किस विषय पर बातें करोगे बासिल ?" डोरियन ने अनमने भाव से चिल्लाकर कहा—"मेरे विचार में यह चर्चा मेरे विषय में नहीं है। मैं आज रात को बहुत थका हुआ हूँ। मैं आज अपने में परिवर्तन कर लेना चाहता हूँ।"

"यह तुम्हारे ही विषय में है।" हालवर्ड ने बड़ी गम्भीरता से सोचते हुए उत्तर दिया—"और मुझे यह सब कहना ही पड़ेगा। मैं केवल तुम्हारा आधा घण्टा लूंगा।"

डोरियन ने एक लम्बी साँस ली और सिगरेट सुलगाई—"आधा घण्टा।" उसने धीमे स्वर में कहा।

"मुझे तुमसे अधिक नहीं पूछना है डोरियन ! मैं तुम्हारे ही कारण यह सब कह रहा हूँ। मेरे विचार में तुम्हें वह सब जानना चाहिए जो लन्दन में तुम्हारे विरुद्ध कहा जा रहा है।"

"मैं वह सब जानना नहीं चाहता। मैं दूसरे लोगों के विषय में अफवाहें सुनना पसन्द करता हूँ परन्तु अपनी चर्चा सुनना मुझे अच्छा नहीं लगता। उनमें नवीनता का आकर्षण नहीं होता।"

"डोरियन, तुम्हें तो सुनने में आनन्द मिलना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति अपने गुणों के विषय में सुनना पसन्द करता है। मेरे विचार में तुम यह नहीं चाहते कि लोग तुम्हारे विषय में गन्दी और अश्लील बातें कहें। निःसन्देह तुम्हारा अपना स्थान है, और तुम्हारा अपना धन सब कुछ है। परन्तु पदवी और धन ही तो सब कुछ नहीं होता। यह याद

रखो कि मुझे इन अफवाहों पर तनिक भी विश्वास नहीं है। कम से कम जब तुम्हें देखता हूँ तो विश्वास नहीं होता। पाप एक ऐसी चीज़ है जो लोगों के चेहरे पर स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह छिपाया नहीं जा सकता। लोग ऐसे रहस्यमय पापों की बातें करते हैं जिन्हें कोई नहीं जानता। परन्तु यह सरासर ग़लत है। यदि किसी पतित व्यक्ति में कोई दोष होता है तो वह उसके मुख की रेखाओं में, उसकी आँखों के गड्ढों में और उसके हाथों तक में दिखाई देने लगता है। एक व्यक्ति—जिसका नाम मैं नहीं बतलाऊँगा, परन्तु जिसे तुम जानते हो—वह मेरे पास अपना चित्र बनवाने आया। मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था और उस समय तक उसके विषय में कुछ भी नहीं सुना हुआ था, यद्यपि अब तक बहुत कुछ सुन चुका हूँ। उसने चित्र के लिए एक बहुत बड़ी रकम देने का वायदा किया। मैंने इन्कार कर दिया। उसकी उँगलियों की बनावट कुछ इस प्रकार की थी जिससे मैं घृणा करने लगा था। मुझे अब पता चला कि मैंने उसके विषय में जो धारणा बनाई थी वह बिल्कुल सच्ची थी। उसकी जिन्दगी बड़ी भयानक और गिरी हुई है। परन्तु तुम डोरियन, तुम्हारा पवित्र चमकता हुआ नादान चेहरा, और तुम्हारा कभी न बदलने वाला यौवन—मैं तुम्हारे विरुद्ध किसी बात पर भी विश्वास नहीं कर सकता। मैं तुम्हें आजकल बहुत कम देखता हूँ और तुम कभी मेरे स्टूडियो नहीं आते। जब मैं तुम से दूर होता हूँ तब लोगों के मुख से तुम्हारे विषय में इतनी भयानक बातें सुनकर मैं नहीं जानता कि क्या कहूँ। इसका क्या कारण है डोरियन, कि तुम्हारे क्लब में घुसते ही ड्यूक आफ बर्विक जैसा व्यक्ति उठकर चला जाता है? लन्दन के इतने ढेर से लोग तुम्हारे घर क्यों नहीं आते और न ही तुम्हें कभी निमन्त्रित करते हैं? तुम किसी समय लार्ड स्टेवले के मित्र हुआ करते थे। मैं पिछले सप्ताह किसी के यहाँ भोजन के समय उससे मिला। डडले की प्रदर्शिनी में तुमने जो अपना संगुड भेजा है, उसकी चर्चा में तुम्हारा नाम आया। स्टेवले ने अपना मुंह सिकोड़ कर

कहा कि तुम में कलात्मक गुण कितने ही हों, परन्तु तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जिसका परिचय किसी पवित्र लड़की से नहीं होने देना चाहिए। मैंने उसे चेतावनी दी कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ और उससे अपना मतलब स्पष्ट करने को कहा। उसने मुझे बतलाया, उसने सबके सामने सारी बातें विस्तार से बतलाईं। वह सब कितना डरावना था। तुम्हारी मित्रता युवकों के लिए घातक क्यों सिद्ध होती है? वह बेचारा नौजवान गार्ड जिसने आत्महत्या कर ली। तुम उसके अभिन्न मित्र थे। फिर सर हेनरी ऐशटन—जिसको इंगलैण्ड छोड़ना पड़ा, क्योंकि उसका नाम कितना बदनाम हो चुका था। तुम और वह कभी एक-दूसरे से अलग नहीं होते थे। सिंगलटन का क्या हुआ? उसका कितना भयानक अन्त हुआ। लार्ड कैंट का लड़का और उसका भविष्य—दोनों समाप्त हो गये। कल मैं सेंट जेम्स स्ट्रीट पर उसके पिता से मिला था। वह लज्जा और दुःख से आधा भी नहीं रहा। उस नौजवान ड्यूक आफ पर्थ की घटना! अब उसकी जिन्दगी कैसी बन गई है, कोई भी भला आदमी उसके साथ नहीं रह सकता।"

"बासिल, चुप हो जाओ। तुम ऐसी बातों की चर्चा कर रहे हो जिनके विषय में तुम कुछ भी नहीं जानते।" डोरियन ने अपना होंठ काटते हुए कहा। उसके स्वर में तीव्र घृणा थी, "तुम पूछते हो कि मेरे घुसने पर बर्विक कमरा छोड़कर बाहर क्यों चला जाता है? इसका यह कारण है कि उसकी जिन्दगी के विषय में मैं सब कुछ जानता हूँ, इसका कारण यह नहीं कि वह मेरे बारे में कुछ जानता है। उसकी नाड़ियों में जिस रक्त का प्रवाह है उस के साथ वह भला किस प्रकार पवित्र रह सकता है? तुम हेनरी ऐशटन और पर्थ के विषय में मुझसे पूछते हो! क्या मैंने एक को पाप करना और दूसरे को इतना गिर जाना सिखलाया है? यदि कैंट का पुत्र एक पतित स्त्री से विवाह कर लेता है तो उसका दोष मुझ पर क्यों? यदि बिल पर सिंगलटन अपने मित्र के हस्ताक्षर कर देता है तो क्या मैं उससे ऐसा करने को कहता हूँ? मैं जानता हूँ

कि इंगलैंड में लोग किस प्रकार की बातें करते हैं। मध्यवर्ग के लोग खाने की मेजों पर अपने नैतिक दर्जों के मापदण्ड के सहारे अपने चरित्र का बखान करते हैं और अपने से अधिक धनी लोगों के चरित्र के विषय में कानाफूसी करते हैं और ऐसा प्रदर्शन करते हैं कि वे उन लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक चरित्रवान् हैं। इस देश में जब किसी व्यक्ति के पास अधिक सम्मान और धन हो जाता है और उसकी बौद्धिक उन्नति हो जाती है, तब साधारण लोग उसके विरुद्ध अफवाहें उड़ाने लगते हैं। और ये लोग जो अपने को बड़ा चरित्रवान् और निष्ठावान् बतलाते हैं, किस प्रकार की जिन्दगी बिताते हैं ?

"मेरे बासिल तुम भूल जाते हो, कि तुम एक ऐसे देश में हो जहाँ के लोग धोखेबाज़ हैं और झूठा प्रदर्शन करते हैं।"

"डोरियन !" हालवर्ड ने चिल्लाकर कहा—"प्रश्न इस समय यह नहीं है। मैं जानता हूँ कि इंगलैण्ड काफी गिरा हुआ है और यहाँ के समाज के सिद्धान्त सब ग़लत हैं। इसी कारण से मैं तुम्हें ऊँचा उठा हुआ देखना चाहता हूँ। तुम्हारा व्यवहार ठीक नहीं रहा है। एक व्यक्ति के विषय में उसके मित्रों की क्या सम्मति है, उसके बल पर उसको जाँचने का अधिकार मनुष्य को है। तुम्हारा आदर-सम्मान, तुम्हारे गुण, तुम्हारी पवित्रता सब विलीन हुई दिखाई देती है। तुमने अपनी इन्द्रियों को भोग-विलास में लगा रखा है। तुमने उनको बहुत नीचे गिरा दिया है और इसका उत्तरदायित्व तुम पर है। हाँ, तुम पर—और फिर भी तुम मुस्करा सकते हो जैसा कि तुम अब मुस्करा रहे हो। यहीं सब कुछ समाप्त नहीं हो जाता, तुम इस सीमा को भी पार कर गये हो। मैं जानता हूँ कि तुम और हेनरी अभिन्न मित्र हो। उसी कारण से कम से कम तुम्हें उसकी बहन के नाम को तो बदनाम नहीं करना था।"

"बासिल, बोलने से पहले सोच लो, तुम सीमा को पार कर रहे हो।"

"मुझे कहना है और तुम्हें सुनना ही पड़ेगा, तुम सुनोगे। जब लेडी ग्वंडलन से तुम्हारा परिचय हुआ था तब उसके विषय में कोई भी एक शब्द कहने का साहस नहीं कर सकता था। और आज लन्दन में एक भी कोई ऐसी भले घर की स्त्री है जो उसके साथ बाग में घूमने का साहस कर सके? उसके बच्चों तक को उसके साथ रहने की आज्ञा नहीं है। इसके अतिरिक्त और भी तुम्हारी कितनी ही कहानियाँ प्रचलित हैं। लोगों ने बदनाम मकानों से प्रातःकाल तुम्हें निकलते देखा है, लन्दन के पतित होटलों में नाम बदल-बदल कर तुम्हारे वहाँ रात व्यतीत करने की कहानियाँ सुनाई देती हैं। क्या वे सच हैं? क्या वे सच हो सकती हैं? जब मैंने पहले-पहल यह सब सुना था तब मैं हँस दिया था। मैं अब उन्हें सुनता हूँ और भय से काँप उठता हूँ। तुम्हारे उस गाँव वाले मकान का क्या किस्सा है और वहाँ पर किस प्रकार की जिन्दगी बिताई जाती है। डोरियन, तुम नहीं जानते कि तुम से सम्बन्धित कैसी-कैसी कहानियाँ सुनने को मिलती हैं। मैं यह नहीं कहूँगा कि मैं तुम्हें कोई उपदेश देना नहीं चाहता। मैं तुम्हें उपदेश देना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम ऐसी जिन्दगी बिताओ जिससे संसार तुम्हारा सम्मान करे। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे पवित्र नाम पर कोई दाग न लगे और तुम्हारी कृतियों पर कलंक न लगे। मैं चाहता हूँ कि तुम जिन भयानक लोगों के सम्पर्क में रहते हो, उनका साथ छोड़ दो। अपने कन्धे इस प्रकार न हिलाओ। ऐसे उदासीन भी न बने रहो। तुम्हारा लोगों पर बहुत बड़ा प्रभाव है, उसका उपयोग करो, लोगों को बुरी शिक्षा क्यों देते हो? लोग कहते हैं कि जिस किसी के साथ तुम्हारी घनिष्ठता हो जाती है तुम उसको बिगाड़ देते हो, उसके लिए तुम्हारी बदनामी होना स्वाभाविक ही है। मैं नहीं जानता कि इसमें सत्य कितनी मात्रा में है। मैं जान भी कैसे सकता हूँ? परन्तु यह सब तुम्हारे विषय में कहा जाता है। मुझे ऐसी बातें सुनने में आती हैं जिन पर अविश्वास करना असम्भव है। लार्ड ग्लौसेस्टर आक्सफोर्ड

में मेरे एक अभिन्न मित्र थे। उसने अपनी पत्नी का एक पत्र मुझे दिखलाया जो उसने मैंटोन के मकान में अकेले मरते समय लिखा था। तुम्हारे नाम के साथ उसने जो अपराध स्वीकार किया वह निःसन्देह बहुत ही भयानक था। मैंने उससे कहा कि यह व्यर्थ की घटना है, और मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ तुम इस प्रकार का कोई भी लज्जास्पद काम नहीं कर सकते। तुम्हें जानता हूँ ? मुझे आश्चर्य होता है कि मैं तुम्हें जानता हूँ ? इसका उत्तर देने से पूर्व मुझे तुम्हारी आत्मा देखनी होगी।"

"मेरी आत्मा देखनी होगी !" डोरियन ग्रे ने सोफा से उठते हुए कहा। भय से उसका मुख श्वेत होगया।

"हाँ।" हालवर्ड ने उदास होकर कहा। उसके स्वर में असीम दुःख और वेदना भरी पड़ी थी—"तुम्हारी आत्मा देखूंगा। परन्तु वह काम केवल ईश्वर ही कर सकता है।"

उस युवक के होठों से कृत्रिम हँसी बाहर निकली—"आज रात को तुम स्वयं ही उसे देख लोगे।" उसने मेज से लैंप उठाकर कहा—"चलो, यह तुम्हारे हाथों का ही किया हुआ काम है। तुम इसे क्यों न देखो ? और फिर यदि तुम चाहो तो सारे संसार को बतला सकते हो। कोई तुम पर विश्वास नहीं करेगा। यदि उन्होंने तुम्हारी बात का विश्वास किया भी तब वे मुझे और भी अधिक चाहने लगेंगे। मैं आज के युग को तुम्हारी अपेक्षा अधिक अच्छी तरह जानता हूँ, यद्यपि तुम व्यर्थ की बातें करके दूसरों को उबा देते हो। आओ, मैं तुम्हें बतलाता हूँ। तुमने चरित्रहीनता के विषय में काफी कहा है और अब तुम उसको अपने सामने देखोगे।"

उसके प्रत्येक शब्द में अभिमान की बू थी। उसने एक बालक की भाँति दृढ़ता से अपना पाँव पृथ्वी पर पटका। यह सोचकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई कि अब एक दूसरा व्यक्ति भी उसके रहस्य में भाग लेगा। जिस व्यक्ति ने उसका चित्र बनाया था, जिसके कारण उसका इतना

पतन हुआ है, वह चित्रकार भी जिन्दगी भर तक इस भयानक स्मृति को भूल नहीं सकेगा, जिसका कारण वह स्वयं बना है।

"हाँ !" उसने अपनी बात पूरी करते हुए कहा। वह बासिल के और भी निकट आगया था और कड़ी दृष्टि से निरंतर उसकी ओर देख रहा था। "मैं तुम्हें अपनी आत्मा दिखाऊँगा। तुम्हारे विचार में जिसको केवल परमात्मा ही देख सकता है, मैं तुम्हें वह चीज़ दिखाऊँगा।"

हालवर्ड चौंककर पीछे हट गया। "डोरियन, तुम परमात्मा की शक्ति को चुनौती दे रहे हो।" उसने चिल्लाकर कहा—"तुम्हें इस प्रकार की बातें नहीं करनी चाहियें। ये विचार बहुत भयानक हैं और इनका कोई मतलब नहीं निकलता।"

"क्या तुम्हारा ऐसा विचार है ?" वह पुनः हँसा।

"मैं ऐसा ही जानता हूँ। जो कुछ मैंने आज रात को तुमसे कहा है, वह तुम्हारे भले के लिये ही कहा है। तुम जानते हो कि मैं तुम्हारा कितना घनिष्ठ मित्र हूँ।"

"मुझे मत छुओ, जो कुछ तुम्हें कहना हो उसे कह डालो।"

चित्रकार के चेहरे पर वेदना की एक गहरी रेखा खिंच गई। वह क्षण भर के लिये रुका और दया और सहानुभूति की भावना उसके मन में जागृत हुई। आखिर डोरियन ग्रे की जिन्दगी के बीच में पड़ने का उसे क्या अधिकार है ? डोरियन के विषय में लोगों में जो-जो बातें फैली हैं यदि उनका दसवाँ भाग भी सत्य हुआ तो उसके परिणामस्वरूप उस पर क्या बीती होगी ? फिर भी वह सीधा खड़ा हो गया और आग की चिमनी के पास चला गया और जलती हुई लकड़ियों को देखने लगा, मानो जलते समय उनके हृदय की धड़कन बढ़ गई थी।

"बासिल, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ" डोरियन ने तनिक कड़े, स्पष्ट स्वर में कहा। वह पीछे मुड़कर खड़ा होगया। "मुझे केवल इतना ही कहना है।" उसने चिल्लाकर कहा—"तुम्हारे विरुद्ध लोगों ने जो-जो अफवाहें उड़ाई हैं, उसका उत्तर तुम्हें मुझे देना ही होगा।

यदि तुम यह कहो कि वे सब आरम्भ से लेकर अन्त तक झूठ हैं तो मैं तुम्हारा विश्वास कर लूंगा। अपने को निर्दोष कह दो डोरियन, इन अपराधों को झूठ साबित करदो ! क्या तुम नहीं देखते कि मुझ पर क्या बीत रही है ? हे परमात्मा ! मुझसे यह मत कहो कि तुम खराब हो, पतित हो, लज्जास्पद हो।"

डोरियन ग्रे मुस्कराया। उसके होठों पर घृणा की छाप थी। "ऊपर आओ बासिल !" उसने शान्त स्वर में कहा—"मैं प्रत्येक दिवस की अपनी एक डायरी रखता हूँ और जिस कमरे में उसे लिखता हूँ वह कभी उससे बाहर नहीं जाती। यदि तुम मेरे साथ आओ, तो मैं तुम्हें दिखा सकता हूँ।"

"डोरियन, यदि तुम चाहते हो तो मैं तुम्हारे साथ अवश्य आऊँगा। मेरी गाड़ी तो छूट ही गई है, मुझे उसकी कोई चिन्ता नहीं। मैं कल जा सकता हूँ। परन्तु आज रात को मुझसे कुछ पढ़ने के लिये मत कहना।"

"वह तुमको ऊपर ही दी जा सकती है। मैं उसे यहाँ नहीं ला सकता। उसे पढ़ने में अधिक समय नहीं लगेगा।"

१३

कमरे से बाहर निकलकर वह सीढ़ियाँ चढ़ने लगा और बासिल हालवर्ड चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल रहा था। जिस प्रकार रात्रि में लोग चुपचाप चलते हैं उसी प्रकार वे भी धीरे-धीरे कदम रख रहे थे। लैंप के प्रकाश की बड़ी विकृत परछाइयाँ दीवार और सीढ़ियों पर पड़ रही थीं। हवा के एक तेज़ झोंके से खिड़कियाँ खड़खड़ा उठीं।

जब वे सबसे ऊपर की मंजिल पर पहुँच गये तब डोरियन ने लैम्प

नीचे फर्श पर रख दिया और चाबी से ताला खोला—"तुम अब भी उस रहस्य को जानना चाहते हो बासिल ?" उसने धीमे स्वर में पूछा।

"हाँ !"

"मैं प्रसन्न हुआ।" उसने मुस्कराकर उत्तर दिया। तब तनिक कड़े स्वर में उसने कहा—"दुनिया में एक तुम ही ऐसे आदमी हो जिसको मेरे विषय में सब कुछ जानने का अधिकार है। जितना तुम सोचते हो, उससे कहीं अधिक मेरा तुम्हारी जिन्दगी के साथ सम्बन्ध है।" लैंप उठाकर उसने दरवाजा खोला और अन्दर चला गया। वायु का एक ठंडा झोंका उनके शरीरों को चीरता हुआ आगे बढ़ गया और क्षण भर के लिए लैंप की रोशनी पीली पड़ गई, वह काँप उठा—"अपने पीछे का दरवाजा बन्द कर दो।" लैंप को मेज पर रखते हुए उसने धीमे स्वर में कहा।

हालवर्ड ने आश्चर्य से अपने चारों ओर देखा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो वर्षों से उस कमरे में कोई नहीं रह रहा था। पुरानी चित्र-कारी का धुंधला-सा रेशमी कपड़ा, एक खाली बुक केस और चित्र वाले परदों के अतिरिक्त उस कमरे में एक मेज और कुर्सी भी थे। जब डोरि-यन ग्रे एक आधी जली हुई मोमबत्ती को जला रहा था, उसके प्रकाश में हालवर्ड ने देखा कि कमरा धूल से भरा हुआ था और कालीन में बड़े-बड़े छेद हुए थे। एक चूहा उसे दौड़ता हुआ दिखाई दिया। उसे एक प्रकार की दुर्गन्धि कमरे से आती हुई दिखाई दी।

"तो बासिल, तुम्हारा विचार है कि केवल परमात्मा ही आत्मा को देख सकते हैं ? उस परदे को वहाँ से हटाओ और तुम्हें मेरी आत्मा दिखाई देगी।"

उसके स्वर में नीरसता और निर्दयता भरी पड़ी थी। "तुम पागल हो गये हो डोरियन या कोई अभिनय कर रहे हो ?" हालवर्ड तनिक क्रोधित होकर बुड़बुड़ाया।

"यदि तुम इस परदे को नहीं हटाते तो मैं ही यह काम करता हूँ।"

डोरियन ने कहा। उसने परदे को उतार कर पृथ्वी पर फेंक दिया।

धुंधले प्रकाश में कैन्वस पर बने हुए विकृत चेहरे को उपहास की हँसी हँसते देखकर चित्रकार के गले से बहुत भययुक्त चीख निकली। उस चेहरे की मुद्रा कुछ इस प्रकार की थी जिससे निराश होने के साथ-साथ वह एकदम ऊब गया था। हे भगवान्! यह डोरियन ग्रे का ही तो चित्र है जिसे वह सामने देख रहा है! चित्र की, इतनी भयानक और विकृत मुद्रा भी उसके वास्तविक सौन्दर्य को नष्ट नहीं कर सकती थी। अब भी उसके बालों में थोड़ा सुनहरापन था और उसके वासनापूर्ण मुख पर लालिमा की छाया थी। डरावने नेत्रों में अब भी नीलेपन का थोड़ा-सा आकर्षण शेष रह गया था, नासिका और गले की रेखायें अब भी दिखाई देती थीं। हाँ, यह डोरियन का ही तो चित्र था। परन्तु यह बनाया किसने? उसे अपनी तूलिका के ही स्पर्श चित्र पर जान पड़े और उसका फ्रेम भी उसी के नमूने का था। यह विचार बहुत भयानक था और उसका हृदय भय से भर गया। उसने जलती हुई बत्ती को उठाया और चित्र के पास तक ले गया। बाईं ओर बड़े-बड़े अक्षरों में लाल रंग में उसका ही नाम लिखा हुआ था।

उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसी के गाने की नकल की गई हो, या किसी अश्लील गीत की हँसी उड़ाई जा रही हो। उसने इस प्रकार का चित्र कभी नहीं बनाया। फिर भी यह चित्र उसे अपने ही हाथ का जान पड़ा। वह इस बात को जानता था। उसने अनुभव किया कि उसका रक्त क्षण भर में आग से बरफ में परिवर्तित हो गया था। उसका अपना बनाया हुआ चित्र! इसका क्या मतलब है? यह बदल क्यों गया? वह घूम गया और रोगी की भाँति डोरियन ग्रे को देखने लगा। उसके मुख की मुद्रा बदल गई और उसे अपनी सूखी जिह्वा तालु से चिपकी जान पड़ी। उसने अपना हाथ माथे पर फेरा, वह पसीने से भीगा हुआ था।

डोरियन दीवार का सहारा लिये बड़ी विचित्र दृष्टि से देख रहा था, जिस प्रकार किसी बड़े अभिनेता को अभिनय करते देख लोग नाटक

में मग्न हो जाते हैं। उसमें न तो वास्तविक सुख था और न ही सच्चा दुःख। दर्शक की उत्कण्ठा और उत्सुकता उसमें थी और शायद उसकी आँखों में विजय की झलक थी। उसने अपनी जेब में से फूल निकाल लिया था और उसे सूँघ रहा था या सूँघने का प्रदर्शन कर रहा था।

"इसका क्या मतलब है ?" आखिर हालवर्ड ने चिल्लाकर पूछा। उसको अपना स्वर ही कड़ा और अजीब-सा लगा।

"कितने ही वर्षों पूर्व जब मैं एक लड़का था।" डोरियन ने फूल को हाथ से मसलते हुए कहा—"उस समय तुम मुझसे मिले थे। तुमने मेरी भरपूर प्रशंसा की थी और अपने सौन्दर्य पर अभिमान करना सिखलाया था। एक दिन तुमने अपने एक मित्र से परिचय कराया, जिसने मुझे जवानी की रंगीनियाँ बतलाईं, और तुमने मेरा चित्र समाप्त करके मुझे सौन्दर्य का महत्व बतलाया। क्षणिक आवेश में—अब भी मैं कह नहीं सकता कि मैंने अच्छा किया या बुरा—मैंने एक वरदान माँगा—तुम इसे प्रार्थना ही कहोगे—"

"मुझे याद है ! ओह, मुझे सब कुछ बहुत अच्छी तरह याद है ! नहीं ! वह बात असम्भव है, कमरे में सर्दी बहुत है और यह सर्दी कैन्वस के अन्दर घुस गई है। जिन रंगों का उपयोग मैंने किया था शायद उनमें कोई खराबी थी। मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारे विचार में सच्चाई असम्भव है।"

"ओह, क्या असम्भव है ?" डोरियन ने खिड़की के पास जाकर कहा और खिड़की के ठंडे और धुंध से भरे शीशे पर अपना माथा टिका दिया।

"तुम तो कहते थे कि तुमने वह चित्र नष्ट कर दिया था।"

"मैं ग़लत कहता था, चित्र ने मुझको समाप्त कर दिया है।"

"मैं विश्वास नहीं करता कि यह मेरा चित्र है।"

"क्या तुम अपना आइडियल इस चित्र में नहीं देखते ?" डोरियन ने उपहास भरे स्वर में कहा।

"मेरा आइडियल, जो तुम कह रहे हो···?"

"नहीं, जो तुम कहते हो।"

"इसमें कोई बुराई नहीं है, कोई लज्जास्पद बात नहीं है। तुम मेरे लिये एक ऐसे आइडियल थे जैसा मैं कभी भविष्य में नहीं देख सकूँगा। यह तो एक पापी की शक्ल है।"

"यह मेरी आत्मा की शक्ल है।"

"हे भगवान्, मैं किस चीज की पूजा किया करता था! इसकी आँखें तो दैत्य के समान हैं।"

"बासिल, प्रत्येक व्यक्ति के पास स्वर्ग और नरक होता है।" डोरियन ने बड़ी निराशा के स्वर में कहा।

हालवर्ड पुनः चित्र की ओर मुड़ा और उसे बड़े ध्यान से देखा। "हे भगवान्, यदि यह सत्य है।" उसने कहा—"तुमने अपनी जिन्दगी के साथ यही कुकर्म किये हैं, तब तो जो लोग तुम्हारे विषय में बातें किया करते हैं, तुम उससे कहीं आगे बढ़े हुए हो।"

वह रोशनी को ऊपर कैन्वस तक ले गया और चित्र का निरीक्षण किया। चित्र की पृष्ठभूमि बिल्कुल वैसी ही थी जैसी उसने बनाई थी, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। चित्र के अन्दर से ही यह भयानकता उभरी थी। उसके अन्दर की जिन्दगी जिस पथ पर वही थी उसी के पापों का परिणाम चित्र को नष्ट कर रहा था। कब्र में पानी भर जाने से लाश को तैरते हुए देखकर भी उतना भय नहीं लगता था जितना उस समय लग रहा था।

उसका हाथ काँपने लगा और मोमबत्ती उसके हाथ से छूटकर नीचे फर्श पर गिर पड़ी और उसकी लौ धीमी पड़ गई। उसने अपने पाँव से उसको बुझा दिया। तब वह उस पुरानी कुर्सी पर बड़े वेग से जाकर बैठ गया और अपना मुँह अपने हाथों में छिपा लिया।

"हे भगवान्, डोरियन, तुमको कैसी शिक्षा मिली है, कितनी भयानक शिक्षा!" उसे अपने वाक्य का कोई उत्तर नहीं मिला, परन्तु खिड़की के पास उसे डोरियन का सिसकना सुनाई पड़ा—"प्रार्थना करो, डोरियन

प्रार्थना करो।" उसने कहा—"बचपन में प्रार्थना किस प्रकार से सिखाई जाती है। हमें सब प्रकार के लालचों से बचाओ, हमारे पापों को क्षमा करो। हमारे कलंकों को धो डालो। आओ, हम दोनों एक साथ इस प्रार्थना को दोहरायें। तुम्हारे अभिमान की प्रार्थना पूरी हुई। अब तुम्हारे प्रायश्चित्त की प्रार्थना भी पूरी होगी। मैंने तुम्हारी बहुत प्रशंसा की थी, उसका फल मुझे मिल चुका है। तुमने भी अपनी बहुत पूजा की थी। हम दोनों को सजा मिल चुकी है।"

डोरियन धीरे से घूम गया और आँसुओं से भरी आँखों को लेकर बोला—"अब बहुत देर हो चुकी है बासिल।" उसका स्वर काँप रहा था।

"देर कभी नहीं होती डोरियन! यदि हम को कोई प्रार्थना याद नहीं आती तो आओ हम झुककर घुटनों के बल बैठ जायें। कहीं यह पंक्ति भी तो किसी प्रार्थना की ही है—यद्यपि तुम्हारे पाप बहुत लाल हो गये हैं तब भी मैं उनको बर्फ के समान श्वेत बना दूँगा?"

"इन शब्दों का मेरे लिए अब कोई मतलब नहीं निकलता।"

"हुश, ऐसा मत कहो। तुम अपने जीवन में बहुत कुछ कुकर्म कर चुके हो! हे भगवान्—क्या डोरियन, तुम नहीं देखते वह चित्र किस प्रकार हमारी ओर देखकर हँस रहा है?"

डोरियन ग्रे ने चित्र की ओर देखा और यकायक बासिल के प्रति असीम घृणा उसके मन में उठी, मानो कैन्वस पर बने चित्र के हँसते हुए होठों ने उसके कानों में यह घृणा अचानक उड़ेल दी हो। उसके अन्दर शिकार किये हुए पशु के समान उत्तेजना जाग उठी और मेज के सामने बैठे हुए व्यक्ति को देखकर उतना ही ऊब गया जितना कि अपनी सारी जिन्दगी में आज तक किसी से नहीं ऊबा था। उसने पागल की भाँति अपने चारों ओर देखा। रंगे हुए कैन्वस के पास उसे कोई वस्तु चमकती हुई दिखाई दी। उसकी दृष्टि वहीं स्थिर हो गई। वह जानता था कि वह क्या वस्तु है। एक कपड़ा काटने के लिए वह इस चाकू को कुछ दिन पूर्व

यहां लाया था और फिर उसको यहां से वापस ले जाना भूल गया था। हालवर्ड के पास से गुजरकर वह धीरे से उस ओर पहुँच गया। ज्योंही वह उसके पास पहुँचा, तभी उसी क्षण उसने चाकू पकड़ लिया और घूमकर खड़ा हो गया। हालवर्ड कुर्सी से उठने से पूर्व काँपा। डोरियन उसकी ओर दौड़ा और कान के पीछे अपनी पूरी शक्ति से उसने वह चाकू घुसेड़ दिया जिससे हालवर्ड का सिर निःसहाय होकर मेज पर लुढ़क गया। डोरियन बार-बार चाकू से प्रहार करने लगा।

रुक-रुककर बड़े धीमे स्वर में चित्रकार की चीत्कार निकली और रक्त के बहने से बड़ा भयानक स्वर डोरियन को सुनाई दिया। तीन बार बँधी हुई मुट्ठियों के उसके हाथ बड़े डरावने ढंग से ऊपर हवा में उठे। उसने दो बार फिर चाकू से उस पर प्रहार किया परन्तु वह हिला तक नहीं। किसी चीज के धीरे-धीरे बहने की आवाज़ होने लगी। वह सिर झुकाये हुए क्षण भर तक खड़ा रहा। तब उसने चाकू को मेज पर फेंक दिया और कोई आवाज़ सुनने का प्रयास करने लगा।

कालीन पर बूंद-बूंद टपकने के स्वर के अतिरिक्त अन्य कोई स्वर वह नहीं सुन सका। उसने दरवाज़ा खोला और सीढ़ियों के पास जाकर खड़ा हो गया। मकान पूर्णरूप से निस्तब्ध था। कोई भी आसपास नहीं था। कुछ क्षणों तक वह जीने पर झुका रहा और अथाह अन्धकार की ओर नीचे ताकता रहा। तब चाबी निकाल कर वह पुनः कमरे में वापस लौट आया और कमरे को अन्दर से वन्द कर लिया।

चित्रकार अब भी कुर्सी पर बैठा था, उसका शरीर झुका हुआ मेज पर पड़ा था और लम्बे-लम्बे डरावने हाथ फैले हुए थे। यदि गर्दन पर लाल निशान न होता और रक्त का तालाब—जो प्रतिक्षण मेज पर विस्तृत होता जा रहा था—न होता, तब कोई अनुमान लगा सकता था कि वह सो रहा है।

कितनी जल्दी यह सब कुछ हो गया। वह आशा के विपरीत बिल्कुल शान्त था। उसने खिड़की के पास जाकर उसे खोल दिया और

छत पर जाकर बाहर झाँकने लगा। हवा धुंध को अपने साथ उड़ाकर ले गई थी और आकाश मोर की पूँछ की भाँति सुनहरी आँखों के समान तारों से चमक रहा था। उसने नीचे सड़क पर देखा, सिपाही अपनी ड्यूटी निभाता हुआ निस्तब्ध मकानों के दरवाजों के पास से हाथ में लालटेन लिये गुजर रहा था। धीरे-धीरे जाती हुई गाड़ी की रोशनी एक बार एक कोने में चमकी और फिर अन्धकार में विलीन हो गई। हवा में उड़ती हुई शाल को लपेटे एक स्त्री लड़खड़ाते पैरों से धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। बार-बार वह रुककर अपने पीछे देख लेती थी। एक बार उसने अपने भद्दे स्वर में गाना आरम्भ किया। सिपाही उसके पास तक आया और उसने उस स्त्री से कुछ कहा। वह हँसती हुई आगे बढ़ गई। सर्दीली हवा का एक झोंका स्केयर को पार करके आगे बढ़ गया। गैस के लैंपों की रोशनी बड़े ज़ोर से हिलने लगी और नीली होगई। बिना पत्तों के ठूँठ अपनी काली शाखाओं को इधर-उधर हिलाने लगे। वह काँप उठा और वापस चला आया। उसने खिड़की भी बन्द कर दी।

दरवाज़े के पास जाकर उसने चाबी घुमाई और दरवाज़ा खोला। मृत व्यक्ति की ओर उसने एक बार भी नहीं देखा। उसने अनुभव किया कि इस भयानक स्थिति के विषय में न सोचना ही सारी घटना का रहस्य है। जिस मित्र ने उसका यह भयानक चित्र बनाया था—जिसके कारण ही उस पर सारी विपत्तियाँ आई हैं—उसकी जिन्दगी समाप्त हो चुकी है, यही काफी है।

तब उसे लैंप की याद आई। यह बहुत पुराना काम वाला लैंप था। शायद इसकी अनुपस्थिति किसी नौकर को खटक जाये और वे परस्पर एक दूसरे से इस विषय में प्रश्न करने लगें। वह क्षण भर के लिये झिझका और फिर वापस लौटकर मेज से उसे उठा लिया। मृत चित्रकार को न चाह कर भी उसे देखना पड़ा। वह कितना शान्त था! उसके लंबे-लंबे हाथ कितने सफेद होगये थे।

कमरे का ताला बन्द करके वह चुपचाप नीचे चला आया। लैंप के

नीचे लकड़ी का केस बार-बार चीं-चीं करने लगता था, मानो वेदना से चिल्ला रहा हो। वह बहुत बार रुका और खड़ा रहा। नहीं; सब कुछ शान्त था। यह केवल उसके पैरों के चलने की ही आवाज़ थी।

जब वह पुस्तकालय पहुँचा, तब उसने बासिल का बेग और कोट कोने में पड़ा देखा। उनको कहीं अवश्य ही छिपा देना चाहिये। उसने एक छिपा हुआ बटन दबाया और एक दराज़ में उन चीज़ों को छिपा दिया जहाँ वह अपने भेष बदलने वाले कपड़े भी रखा करता था। वह आसानी से उनको बाद में जला देगा। तब उसने अपनी घड़ी देखी। दो बजने में बीस मिनट थे।

वह बैठ गया और सोचने लगा। प्रत्येक वर्ष, प्रत्येक महीने इंगलैंड में लोगों को इन कामों के लिये दण्ड दिया जाता है जो आज उसने किया है। उसे वहाँ की हवा में हत्या का वातावरण दिखाई दिया। कोई लाल तारा पृथ्वी के बहुत समीप आगया था। उसने सोचा उसके विरुद्ध क्या साबित किया जा सकता है? बासिल हालवर्ड ग्यारह बजे उसके घर से चला गया था। किसी ने भी उसे वापस घर में आते नहीं देखा। बहुत से नौकर बाहर गए हुए थे, उसका विशेष नौकर सोने चला गया था। पैरिस! हाँ, बासिल तो बारह बजे वाली गाड़ी से अपने बनाये हुए प्रोग्राम के अनुसार पैरिस चला गया था। बासिल की अलग चुप-चाप रहने की पुरानी आदत से सब परिचित हैं और महीनों तक किसी को उसके विषय में सन्देह करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। महीने उससे बहुत पहले ही वह सब कुछ समाप्त कर देगा।

अचानक एक विचार उसके मन में आया। उसने अपना फरों वाला कोट और हैट पहना और बड़े कमरे से बाहर चला गया। वहाँ पर वह रुका, बाहर पटरी पर सिपाही के भारी बूटों की धीमी आवाज़ वह सुन रहा था। वह साँस रोककर वहीं खड़ा रहा।

कुछ क्षणों पश्चात् उसने द्वार बन्द कर दिया और धीरे-धीरे बाहर चला आया। तब उसने घंटी बजानी आरम्भ की। पाँच मिनट में उसका

विशेष नौकर कपड़े पहनकर बाहर आया, शक्ल से वह नींद में ऊँघ रहा मालूम देता था।

"फ्रैंसिस ? तुम्हें जगाने का मुझे दुःख है।" उसने अन्दर कदम रखते हुए कहा—"परन्तु मैं अपनी दूसरी चाबी भूल गया था। क्या समय हुआ है ?"

"दो बजकर दस मिनट हुज़ूर !" अपनी घड़ी की ओर देखकर उसने उत्तर दिया।

"दो बजकर दस मिनट ? कितनी देर हो गई ! कल प्रातः मुझे नौ बजे अवश्य जगा लेना। मुझे कुछ काम है।"

"अच्छी बात है हुज़ूर !"

"क्या कोई शाम को मुझसे मिलने आया था ?"

"हुज़ूर, हालवर्ड आये थे। वे ग्यारह बजे तक आपकी प्रतीक्षा करते रहे और फिर अपनी गाड़ी पकड़ने चले गये।"

"ओह, मुझे बड़ा शोक है कि मैं उससे मिल नहीं सका। क्या वह मेरे लिए कोई सन्देश छोड़ गये हैं ?"

"नहीं हुज़ूर ! बस इतना ही कह गये हैं कि यदि आप से क्लब में भेंट न हुई तो पैरिस से आपको पत्र लिखेंगे।"

"अच्छी बात है फ्रैंसिस ! कल प्रातःकाल मुझे नौ बजे जगाना न भूलना।"

"नहीं हुज़ूर !"

वह नौकर अपनी चप्पल पहनकर ऊँघता हुआ अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

डोरियन ग्रे ने अपना हैट और कोट मेज पर फेंक दिया और पुस्तकालय में चला गया। लगभग पन्द्रह मिनट तक वह कमरे में इधर से उधर घूमता रहा और होंठ चबाता हुआ सोचता रहा। तब एक दराज में से उसने एक नीली किताब निकाली और उसके पन्ने उलटने लगा।

"अलन कैंपबेल, १५२ हर्टफ़ोर्ड स्ट्रीट, मेफेयर !" हाँ, इसी व्यक्ति की तलाश में वह था ।

१४

अगले दिन प्रातःकाल नौ बजे के लगभग उसका नौकर ट्रे में चाकलेट का प्याला लेकर उसके कमरे में आया और खिड़कियाँ खोलने लगा। डोरियन दाईं ओर करवट लिये अपना एक हाथ अपनी गाल के नीचे रखे शान्त होकर सो रहा था । वह उस बालक की भाँति दिखाई दे रहा था जो बहुत अधिक पढ़ने या खेलने के उपरान्त थक गया हो ।

उसे उठाने के लिए नौकर को दो बार उसका कन्धा पकड़कर हिलाना पड़ा । जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तब एक हल्की-सी मुस्कान उसके होठों पर नाच उठी, मानो वह किसी सुखद स्वप्न में खोया हुआ था । परन्तु उसे कोई स्वप्न नहीं आया था । सुख या वेदना की छाया उसकी रात्रि में विघ्न नहीं डाल सकी थी । परन्तु यौवन तो बिना किसी कारण के भी मुस्कराता है । यही जिन्दगी का सबसे बड़ा आकर्षण है ।

वह घूम गया और कोहनी के बल झुककर चाकलेट पीने लगा । नवम्बर का सूर्य कमरे में झांक रहा था । आकाश चमक रहा था और वायु में तनिक गरमी थी । आज का दिन मई की प्रातःकाल की भाँति प्रतीत हो रहा था ।

धीरे-धीरे बीती रात्रि की चुपचाप और रक्त से रंगी हुई घटनायें उसके मस्तिष्क में स्पष्ट होती गईं । जो कुछ उस पर बीती थी, उसकी याद करते ही उसके मन में सुप्त पीड़ा जाग उठी और एक क्षण के लिए उसी प्रकार की बासिल के प्रति घृणा की भावना उसके मन में

जागी, जब उसे कुर्सी पर बैठे देखकर उसकी हत्या करने के लिए वह लालायित हो उठा था, और अब उसे अपना शरीर बर्फ की भाँति ठंडा जान पड़ा। मृत व्यक्ति अब भी उस कुर्सी पर सूर्य की रोशनी में बैठा होगा। कितना भयानक था यह विचार! ये भयानक घटनायें रात्रि के लिए उपयुक्त होती हैं, दिन के लिए नहीं।

उसने अनुभव किया कि यदि बीती हुई घटना के विषय में ही वह सोचता रहा तो या तो वह बीमार पड़ जायेगा अथवा पागल हो जायेगा। कुछ पाप इस प्रकार के भी होते हैं जिनका आकर्षण उनको करने की अपेक्षा उनकी स्मृति में अधिक होता है। कुछ इस प्रकार की विजय होती हैं जो वासनाओं की पूर्ति में प्रसन्न होने के बदले व्यक्ति के अभिमान को सन्तुष्ट करती हैं। जिस प्रकार एक बौद्धिक व्यक्ति सुख का अनुभव करता है -- एक ऐसा सुख जो अन्य किसी साधन द्वारा इन्द्रियों को शान्त करने के लिये पाया नहीं जा सकता। परन्तु यह उस प्रकार का पाप नहीं था। यह एक ऐसा पाप था जिसको मस्तिष्क से बाहर निकालकर फैंक देना था, इसे सदा के लिये दूर करना था जिससे यह कहीं उसको ही बाँध न ले।

आधे घंटे के उपरान्त उसने अपना हाथ माथे पर फेरा और जल्दी से उठ खड़ा हुआ। आज उसने कपड़े पहनते समय अन्य दिनों की अपेक्षा उन पर अधिक ध्यान दिया था, नकटाई और पिन का चुनाव करने में उसने काफी समय लगाया था और अपनी अंगूठियों को कितनी बार बदला था। नाश्ते के समय भी उसने आराम से सब प्लेटों को चखा था, अपने नौकरों के लिये नई वर्दी बनवा देने की बातचीत उस पुराने नौकर से की थी। फिर उसने अपनी डाक देखी। कुछ पत्र पढ़कर वह मुस्करा दिया, तीन पत्रों को देखकर वह खिन्न-सा हो गया। एक पत्र को उसने कितनी ही बार पढ़ा और फिर तनिक क्रोधित होकर फाड़कर फेंक दिया। "वही डरावनी बात, एक स्त्री की स्मृति!" जैसा कि एक बार लार्ड हेनरी ने कहा था।

काली कॉफ़ी का प्याला समाप्त करके उसने अपने होंठ रूमाल से पोंछे और नौकर को प्रतीक्षा करने का संकेत किया। मेज के पास जाकर उसने दो पत्र लिखे। एक को उसने अपनी जेब में डाल लिया और दूसरा उसने नौकर को दे दिया।

"इस पत्र को १५२, हर्टफोर्ड स्ट्रीट में ले जाओ फ्रैंसिस, और यदि मि० कैम्पवेल शहर से बाहर गए हुए हों तो उनका पता लेते आना।"

ज्योंही वह कमरे में अकेला रह गया, उसने एक सिगरेट सुलगाई और एक कागज़ के टुकड़े पर स्केच करने लगा, पहले कुछ फूल, फिर मकान और फिर मनुष्यों की आकृतियाँ बनाईं। अचानक उसने अनुभव किया कि उसकी बनाई हुई प्रत्येक शक्ल बासिल से मिलती-जुलती है। वह क्रोधित हो उठा और उसने पुस्तकों की अलमारी के पास जाकर एक पुस्तक उठा ली। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह कल रात की घटना के विषय में तनिक भी नहीं सोचेगा जब तक कि यह सोचना नितान्त आवश्यक नहीं हो जायेगा।

सोफा पर लेटकर उसने किताब का शीर्षक देखा। यह गौटियर की एक पुस्तक थी। हरे रंग की जिल्द चढ़ी हुई थी। यह पुस्तक उसको सिंगलटन ने दी थी। पुस्तक के पन्ने पलटते समय उसकी दृष्टि एक कविता पर पड़ी। यह लेसनेट के पीले और लाल बालों वाले हाथ पर लिखी हुई थी। डोरियन ने अपनी श्वेत और लम्बी अंगुलियों को देखा जिससे वह काँप उठा। उसने सफा पलटा और फिर वीनस के सौन्दर्य पर लिखी हुई एक कविता वह पढ़ने लगा। कविता में कितना प्रवाह था, उसने अनुभव किया कि वह भी उस प्रवाह में बड़ी तेज़ी के साथ आगे बढ़ा जा रहा है। उसे वह पतझड़ याद आया जो उसने वीनस में बिताया था। उसके मन में एक बड़े विचित्र-से प्रेम का प्रादुर्भाव हुआ था जिसने उसे बड़ी अजीब-अजीब बातें करने के लिए प्रेरित किया था। प्रत्येक स्थान रोमांस से परिपूर्ण था। आक्सफोर्ड की भाँति वीनस में भी रोमांस की पृष्ठभूमि थी और एक वास्तविक रोमांटिक के लिए यह पृष्ठभूमि ही

सब कुछ वन जाती है। कुछ समय तक बासिल भी उसके साथ रहा था। बेचारा बासिल ! एक मनुष्य के लिये मृत्यु भी कितनी भयानक होती है।

उसने एक लम्बी साँस ली और पुस्तक को पुनः उठा लिया और सारी घटना को भूलने का प्रयास करने लगा। वह पढ़ता रहा और विभिन्न विषयों पर उसने गौटियर के विचार पढ़े। परन्तु कुछ समय पश्चात् अचानक ही वह पुस्तक उसके हाथ से नीचे गिर पड़ी। वह घबरा गया और भय के आवरण में ढक गया। यदि मि० कैंपबेल इंगलैंड से बाहर हुआ तो क्या होगा ? कितने ही दिनों पश्चात् वह वापस लौटेगा। शायद वह आने से इन्कार कर दे। तब वह क्या करेगा ? प्रत्येक क्षण बहुत महत्वपूर्ण है। पाँच वर्ष पूर्व वे दोनों बड़े घनिष्ठ मित्र थे जो कभी एक दूसरे से अलग नहीं होते थे। तब यह घनिष्ठता यकायक समाप्त हो गई। जब वे दोनों किसी पार्टी में मिलते थे तब डोरियन ग्रे ही पहले उसका अभिवादन करता था, अलन कैंपबेल ने उसकी ओर कभी ध्यान नहीं दिया।

वह एक बहुत चतुर और चालाक युवक था, यद्यपि दृश्य कलाओं के प्रति वह कभी अपना वास्तविक आकर्षण प्रकट नहीं कर सका। सौन्दर्य और कविता को समझने की जो थोड़ी बहुत बुद्धि उसमें थी वह उसने डोरियन से ही पाई थी। उसकी बौद्धिक प्यास विज्ञान के लिये थी। केम्बरिज में वह अपना बहुत-सा समय लेबोरेटरी में ही व्यतीत किया करता था और इस वर्ष प्राकृतिक विज्ञान में अच्छे नम्बर पाये थे। वह अब भी कैमिस्ट्री में मग्न रहा करता था और उसकी अपनी एक लेबो-रेटरी भी थी, जिसमें वह सारा दिन अपने को बन्द रखता था। उसकी माँ अपने पुत्र का यह व्यवहार देखकर बहुत क्रोधित होती थी क्योंकि वह उसको पार्लियामेंट का सदस्य देखना चाहती थी, उसके विचार में एक केमिस्ट का काम केवल नुस्खे लिखना ही होता है। वह एक संगीत-कार भी था और प्यानो और वायलिन बहुतों से अच्छा बजाता था। इस संगीत के कारण ही वह और डोरियन पहले पहल परस्पर एक दूसरे

के निकट आये थे। संगीत डोरियन के लिये एक ऐसा आकर्षण था जो उसे मंत्रमुग्ध बना देता था। वे दोनों लेडी बर्कशायर के मकान पर उस रात्रि को मिले थे जब रबिस्टीन ने संगीत-वाद्य बजाया था। उसके पश्चात् वे दोनों कभी आपरा और जहाँ कहीं अच्छा संगीत होता था वहाँ एक साथ दिखाई देते थे। बारह महीनों तक उनकी घनिष्ठता बनी रही। कैंपबेल सदा ही कभी सैल्बी और कभी ग्रास्वनेर स्केयर में दिखाई देता था। अन्य लोगों की भाँति उसके लिये भी डोरियन जिन्दगी का आश्चर्यमय और आकर्षक पहलू था। उन दोनों में कभी झगड़ा हुआ या नहीं, इसको कोई नहीं जानता था। परन्तु अचानक ही लोगों ने यह अनुभव किया कि अब जब दोनों मिलते तो बात तक न करते थे। जब किसी पार्टी में डोरियन भी उपस्थित रहता तो कैंपबेल जल्दी ही उठकर चल देता था। वह स्वयं भी बदल गया था। कभी-कभी बहुत उदास हो जाता था, ऐसा प्रदर्शन करता था मानो उसे संगीत से घृणा हो। वह स्वयं भी कभी कोई वाद्य नहीं बजाता था। जब कोई उससे बजाने को कहता तो सदा यह कहकर टाल दिया करता था कि विज्ञान में मग्न हो जाने पर उसे अभ्यास करने का समय ही नहीं मिलता। यह बात सत्य भी थी। प्रत्येक दिन वह बाओलोजी में अधिक मग्न हो जाता था और एक-दो बार उसका नाम विज्ञान-समालोचना सम्बन्धी पत्रिकाओं में भी उसके विचित्र अनुसन्धानों के विषय में निकल चुका था।

इसी व्यक्ति की डोरियन ग्रे प्रतीक्षा कर रहा था। प्रत्येक क्षण वह घड़ी पर आँख लगाये बैठा रहा। ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता था उसका बवंडर और भी तीव्र होता जाता था। अन्त में वह उठा और कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाने लगा, मानो कोई सुन्दर पक्षी पींजड़े में बन्द कर दिया गया हो। वह लम्बे-लम्बे कदम कमरे में रखने लगा। उसके हाथ ठंडे सुन्न पड़ गये थे।

अन्त में दुविधा की ये घड़ियाँ उसके लिये असह्य बन गईं। उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि समय बड़े भारी पैरों से धीरे-धीरे बीत रहा है

परन्तु वायु के तेज झोंके उसे काली चट्टान की नुकीली चोटी पर तेजी से ले जा रहे हैं। वह जानता था कि उस चोटी पर कौन उसकी प्रतीक्षा कर रहा है, वह उसे अपनी आँखों से देख रहा था, वह अपने भारी हाथों से अपनी पुतलियों को मसल रहा था मानो उन्हें अपनी आँखों में बन्द कर देना चाहता था। परन्तु वह अपने प्रयास में निष्फल रहा। भय से विकृत और वेदना से भद्दी और डरावनी बनी हुई कोई जीवित वस्तु के समान उसकी कल्पना एक भयानक मूर्ति की भाँति नाच रही थी और खुली आँखों से उसकी ओर टकटकी लगाये देख रही थी। तब यकायक उसके लिये समय की चाल रुक गई। हाँ; समय की मृत्यु के पश्चात् वह आँधी, धीरे-धीरे श्वास लेने वाली कल्पना और उसके भयानक विचार मन्दगति से आगे-आगे चल रहे थे। तब एक भयानक भविष्य अपनी कब्र में से उठकर उसके सामने आया। डोरियन ने उसे ध्यान से देखा। उसकी भयानकता ने उसे पत्थर की मूर्ति की भाँति स्थिर बना दिया।

अन्त में दरवाजा खुला और उसका नौकर अन्दर आ गया। उसने अपनी चमकती हुई आँखों से उसे देखा।

"मि० कैंपवेल हुजूर !" उसने कहा।

उसके थके हुए होंठों से शान्ति की एक साँस निकली और उसके कपोलों पर फिर लालिमा छा गई।

"फ्रैंसिस, उससे एकदम अन्दर आने को कहो।" उसने अनुभव किया कि वह पुनः पहले जैसा डोरियन हो गया है। उसकी कायरता की मुद्रा विलीन हो गई थी।

नौकर झुका और बाहर चला गया। कुछ ही क्षणों में अलन कैंपवेल अन्दर आया। उसकी बहुत कड़ी मुद्रा थी और मुख पीला पड़ा हुआ था। काले बालों और घनी भौंहों से उसका पीलापन और भी उभर रहा था।

"अलन, तुमने बहुत कृपा की, तुम्हारे आने के लिए मैं तुम्हारा आभारी हूँ !"

के निकट आये थे। संगीत डोरियन के लिये एक ऐसा आकर्षण था जो उसे मंत्रमुग्ध बना देता था। वे दोनों लेडी बर्कशायर के मकान पर उस रात्रि को मिले थे जब रुबिंस्टीन ने संगीत-वाद्य बजाया था। उसके पश्चात् वे दोनों कभी आपरा और जहाँ कहीं अच्छा संगीत होता था वहाँ एक साथ दिखाई देते थे। बारह महीनों तक उनकी घनिष्ठता बनी रही। कैंपबेल सदा ही कभी सैल्बी और कभी ग्रास्वनेर स्केयर में दिखाई देता था। अन्य लोगों की भाँति उसके लिये भी डोरियन जिन्दगी का आश्चर्यमय और आकर्षक पहलू था। उन दोनों में कभी झगड़ा हुआ या नहीं, इसको कोई नहीं जानता था। परन्तु अचानक ही लोगों ने यह अनुभव किया कि अब जब दोनों मिलते तो बात तक न करते थे। जब किसी पार्टी में डोरियन भी उपस्थित रहता तो कैंपबेल जल्दी ही उठकर चल देता था। वह स्वयं भी बदल गया था। कभी-कभी बहुत उदास हो जाता था, ऐसा प्रदर्शन करता था मानो उसे संगीत से घृणा हो। वह स्वयं भी कभी कोई वाद्य नहीं बजाता था। जब कोई उससे बजाने को कहता तो सदा यह कहकर टाल दिया करता था कि विज्ञान में मग्न हो जाने पर उसे अभ्यास करने का समय ही नहीं मिलता। यह बात सत्य भी थी। प्रत्येक दिन वह बाओलोजी में अधिक मग्न हो जाता था और एक-दो बार उसका नाम विज्ञान-समालोचना सम्बन्धी पत्रिकाओं में भी उसके विचित्र अनुसन्धानों के विषय में निकल चुका था।

इसी व्यक्ति की डोरियन ग्रे प्रतीक्षा कर रहा था। प्रत्येक क्षण वह घड़ी पर आँख लगाये बैठा रहा। ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता था उसका बवंडर और भी तीव्र होता जाता था। अन्त में वह उठा और कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाने लगा, मानो कोई सुन्दर पक्षी पींजड़े में बन्द कर दिया गया हो। वह लम्बे-लम्बे कदम कमरे में रखने लगा। उसके हाथ ठंडे सुन्न पड़ गये थे।

अन्त में दुविधा की ये घड़ियाँ उसके लिये असह्य बन गईं। उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि समय बड़े भारी पैरों से धीरे-धीरे बीत रहा है

परन्तु वायु के तेज झोंके उसे काली चट्टान की नुकीली चोटी पर तेजी से ले जा रहे हैं। वह जानता था कि उस चोटी पर कौन उसकी प्रतीक्षा कर रहा है, वह उसे अपनी आँखों से देख रहा था, वह अपने भारी हाथों से अपनी पुतलियों को मसल रहा था मानो उन्हें अपनी आँखों में बन्द कर देना चाहता था। परन्तु वह अपने प्रयास में निष्फल रहा। भय से विकृत और वेदना से भद्दी और डरावनी बनी हुई कोई जीवित वस्तु के समान उसकी कल्पना एक भयानक मूर्ति की भाँति नाच रही थी और खुली आँखों से उसकी ओर टकटकी लगाये देख रही थी। तब यकायक उसके लिये समय की चाल रुक गई। हाँ; समय की मृत्यु के पश्चात् वह आँधी, धीरे-धीरे श्वास लेने वाली कल्पना और उसके भयानक विचार मन्दगति से आगे-आगे चल रहे थे। तब एक भयानक भविष्य अपनी कब्र में से उठकर उसके सामने आया। डोरियन ने उसे ध्यान से देखा। उसकी भयानकता ने उसे पत्थर की मूर्ति की भाँति स्थिर बना दिया।

अन्त में दरवाजा खुला और उसका नौकर अन्दर आ गया। उसने अपनी चमकतीं हुई आँखों से उसे देखा।

"मि० कैंपबेल हुजूर !" उसने कहा।

उसके थके हुए होंठों से शान्ति की एक साँस निकली और उसके कपोलों पर फिर लालिमा छा गई।

"फ्रैंसिस, उससे एकदम अन्दर आने को कहो।" उसने अनुभव किया कि वह पुनः पहले जैसा डोरियन हो गया है। उसकी कायरता की मुद्रा विलीन हो गई थी।

नौकर झुका और बाहर चला गया। कुछ ही क्षणों में अलन कैंपबेल अन्दर आया। उसकी बहुत कड़ी मुद्रा थी और मुख पीला पड़ा हुआ था। काले बालों और घनी भौंहों से उसका पीलापन और भी उभर रहा था।

"अलन, तुमने बहुत कृपा की, तुम्हारे आने के लिए मैं तुम्हारा आभारी हूँ !"

"ग्रे, मैंने तुम्हारे घर कभी पाँव न रखने का इरादा किया था। परन्तु तुमने लिखा था कि यह जीवन और मृत्यु का प्रश्न है।" उसका स्वर कड़ा और नीरस था। वह धीमे स्वर में संभल-संभल कर बोल रहा था। उसने डोरियन को जिस दृष्टि से देखा उसमें उसके प्रति घृणा और उसको बुलाने का कारण जानने की उत्सुकता भरी पड़ी थी। उसने अपने हाथ कोट की जेब में ही डाले रखे और ऐसा प्रदर्शन किया कि उसका स्वागत जिस सहृदयता तथा प्रसन्नता से हुआ है उसका ज्ञान उसे नहीं।

"हाँ अलन, यह जीवन और मृत्यु का ही प्रश्न है परन्तु केवल एक ही व्यक्ति के लिये नहीं, बैठ जाओ।"

कैंपबेल मेज के पास वाली कुर्सी पर बैठ गया और डोरियन उसके सामने जा बैठा। दोनों व्यक्तियों की आँखें मिलीं। डोरियन की दृष्टि में दया भरी पड़ी थी। वह जानता था कि जो कुछ वह करने जा रहा है, बहुत भयानक है।

क्षण भर की चुप्पी के उपरान्त वह पीछे सहारा लेकर आधा लेट-सा गया और बड़े ध्यान से अलन के मुख की ओर देखने लगा कि उसके कहे प्रत्येक शब्द का उस पर क्या प्रभाव पड़ता है—"अलन, ऊपर के बन्द कमरे में—जहाँ मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं जा सकता—मेज के पास एक मृत आदमी बैठा है। उसको मरे दस घण्टे बीत चुके हैं। तुम हिलो नहीं अलन, और मेरी ओर इस तरह से मत देखो। यह कौन व्यवित है, वह क्यों मरा, और कैसे मरा, यह सब ऐसी बातें हैं जिनका तुम्हारे साथ कोई सम्बन्ध नहीं। तुम्हें तो बस इतना करना है कि······"

"ठहरो ग्रे ! मैं इससे आगे और कुछ भी जानना नहीं चाहता। जो कुछ तुमने कहा वह सच है या झूठ, इसका मुझसे कोई प्रयोजन नहीं। मैं तुम्हारी जिन्दगी में अपने को बिल्कुल ही नहीं डालना चाहता। अपने भयानक रहस्य अपने पास ही रखो। उसमें मुझे अब कोई भी उत्सुकता नहीं रही है।"

"अलन, तुम्हें उत्सुकता लेनी ही पड़ेगी। विशेषकर इस घटना के प्रति तुमको आकर्षित होना ही पड़ेगा। अलन, मुझे तुम्हारे लिये बहुत शोक है परन्तु कोई दूसरा रास्ता नहीं है। तुम ही एक ऐसे व्यक्ति हो जो मुझे बचा सकते हो। इस मामले में तुम्हें घसीटने के लिए मुझे बाध्य होना पड़ा है। मेरे पास कोई और चारा नहीं है। अलन, तुम एक वैज्ञानिक हो। तुम्हें कैमिस्टरी और इससे मिलते-जुलते विषयों का पता है। तुमने प्रयोग भी किये हैं। अब तुम्हें यह काम करना है कि ऊपर जो मृत शरीर पड़ा है उसे नष्ट कर दो, जिससे उसका एक चिह्न तक शेष न रहे। किसी ने भी उसे मकान में आते नहीं देखा। इस क्षण लोग उसके पैरिस में होने का अनुमान लगा रहे होंगे। महीनों तक किसी को उसकी हत्या का सन्देह नहीं होगा। जब उसके विलीन हो जाने का पता लोगों को चलेगा तब उसकी देह का एक परमाणु भी यहाँ पर नहीं मिलेगा। तुम अलन, तुम उठो और उसकी प्रत्येक वस्तु को बदल डालो जिससे वह एक मुट्ठी भर राख रह जाये, जिसे मैं हवा में उड़ा दूं।"

"डोरियन, तुम पागल हो गये हो।"

"ओह, तुम्हारे डोरियन कहकर पुकारने की ही मैं प्रतीक्षा कर रहा था।"

"तुम पागल हो, तुम्हारा यह सोचना निरा पागलपन है कि मैं तुम्हारी थोड़ी-सी भी सहायता करूँगा। अपना यह पाप मुझ पर प्रकट करके ही तुमने महान् मूर्खता की है। क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारे कारण मैं अपनी प्रसिद्धि को खतरे में डाल दूंगा? तुम जैसा भी काम कर रहे हो उससे मुझे क्या मतलब?"

"अलन, उस व्यक्ति ने आत्महत्या की है।"

"यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। परन्तु उसके लिये उसे किसने उकसाया? मेरे विचार में तुम ही इसका कारण थे।"

"क्या अब भी मेरे लिए तुम यह काम करने से इन्कार कर सकते हो?"

"ग्रे, मैंने तुम्हारे घर कभी पाँव न रखने का इरादा किया था। परन्तु तुमने लिखा था कि यह जीवन और मृत्यु का प्रश्न है।" उसका स्वर कड़ा और नीरस था। वह धीमे स्वर में संभल-संभल कर बोल रहा था। उसने डोरियन को जिस दृष्टि से देखा उसमें उसके प्रति घृणा और उसको बुलाने का कारण जानने की उत्सुकता भरी पड़ी थी। उसने अपने हाथ कोट की जेब में ही डाले रखे और ऐसा प्रदर्शन किया कि उसका स्वागत जिस सहृदयता तथा प्रसन्नता से हुआ है उसका ज्ञान उसे नहीं।

"हाँ अलन, यह जीवन और मृत्यु का ही प्रश्न है परन्तु केवल एक ही व्यक्ति के लिये नहीं, बैठ जाओ।"

कैंपवेल मेज के पास वाली कुर्सी पर बैठ गया और डोरियन उसके सामने जा बैठा। दोनों व्यक्तियों की आँखें मिलीं। डोरियन की दृष्टि में दया भरी पड़ी थी। वह जानता था कि जो कुछ वह करने जा रहा है, बहुत भयानक है।

क्षण भर की चुप्पी के उपरान्त वह पीछे सहारा लेकर आधा लेट-सा गया और बड़े ध्यान से अलन के मुख की ओर देखने लगा कि उसके कहे प्रत्येक शब्द का उस पर क्या प्रभाव पड़ता है—"अलन, ऊपर के बन्द कमरे में—जहाँ मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं जा सकता—मेज के पास एक मृत आदमी बैठा है। उसको मरे दस घण्टे बीत चुके हैं। तुम हिलो नहीं अलन, और मेरी ओर इस तरह से मत देखो। यह कौन व्यवित है, वह क्यों मरा, और कैसे मरा, यह सब ऐसी बातें हैं जिनका तुम्हारे साथ कोई सम्बन्ध नहीं। तुम्हें तो बस इतना करना है कि......"

"ठहरो ग्रे ! मैं इससे आगे और कुछ भी जानना नहीं चाहता। जो कुछ तुमने कहा वह सच है या झूठ, इसका मुझसे कोई प्रयोजन नहीं। मैं तुम्हारी जिन्दगी में अपने को बिल्कुल ही नहीं डालना चाहता। अपने भयानक रहस्य अपने पास ही रखो। उसमें मुझे अब कोई भी उत्सुकता नहीं रही है।"

"अलन, तुम्हें उत्सुकता लेनी ही पड़ेगी। विशेषकर इस घटना के प्रति तुमको आकर्षित होना ही पड़ेगा। अलन, मुझे तुम्हारे लिये बहुत शोक है परन्तु कोई दूसरा रास्ता नहीं है। तुम ही एक ऐसे व्यक्ति हो जो मुझे बचा सकते हो। इस मामले में तुम्हें घसीटने के लिए मुझे बाध्य होना पड़ा है। मेरे पास कोई और चारा नहीं है। अलन, तुम एक वैज्ञानिक हो। तुम्हें कैमिस्टरी और इससे मिलते-जुलते विषयों का पता है। तुमने प्रयोग भी किये हैं। अब तुम्हें यह काम करना है कि ऊपर जो मृत शरीर पड़ा है उसे नष्ट कर दो, जिससे उसका एक चिह्न तक शेष न रहे। किसी ने भी उसे मकान में आते नहीं देखा। इस क्षण लोग उसके पैरिस में होने का अनुमान लगा रहे होंगे। महीनों तक किसी को उसकी हत्या का सन्देह नहीं होगा। जब उसके विलीन हो जाने का पता लोगों को चलेगा तब उसकी देह का एक परमाणु भी यहाँ पर नहीं मिलेगा। तुम अलन, तुम उठो और उसकी प्रत्येक वस्तु को बदल डालो जिससे वह एक मुट्ठी भर राख रह जाये, जिसे मैं हवा में उड़ा दूं।"

"डोरियन, तुम पागल हो गये हो।"

"ओह, तुम्हारे डोरियन कहकर पुकारने की ही मैं प्रतीक्षा कर रहा था।"

"तुम पागल हो, तुम्हारा यह सोचना निरा पागलपन है कि मैं तुम्हारी थोड़ी-सी भी सहायता करूँगा। अपना यह पाप मुझ पर प्रकट करके ही तुमने महान् मूर्खता की है। क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारे कारण मैं अपनी प्रसिद्धि को खतरे में डाल दूंगा? तुम जैसा भी काम कर रहे हो उससे मुझे क्या मतलब?"

"अलन, उस व्यक्ति ने आत्महत्या की है।"

"यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। परन्तु उसके लिये उसे किसने उकसाया? मेरे विचार में तुम ही इसका कारण थे।"

"क्या अब भी मेरे लिए तुम यह काम करने से इन्कार कर सकते हो?"

"बेशक ! मैं इससे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता। तुम पर क्या बीतती है इसकी मुझे तनिक भी चिन्ता नहीं। तुम्हें इसकी सजा भुगतनी ही चाहिये। तुम्हारा मस्तक आम जनता में लज्जा से झुक जाते देख मुझे तनिक भी दुःख नहीं होगा। संसार के इतने लोगों में से तुमने मुझे ही इस मामले में क्यों चुना ? मैंने यह सोचने में ग़लती की कि तुम्हें लोगों का स्वभाव विदित है। तुम्हारे मित्र लार्ड हेनरी व्रटन ने यद्यपि तुमको कितनी ही बातें सिखा दी हैं परन्तु वह मनोविज्ञान के विषय में अधिक नहीं बतला सका। तुम्हारी सहायता के लिए एक कदम भी बढ़ाने को कोई मुझे प्रेरित नहीं कर सकता। तुमने अपनी सहायता के लिये एक ग़लत व्यक्ति को चुना है। अपने दूसरे मित्रों के पास जाओ, मेरे पास मत आओ।"

"अलन, उसकी हत्या की गई है, मैंने उसको मार डाला है। तुम नहीं जानते कि उसके कारण मुझे क्या-क्या सहना पड़ा है। मेरी जिंदगी आज जैसी भी है उसे बनाने या बिगाड़ने का श्रेय हेनरी की अपेक्षा इस मृत व्यक्ति को अधिक था। यद्यपि उसने जान-बूझकर ऐसा करना नहीं चाहा था परन्तु परिणाम तो आखिर वही निकला।"

"हत्या ! हे भगवान् ! डोरियन, क्या तुम यहाँ तक पहुँच गये हो ? मैं तुमसे कोई पूछताछ नहीं करूँगा, यह मेरे मतलब की बात नहीं है। यदि मैं तुम्हारी कोई सहायता करूँ भी, तो भी तुम अवश्य गिरफ्तार कर लिये जाओगे। कोई भी बुरा काम किये बिना एक आदमी किसी की हत्या नहीं करता। परन्तु मैं इस मामले से अपना कोई सम्बन्ध नहीं रखूँगा।"

"तुम्हारा इससे अवश्य सम्बन्ध है। ठहरो, एक मिनट ठहरो, मेरी बात सुनो। केवल एक बात सुनो। मैं तुमसे केवल एक वैज्ञानिक प्रयोग करने के लिये कहता हूँ। तुम हस्पताल जाते हो, मृतव्यक्ति को देखते हो, वहाँ के भयानक दृश्य तुम पर कोई प्रभाव नहीं डालते। यदि किसी विकृत आपरेशन के कमरे में या किसी प्रयोगशाला में मेज पर लेटे एक

ऐसे व्यक्ति को देखो जिसके लाल-लाल घावों से रक्त बह रहा हो, तुम उसे बड़ा भाग्यशाली अवसर समझोगे। एक बार भी तुम नहीं हिचकिचाओगे। तुम इस बात पर विश्वास नहीं करोगे कि तुम कोई बुरा काम कर रहे हो। उलटे तुम यह अनुभव करोगे कि तुम मनुष्य-जाति का भला कर रहे हो या संसार का ज्ञान बढ़ा रहे हो या बौद्धिक उत्सुकता को शान्त कर रहे हो। मैं तुम्हें वही काम करने को कह रहा हूँ जो तुम पहले से करते आये हो। वरन् जो काम तुम अपनी प्रयोगशाला में करते हो उसकी अपेक्षा शरीर को नष्ट कर देना बहुत कम भयानक है। और यह याद रखो कि केवल यह शरीर ही मेरे विरुद्ध गवाह है। यदि इसका किसी को पता चल गया तो मेरा अन्त निश्चय है। यदि तुमने मेरी सहायता न की तो इसका भेद अवश्य खुल जावेगा।"

"तुम्हारी सहायता करने की मेरी तनिक भी इच्छा नहीं है, यह तुम क्यों भूल जाते हो! तुम्हारे इस मामले के प्रति मैं बिल्कुल उदासीन हूँ, इसका मुझसे जरा भी सम्बन्ध नहीं।"

"अलन, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। तनिक मेरी स्थिति का विचार करो। तुम्हारे आने से थोड़ी देर पूर्व मैं भय से बेहोश हो गया था। तुम भी शायद कभी इस डर का अनुभव कर सको। नहीं! इसके विषय में मत सोचो! सारे मामले को वैज्ञानिक दृष्टि से देखो। जिन मृत लाशों पर तुम अपने प्रयोग करते हो, उनके विषय में तुम कभी यह नहीं पूछते कि वे कहाँ से आईं। अब यह सब क्यों पूछते हो? मैं तुम्हें पहले से ही सब कुछ बता चुका हूँ। परन्तु अब मैं तुमसे यह करने का अनुरोध करता हूँ। अलन, हम दोनों कभी अभिन्न मित्र थे।"

"डोरियन, उन दिनों की बात मत करो, वे मर चुके।"

"कभी-कभी मृत वस्तुएँ भी हिलने लगती हैं। ऊपर कमरे वाला व्यक्ति चला नहीं जायेगा। वह मेज पर अपना सिर झुकाये और हाथ फैलाये बैठा है। अलन! अलन! यदि तुमने मेरी सहायता नहीं की तो मैं बरबाद हो जाऊँगा। वे मुझे फाँसी पर चढ़ा देंगे। अलन! क्या तुम

"बेशक ! मैं इससे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता। तुम पर क्या बीतती है इसकी मुझे तनिक भी चिन्ता नहीं। तुम्हें इसकी सजा भुगतनी ही चाहिये। तुम्हारा मस्तक आम जनता में लज्जा से झुक जाते देख मुझे तनिक भी दुःख नहीं होगा। संसार के इतने लोगों में से तुमने मुझे ही इस मामले में क्यों चुना ? मैंने यह सोचने में ग़लती की कि तुम्हें लोगों का स्वभाव विदित है। तुम्हारे मित्र लार्ड हेनरी वटन ने यद्यपि तुमको कितनी ही बातें सिखा दी हैं परन्तु वह मनोविज्ञान के विषय में अधिक नहीं बतला सका। तुम्हारी सहायता के लिए एक कदम भी बढ़ाने को कोई मुझे प्रेरित नहीं कर सकता। तुमने अपनी सहायता के लिये एक ग़लत व्यक्ति को चुना है। अपने दूसरे मित्रों के पास जाओ, मेरे पास मत आओ।"

"अलन, उसकी हत्या की गई है, मैंने उसको मार डाला है। तुम नहीं जानते कि उसके कारण मुझे क्या-क्या सहना पड़ा है। मेरी जिंदगी आज जैसी भी है उसे बनाने या बिगाड़ने का श्रेय हेनरी की अपेक्षा इस मृत व्यक्ति को अधिक था। यद्यपि उसने जान-बूझकर ऐसा करना नहीं चाहा था परन्तु परिणाम तो आखिर वही निकला।"

"हत्या ! हे भगवान् ! डोरियन, क्या तुम यहाँ तक पहुँच गये हो ? मैं तुमसे कोई पूछताछ नहीं करूँगा, यह मेरे मतलब की बात नहीं है। यदि मैं तुम्हारी कोई सहायता करूँ भी, तो भी तुम अवश्य गिरफ्तार कर लिये जाओगे। कोई भी बुरा काम किये बिना एक आदमी किसी की हत्या नहीं करता। परन्तु मैं इस मामले से अपना कोई सम्बन्ध नहीं रखूँगा।"

"तुम्हारा इससे अवश्य सम्बन्ध है। ठहरो, एक मिनट ठहरो, मेरी बात सुनो। केवल एक बात सुनो। मैं तुमसे केवल एक वैज्ञानिक प्रयोग करने के लिये कहता हूँ। तुम हस्पताल जाते हो, मृतव्यक्ति को देखते हो, वहाँ के भयानक दृश्य तुम पर कोई प्रभाव नहीं डालते। यदि किसी विकृत आपरेशन के कमरे में या किसी प्रयोगशाला में मेज पर लेटे एक

ऐसे व्यक्ति को देखो जिसके लाल-लाल घावों से रक्त बह रहा हो, तुम उसे बड़ा भाग्यशाली अवसर समझोगे। एक बार भी तुम नहीं हिचकिचाओगे। तुम इस बात पर विश्वास नहीं करोगे कि तुम कोई बुरा काम कर रहे हो। उलटे तुम यह अनुभव करोगे कि तुम मनुष्य-जाति का भला कर रहे हो या संसार का ज्ञान बढ़ा रहे हो या बौद्धिक उत्सुकता को शान्त कर रहे हो। मैं तुम्हें वही काम करने को कह रहा हूँ जो तुम पहले से करते आये हो। वरन् जो काम तुम अपनी प्रयोगशाला में करते हो उसकी अपेक्षा शरीर को नष्ट कर देना बहुत कम भयानक है। और यह याद रखो कि केवल यह शरीर ही मेरे विरुद्ध गवाह है। यदि इसका किसी को पता चल गया तो मेरा अन्त निश्चय है। यदि तुमने मेरी सहायता न की तो इसका भेद अवश्य खुल जावेगा।"

"तुम्हारी सहायता करने की मेरी तनिक भी इच्छा नहीं है, यह तुम क्यों भूल जाते हो! तुम्हारे इस मामले के प्रति मैं बिल्कुल उदासीन हूँ, इसका मुझसे जरा भी सम्बन्ध नहीं।"

"अलन, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। तनिक मेरी स्थिति का विचार करो। तुम्हारे आने से थोड़ी देर पूर्व मैं भय से बेहोश हो गया था। तुम भी शायद कभी इस डर का अनुभव कर सको। नहीं! इसके विषय में मत सोचो! सारे मामले को वैज्ञानिक दृष्टि से देखो। जिन मृत लाशों पर तुम अपने प्रयोग करते हो, उनके विषय में तुम कभी यह नहीं पूछते कि वे कहाँ से आईं। अब यह सब क्यों पूछते हो? मैं तुम्हें पहले से ही सब कुछ बता चुका हूँ। परन्तु अब मैं तुमसे यह करने का अनुरोध करता हूँ। अलन, हम दोनों कभी अभिन्न मित्र थे।"

"डोरियन, उन दिनों की बात मत करो, वे मर चुके।"

"कभी-कभी मृत वस्तुएँ भी हिलने लगती हैं। ऊपर कमरे वाला व्यक्ति चला नहीं जायेगा। वह मेज पर अपना सिर झुकाये और हाथ फैलाये बैठा है। अलन! अलन! यदि तुमने मेरी सहायता नहीं की तो मैं बरबाद हो जाऊँगा। वे मुझे फाँसी पर चढ़ा देंगे। अलन! क्या तुम

नहीं समझते ? मैंने जो कुछ किया है उसके बदले मुझे फाँसी का दण्ड मिलेगा।"

"इस दृश्य को लम्बा करने से कोई लाभ नहीं। मैं इस मामले में थोड़ी-सी भी सहायता करने से इन्कार करता हूँ। तुमने मुझसे पूछकर ही पागलपन किया है।"

"तुम इन्कार करते हो ?"

"हाँ !"

"मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ अलन !"

"यह सब बेकार है।"

वही दया की भावना डोरियन की आँखों में नाच उठी। तब उसने अपना हाथ जेब से निकाला। एक कागज का टुकड़ा लेकर उस पर कुछ लिखा। उसने दो बार उस पुर्जे को पढ़ा, बड़ी सावधानी से उसकी तह की और अलन के सामने वाली मेज पर रख दिया। फिर वह खड़ा हो गया और खिड़की के पास चला गया।

कैंपवेल ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा और फिर वह कागज का पुर्जा उठा लिया और खोलकर पढ़ने लगा। पढ़ते ही उसका मुख एकदम पीला पड़ गया और वह कुर्सी का सहारा लेकर आधा लेट गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो एक प्रकार की बीमारी ने उसे घेर लिया हो। उसने अनुभव किया कि उसका हृदय इतने जोर से धड़क रहा है कि अचानक ही यह धड़कन बन्द हो जायेगी।

दो या तीन मिनटों की भयानक चुप्पी के पश्चात् डोरियन घूमकर खड़ा हो गया और उसके पीछे आ गया और अपना हाथ उसके कन्धे पर रखा।

"अलन, मुझे तुम्हारे लिये बहुत शोक है।" उसने धीमे स्वर में कहा—"परन्तु तुमने मेरे लिये कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा। मैं पहले से ही एक पत्र लिख चुका हूँ। यह है वह पत्र, तुम पता देखते हो। यदि तुम मेरी सहायता नहीं करोगे तो मैं इसे भेज दूंगा। तुम जानते

हो कि इसका क्या परिणाम होगा। परन्तु तुम अवश्य मेरी सहायता करोगे। अब तुम्हारे लिये इन्कार करना असम्भव है। मैंने बात को यहाँ तक न पहुंचाने की बहुतेरी कोशिश की और तुम भी मेरी इस बात को स्वीकार करोगे। परन्तु तुम अपने कहे पर दृढ़ रहे। तुमने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जैसा आज तक किसी ने नहीं किया था। मैंने सब कुछ सहा। अब अपनी बात पूरी करवाने की मेरी बारी है।"

कैंपवेल ने अपना मुख अपने हाथों में छिपा लिया और भय से काँप उठा।

"हाँ, अब मेरी बारी है अलन ! तुम जानते ही हो कि मैं तुमसे क्या चाहता हूँ। बात बिल्कुल सीधी-सादी है। आओ, व्यर्थ में अपने को परेशान करने से क्या लाभ ? यह काम तो अब करना ही पड़ेगा। इसे जल्दी ही समाप्त करो।"

कैंपवेल के होठों से एक आह निकली और उसका सारा शरीर काँप उठा। उसे दीवार पर टंगी हुई घड़ी की टिकटिक समय को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित करती हुई जान पड़ी, जिसका प्रत्येक टुकड़ा उसके लिए असीम वेदना का प्रतीक बन गया और जिसको सहना उसे असम्भव-सा जान पड़ा। उसने ऐसा अनुभव किया कि एक लोहे की जंजीर उसके माथे को धीरे-धीरे दबाती जा रही है और जिस शरम और अपमान का उसे भय दिखलाया गया था वह प्रत्यक्ष रूप से उसके सम्मुख आ गया है। अपने कन्धे पर डोरियन का हाथ उसे बहुत भारी जान पड़ा जो उसके लिये असह्य बना जा रहा था, मानो वह हाथ उसे नष्ट करने पर तुला हुआ था।

"आओ अलन, तुम्हें एकदम निश्चय कर लेना चाहिये।"

"मैं यह नहीं कर सकता।" उसने मशीन की भाँति कहा मानो उसके शब्द स्थिति में कोई परिवर्तन कर सकते थे।

"तुम्हें करना पड़ेगा, हमारा कोई चारा नहीं है। देर मत करो।"

वह क्षण भर के लिये झिझका। "क्या ऊपर वाले कमरे में आग सुलग रही है ?"

"हाँ, गैस वाली आग है।"

"मुझे घर जाकर लेबोरेटरी से कुछ सामान लाना होगा।"

"नहीं, अलन, तुम घर से बाहर नहीं जा सकते। एक काग़ज़ पर तुम जो कुछ सामान चाहते हो वह लिख दो, मेरा नौकर गाड़ी लेकर चला जायेगा और तुम्हारे लिये सारा सामान ले आयेगा।

कैंपवेल ने कुछ लाइनें लिखीं, ब्लाटिंग से उसको सुखाया और लिफाफे पर अपने सहकारी का पता लिख दिया। डोरियन ने वह पुर्जा लिया और ध्यान से पढ़ा। तब उसने घंटी बजाई और अपने नौकर को वह पुर्जा देकर सारा सामान जल्दी ही लाने के लिये कहा।

कमरे का दरवाजा बन्द होते ही कैंपबेल घबरा कर चौंका और कुर्सी से उठकर चिमनी के पास आकर खड़ा हो गया। वह सर्दी से काँप रहा था। लगभग बीस मिनट तक दोनों में से कोई नहीं बोला। एक मक्खी की भिनभिनाने की आवाज कमरे में गूंजती रही और घड़ी का टिकटिक का स्वर हथौड़े की चोटों से कम नहीं लग रहा था।

ज्योंही घड़ी ने एक बजाया, कैंपबेल घूमकर खड़ा हो गया और डोरियन को देखकर उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी आँखों में आँसू भरे पड़े हैं। उसके उदास मुख की पवित्रता और सादगी देखकर उसे क्रोध आ गया—"तुम बहुत भयानक आदमी हो, बहुत ही बदनाम !" उसने कहा।

"हुश अलन, तुमने मेरी जिंदगी बचा ली।" डोरियन ने कहा।

"तुम्हारी जिंदगी ? हे भगवान् ! वह कैसी जिंदगी है। तुमने एक के पश्चात् एक पाप किया और अब तुमने एक आदमी की हत्या कर डाली। मैं जो कुछ करने जा रहा हूँ—या जो कुछ करने पर तुमने मुझे बाध्य किया है—वह मैं तुम्हारी जिन्दगी बचाने के विचार से नहीं कर रहा हूँ।"

"आह अलन !" डोरियन ने एक आह भरते हुए कहा—"जितनी दया तुम्हारे प्रति मुझ में है, काश कि उसका एक हजारवाँ भाग तुम में होता।" यह कहकर उसने पीठ मोड़ ली और बाग की ओर देखने लगा। कैम्पबेल ने कोई उत्तर नहीं दिया।

लगभग दस मिनट के उपरान्त किसी ने द्वार खटखटाया और नौकर एक बड़ा-सा लकड़ी का वक्स, लोहे का टुकड़ा, तार और दो लोहे की और चीजें लिये अन्दर घुसा।

'हुजूर, क्या इस सामान को यहीं छोड़ दूं ?" उसने कैंपबेल से पूछा।

"हाँ !" डोरियन ने कहा—"हाँ फ्रैंसिस, तुम्हें एक और काम के लिये कष्ट दूँगा। रिचमेड के उस आदमी का क्या नाम है जो सैल्बी में पौधे दिया करता है ?"

"हार्डन, हुजूर !"

"हाँ—हार्डन ! तुम इसी समय रचिमेड जाकर स्वयं हार्डन से मिलो और कहो कि मैंने जितने पौधों का आर्डर दिया था उससे दुगने भेजो और उनमें कुछ सफेद फूलों वाले भी हों। आज का दिन भी बड़ा सुन्दर है फ्रैंसिस, और रिचमेड एक मनोरम स्थान है। नहीं तो मैं तुम्हें वहाँ तक जाने का कष्ट नहीं देता।"

"इसमें कष्ट की कौन-सी बात है हुजूर ! मैं किस समय वापस लौटूं ?"

डोरियन ने कैंपवेल की ओर देखा। "अलन, तुम्हारा प्रयोग कब तक रहेगा ?" उसने शान्त और बड़े उदासीन स्वर में पूछा। कमरे में तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति से उसे बहुत साहस मिला था।

कैंपबेल ने क्रोधित होकर अपना होंठ चबाया—"लगभग पाँच घंटे लगेंगे।" उसने उत्तर दिया।

"फ्रैंसिस, यदि तुम साढ़े सात भी आये तो भी काफी समय बचेगा। या वहीं रह जाना। मेरे रात के कपड़े रख जाओ। आज शाम को तुम्हें

छुट्टी है। मैं रात को खाना घर पर नहीं खा रहा, इसलिये मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।"

"धन्यवाद हुजूर !" नौकर ने कहा और कमरे से बाहर चला गया।

"अब अलन, एक भी क्षण नष्ट नहीं करना चाहिए। यह बक्स कितना भारी है। मैं तुम्हारे लिये इसे ऊपर ले जाऊँगा। तुम दूसरा सामान लाओ।" उसने आज्ञा देने के स्वर में जल्दी-जल्दी कहा। कैंपवेल ने अपने-आपको उसके अधीन समझा। दोनों एक साथ कमरे से बाहर निकल आये।

जब वे सबसे ऊपर की मंजिल पर पहुँचे तब डोरियन ने ताली से कमरे को खोला। वह रुक गया और उसकी आँखों में से अजीब-सी पीड़ा चमक उठी। वह काँप उठा—"मेरे विचार में मैं अन्दर नहीं जा सकता अलन !" उसने धीमे स्वर में कहा।

"मेरा इससे कोई मतलब नहीं, मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है।" कैंपवेल ने कड़े स्वर में कहा।

डोरियन ने आधा कमरे का दरवाज़ा खोला। कमरे में उसे सूर्य की रोशनी में अपने चित्र की शक्ल चमकती हुई दिखाई दी। उसके सामने फर्श पर फटा हुआ परदा पड़ा था। उसे याद आया कि कल रात को अपने जीवन में पहली बार वह चित्र को कपड़े से ढकना भूल गया था। वह आगे दौड़ने ही वाला था जब कि भय से वह यकायक पीछे हट गया।

चित्र के एक हाथ में गीले लाल रंग के निशान चमक रहे थे, मानो केन्वस को रक्त से रंगा गया हो। यह दृश्य कितना भयानक था। मेज पर पड़ी हुई मृत लाश की अपेक्षा वह चित्र उसे अधिक भयानक प्रतीत हुआ। रक्त के धब्बे पड़े हुए कालीन पर भद्दी और विकृत लाश की छाया पड़ रही थी, जिससे उसने अनुमान लगाया कि वह हिली-जुली नहीं, बल्कि जैसी वह कल रात को छोड़ गया था उसी प्रकार स्थिर पड़ी थी।

उसने एक लम्बी सांस ली, तनिक और दरवाज़ा खोला और आधी खुली हुई आँखों के सहारे तीव्रता से अन्दर गया। उसने निश्चय कर लिया था कि वह हालवर्ड की मृत देह पर एक दृष्टि भी नहीं डालेगा। तब नीचे झुककर उसने वह परदा उठाया और ठीक चित्र के ऊपर डाल दिया।

वह वहीं रुक गया, घूमते हुए उसे भय लग रहा था, उसकी आँखें परदे पर हुए काम पर जा टिकीं। उसने कैंपबेल को वह भारी बक्स और दूसरा सामान लाते सुना जिसकी उस भयानक कार्य की समाप्ति करने के लिये आवश्यकता थी। उसने आश्चर्य से सोचा कि क्या वह और बासिल कभी परस्पर मिले भी थे ! यदि हाँ, तो दोनों एक दूसरे के विषय में क्या विचार रखते थे।

"अब मुझे अकेला छोड़ दो।" उसने अपने पीछे एक कड़ी आवाज़ सुनी।

वह घूमकर बड़ी तेज़ी से बाहर चला गया। उसको केवल इतना ज्ञान था कि मृत व्यक्ति अब भी कुर्सी पर बैठा है और कैंपबेल उसके चमकते हुए पीले मुख को बड़े ध्यान से देख रहा है। जब वह सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था तब उसने अन्दर से कमरे को बन्द होते सुना।

सात बजे के बाद कैंपबेल पुस्तकालय में वापस लौटा। उसका मुख पीला पड़ा हुआ था, परन्तु वह बिल्कुल शान्त था। "जो तुमने मुझसे करने के लिये कहा था, वह मैंने कर दिया है।" उसने कहा—"और अब, नमस्कार ! यह अच्छा होगा यदि हम दोनों अब एक दूसरे को फिर कभी न देखें।"

"तुमने मुझे बरबाद होने से बचा लिया अलन ! मैं यह कभी भूल नही सकता।" डोरियन ने कहा।

कैंपबेल के जाते ही वह ऊपर गया। एक प्रकार की गैस की तेज़ दुर्गन्धि कमरे से आ रही थी। परन्तु जो वस्तु कुर्सी पर बैठी थी वह विलीन हो चुकी थी।

१५

उस शाम को साढ़े आठ बजे सज-धजकर, कोट के कालर में फूल लगाये डोरियन ग्रे लेडी नौरबरो के ड्राईंगरूम में आया। उसके माथे की नसें उसे पागल बना रही थीं और वह स्वयं ही बड़ा अस्वाभाविक हो रहा था। परन्तु जब वह लेडी नौरबरो का हाथ चूमने के लिये झुका, तब उसके व्यवहार में पहले की सी स्वाभाविकता और कोमलता थी। शायद नाटक में अभिनय करते समय भी कोई व्यक्ति इतनी स्वाभाविकता का प्रदर्शन नहीं कर सकता था। उस रात को डोरियन को देखकर कोई भी यह विश्वास नहीं कर सकता था कि हमारे युग की सब से बड़ी दुःखान्त घटना उस पर बीती होगी। उन कोमल अंगुलियों ने वह पाप करने के लिये कभी चाकू उठाया होगा, या उन मुस्कराते होठों ने कभी भगवान् को न पुकारा होगा। वह स्वयं ही अपनी शान्तिमयी मुद्रा और स्वाभाविक व्यवहार पर आश्चर्य कर रहा था और क्षण भर के लिये यह दोहरी जिन्दगी बिताने के लिये उसे बहुत भयानक प्रसन्नता होने लगी।

आज की पार्टी एक छोटी-सी पार्टी थी जिसका लेडी नौरबरो ने बहुत कम समय में आयोजन किया था। यह एक बहुत चालाक स्त्री थी जिसको लार्ड हेनरी भद्दी शक्ल का बचा-खुचा भाग कहा करता था। एक नीरस राजदूत की पत्नी बनकर इस स्त्री ने अपना पार्ट बड़ी सफलता से निभाया था। फिर अपने पति को अपने हाथ से ही डिजाइन की हुई संगमरमर की कब्र में सुलाकर, और अपनी पुत्रियों के विवाह अधेड़ उम्र के धनी व्यक्तियों से करके अब वह अपनी जिन्दगी फ्रैंच उप-

न्यासों, फ्रांस के खाने-पीने के सामानों में और जब कभी फ्रेंच सोसाइटी उसे मिल जाती थी—में बिता रही थी।

डोरियन उसके प्रियजनों में से एक था। वह सदा उससे कहा करती थी कि अपने जीवन में उससे पहले परिचय न होने पर वह बहुत ही प्रसन्न है। "मैं जानती हूँ कि मैं अवश्य ही तुम्हारे प्रेम-जाल में फँस जाती।" वह प्रायः कहा करती थी—"मैं तो अपने को बहुत भाग्यशाली समझती हूँ कि उस समय मुझे तुम्हारा विचार नहीं आया था। उस समय मैं किसी के साथ रोमांस तक नहीं कर सकी। इसमें मैं नौरबरो को ही दोषी समझती हूँ। उन्होंने कभी मुझ पर सन्देह किया ही नहीं और जो पति अपनी पत्नी की करतूतों की निगरानी नहीं करता उसके साथ विश्वासघात करने में भी आनन्द नहीं आता।"

उसके मेहमान भी बड़े नीरस मालूम देते थे। एक कोने में ले जाकर उसने डोरियन को इसका कारण समझाते हुए कहा कि उसकी एक विवाहिता पुत्री अचानक ही उसके पास रहने के लिये आ गई है और मामले को और भी बिगाड़ने के लिये वह अपने पति को भी साथ ले आई है। "मेरे विचार में उसे हम पर तनिक भी दया नहीं आई।" उसने धीमे स्वर में कहा—"यद्यपि होमबर्ग से वापस लौटकर मैं प्रत्येक गर्मी उनके पास काटती हूँ परन्तु मेरे जैसी बूढ़ी स्त्री को ताजी हवा की आवश्यकता पड़ जाती है। तुम नहीं जानते कि वे वहाँ पर किस प्रकार की जिन्दगी बिताते हैं। यह सीधी-सादी गाँव की जिन्दगी है। वे प्रातः जल्दी ही उठ जाते हैं क्योंकि उनको बहुत-सा काम करना पड़ता है और जल्दी ही सो जाते हैं क्योंकि उनके पास सोचने के लिए अधिक मसाला नहीं होता। रानी इलिजाबेथ के पश्चात् पास-पड़ोस में कोई ऐसी-वैसी घटना भी नहीं घटी। अतः रात्रि के भोजन के बाद वे एकदम सो जाते हैं। आज खाते समय मैं तुम्हें उनके पास नहीं बिठाऊँगी, तुम मेरे पास बैठकर मेरा मनोरंजन करोगे।"

डोरियन ने नम्रता से उसको धन्यवाद दिया और कमरे के चारों

ओर देखने लगा। अवश्य ही यह बड़े नीरस व्यक्तियों की पार्टी है। इनमें से दो को उसने पहले कभी नहीं देखा था। एक अधेड़ उम्र का अरनेस्ड हैरोडन था जो लन्दन के क्लबों में साधारण-सा व्यक्ति गिना जाता था। जिसका कोई शत्रु नहीं था, परन्तु जिसके मित्र भी जिसे अधिक पसन्द नहीं करते थे। लेडी रक्सटन—सैंतालीस वर्ष की मार्डन वस्त्रों से सुसज्जित एक स्त्री, उसकी तोते जैसी नाक थी और जो सदा ही अपने से विपरीत विचार वाले व्यक्ति के साथ बीच का रास्ता ढूँढ़ निकालती थी। उसकी सादगी की सीमा इतनी दूर तक पहुँच गई थी कि कोई भी व्यक्ति उसके विरुद्ध कही बात पर विश्वास नहीं करता था। जिससे उसको बहुत निराशा होती थी। श्रीमती एर्लीन—सब की बातों में टाँग अड़ाने वाली स्त्री जिसके बाल लाल रंग के थे और जो हर बात में 'स' को 'श' कहती थी। लेडी अलाइस चेपमेन-लेडी नौरबरो की पुत्री थी जो स्वभाव में अत्यन्त नीरस थी, जिसमें नारी की कोमलता नाममात्र को भी न थी, जिसका नख-शिख इस प्रकार का था कि जिसे देखकर कोई उसके चेहरे को याद नहीं रख सकता था। उसका लाल बालों वाला पति अपने ही ढंग का उन लोगों में से एक था जो इस बात पर विश्वास करते थे कि उनका असीमित हँसी-मजाक विचारों के अभाव को पूरा कर सकता है।

डोरियन को शोक हो रहा था कि वह व्यर्थ ही में इन लोगों की पार्टी में चला आया। परन्तु थोड़ी देर में दीवार पर टंगी हुई घड़ी की ओर देखकर लेडी नौरबरो ने कहा—"हेनरी ब्रटन ने इतनी देर लगा दी। आज प्रातःकाल ही मैंने उसके पास आदमी भेजा था और उसने वचन दिया था कि वह मुझे निराश नहीं करेगा।"

यह सोचकर कि हेनरी पार्टी में आवेगा उसे तनिक सांत्वना मिली। दरवाजा खुलते ही उसने उसका संगीत भरा स्वर सुना, जिसमें वह विलम्ब के लिये क्षमा मांग रहा था। डोरियन का ऊबना समाप्त हो गया था।

परन्तु भोजन के समय वह कुछ भी खा नहीं सका। एक के पश्चात् एक प्लेट छूकर वह वापस लौटाता रहा। लेडी नौरबरो उसे यह कह-कर डाँट रही थी कि उसके व्यवहार से अडोल्फ़ का अपमान हो रहा है क्योंकि उसने ही भोजन का चुनाव विशेषकर तुम्हारे लिये किया था। यदा-कदा लार्ड हेनरी भी मेज की दूसरी ओर उसके व्यवहार और उसकी चुप्पी को देखकर आश्चर्य कर रहा था। थोड़ी-थोड़ी देर पश्चात् नौकर उसका गिलास शैम्पेन से भर देता था जिसे वह बड़ी उत्सुकता से पीता था, परन्तु फिर भी उसे अपनी प्यास बढ़ती हुई जान पड़ती थी।

"डोरियन !" लार्ड हेनरी ने कहा, उस समय अन्तिम प्लेट लोगों के सम्मुख रखी जा रही थी—"तुम्हें आज क्या हो गया है, तुम्हारा व्यव-हार बड़ा विचित्र-सा है।"

"मेरे विचार में यह किसी के प्रेमपाश में फँसा हुआ है।" लेडी नौरबरो ने चिल्लाकर कहा—"और मुझे बताने में इसलिये डर रहा है कि कहीं मैं ईर्ष्या न करने लगूं। उसका विचार बिल्कुल ठीक है, मेरा ईर्ष्या करना स्वाभाविक ही होगा।"

"लेडी नौरबरो !" डोरियन ने मुस्कराकर कहा—"मुझे प्रेम किये एक सप्ताह बीत चुका है, जब से श्रीमती फैरल शहर से बाहर चली गईं तब से मैंने किसी से प्रेम नहीं किया।"

"तुम पुरुष उस स्त्री से किस प्रकार प्रेम कर सकते हो।" उसने कहा—"मैं इस बात को आज तक समझ नहीं सकी।"

"इसका केवल यह कारण है कि उसे तुम्हारे वे दिन याद हैं जब तुम एक छोटी-सी लड़की थीं।" लार्ड हेनरी ने कहा—"हमारे और तुम्हारी छोटी-छोटी फ्राकों को सिलाने वाली वही एक स्त्री है।"

"लार्ड हेनरी, उसे मेरी छोटी फ्राकों के विषय में कुछ भी याद नहीं। परन्तु तीस वर्ष पूर्व वियना में उसकी शक्ल मुझे भली-भाँति याद है। तब वह गुड़िया-सी दिखाई देती थी।"

"वह अब भी गुड़िया से कम नहीं।" उसने अपनी लम्बी-लम्बी उंग-

लियों में एक फूल दबाकर कहा—"जब वह नया गाऊन पहनती है तो एक रद्दी सी फ्रैंच उपन्यास की 'डी लक्स' प्रति दिखाई देती है। वह सचमुच ही एक बड़ी अजीब-सी स्त्री है जिसकी बातों को सुनकर तुम बार-बार आश्चर्य से उसे देखने लगोगे। अपने परिवार के प्रति उसका प्रेम वास्तव में अपनी सीमा को पार कर गया है। जब उसके तीसरे पति की मृत्यु हुई तो शोक में उसके बाल सुनहरे बन गये।"

"हेनरी, तुम ऐसी बातें किस प्रकार कर सकते हो?" डोरियन ने चिल्लाकर पूछा।

"यह रोमांटिक स्पष्टीकरण है।" लेडी नौरबरो ने हँसकर कहा। "परन्तु उसका तीसरा पति ! लार्ड हेनरी, तुम्हारा मतलब यह है कि फैरल उसका चौथा पति है?"

"निःसन्देह लेडी नौरबरो !"

"मैं तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं कर सकती।"

"तो डोरियन से पूछ लो। वह उसके अभिन्न मित्रों में से हैं।"

"क्या यह सत्य है मि० ग्रे?"

"लेडी नौरबरो ! उसने तो मुझ से यही कहा था।" डोरियन ने कहा—"मैंने उससे पूछा था कि क्या वह भी नेवेरे की भाँति उनके हृदय अपनी कमर की डोरी से लटकाये रखती है। उसने इन्कार कर दिया क्योंकि उनमें से किसी के पास भी हृदय नहीं था।"

"चार पति !" ओह वह स्त्री कोई भी काम करने का साहस कर सकती है। और फैरल कैसा है? मैं उसे नहीं जानती।"

"प्रत्येक सुन्दर स्त्री का पति हत्यारों की श्रेणी में गिना जाता है।" लार्ड हेनरी ने अपनी शराब पीते हुए कहा।

लेडी नौरबरो ने अपने पंखे से धीरे से उस पर प्रहार किया—"लार्ड हेनरी, संसार को तुम्हें बहुत ही बुरा व्यक्ति कहते देखकर मुझे आश्चर्य नहीं होता।"

"परन्तु संसार क्या कहता है?" लार्ड हेनरी ने अपनी भौहें ऊपर

चढ़ाकर पूछा—"यह बात तुम दूसरी दुनिया के विषय में कह सकते हो, मैं और वर्तमान दुनिया तो बड़ी अच्छी तरह आगे बढ़ रहे हैं।"

"मैं जिस व्यक्ति को जानती हूँ, उसकी तुम्हारे विषय में यही धारणा है।" इस बूढ़ी स्त्री ने अपनी गर्दन हिलाते हुए कहा।

लार्ड हेनरी कुछ क्षणों तक गम्भीर बना रहा। "यह बड़ी भयानक बात है।" अन्त में उसने कहा—"आजकल लोग किसी के पीठ पीछे उसके विषय में जो बातें कहते हैं, वे सच होती हैं।"

"लार्ड हेनरी की बात बिल्कुल सच है, क्यों?" डोरियन ने कुर्सी पर झुककर चिल्लाकर पूछा।

"मेरा भी यही विचार है।" लेडी नौरबरो ने हँसकर कहा—"परन्तु यदि तुम सब लोग इस प्रकार श्रीमती फैरल की पूजा करने लगे तो मुझे भी पुन: विवाह करना पड़ेगा जिससे मैं औरों से पीछे न रह जाऊँ।"

"लेडी नौरबरो, तुम कभी दूसरा विवाह नहीं कर सकतीं।" लार्ड हेनरी ने बात काटते हुए कहा—"तुम अपने विवाहित जीवन में बहुत सुखी थीं, जब कोई स्त्री पुन: विवाह करती है तो उसका कारण यह होता है कि वह अपने पहले पति से घृणा करती थी। पुरुष इस कारण से दूसरी शादी करता है क्योंकि वह अपनी पहली पत्नी को बहुत प्यार करता था। स्त्रियाँ अपने भाग्य की परीक्षा करती हैं और पुरुष अपने भाग्य को खतरे में डाल देते हैं।"

"नौरबरो कभी एक अच्छा पति नहीं था।" बूढ़ी स्त्री ने चिल्लाकर कहा।

"यदि वह अच्छा होता तो तुम कभी उससे प्रेम न करतीं।" हेनरी ने मुँहतोड़ जवाब दिया—"स्त्रियाँ हमें हमारे दोषों के कारण प्यार करती हैं। यदि हम में काफी दोष हैं तो वे हमारी दूसरी बातों को नहीं देखतीं हमारी बुद्धि और ज्ञान तक की चिन्ता नहीं करतीं। लेडी नौरबरो, यह सब कह लेने पर शायद तुम मुझे कभी अपनी पार्टी में निमंत्रित न करो, परन्तु यह बात बिल्कुल सत्य है।"

"निःसन्देह यह सच है लार्ड हेनरी। यदि हम लोग तुम्हारे अवगुणों के कारण तुम्हें पसन्द न करें, तब तुम सब लोगों का क्या होता ? तुममें से एक भी विवाहित न होता और बेचारे कुँवारों का एक बड़ा-सा झुंड बन जाता। यद्यपि उससे तुममें कोई परिवर्तन नहीं होता, क्योंकि आज-कल सब विवाहित लोग कुंवारों की भाँति रहते हैं और सब कुँवारे विवाहित लोगों की जिन्दगी बिताते हैं।"

"ओह !" लेडी नौरबरो ने दस्ताने उतारते हुए कहा—"डोरियन, मुझसे यह मत कहो कि तुम जिन्दगी से थक गये हो। जब एक व्यक्ति ऐसी बात कहता है तो वह जानता है कि जिन्दगी ने उसे थका दिया है। लार्ड हेनरी एक बिगड़ा हुआ व्यक्ति है और कभी मैं सोचती हूँ कि मैं भी वैसी ही बन सकती। परन्तु तुम्हें तो एक सदाचारी चरित्रवान युवक रहना है। तुम देखने-भालने में इतने सुन्दर हो। मैं तुम्हारे लिए एक अच्छी-सी पत्नी तलाश कर दूंगी। लार्ड हेनरी, क्या तुम नहीं समझते कि डोरियन को अब विवाह कर लेना चाहिए ?"

"लेडी नौरबरो, मैं तो हमेशा ही उससे यही कहता हूँ।" लार्ड हेनरी ने तनिक झुककर कहा।

"हमें उसके लिए उसके उपयुक्त ही एक पत्नी तलाश करनी चाहिये। आज रात को मैं वह सूचीपत्र जरा ध्यान से देखूंगी और सब युवतियों की एक लिस्ट तैयार कर लूंगी।"

"उनकी उम्रें भी लिख लेना लेडी नौरबरो।" डोरियन ने कहा।

"बेशक, लेकिन थोड़े परिवर्तन करके। परन्तु जल्दी से कोई काम नहीं करना चाहिए। 'मारनिंग पोस्ट' की भाँति मैं एक उपयुक्त जोड़ा देखना चाहती हूँ और तुम दोनों को प्रसन्न देखकर मुझे खुशी होगी।"

"लोग सुखी विवाह के विषय में न जाने क्या बकवास बकते हैं !" लार्ड हेनरी ने कहा—"जब तक एक व्यक्ति किसी स्त्री को प्यार नहीं करता उस समय तक वह किसी स्त्री के भी साथ प्रसन्न रह सकता है।"

"तुम्हें तो सब बातों में कोई न कोई दोष अवश्य दिखाई देता है।"

बूढ़ी स्त्री ने अपनी कुर्सी को पीछे खिसका कर लेडी रक्सटन की ओर देखते हुए कहा—"तुम जल्दी ही किसी दिन फिर मेरे साथ भोजन करना। सर एन्ड्रू जो टानिक मुझे लिखकर देता है तुम उससे अधिक लाभ मुझे अपनी बातों से पहुँचाते हो। तुम मुझे बतला देना कि तुम्हें किन लोगों का साथ पसन्द है। मैं एक अच्छी मनोरंजक पार्टी करना चाहती हूँ।"

"मैं उन लोगों को पसन्द करता हूँ जिनका भविष्य सुन्दर होता है और उन स्त्रियों को, जिनका अतीत अच्छा बीता हुआ है।" उसने उत्तर दिया।

वह हँसकर खड़ी हो गई—"लेडी रक्सटन, मुझे क्षमा करना।" उसने कहा—"मुझे पता नहीं चला कि तुमने कब अपनी सिगरेट समाप्त कर ली।"

"कोई बात नहीं लेडी नौरबरो ! मैं बहुत अधिक सिगरेट पीने लगी हूँ। भविष्य में मैं अब इनका नम्बर बाँध लूँगी।"

"लेडी रक्सटन, भगवान् के लिए ऐसा मत करना।" लार्ड हेनरी ने कहा—"किसी को बाँध लेने का बड़ा बुरा परिणाम होता है। किसी वस्तु का पर्याप्त मात्रा में उपयोग करना उतना ही बुरा है जितना कि घर में भोजन करना। और पर्याप्त मात्रा से अधिक उतना ही अच्छा है जितना कि बाहर किसी के घर दावत का आनन्द उठाना।"

लेडी रक्सटन ने बड़ी उत्सुकता से उसकी ओर देखा—"लार्ड हेनरी किसी दिन दोपहर के समय मेरे घर आकर तुम्हें इन बातों का मतलब मुझे समझाना ही पड़ेगा। तुम्हारा यह नया सिद्धान्त मुझे आकर्षक दिखाई देता है।" कमरे के बाहर जाते हुए उसने कहा—

"देखो, अपनी राजनीति या नये सिद्धान्तों में अधिक समय न लगाना।" लेडी नौरबरो ने दरवाजे से कहा—"यदि तुमने ऐसा किया तो ऊपर तुम्हें हमारे झगड़ने की आवाज सुनाई देगी।"

आदमी उनकी बात सुनकर हँस दिये। मि० चेपमेन चुपचाप मेज

के कोने से उठकर दूसरे कोने में आकर बैठ गये। डोरियन ने भी अपना स्थान बदला और लार्ड हेनरी के पास आकर बैठ गया। मि० चेपमेन बड़े तेज स्वर " कामन्स की सभा की स्थिति की चर्चा करने लगे। अपने शत्रुओं को उन्होंने बड़ी गालियाँ सुनाईं। एक ही शब्द को बार-बार दोहराना उन्हें अपनी स्पीच का प्राण प्रतीत हुआ।

लार्ड हेनरी के होठों पर मुस्कराहट की एक रेखा खिंच गई और घूमकर उसने डोरियन को देखा।

"क्या अब तुम कुछ अच्छे हो डोरियन ?" उसने पूछा—"भोजन के समय तुम बड़े उद्विग्न से दिखाई दे रहे थे।"

"हेनरी, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मैं कुछ थका हुआ हूँ, बस इसके अतिरिक्त और कोई कारण नहीं है।"

"कल रात को तुम बड़े सुन्दर दिखाई दे रहे थे। वह तो तुम्हारी ओर बुरी तरह से आकर्षित हुई दिखाई देती है। वह मुझसे कहती थी कि वह सैल्बी जा रही है।"

"उसने बीस तारीख को आने का वचन दिया है।"

"क्या मनमौथ भी वहीं होगा ?"

"ओह, हाँ हेनरी ! मैं तो उससे उतना ही तंग आ जाता हूँ, जितनी कि उसकी पत्नी उससे ऊब जाती है। वह एक स्त्री के नाते बहुत चालाक है। निर्बलता उसमें नाम मात्र को भी नहीं है। मिट्टी के बने हुए पाँव ही सोने की प्रतिमा को और भी मूल्यवान बना देते हैं। उसके पाँव भी बहुत सुन्दर हैं परन्तु वे मिट्टी के बने हुए नहीं हैं। ये वे श्वेत पाँव हैं जो आग में तपा-तपाकर शक्तिशाली बनाये गये हैं। आग जिसको नष्ट नहीं करती उसे बहुत दृढ़ बना देती है। उसे बहुत अनुभव हो चुके हैं।"

"उसके विवाह को कितने वर्ष बीत गये हैं ?" डोरियन ने पूछा।

"वह तो अपने विवाह को हुए एक जमाना बीत गया बतलाती है, परन्तु जहाँ तक मुझे पता है उसके विवाह को दस वर्ष बीत चुके हैं,

परन्तु मनमौथ के साथ दस वर्ष भी तो एक युग से कम नहीं। और कौन आ रहा है ?"

"ओह, विलवीग, लार्ड रगबी और उनकी पत्नी, लेडी नौरबरो, कलाउसटन और फिर वही अपनी पुरानी पार्टी। मैंने लार्ड ग्रौटरियन को भी निमंत्रित किया है।"

"मैं उसे बहुत पसन्द करता हूँ।" लार्ड हेनरी ने कहा—"बहुत से लोग उसे बुरा समझते हैं परन्तु मुझे तो वह बहुत आकर्षक प्रतीत होता है। कभी-कभी वेशभूषा और बनाव-श्रृंगार में बहुत आगे बढ़ जाने पर वह बहुत ज्ञान की बातें करके अपने अभाव को पूरा कर देता है। वह आधुनिक युग का प्रतीक है।"

"मुझे पक्का पता नहीं हेनरी कि वह आयेगा या नहीं। शायद उसे अपने पिता के साथ मौंटे कार्लो जाना पड़े।"

"ओह, किसी के घर वाले भी कभी-कभी उसके अभिशाप बन जाते हैं। कोशिश करो कि वह अवश्य आये। हाँ डोरियन, कल रात को तुम बहुत जल्दी घर लौट गये थे। ग्यारह बजे से पहले ही तुम चले गये थे। उसके बाद तुम क्या करते रहे ? क्या तुम सीधे घर गये थे।"

डोरियन ने जल्दी से क्रोधभरी एक दृष्टि उस पर डाली—"नहीं हेनरी।" अन्त में उसने कहा—"मैं तो रात के तीन बजे तक घर नहीं पहुँचा था।"

"तो क्या तुम क्लब चले गये थे ?"

"हाँ," उसने उत्तर दिया और अपना होंठ चबाया—"नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है। मैं क्लब नहीं गया था। मैं घूमता रहा। मैं भूल गया कि मैंने क्या किया। तुम भी हेनरी किस प्रकार छान-बीन करने बैठ जाते हो। तुम सदा यह जानना चाहते हो कि एक व्यक्ति क्या-क्या करता रहा और मैं जो कुछ कर चुका, उसे भूल जाना चाहता हूँ। यदि तुम मेरे घर लौटने का ठीक-ठीक समय मालूम करना चाहते हो तो सुनो, मैं पूरे ढाई बजे वापस लौटा था। मैं अपनी चाबी घर पर ही

भूल आया था इसलिए मुझे अपने नौकर को जगाना पड़ा था। यदि तुम्हें इस मामले का और कोई प्रमाण चाहिए तो तुम उससे पूछ सकते हो।"

लार्ड हेनरी ने कन्धे हिलाये—"लेकिन मुझे इसकी क्या आवश्यकता पड़ी है। चलो, ऊपर ड्राइंग रूम में चलें। नहीं मि० चेपमेन, मैं नहीं पिऊँगा। डोरियन, तुम्हें अवश्य ही कुछ न कुछ हो गया है। मुझे बताओ बात क्या है। आज रात को तुम अपने-आपे में नहीं हो।"

"हेनरी, मेरी बातों का ख्याल न करना। मैं तनिक उद्विग्न हूँ। मैं कल या अगले दिन तुम से मिलने आऊँगा। मेरी ओर से लेडी नौरबरो से क्षमा माँग लेना। मैं ऊपर नहीं आऊँगा। मैं घर जाऊँगा, मुझे घर जाना है।"

"अच्छी बात है डोरियन! मैं तुमसे कल शाम को चाय के समय ही मिलूँगा क्योंकि कल डचेस आ रही है।"

"मैं आने का प्रयास करूँगा हेनरी!" उसने बाहर जाते हुए कहा घर लौटते समय वह सोच रहा था कि किसी की हत्या करने का भय उसके मन में समा गया है। लार्ड हेनरी के प्रश्नों को सुनकर वह क्रोधित हो उठा, यद्यपि वह इस प्रकार बात-बात पर गुस्सा होना नहीं चाहता था। खतरनाक वस्तुओं को नष्ट कर देना है। वह भय से काँप उठा। उनको स्वयं स्पर्श करने का विचार ही उसे बुरा लगा।

फिर भी यह काम तो करना ही पड़ेगा। लाइब्रेरी में पहुंचकर उसने अन्दर से दरवाजे पर ताला लगा दिया और उसनें छिपे हुए बटन को दबाया जहाँ उसने हालवर्ड का कोट और बैग छिपा रखे थे। कमरे में चिमनी में एक बड़ी-सी आग जल रही थी। कपड़ों और चमड़े के जलने की दुर्गन्धि बहुत तेज थी। इन सब को समाप्त करने में लगभग पैंतालीस मिनट लगे। अन्त में वह बेहोशी और सिर दर्द अनुभव करने लगा। उसने कोई सुगन्धि कमरे में जलाई और ठंडे पानी से हाथ और माथा धोया।

यकायक वह चौंक पड़ा। उसकी आँखें चमकने लगीं और घबराहट के कारण वह अपना नीचे का होंठ चबाने लगा। दो खिड़कियों के बीच में वही सुन्दर लकड़ी का एक छोटा-सा बक्सा रखा था। वह उसे इस प्रकार देख रहा था मानो एक आकर्षक वस्तु को देखकर भय भी लगता हो, मानो उसकी तलाश वह बहुत दिनों से कर रहा था परन्तु अब उसे देखते ही वह ऊब चुका है। उसकी साँस तेजी से चलने लगी। एक पागलपन-सा उस पर सवार हो गया। उसने एक सिगरेट सुलगाई परन्तु फिर उसे फेंक दिया। उसकी आँखें झुकती गईं। जब तक वे उसके गालों का स्पर्श नहीं करने लगीं। परन्तु फिर भी वह बक्स को देखता रहा। अन्त में वह सोफे से उठा और उसके पास जाकर उसका ताला खोला, फिर किसी छिपे हुए बटन को दबाया। तिकोने आकार का एक छोटा-सा दराज़ बाहर निकलने लगा। उसकी उँगलियाँ शीघ्रता से आगे बढ़ीं और दराज़ को वहीं रोक लिया। उसने उसमें से एक छोटा-सा चीनी काम का एक डिब्बा निकाला और उसे खोला। अन्दर हरे रंग की कोई वस्तु थी जो चमक रही थी और जिसकी सुगन्धि बड़ी तेजी से कमरे में फैल रही थी।

अपने चेहरे पर एक अजीब-सी मुस्कान लिये वह कुछ क्षणों तक झिझका यद्यपि कमरे के अन्दर काफी गर्मी थी, फिर भी वह काँप रहा था, वह सँभला और घड़ी की ओर देखा। बारह बजने में बीस मिनट थे। डिब्बे को अन्दर रखकर उसने बक्स के ढक्कन को बन्द कर दिया और अपने सोने वाले कमरे में वापस लौट आया।

धुँधली रात थी। डोरियन ने बड़े साधारण से वस्त्र पहने और गले में एक मफ़लर लपेट लिया। फिर वह चुपचाप मकान से बाहर निकल गया। बौण्ड स्ट्रीट में उसे एक तेज घोड़े वाली गाड़ी दिखाई पड़ी। वह उसके अन्दर बैठ गया और ड्राइवर को धीमे स्वर में एक पता बतला दिया।

ड्राइवर ने अपनी गर्दन हिलाई। "यह तो बहुत दूर है।" उसने कहा।

"यह रही एक गिन्नी।" डोरियन ने कहा—"अगर तुम तेज़ चले तो एक और दूंगा।"

"अच्छी बात है हुज़ूर।" उसने उत्तर दिया—"आप एक घंटे में वहाँ पहुँच जायेंगे।" गिन्नी को अपनी जेब में रखकर उसने घोड़े को घुमा लिया और बड़ी तेज़ी से नदी की ओर बढ़ने लगा।

१६

पानी बरसने लगा था और रात के कोहरे में सड़क के धुंधले लैंप बड़े भयानक दिखाई दे रहे थे। होटल और रेस्ट्रां बन्द हो रहे थे जिससे पुरुषों और स्त्रियों के झुंड अपने घरों को वापस लौट रहे थे। कुछ मदिरालयों से डरावनी हँसी के ठहाके गूंज उठते थे और कुछ स्थानों पर वे लड़ते-झगड़ते और चिल्लाते हुए जान पड़ते थे। गाड़ी में अधलेटा हुआ डोरियन अपने पैर को माथे तक खिसका लाया था। वह अपनी स्थिर आँखों से इतने बड़े नगर के पतन को देख रहा था और बार-बार अपने आप से ही लार्ड हेनरी के शब्द दोहराता जा रहा था जो उसने अपनी पहली मुलाकात में उससे कहे थे। "आत्मा को इन्द्रियों द्वारा संतुष्ट करना और इन्द्रियों का इलाज आत्मा से करना चाहिए।" हाँ, यही एक रहस्य था। उसने बहुत बार इसका प्रयोग किया था और आज फिर इसकी परीक्षा लेगा। वहाँ कितने ही अफीम घर हैं जहाँ पैसे देकर मनुष्य अपने आपको भूल सकता है, जहाँ नये पापों की मादकता इतनी प्रबल होती है कि पुराने पापों की स्मृति फीकी पड़ जाती है।

चाँद आकाश में मृत व्यक्ति की पीली खोपड़ी की भाँति चमक रहा था। बार-बार बादलों का कोई बड़ा-सा भद्दी आकृति वाला टुकड़ा उसे

छिपा लेता था। बिजली के खम्भों का अन्तर अधिक होता जा रहा था और सड़कें तंग और अंधेरी होती जा रही थीं। एक बार ड्राइवर ग़लत रास्ते पर चला गया और उसे आधा मील तक वापस लौटना पड़ा। घोड़े के पाँव जब धरती से टकराते थे तब एक प्रकार का धुआँ सड़क से निकलने लगता था। गाड़ी की खिड़कियाँ धुंध से भर गई थीं।

'आत्मा का इन्द्रियों द्वारा और इन्द्रियों का आत्मा द्वारा इलाज करना।' ये शब्द किस प्रकार उसके कानों में गूँज रहे थे। उसकी आत्मा मृत्यु के समीप पहुँचती जा रही थी। क्या यह सत्य है कि इन्द्रियों को तृप्त करने से आत्मा को शान्ति मिलती है। उसने निरपराध रक्त बहाया है, उसके बदले वह कौन-सा काम करके अपना पाप धो सकता है? आह ! इसका कोई प्रायश्चित्त नहीं है। यद्यपि इस अपराध की क्षमा पाना असम्भव था परन्तु उसको भूल जाना तो सम्भव था। और उसने इस घटना को भूल जाने का दृढ़ निश्चय कर लिया था, वह इसकी स्मृति को अपने मस्तिष्क से बाहिर निकाल फैंकेगा। जिस प्रकार मक्खी के काटने पर उसे नष्ट कर दिया जाता है उसी प्रकार इस घटना को भी वह नष्ट कर देगा। जिस प्रकार बासिल ने उससे बातें कीं, उसे इसका क्या अधिकार था ? उसको किसने न्यायाधीश बनाया था ? उसने ऐसी भयानक बातें कही थीं जिनको सहन करना असम्भव था।

गाड़ी आगे खिसकती जा रही थी। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रत्येक कदम के साथ गाड़ी की यात्रा धीमी पड़ती जा रही है। उसने पाँव पटक-कर ड्राइवर से तेज चलने के लिये कहा। अफीम के लिये उसकी भूख और भी तेज हो गई। उसका गला जलने लगा और उसके कोमल हाथ घबराहट में मुट्ठियों में बदल गये। उसने अपनी छड़ी से जोर से घोड़े पर प्रहार किया। ड्राइवर हँस पड़ा और उसने स्वयं चाबुक मारी। उसके उत्तर में वह हँस दिया जिससे ड्राइवर चुप हो गया।

रास्ता कभी समाप्त न होने वाला जान पड़ता और सड़कें मकड़ी के जाले के समान प्रतीत होने लगीं। वह इस एकाकीपन से ऊब गया था

और धुंध के गहरे होने के साथ-साथ उसे भय लगने लगा।

तब वे सुनसान ईंटों के ढेरों को पार करने लगे। यहाँ पर धुंध कुछ कम थी। अतः बोतल के मुंह के समान चिमनियाँ और आग की लपटें दिखाई देने लगीं। उन्हें जाते देखकर कुत्ता भौंकने लगा और दूर अन्धकार में गीदड़ के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। घोड़ा एक बार एक गड्ढे में फँस गया, फिर उससे एक ओर डरकर बड़ी तेजी से आगे भागा।

कुछ समय पश्चात् मिट्टी की कच्ची सड़क छोड़कर वह दूसरी सड़क पर आ गये। मकानों की खिड़कियाँ अन्धेरी थीं और जब कभी सड़क के लैंप का प्रकाश उन पर पड़ता था तो बड़ी भयानक परछाइयाँ दिखाई देती थीं। वह बड़ी उत्सुकता से इन्हें देखता जा रहा था। वे उसे जीती जागती मूर्तियाँ जान पड़ती थीं। धीरे-धीरे वह उनसे घृणा करने लगा। एक प्रकार का क्रोध उसके मन में उबलने लगा। ज्योंही उसकी गाड़ी एक मोड़ पर मुड़ी तभी एक स्त्री खुले दरवाजे से चिल्लाई और दो व्यक्ति लगभग सौ गज़ तक गाड़ी के पीछे-पीछे भागे। ड्राइवर ने अपनी चाबुक से उन्हें मार भगाया।

यह कहा जाता है कि वासना के वशीभूत हुआ व्यक्ति एक गोलाकार में ही सोचता रहता है। बार-बार डोरियन ग्रे के दबे हुए होंठ आत्मा और इन्द्रियों के उस वाक्य को ही दोहरा रहे थे जब तक कि उनका पूरा मतलब उसकी समझ में नहीं आया। बार-बार उसके मस्तिष्क में एक ही विचार घुड़दौड़ लगाता रहा और जीने की प्रबल इच्छा और भी अधिक वेग से उसकी काँपती नसों में समा गई। कुरूपता को वह सदा इस कारण से घृणा की दृष्टि से देखता था क्योंकि यह वस्तुओं की वास्तविकता दिखलाती थी परन्तु अब इसी कारण से वह उसे प्रिय लगने लगी। लोगों का अश्लील लड़ाई झगड़ा, तंग मकान, अनिश्चित जिन्दगी, चोरों और समाज के बहिष्कृत लोगों का भद्दापन, ये सब कला की सुन्दर और कोमल आकृतियों और संगीत के स्वप्नमय वातावरण से अधिक वास्तविक हैं। पुरानी घटना को भुला देने के

लिये उसे इन्हीं चीजों की आवश्यकता थी। तीन दिन में वह स्वतन्त्र हो जायेगा।

अचानक ही एक अंधेरी गली में गाड़ी खड़ी हो गई। मकानों की छतों और चिमनियों के पीछे नदी में जहाजों के ऊँचे मस्तूल दिखाई दे रहे थे। सफेद धुंध के बादल जहाजों की रस्सियों में उलझ गये मालूम देते थे।

"यहीं कहीं वह मकान है हुजूर ?" उसने शीशे में से अस्पष्ट स्वर में कहा। डोरियन ने चौंककर अपने चारों ओर देखा। "बस, मुझे यहीं उतार दो।" उसने उत्तर दिया। गाड़ी से जल्दी ही नीचे उतरकर और ड्राइवर को इनाम देकर वह तेजी से उस गली में मुड़ गया। कभी-कभी बड़े जहाज पर रोशनी चमक उठती थी और पानी में उसकी परछाईं बिखर जाती थी। विदेश जाने वाला एक जहाज कोयला भर रहा था जिसकी लाल रोशनी चमक रही थी। गंदी पटरी वह एक गीले कपड़े की भाँति जान पड़ती थी।

वह तेज़ी से बाईं ओर मुड़ गया और बार-बार पीछे मुँह कर देख लेता था कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा। सात या आठ मिनट के पश्चात् वह एक छोटे-से पुराने मकान के सामने पहुँच गया जो दो फैक्टरियों के बीच में खड़ा था। ऊपर की एक खिड़की में लैंप जल रहा था। वह वहीं रुक गया और एक विशेष ढंग से दरवाज़ा खट-खटाया।

कुछ देर पश्चात् उसने अन्दर किसी की आहट सुनी और फिर अन्दर से जंजीर खुल गई। दरवाज़ा चुपचाप खुल गया और वह बिना एक भी शब्द कहे दरवाज़ा खोलने वाले की छाया को चीरता हुआ अन्दर चला गया। हाल के अन्त में एक हरे रंग का परदा लटक रहा था जो दरवाज़ा खुलने पर हवा का झोंका आने से हिलने लगा। उसने परदे को एक ओर खिसका दिया और एक लम्बे से ज़रा नीची सतह-वाले कमरे में प्रवेश किया जिसका किसी दिन एक तीसरे दर्जे के नृत्य-

गृह के रूप में उपयोग किया जाता था। गैस की बत्तियां दीवार पर लगी थीं जिनकी परछाईं शीशे में पड़ती थी। फर्श पर पीले रंग की चटाई बिछी थी जहाँ स्थान-स्थान पर मिट्टी लगी हुई थी और जिस पर गिरी शराब के गहरे निशान बन गये थे। कुछ मलाया के लोग एक छोटे से चूल्हे के पास बैठे कोई खेल खेलने में मग्न थे और बातें करते समय अपने सफेद दाँत चमकाते थे। एक कोने में एक मल्लाह मेज़ पर अपने सिर को हाथों से थामे बैठा था। उस कमरे में एक ओर मदिरा-लय बना हुआ था जहाँ पर दो पीले मुख वाली स्त्रियाँ एक बूढ़े व्यक्ति का मजाक बना रही थीं, जो तंग आकर अपने कोट के बाहों को झाड़ रहा था। "यह समझता है कि इसमें लाल चींटियाँ आगई हैं।" डोरि-यन को पास से गुज़रते देखकर उनमें से एक ने हँसकर कहा। उस आदमी ने भय से उस स्त्री की ओर देखा और धीमे स्वर में चिल्लाया।

इस कमरे के अन्त में छोटी-सी सीढ़ियाँ बनी हुई थीं जो और भी एक अँधेरे कमरे की ओर ले जाती थीं। ज्यों ही डोरियन तेज़ी से सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, अफीम की तेज़ दुर्गन्ध से उसकी नाक भर गई। उसने एक लम्बी साँस ली और उसकी नासिका प्रसन्न हो गई। जब वह अन्दर घुसा तभी कोमल पीले बालों वाला एक युवक जो लैंप की ओर झुका हुआ एक मोटा पाइप जला रहा था, ने डोरियन की ओर देखा और झिझक के साथ उसका अभिवादन किया।

"सिंगलरन, तुम यहाँ?" डोरियन ने पूछा।

"और कहाँ जाता?" उसने उत्तर दिया। "अब मेरा कोई भी साथी मुझ से बात तक नहीं करता।"

"मैंने तो सोचा था कि तुम इङ्गलैंड से बाहर चले गये हो।"

"डार्लिगटन अब मेरी कोई सहायता नहीं करेगा। आखिर मेरे भाई को ही मेरा बिल चुकाना पड़ा। जार्ज भी मुझसे नहीं बोलता... मैं किसी की चिन्ता नहीं करता।" उसने एक आह भर कर कहा— "जब तक मनुष्य के पास यह वस्तु है तब तक उसे मित्रों की आव-

श्यकता नहीं। मेरा विचार है कि मेरे मित्र संख्या में बहुत अधिक बढ़ गये थे।

डोरियन भय से काँप उठा और अपने सामने उन भयानक वस्तुओं को देखा जो चटाइयों पर बिखरी पड़ी थीं। टेढ़ी नसें, खुले हुए मुख, प्रकाशहीन आँखें इन सबने उसे अपनी ओर आकर्षित किया। वह जानता था कि ये सब लोग किस प्रकार के स्वर्ग में अपनी जिन्दगी बिता रहे हैं और किस प्रकार के नरक के किसी नये सुख का रहस्य उन लोगों को समझा रहे हैं। वे सब उससे अच्छी स्थिति में थे। उसे तो विचारों ने कैद कर रखा था। एक भयानक संगीत की भाँति स्मृति उसकी आत्मा को खाये जा रही थी। समय-समय पर उसे बासिल हालवर्ड के नेत्र अपनी ओर देखते हुए जान पड़ते थे। फिर भी उसने अनुभव किया कि वह वहाँ ठहर नहीं सकता। सिंगलटन की उपस्थिति से उसे कम वेदना नहीं मिल रही थी। वह ऐसे स्थान पर जाना चाहता था जहाँ उसे कोई भी पहचानता न हो। वह अपने से ही भागना चाहता था।

"मैं एक दूसरे स्थान पर जा रहा हूँ।" उसने थोड़ी देर ठहर कर कहा।

"क्या तटवाले मकान पर ?"

"हाँ।"

"वह पागल स्त्री वहाँ जरूर होगी, यहाँ पर तो लोग उसे घूमने नहीं देते।"

डोरियन ने अपने कंधे हिलाये। "मैं उन स्त्रियों से तंग आगया हूँ जो एक पुरुष को प्यार करती हैं। एक पुरुष से घृणा करने वाली स्त्रियां अधिक दिलचस्प होती हैं फिर उनमें कुछ अच्छा मसाला मिलता है।"

"सब जगह एक ही सा है।"

"आओ, मेरे साथ कुछ पियो, मैं कुछ पिऊँगा।"

"मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं।" युवक ने कहा।

"कोई बात नहीं।"

सिंगलटन थका हुआ खड़ा हो गया और डोरियन के पीछे-पीछे मदिरालय तक आया। एक पुरानी पगड़ी पहने एक नौकर ने ब्रांडी की एक बोतल और भोजन उनके सामने रख दिये और अपने दाँत निकाल-कर स्वागत किया। स्त्रियाँ उनके पास आकर परस्पर बातें करने लगीं। डोरियन ने पीठ मोड़ ली और धीमे स्वर में सिंगलटन से कुछ कहा।

उनमें से एक स्त्री के होठों पर बड़ी विकृत मलाया के लोगों की भाँति मुस्कान की एक रेखा खिंच गई—"आज रात को हमें गर्व होना चाहिये।" उसने कहा।

"परमात्मा के लिये मुझसे बातें मत करो।" डोरियन ने अपना पाँव पृथ्वी पर पटकते हुए कहा—"तुम क्या चाहती हो? रुपया? यह रहा। अब फिर कभी मुझ से मत बोलना।"

स्त्री की उदास आँखों में दो लाल रोशनियाँ क्षण भर के लिए चमक उठीं और फिर विलीन होगईं। उसके नेत्र पुनः ज्योतिहीन हो गये। उसने अपना सिर हिलाया और लालची उँगलियों से हाथ बढ़ाकर वह सिक्का उठा लिया। उसकी साथिन ने उसे ईर्ष्या की दृष्टि से देखा।

"अब इसका कोई लाभ नहीं।" सिंगलटन ने आह भरते हुए कहा—"मुझे वापस लौटने की बिल्कुल चिन्ता नहीं। इसका कोई महत्व नहीं रहा। मैं यहाँ प्रसन्न हूँ।"

"यदि तुम्हें किसी चीज़ की आवश्यकता पड़े तो मुझे सूचना दोगे न?" डोरियन ने तनिक रुककर पूछा।

"शायद दूं।"

"अच्छा, नमस्कार।"

"नमस्कार!" युवक ने सीढ़ियाँ उतरते हुए उत्तर दिया और अपने बन्द होठों को रूमाल से पोंछा।

अपने मुख पर वेदना की गहरी छाप लिये डोरियन दरवाज़े तक गया। ज्यों ही उसने परदे को एक ओर खिसकाया, तभी उस स्त्री के

रँगे हुए होंठों से एक विकृत हँसी फूट पड़ी, यह वही स्त्री थी जिसे उसने सिक्का दिया था। "वह व्यक्ति जा रहा है जिसने प्रेत से सौदा किया हुआ है।" उसने अपने नीरस भद्दे स्वर में कहा।

"तुम्हारा नाश हो।" उसने उत्तर दिया—"मुझे यह कहकर मत पुकारो।"

उसने अपनी उँगलियाँ दबाईं—"तुम अपने-आपको 'सुन्दर युवराज' सुनना चाहते हो, यही बात है न ?" वह उसके पीछे तक गई।

इस स्त्री की बात सुनकर ऊँघता हुआ मल्लाह चौकन्ना होकर खड़ा हो गया और पागलपन से चारों ओर देखने लगा। हाल के दरवाजे को बन्द होते उसने सुना। वह तेज़ी से बाहर की ओर दौड़ा मानो किसी की खोज में हो।

उस बूँदाबांदी में डोरियन गली में तेज़ी से आगे बढ़ने लगा। सिंगलटन से भेंट करके उसका हृदय पसीज गया था और वह आश्चर्य से सोचने लगा कि क्या इस युवक के पतन का कारण वह स्वयं ही है ? जैसा कि बासिल हालवर्ड ने उसका अपमान करके यह दोष उस पर मढ़ा था। उसने अपने होंठ चबाये और उसकी आँखों में एक प्रकार की उदासी छा गई। फिर उसने सोचा कि उसे इन बातों से क्या मतलब ? एक मनुष्य की जिन्दगी इतनी छोटी होती है कि दूसरे की गलतियों का भार अपने कन्धों पर लेना महान् मूर्खता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिन्दगी बिताता है और उसके लिये स्वयं उसका मूल्य चुकाता है। परन्तु दुःख की बात इतनी ही है कि मनुष्य को एक गलती के लिये कितनी जल्दी-जल्दी और कितनी ही बार उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। मनुष्य के साथ हिसाब-किताब रखते समय भाग्य कभी उस हिसाब को बन्द नहीं करता। जैसा कि मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि मनुष्य की जिन्दगी में कुछ ऐसे क्षण भी होते हैं। जब पाप करने की भावना—या संसार जिसको पाप कहता है—मनुष्य के स्वभाव को इस प्रकार अपने अधीन कर लेती है कि उसके शरीर की प्रत्येक नस, उसके मस्तिष्क का

प्रत्येक परमाणु भयभीत विचारों के वशीभूत हो जाता है। इन क्षणों में प्रत्येक पुरुष और स्त्री अपनी आत्मा की स्वतन्त्रता को खो बैठता है। वह अपने भयानक अन्त की ओर स्वयं ही आगे बढ़ता जाता है। कुछ सोच-समझकर अपना रास्ता चुनने की शक्ति लुप्त हो जाती है, और उनकी आत्मा का या तो अन्त हो जाता है, अन्यथा वह उस रूप में रहती है कि मन में उठती विद्रोह की भावनाओं का साथ देती है, उलटे रास्तों को अपनाने में हाथ बँटाती है। धर्म के पुजारी कभी हम लोगों को यह बताते-बताते नहीं थकते कि सारे पाप किसी सिद्धान्त को न मानने पर ही उपजते हैं।

निरन्तर द्वन्द्वों से पके होकर, पाप करने पर तुला हुआ, थका हुआ मस्तिष्क, और विद्रोह के लिए इच्छुक आत्मा लिये डोरियन तेज़ी से आगे कदम बढ़ाता जा रहा था। ज्योंही उसने एक अंधेरे खंडहर के बीच पाँव रखा—उस बदनाम स्थान पर जाने के लिए यह खंडहर वाला रास्ता छोटा पड़ता था—तभी उसने अचानक अनुभव किया कि किसी ने उसे पीछे से पकड़ लिया है और अपनी रक्षा के लिये कुछ भी करने से पूर्व उसको धकेल कर दीवार के सहारे खड़ा कर दिया गया और एक शक्तिशाली हाथ ने उसका गला दबा दिया।

उसने एक पागल की भाँति अपनी जिन्दगी के लिए संग्राम किया परन्तु और बड़ी कठिनता के साथ उसने उन शक्तिशाली उँगलियों को अपनी गर्दन से दूर किया। क्षण भर में उसने पिस्तौल की क्लिक सुनी और चमकती हुई पिस्तौल का मुख अपने सिर की ओर देखा। तभी उसे अपने सामने छोटे से कद का साँवले रंग का व्यक्ति दिखाई दिया।

"तुम मुझसे क्या चाहते हो?" उसने डाँटते हुए पूछा।

"चुप रहो।" उस व्यक्ति ने कहा—"यदि तुम ज़रा भी हिले तो मैं गोली मार दूंगा।"

"तुम पागल हो गये हो, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

"तुमने सिबल वेन की जिन्दगी नष्ट कर डाली।" उसने उत्तर

दिया—"और सिबल वेन मेरी बहन थी। उसने अपनी हत्या कर ली, मैं इसे जानता हूँ। उसकी मृत्यु का कारण केवल तुम ही हो। मैंने सौगन्ध खाई थी कि उसके बदले में मैं तुम्हारी हत्या कर डालूँगा। वर्षों से मैं तुम्हें ढूँढ रहा था परन्तु मुझे तुम्हारा कोई पता नहीं मिला, कोई समाचार तक नहीं मिल सका। जो दो आदमी तुम्हारे विषय में कुछ जानते थे वे मर चुके हैं। जिस नाम से तुम्हें वह पुकारा करती थी उसके अतिरिक्त मैं कुछ भी नहीं जानता था। आज रात को अचानक ही वह मुझे सुनाई दिया। परमात्मा की प्रार्थना कर लो, क्योंकि आज तुम्हें मरना है।"

डोरियन भय से काँप उठा। "मैं उसे कभी नहीं जानता था।" उसने हकलाते हुए कहा—"मैंने कभी उसका नाम तक नहीं सुना, तुम पागल हो गये हो।"

"तुम अपने पापों का प्रायश्चित्त कर लो, जितना सत्य मेरे जेम्स वेन होने में है, उतना ही आज तुम्हारी मृत्यु में है।" डोरियन के लिए यह बहुत भयानक क्षण था। वह क्या कहे या क्या करे, इसका पता उसे नहीं था। "घुटनों के बल झुक जाओ।" उस आदमी ने चिल्ला कर कहा—"प्रार्थना करने के लिए मैं तुम्हें एक मिनट देता हूँ, इससे अधिक नहीं। मैं आज भारत जा रहा हूँ और जाने से पहले अपना काम समाप्त कर लेना चाहता हूँ। एक मिनट, इससे अधिक नहीं।"

डोरियन के दोनों हाथ वृक्षों की शाखा की भाँति दोनों ओर झूलने लगे। भय से सुन्न हुआ डोरियन समझ नहीं सकता था कि वह क्या करे। अचानक आशा की एक किरण से उसका मस्तिष्क चमक उठा। "ठहरो!" उसने चिल्लाकर कहा—"तुम्हारी बहन को मरे कितना समय बीत चुका है? जल्दी से मुझे बताओ।"

"अठारह वर्ष!" उसने उत्तर दिया—"तुम मुझसे यह क्यों पूछते हो? वर्षों को इससे क्या मतलब?"

"अठारह वर्ष !" डोरियन ग्रे हँस दिया, उसके स्वर में विजय दिखाई दे रही थी।"

"अठारह वर्ष ! किसी लैम्प की रोशनी में ले जाकर मेरे चेहरे को देखो।"

जेम्स वेन क्षण भर के लिये झिझका, वह डोरियन का मतलब नहीं समझ सका। तब वह डोरियन ग्रे को पकड़ कर उसे खंडहर से बाहर ले आया।

तेज हवा के चलने से यद्यपि रोशनी धीमी पड़ गई थी और हिल रही थी फिर भी उसे अपनी ग़लती स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी। जिस व्यक्ति की वह हत्या करने जा रहा था उसकी शक्ल पर बालक के सारे चिन्ह थे, यौवन की सारी पवित्रता थी। वह उसे बीस वर्ष से जरा अधिक उम्र का जान पड़ा। वर्षों पूर्व जब वह अपनी बहन से अलग हुआ था उसी उम्र का यह जान पड़ा। उसे दृढ़ विश्वास हो गया कि यह वह व्यक्ति नहीं है जिसने सिबल की जिन्दगी नष्ट की थी।

उसने अपने कदम पीछे हटा लिये। "हे भगवान् !" वह चिल्लाया—"और मैं तुम्हारी हत्या करने वाला था !"

डोरियन ग्रे ने एक लम्बी साँस ली। "तुम अभी अभी एक बड़ा भारी पाप करने जा रहे थे। उसने कड़ी दृष्टि से देखते हुए कहा—"इस अवसर से चेतकर तुम यह प्रतिज्ञा कर लो कि किसी आदमी से बदला लेना तुम्हारा काम नहीं है।"

"मुझे क्षमा करो !" जेम्स वेन ने धीमे स्वर में कहा—"मुझे धोखा हुआ था। उस मकान में एक परिचित शब्द सुनकर मैं ग़लत रास्ते पर निकल पड़ा था।

"अच्छा हो कि तुम अब घर लौट जाओ और पिस्तौल अलग रख दो अन्यथा तुम पर कोई विपत्ति आ सकती है।" डोरियन ने कहा और वह धीरे-धीरे अपनी सड़क पर चला गया।

जेम्स वेन भयभीत होकर पटरी पर खड़ा रहा। वह सिर से पाँव

तक काँप रहा था। थोड़ी देर पश्चात् बारिश से भीगती हुई दीवार पर अपनी काली परछाईं डालती हुई एक स्त्री प्रकाश में आई और चुपके-चुपके कदम बढ़ाती हुई उसके बिल्कुल समीप आगई। उसने अपनी बाँह पर किसी के हाथ का अनुभव किया और चौंक कर पीछे मुड़कर देखा। यह वही स्त्री थी जो मदिरालय में शराब पी रही थी।

"तुमने उसे मार क्यों नहीं दिया ?" उसने अपना विकृत मुख उसके मुख के बिल्कुल समीप ले जाकर धीमे स्वर में पूछा—"जब तुम उस मकान से बाहर भागे तो मैं समझ गई थी कि तुम उसका पीछा कर रहे हो। तुम बिल्कुल मूर्ख रहे। तुमने उसे मार दिया होता। उसके पास बहुत-सा धन है और वह बहुत-बहुत ही खराब आदमी है।"

"जिस आदमी को मैं खोज रहा था, यह वह व्यक्ति नहीं है।" उसने उत्तर दिया—"और मुझे किसी व्यक्ति के धन की आवश्यकता नहीं है। मैं एक आदमी की जिन्दगी चाहता हूँ। जिस व्यक्ति के प्राणों की मुझे जरूरत है उसकी अवस्था चालीस के लगभग होनी चाहिए। यह आदमी अभी लड़का-सा ही था। परमात्मा का धन्यवाद कि इसके रक्त से मैंने अपने हाथ नहीं रंगे।"

वह स्त्री एक क्रूर हँसी हंस दी। "वह लड़का है!" वह हँसी—बारह वर्ष पहले ही इस सुन्दर युवराज ने मुझे वह बना दिया जो तुम मुझे आज देख रहे हो।

"तुम झूठ बोल रही हो।" जेम्स वेन चिल्लाया।

उसने अपने हाथ ऊपर आकाश की ओर उठाये—"भगवान् को साक्षी करके कहती हूँ कि मैं सच बोल रही हूँ।" उसने चिल्लाकर कहा।

"परमात्मा को साक्षी करके ?"

"यदि मैं झूठ बोलूं तो मेरी हत्या कर देना। यहाँ जितने लोग आते हैं, यह उनमें सबसे गया बीता है। लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने एक सुन्दर मुख के बदले अपने आप को प्रेत के हाथों बेच डाला है। अठारह वर्ष पूर्व मैं इससे मिली थी। तब से लेकर आज तक इसमें कोई विशेष

परिवर्तन नहीं हुआ है यद्यपि मैं बहुत बदल गई हूँ।" उसने एक भद्दी वेदना भरी हँसी में कहा।

"तुम सौगन्ध खाती हो कि तुम सच कह रही हो ?"

"मैं सौगन्ध खाती हूँ।" उसके नीरस गले से मानो प्रतिध्वनि गूंजी हो—"परन्तु उसके सामने मेरा नाम मत लेना।" उसने कहा—"मुझे उससे डर लगता है। रात्रि बिताने के लिए मुझे कुछ सिक्के दो।"

वह प्रतिज्ञा करके सड़क के कोने की ओर बड़ी तेजी से भागा, परन्तु डोरियन ग्रे विलीन हो चुका था। जब उसने पीछे मुड़कर देखा तो वह स्त्री भी गायब हो गई थी।

१७

एक सप्ताह पश्चात् डोरियन ग्रे सैल्बी में अपने फूल-पौधों वाली वाटिका में बैठा हुआ मनमौथ की सुन्दर डचेस के साथ बातें कर रहा था। डचेस और उसका साठ वर्ष का निर्बल और थका हुआ पति दूसरे मेहमानों के पास सैल्बी में आये हुए थे। यह चाय का समय था और मेज पर रखे, लेस से ढके हुए बड़े लैम्प का प्रकाश चीनी और चाँदी के बर्तनों को चमका रहा था। उसके गोरे-गोरे हाथ प्यालों को बड़े सुन्दर ढंग से सजा रहे थे और डोरियन ने उसके कान में जो बात कही थी उसे सुनकर उसके लाल-लाल होंठ मुस्करा रहे थे। लार्ड हेनरी रेशमी गद्दों से ढंकी हुई एक आराम कुर्सी पर लेटा हुआ उनकी ओर देख रहा था। पीले रंग के एक सोफे पर बैठी हुई लेडी नौरबरो ड्यूक के उन कीड़ों का वर्णन सुनने का प्रदर्शन कर रही थी जो उसने अभी ब्राजील से मँगाये थे। तीन जवान आदमी साफ-सुथरे वस्त्र पहने चाय के बर्तन पार्टी की

स्त्रियों को दे रहे थे। इस घर की पार्टी में कुल चौदह व्यक्ति थे और कुछ अन्य लोगों के आने की सम्भावना कल थी।

"तुम दोनों क्या बातचीत कर रहे हो ?" लार्ड हेनरी ने मेज के पास जाकर अपना प्याला मेज पर रखते हुए पूछा—"ग्लैडिज, मेरे विचार में शायद डोरियन ने तुमको प्रत्येक वस्तु का नाम बदलने की योजना बतला दी है। बड़ा मनोरंजक विचार है।"

"परन्तु मैं अपना नाम बदलना नहीं चाहती हेनरी।" डचेस ने उसकी ओर अपनी सुन्दर आँखें उठाई और कहा—"मुझे अपने नाम पर सन्तोष है, और मेरा विश्वास है कि डोरियन भी अपने नाम से सन्तुष्ट होगा।"

"प्रिय ग्लैडिज, मैं संसार के बदले में भी तुम दोनों का नाम नहीं बदलूंगा। ये दोनों नाम संपूर्ण हैं। मैं तो मुख्य रूप से फूलों के विषय में सोच रहा था। कल मैंने अपने कोट के लिए एक फूल तोड़ा। वह बहुत ही सुन्दर था और उतना ही प्रभावशाली था जितने कि संसार के सात महापाप होते हैं। अपने विचार में मग्न मैंने एक माली से उस फूल का नाम पूछा। उसने बतलाया कि यह 'रोबिन सोनिवाना' या उसी की जाति का कोई फूल है। यह दुःखदायी सत्य है और वस्तुओं के सुन्दर नाम रखने की हमारी भावना लुप्त हो गई जान पड़ती है। नाम ही सब कुछ है, मैं कभी उनके काम से नहीं झगड़ता कि वे क्या करते हैं, शब्दों से मेरी लड़ाई अवश्य रहती है। इसी कारण से मैं साहित्य में अश्लील वास्तविकता से घृणा करता हूँ।"

"तब हम तुमको क्या कहकर पुकारा करें हेनरी ?" उसने पूछा।

"हेनरी का नाम युवराज पैराडाक्स है।" डोरियन ने कहा।

"अब मैं क्षण भर में हेनरी को समझ गई।" डचेस ने कहा।

"मैं इसे नहीं मानता।" लार्ड हेनरी ने कुर्सी पर बैठते हुए हँसकर कहा—"अपने ऊपर कोई लेबल चिपकाकर छुटकारा पाने का कोई रास्ता नहीं है। मैं लेबल लगाने से इन्कार करता हूँ।"

"लेबल न लगाने से शासन करने का अधिकार नहीं रहता।" उसके सुन्दर होठों ने चेतावनी दी।

"तब तुम मुझे अपने सिंहासन की रक्षा करने को कहती हो ?"

"हाँ।"

"मैं आने वाले कल का सत्य बतलाता हूँ।"

"और मैं आज की ग़लतियों को अधिक महत्त्व देती हूँ।" उसने उत्तर दिया।

"तुमने मुझे निहत्था कर दिया ग्लैडिज़ !" डचेस की मुद्रा को देखकर उसने हँसकर कहा।

"मैंने तुम्हारी ढाल छीनी है, तलवार नहीं।"

"मैं सौन्दर्य के विरुद्ध कभी संग्राम नहीं करता।" उसने अपना हाथ हिलाते हुए कहा।

"मेरा विश्वास करो हेनरी, यह तुम्हारी ग़लती है। तुम सौन्दर्य को बहुत महत्व देते हो।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो ? यह मैं स्वीकार करता हूँ कि 'अच्छा' होने की अपेक्षा सुन्दर होना मुझे अधिक पसन्द है, परन्तु दूसरी ओर यह भी तो मैं दावे के साथ कहता हूँ कि कुरूप होने की अपेक्षा 'अच्छा' होना मेरे लिए अधिक महत्वपूर्ण है।"

"कुरूपता तब संसार के सात महापापों में से एक है !" डचेस ने चिल्लाकर पूछा—"तब तुम्हारी उस फूल की तुलना का क्या हुआ ?"

"ग्लैडिज़, कुरूपता संसार के सात महागुणों में से हैं। सच्चे टोरी होने के नाते तुम उसका महत्व क्यों कम करती हो ? शराब, बाइबल और सात महागुणों ने इंगलैण्ड को वह बना दिया है जैसा कि आज तुम उसे देख रही हो।"

"तब तुम्हें अपना देश पसन्द नहीं, क्यों ?" उसने पूछा।

"मैं इस देश में रहता हूँ।"

"यदि तुम इसे 'सेंसर' कर दो तो अच्छा रहेगा।"

"क्या तुम यूरोप के विचार जानना चाहती हो ?" उसने पूछा।

"वे लोग हमारे विषय में क्या कहते हैं ?"

"यही कि टारटफ इंगलैण्ड जाकर बस गया है और उसने वहाँ दुकान खोल ली है।

"क्या यह तुम्हारा अपना विचार है हेनरी ?"

"मैं इसे तुम्हें दे देता हूँ।"

"मैं इसका उपयोग नहीं कर सकती। यह झूठ है।"

"तुम डरो नहीं, हमारे देशवासी किसी के वर्णन को पहचान नहीं सकते।"

"वे क्रियात्मक होते हैं।"

"वे क्रियात्मक होने के बदले अधिक चालाक होते हैं।" जब वे अपने वहीखाते बनाते हैं तो मूर्खता की धन से और दुर्गुण को झूठे प्रदर्शन से तुलना करते हैं।"

"फिर भी हमने बहुत बड़े-बड़े काम किये हैं।"

"बड़े-बड़े काम करने के लिये हमें बाध्य किया गया है ग्लैडिज।"

"हमने उनका भार अपने ऊपर उठाया है।"

"केवल स्टाक एक्सचेंज तक।"

उसने अपना सिर हिलाया—"मैं जाति में विश्वास नहीं करती हूँ।" वह चिल्लाई।

"यह जाति आगे बढ़ने वालों के जीते रहने का प्रतिनिधित्व करती है।"

"इसका अपना विकास है।"

"अवनति मुझे अधिक आकर्षित करती है।"

"कला के विषय में तुम क्या कहते हो ?" उसने पूछा।

"यह एक रोग है।"

"और प्रेम ?"

"एक धोखा।"

"धर्म ?"

"श्रद्धा के स्थान पर एक आधुनिक नाम ।"

"तुम नास्तिक हो ।"

"कभी नहीं, नास्तिकता श्रद्धा का आरम्भ है ।"

"तब तुम कौन हो ?"

"अपनी परिभाषा देने का तात्पर्य अपने को सीमित करना है ।"

"तो अपना कोई अता-पता बताओ ।"

"गुत्थियाँ उलझी हुई हैं, तुम उस भूल-भुलैयाँ में अपना रास्ता खो बैठोगी ।"

"तुमने बातों में मुझे उलझा लिया है, आओ, किसी अन्य विषय पर बातचीत करें ।"

"हमारा डोरियन ही काफी मनोरंजक विषय है। सालों पहले उसका दूसरा नाम सुन्दर युवराज रखा गया था ।"

"ओह, मुझे उसकी याद मत दिलाओ ।" डोरियन ग्रे ने चिल्लाकर कहा ।

"आज शाम डोरियन की मुद्रा ठीक नहीं है ।" डचेस ने अपने मुँह पर पाउडर लगाते हुए कहा—"मेरे विचार में डोरियन की यह धारणा है कि मनमौथ ने मुझ से केवल वैज्ञानिक सिद्धान्तों के कारण ही विवाह किया है, क्योंकि आधुनिक समय की तितलियों में उसने सर्वश्रेष्ठ को चुन लिया ।"

"ओह, मेरा ख्याल है कि वह पिन लगाकर तुम्हें चिपका नहीं देगा ।" डोरियन ने हँसकर कहा ।

"मि० ग्रे, मेरी नौकरानी जब मुझ से गुस्से होती है तो ऐसा ही करती है ।"

"वह तुम से किस बात पर नाराज़ होती है ?"

"इतना मैं विश्वास दिलाती हूँ मि० ग्रे, कि वह बड़ी छोटी-छोटी

बातों पर क्रोधित हो जाती है। मैं नौ बजने में दस मिनट पर आती हूँ और कहती हूँ कि साढ़े आठ बजे वह मुझे तैयार कर दे।"

"उसका नाराज़ होना बड़ी भारी मूर्खता है तुम उसे निकालने की चेतावनी क्यों नहीं दे देती ?"

"मैं ऐसा साहस नहीं कर सकती मि० ग्रे। वह मेरे लिये नये-नये हैटों का आविष्कार करती है। तुम्हें वह हैट याद है जो मैं लेडी हिल-स्टोन की पार्टी में पहनकर आई थी ? तुम्हें याद नहीं, लेकिन याद आने का जो तुमने कृत्रिम प्रदर्शन किया उसके लिये धन्यवाद। वह उसने बिना किसी कीमत के तैयार किया था, अच्छे-अच्छे हैटों में लागत कुछ भी नहीं लगती।"

"जैसे प्रसिद्धि में लागत नहीं लगती ग्लैडिज़!" लार्ड हेनरी ने टोकते हुए कहा—"जब कभी कोई व्यक्ति लोगों पर अपना प्रभाव जमाता है, उसी क्षण उसका एक शत्रु बन जाता है। प्रसिद्ध होने के लिये मनुष्य में मध्यवर्ग के गुण होने चाहियें।"

"यह सिद्धान्त स्त्रियों पर लागू नहीं होता।" डचेस ने अपना सिर हिलाते हुए कहा—"और स्त्रियाँ संसार पर शासन करती हैं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि हम लोग ये मध्यवर्ग के गुण सहन नहीं कर सकतीं। जैसा कि किसी ने कहा है, हम स्त्रियाँ अपने कानों से प्रेम करती हैं, जिस प्रकार आदमी अपनी आँखों से प्यार करते हैं—अगर तुम भी प्यार करते हो तब..."

"मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि हम पुरुष प्यार करने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं करते।" डोरियन ने कहा।

"ओह डोरियन, तब तो तुम वास्तव में प्रेम करते ही नहीं। डचेस ने तनिक उदास होकर उत्तर दिया।

"प्रिय ग्लैडिज़ !" लार्ड हेनरी ने चिल्लाकर कहा—"तुम यह कैसे कह सकती हो ? रोमांस पुनरावृत्ति से ही जीवित रहता है और पुनरावृत्ति उस उत्साह को कला में परिवर्तित कर देती है। फिर जब कभी

मनुष्य प्रेम करता है तो सोचता है कि उसने केवल इस बार ही प्रेम किया है। प्यार की वस्तु बदल जाने से प्रेम की नवीनता में कोई अन्तर नहीं आता। इससे तो वह और भी बढ़ता है। हम जिन्दगी में केवल एक महत्वपूर्ण अनुभव प्राप्त कर सकते हैं और उस अनुभव को जितनी बार और जितनी जल्दी-जल्दी दोहरायें, उसी में जीवन का रहस्य छिपा पड़ा है।"

"यद्यपि उस अनुभव से कोई घायल हीं क्यों न चुका हो हेनरी ?" डचेस ने तनिक रुककर पूछा।

"विशेषकर जब वह घायल हो चुका हो तब—" लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया।

डचेस ने घूरकर आँखों में एक विचित्र मुद्रा लिये डोरियन ग्रे की ओर देखा—"डोरियन ग्रे, इस विषय में तुम्हारे क्या विचार हैं ?" उसने पूछा।

डोरियन क्षण भर के लिये झिझका। तब वह पीठ का सहारा लेकर हँस दिया—"मैं सदा हेनरी के साथ सहमत रहता हूँ।"

"चाहे वह ग़लत भी हो ?"

"डचेस, हेनरी कभी गलत नहीं होता।"

"क्या उसकी फ़िलासफी से तुम्हें सुख मिलता है ?"

"मैंने कभी सुख की खोज नहीं की। कौन सुख चाहता है ? मैं तो सासारिक आनन्द की खोज में रहता हूँ।"

"और क्या वे तुमको मिले मि० ग्रे ?"

"हाँ, बहुत बार सदा ही।"

डचेस ने एक आह भरी। "मैं शान्ति की खोज में हूँ।" उसने कहा—"और यदि अपने कमरे में जाकर मैंने कपड़े न पहने, तो आज शाम को मुझे बिल्कुल ही शान्ति नहीं मिलेगी।"

"मुझे तुम्हारे लिये कुछ फूल लाने दो डचेस।" डोरियन ने चिल्लाकर कहा और खड़े होकर वह बगीचे में चला गया।

तुम बड़ी निर्लज्जता से डोरियन के साथ प्रेम का खेल खेल रही हो।" लार्ड हेनरी ने अपने दूर के रिश्ते की बहन डचेस से कहा—"तुम तनिक सावधान हो जाओ। वह बहुत आकर्षक युवक है।"

"यदि वह आकर्षक न होता तो यह युद्ध ही क्यों होता ?"

"तब ग्रीक की ग्रीक से टक्कर है ?"

"मैं डौजन्स का साथ दे रही हूँ, वे एक स्त्री के लिए लड़े थे।"

"उनकी पराजय हुई थी।"

"पकड़े जाने से भी अधिक दु:खद स्थिति बन सकती है।" उसने उत्तर दिया।

"तुम रास को ढीली करके बड़ी तेजी से भाग रही हो।"

"भागना ही जिन्दगी है।" उसका जवाब था।

"आज रात्रि को मैं यह बात अपनी डायरी में लिख लूँगा।"

"क्या ?"

"कि जला हुआ शिशु आग से प्यार करता है।"

"मुझे आग की लपटों ने स्पर्श तक नहीं किया है। मेरे पंख बिलकुल ठीक हैं।"

"उड़ने के अतिरिक्त और सब जगह तुम उन पंखों का उपयोग करती हो।"

"साहस पुरुष से हटकर स्त्री में आ गया है। यह हमारे लिए एक नया अनुभव है।"

"इस क्षेत्र में तुम्हारा मुकाबला करने वाला एक और व्यक्ति भी है।"

"कौन ?"

वह हँसा—"लेडी नौरबरो।" उसने धीमे स्वर में उत्तर दिया—"वह पूर्ण रूप से डोरियन को प्यार करती है।"

"तुम मुझे दावा करने के लिये उत्साहित करते हो। परन्तु इन रोमांटिक लोगों की तो इस प्राचीन कचहरी में पराजय ही होगी।"

"रोमांटिक ! तुम्हारे पास विज्ञान के सारे साधन हैं।"

"पुरुषों ने ही हमें यह शिक्षा दी है।"

"परन्तु तुम्हें इस विषय पर कभी समझाया नहीं।"

उसने लार्ड हेनरी की ओर मुस्कराकर देखा—"मि० ग्रे को कितनी देर हो गई !" उसने कहा—"आओ, हम उसकी सहायता करें।

"मैंने उसे अपनी फ्राक का रंग भी नहीं बतलाया है।"

"इसका मतलब तो समय से पहले ही अपना आत्मसमर्पण करना होगा।"

"रोमांटिक कला अपनी चरम सीमा से आरम्भ होती है।"

"मुझे वापस लौटने के लिए भी तो अवसर तैयार रखना चाहिये।"

"पार्थीनियन फौजों की तरह ?"

"उनको रेगिस्तान में आश्रय मिल गया था, परन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकती।"

"स्त्रियों को अपना रास्ता चुनने का अवसर ही नहीं दिया जाता।" उसने उत्तर दिया, परन्तु अपना वाक्य समाप्त करने के पूर्व ही बाग के दूसरे कोने से किसी के जोर-जोर से सांस लेने की आवाज आई और फिर धम से किसी के गिरने की आहट मिली। सब चौंक पड़े। डचेस भय से मूर्छित-सी खड़ी रही। अपनी आँखों में भय लिये केले के फैले हुए पत्तों को एक ओर खिसकाता हुआ लार्ड हेनरी उस ओर दौड़ा। डोरियन मुंह के बल फर्श पर इस प्रकार बेहोश पड़ा था मानो मर गया हो। उसको तत्क्षण नीचे ड्राइंग रूम में ले जाया गया और एक सोफे पर लिटा दिया। देर बाद उसे होश आया और आश्चर्य से एकाग्र होकर उसने अपने चारों ओर देखा।

"क्या बात हुई ?" उसने पूछा—"ओह, मुझे याद आया। हेनरी, क्या यहाँ मैं पूर्णरूप से सुरक्षित हूँ ?" वह काँपने लगा।

"मेरे डोरियन !" लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया—"तुमको केवल गश आ गया था। बस, इससे अधिक और कुछ नहीं हुआ। तुम शायद बहुत

थक गये थे। तुम आज भोजन करने कमरे में मत आना। मैं तुम्हारा स्थान ले लूँगा।"

"नहीं, मैं अवश्य आऊँगा।" उसने खड़े होने का प्रयास करते हुए कहा—"मैं भोजन करने जरूर आऊँगा। मुझे अकेला नहीं रहना चाहिए।"

वह अपने कमरे में गया और कपड़े पहनने लगा। जब वह मेज के सामने अपने सब मेहमानों के साथ बैठा तो उसके व्यवहार में लापरवाही थी, मानो किसी भी परिणाम की उसे चिन्ता नहीं थी, परन्तु थोड़ी-थोड़ी देर पश्चात् भय की एक लहर उसके शरीर में दौड़ जाती थी क्योंकि फुल-वारी में कमरे की खिड़की का सहारा लिये उसने जेम्स वेन को अपनी ओर घूरते हुए देखा था।

१८

अगले दिन वह अपने मकान से कहीं बाहर नहीं गया और सारा दिन अपने कमरे में ही व्यतीत किया। यद्यपि वह जिन्दगी के प्रति उदासीन-सा था परन्तु फिर भी मृत्यु की भयानक लहर उसके शरीर में दौड़कर उसे बीमार बना रही थी। यह विचार कि कोई उसको अपना शिकार बनाने का प्रयास कर रहा है, उसका पीछा कर रहा है, उसको अपने जाल में फंसा रहा है—उसके ऊपर अपना आधिपत्य जमा रहा था। यदि हवा के कारण कोई परदा हिलता तो वह कांप उठता। पेड़ों से गिरे हुए शुष्क पत्ते जब वायु के झोखों में शीशे से टकराते थे तो वे उसे अपने निश्चय और पश्चात्ताप मालूम पड़ते थे, क्योंकि वे भी उसके लिये व्यर्थ हो गये। जब वह अपनी आँखें बन्द कर लेता था तब

धुंध से धुंधले हुए शीशों में से उसे मल्लाह का चेहरा झाँकता हुआ दिखाई देता था और भय उसके हृदय पर फिर अपना अधिकार जमा लेता था।

परन्तु शायद यह उसकी कोरी कल्पना ही थी जो रात्रि के अंधकार में प्रतिहिंसा और दण्ड की विकृत आकृति बनकर उनके सम्मुख आती थी। वास्तविक जिन्दगी एक प्रकार का बवण्डर-सा बन गई थी, परन्तु फिर भी उसकी कल्पना में तर्क दिखाई देते थे। यह उसकी कल्पना ही थी जो उसके किये हुए पाप का दण्ड कड़ी वेदना के रूप में उसे दे रही थी, उसकी कल्पना ही उसके प्रत्येक पाप का विकृत परिणाम उसके सम्मुख रख रही थी। इस दुनिया में पापियों को उनके पापों का दण्ड नहीं मिलता और परोपकारी को उसके कर्मों का फल नहीं मिलता। शक्तिशाली लोगों को सफलता मिलती है और निर्बलों को असफलता। बस, इससे अधिक कुछ नहीं। और यदि कोई नया आगन्तुक चुपके-चुपके मकान के बाहर आता तो घर के नौकर या चौकीदार उसे अवश्य देखते। यदि क्यारियों के पास किसी के पदचिह्न मालियों को दिखाई देते तो वे अवश्य ही इसकी चर्चा उससे करते। हाँ, यह केवल उसकी कल्पना ही थी। सिबल वेन का भाई उसकी हत्या करने के लिये वहाँ नहीं आया था। वह तो जहाज में बैठकर समुद्र की लहरों के बीच में होगा। कम से कम उसकी ओर से तो वह सुरक्षित है। उसको तो पता भी नहीं था कि उसकी बहन का प्रेमी कौन था और वह उसका पता लगा भी नहीं सकता था। यौवन के जाल ने उसे बचा लिया।

यदि यह उसकी कोरी कल्पना ही थी तो भी आत्मा कितनी भयानक आकृतियाँ बनाकर लोगों को दिखा सकती है, लोगों के सामने चल सकती है—इस विचार से ही वह काँप उठा। यदि रात-दिन उसके पाप की परछाइयाँ निस्तब्ध कोनों से उसको देखें, रहस्यमय स्थानों से उसकी हँसी उड़ायें, जब वह भोजन करने बैठे तो उसके कानों में धीमे स्वर में बातें करें और जब वह सोता हो तो अपनी बर्फीली उँगलियों

से उसे जगा दें—तो न जाने जिन्दगी क्या से क्या बन जाये। जब यह विचार उसके मस्तिष्क में आया तो भय से उसका मुख पीला पड़ गया और यकायक हवा उसे बहुत ठंडी जान पड़ी। ओह! कैसे पागलपन की अवस्था में उसने अपने मित्र की हत्या कर डाली! उस दृश्य की स्मृति ही कितनी भयानक है! वह सब उसे पुनः दिखाई देने लगा। उस घटना का प्रत्येक अंग विस्तार से अधिक भयभीत करता हुआ उसे याद आया। समय की काली गुफा से लाल रंग में रंगा हुआ उसका पाप प्रकट हुआ। जब लार्ड हेनरी छः बजे उसके पास आया तो उसने डोरियन को रोते हुए पाया, मानो उसका हृदय टुकड़े-टुकड़े हो गया हो।

उस घटना के पश्चात् तीन दिन तक वह बाहर जाने का साहस न कर सका सर्दियों की उस प्रातःकाल को स्वच्छ और सुगन्धि से लदी हुई वायु में उसकी प्रसन्नता और जिन्दगी की चाह पुनः वापस लौट आई थी। परन्तु उसके स्वभाव में यह परिवर्तन प्राकृतिक वातावरण के कारण ही नहीं हुआ था। घबराहट के इतना अधिक बढ़ जाने से उसकी शान्तमयी मुद्रा जो भंग हुई थी उससे उसका स्वभाव ही विद्रोह कर उठा था। इस प्रकार के कोमल और कलामय स्वभाव के साथ प्रायः ऐसा ही होता है। उनकी तीव्र वासनाओं को या तो समाप्त होना पड़ता है या झुकना पड़ता है। वे दूसरे व्यक्ति की हत्या कर देते हैं नहीं तो स्वयं मर जाते हैं। कम गहरे दुःख और प्रेम जीवित रहते हैं। ऊंचे दरजे के दुःख और प्रेम अपनी मात्रा के बढ़ जाने से स्वयं ही नष्ट हो जाते हैं। फिर वह अपने को विश्वास दिला चुका था कि वह भययुक्त कल्पना का शिकार बना हुआ है और अब अपने भय के प्रति उसके मन में घृणा की अपेक्षा दया भरी हुई थी।

नाश्ते के पश्चात् वह घंटा भर तक डचेस के साथ बाग में घूमा और फिर पार्क पार करके शिकार करने वाली पार्टी में जा मिला। सर्दी की ओस घास पर नमक की भाँति दिखाई दे रही थी। आकाश

इस प्रकार स्वच्छ था मानो प्याले में कोई नीली वस्तु जमी हुई हो जिसे उलटा कर दिया गया हो। झील के चारों ओर हल्की-हल्की बरफ जम गई थी। चीड़ के जंगल के कोने में उसने डचेस के भाई सर जैफरी क्लौस्टन को अपनी बंदूक से दो गोलियाँ निकालते देखा। वह गाड़ी से कूद पड़ा और गाड़ी वाले को गाड़ी वापस लौटा ले जाने का आदेश देकर वह बिखरी हुई डालियों और ऊबड़-खाबड़ झाड़ियों को एक ओर हटाता हुआ अपने मेहमानों की ओर बढ़ा।

"जैफरी, तुम्हारा शिकार कैसा हुआ ?" उसने पूछा।

'बहुत अच्छा डोरियन ! मेरे विचार में बहुत से पक्षी जंगल छोड़ कर खुले मैदानों में चले गये हैं। अतः भोजन के उपरान्त शिकार अच्छा रहेगा, क्योंकि हम नये मैदानों की ओर बढ़ेंगे।"

डोरियन उसके साथ-साथ घूमने लगा। जंगल की सुगन्धि से भरी हुई हवा, चमकती हुई भूरे और लाल रंग की रोशनियाँ, समय-समय पर शिकारी नौकरों की आवाजें, बन्दूकों के चलने के स्वर ने उसे अपनी ओर आकर्षित किया और उसका मन आनन्दमयी स्वतन्त्रता से भर उठा। प्रसन्नता की लापरवाही और खुशी की उदासीनता ने उस पर अपना आधिपत्य जमा लिया।

अचानक ही उससे बीस गज के अन्तर पर पुरानी घास के बीच में से, चौकन्ने होकर काले कान खड़े किये हुए एक खरगोश आगे की ओर तेज़ी से भागा। एक ओर बड़ी घनी झाड़ियाँ होने से उसकी गति धीमी पड़ गई। सर जैफरी ने अपनी बन्दूक कन्धे पर रखी परन्तु उस कोमल पशु की चाल में कुछ ऐसा सौन्दर्य था जिसने डोरियन को अपनी ओर आकर्षित किया और वह एकदम चिल्ला उठा—"जैफरी, इसे मत मारो, इसे जीवित रहने दो।"

"क्या मूर्ख बनते हो डोरियन !" उसका साथी हँसा। जब खरगोश झाड़ियों में कूदा तभी उसने बन्दूक चला दी। उसी क्षण दो चीखें सुनाई

दीं। एक खरगोश की, जो वेदना से भयानक थी, और दूसरी पीड़ा से किसी मनुष्य के कराहने की, जो उससे भी अधिक भयानक थी।

"हे भगवान् ! मैंने किसी शिकारी नौकर को गोली मार दी है।" सर जैफरी ने कहा—"बन्दूक की गोलियों के सामने आने वाला यह कौन मूर्ख था ! उधर शिकार बन्द करो !" उसने बहुत जोर से चिल्ला कर कहा—"एक आदमी घायल हो गया है।"

शिकारी नौकरों का प्रमुख एक हाथ में लाठी लिये भागता हुआ आया।

"कहाँ हुजूर ? वह कहाँ है ?" उसने चिल्ला कर पूछा। उसी समय दूसरे लोगों ने बन्दूकें चलानी बन्द कर दीं।

"वहाँ !" सर जैफरी ने क्रोध में उत्तर दिया और स्वयं उन झाड़ियों की ओर तेज़ी से बढ़ा। "तुम अपने आदमियों को पीछे क्यों नहीं रखते ? मेरे आज के शिकार का मजा किरकिरा कर दिया।"

जब वे दोनों झूलती हुई छोटी-छोटी शाखाओं और झाड़ियों को एक ओर हटाकर आगे बढ़ रहे थे तब डोरियन उसी ओर देखता रहा। कुछ ही क्षणों में वे एक व्यक्ति के शरीर को सूर्य की रोशनी में ले आये। वह भय से एक ओर चल दिया। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जहाँ कहीं वह जाता है, वहाँ उसे अपने दुर्भाग्य के दर्शन करने पड़ते हैं। उसने सर जैफरी को पूछते हुए सुना की वह व्यक्ति वास्तव में मर चुका है और उसे "हाँ" में उत्तर मिला। जंगल में उसे भाँति-भाँति की शक्लें दिखाई देने लगीं। उसे कितने ही पैरों की आहट और कितने ही स्वरों का मिश्रण सुनाई दिया।

उसके लिये ये थोड़े से क्षण असीम पीड़ा में भरे हुए कभी समाप्त न होने वाले घंटे बन गये। फिर उसने अपने कंधे पर किसी का हाथ अनुभव किया। वह चौंक पड़ा और उसने पीछे मुड़कर देखा।

"डोरियन !" लार्ड हेनरी ने कहा—"मैं सबसे शिकार बन्द कर देने

को कहे देता हूँ। इस घटना के पश्चात शिकार जारी रखना अच्छा नहीं मालूम देता।"

"मैं तो चाहता हूँ कि यदि सदा के लिये बन्द कर दिया जाये हेनरी !" उसने उद्विग्न होकर कहा—"यह सारा का सारा खेल बहुत ही भयानक और निर्मम है। क्या वह आदमी······?"

वह अपना वाक्य पूरा नहीं कर सका।

"मुझे भय है कि वह समाप्त हो चुका है।" लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया—"गोली ठीक उसकी छाती पर लगी। वह उसी क्षण मर गया होगा। आओ, घर चलें।"

वे दोनों लगभग पचास गज तक बिना कुछ बोले आगे बढ़ते गये। तब डोरियन ने लार्ड हेनरी की ओर देखा और एक लम्बी साँस खींचकर कहा—"यह एक अपशकुन हुआ हेनरी—एक अपशकुन।"

"तुम किसको अपशकुन कह रहे हो? लार्ड हेनरी ने पूछा—"ओह, इस घटना को। डोरियन, इसका कोई इलाज नहीं है। यह उसकी अपनी ही गलती थी, वह बन्दूक के सामने गोली खाने क्यों आया? दूसरे इससे हमारा क्या मतलब है? हाँ, जैफरी के लिये अवश्य कोई अपशकुन बन सकता है। लोग यही सोचेंगे कि शिकारी अनाड़ी था। परन्तु जैफरी अनाड़ी नहीं है, वह सीधा निशाना लगाता है। परन्तु अब इस विषय पर चर्चा करने से कोई लाभ नहीं।"

डोरियन ने अपना सिर हिलाया। "यह एक अपशकुन है हेनरी! मुझे लग रहा है कि हम में से किसी के ऊपर बड़ी भारी विपत्ति आने वाली है, शायद मुझ पर ही······!"

उसने पीड़ा में अपनी आँखों पर हाथ फेरते हुए कहा।

लार्ड हेनरी हंस दिया—"संसार में इससे बढ़कर भयानक विपत्ति कोई नहीं है कि कोई काम न करने से एक मनुष्य की बुद्धि स्थिर हो जाए। यह एक ऐसा पाप है जिसको क्षमा नहीं किया जा सकता। परन्तु हम लोग इसके शिकार नहीं बन सकते, जब तक कि भोजन के

समय भी तुम्हारे मेहमान इसी विषय पर बातचीत न करते रहें। मैं उनसे कह दूंगा कि इस विषय पर बिल्कुल भी बातचीत न करें। और जो तुम अपशकुनों की बात कर रहे हो तो इस नाम की कोई चीज़ नहीं। नियति हमारे भविष्य की सूचनायें पहले ही हमें नहीं भेज देती। यह उसकी बुद्धिमानी या निर्दयता कुछ भी कहो। और फिर डोरियन, संसार में तुम पर कौन-सी विपत्ति आ सकती है ? संसार में जिस वस्तु की मनुष्य को आवश्यकता पड़ती है, वे सब तुम्हारे पास हैं। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जो तुम्हारे साथ अपना भाग्य न बदल डाले।"

"हेनरी, कोई भी ऐसा आदमी नहीं है जिसके साथ मैं अपना भाग्य बदल सकता हूँ। इस प्रकार मत हँसो। मैं तुम्हें सत्य बतला रहा हूँ। वह भाग्यहीन किसान जो अभी मरा, वह मुझसे कहीं अच्छा था। मुझे मृत्यु का भय नहीं है परन्तु मृत्यु के आगमन से मुझे डर लगता है। उसके भयानक पाँव मुझे अपने चारों ओर पहिये की भाँति घूमते हुए दिखाई देते हैं। हे भगवान् ! क्या तुम उन पेड़ों के पीछे किसी आदमी को नहीं देख रहे जो मेरी ओर देख रहा है, मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।"

जिस दिशा की ओर डोरियन का काँपता हुआ हाथ इंगित कर रहा था उस ओर लार्ड हेनरी ने देखा—"हाँ।" उसने मुस्करा कर कहा—"मैं माली को तुम्हारी प्रतीक्षा करते देख रहा हूँ। मेरे ख्याल में वह तुमसे पूछना चाहता है कि आज रात को मेज पर कैसे फूल सजाये जायें। डोरियन तुम कितने घबरा रहे हो ? जब हम शहर पहुँच जायेंगे तो तुम मेरे डाक्टर को अपने आपको दिखाना।"

माली को अपनी ओर आते देखकर डोरियन ने सन्तोष की सांस ली। उसने हैट छूकर सलाम किया, झिझकते हुए लार्ड हेनरी पर एक दृष्टि डाली और तब अपनी जेब में से एक पत्र निकाल कर डोरियन के हाथ में दे दिया—"डचेस ने कहा है कि इसका जवाब लेकर आऊँ।" उसने धीमे स्वर में कहा।

डोरियन ने पत्र अपनी जेब में रख लिया—"डचेस से कहो कि मैं

अन्दर आ रहा हूँ।" उसने उदासीन स्वर में उत्तर दिया। माली घूम कर मकान की ओर तेज़ी से कदम बढ़ाता हुआ चला गया।

"स्त्रियों को भयानक काम करने का कितना शौक है !" लार्ड हेनरी ने हँसकर कहा—

"उनमें एक यह गुण भी है जिसकी मैं बहुत प्रशंसा करता हूँ। जब तक दूसरे आदमियों की दृष्टि एक स्त्री पर लगी रहती है तब तक वह किसी भी पुरुष के साथ प्रेम के कृत्रिम खेल खेलती रहेगी।"

"हेनरी, तुम्हें भयानक बातें बनाने का कितना शौक है। परन्तु इस समय तुम्हारी बात में सत्य की मात्रा नहीं है। मैं डचेस को बहुत पसन्द करता हूँ, परन्तु उसे प्यार नहीं करता।"

"और डचेस तुमसे बहुत प्रेम करती है, परन्तु तुम्हें अधिक पसन्द नहीं करती। इसलिये तुम दोनों का जोड़ा बहुत अच्छा रहेगा।"

"हेनरी, तुम व्यर्थ की बातें कर रहे हो और इन बातों की कोई नींव नहीं होती।"

"इनकी नींव अनैतिक दृढ़ता पर होती है।" लार्ड हेनरी ने एक सिगरेट सुलगाते हुए कहा।

"हेनरी, तुम इस प्रकार के सिद्धान्त गढ़ने में किसी की भी बलि चढ़ा सकते हो।" डोरियन ने कहा, उसके स्वर में अथाह वेदना छिपी पड़ी थी। "काश कि मैं प्यार कर सकता, परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मैं प्रेम खो चुका हूँ और मन की इच्छाओं और आकांक्षाओं को भूल चुका हूँ। मैं अपने में ही बहुत मस्त हो गया हूँ। मेरा अपना व्यक्तित्व मुझ पर एक भार बन गया है। मैं भाग जाना चाहता हूँ, यहाँ से दूर जाकर सब कुछ भूल जाना चाहता हूँ। मैंने लन्दन से यहाँ आकर बहुत मूर्खता की। मेरे विचार में मैं हार्वे को एक तार डाल दूँगा कि वह मेरा जहाज तैयार रखे। जहाज में मनुष्य पूर्णरूप से सुरक्षित रहता है।"

"किस भय से सुरक्षित डोरियन ? तुम पर कोई विपत्ति आई हुई

है ? मुझे बतला क्यों नहीं देते कि वह क्या है ? तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी सहायता ही करूँगा।"

"मैं तुम्हें नहीं बता सकता हेनरी !" उसने उदास स्वर में उत्तर दिया—"मेरा ख्याल है कि यह कहीं मेरी कोरी कल्पना ही तो नहीं है। इस दुःखभरी घटना से मैं उद्विग्न हो उठा हूँ। मुझे कभी-कभी यह भयानक विचार आता है कि कहीं मेरे साथ भी ऐसा ही न हो।"

"क्या पागलों की-सी बातें कर रहे हो !"

"मेरे विचार में भी यह पागलों की बातें हैं परन्तु ऐसा न सोचूं यह मेरे वश की बात नहीं है। आह ! डचेस आ रही है, दर्जी की नई गाउन में वह कितनी सुन्दर लग रही है। डचेस, हम लोग शिकार से वापस लौट आये ।"

"मि० ग्रे, मैंने उस दुर्घटना के विषय में सब कुछ सुन लिया है।" उसने उत्तर दिया।

"बेचारा जैफरी भी बहुत उद्विग्न हो उठा है। और मैंने यह सुना है कि तुमने उसे खरगोश पर गोली चलाने के लिए मना किया था। कैसी अजीब बात है।"

"हाँ, बड़ी अजीब-सी घटना घटी। मैं नहीं जानता कि किस आन्तरिक भावना के वशीभूत होकर मैंने यह कहा। शायद वह मेरा भ्रम था। मुझे वह छोटा-सा जानवर बहुत सुन्दर लगा। परन्तु मुझे शोक है कि लोगों ने तुम्हें उस आदमी को गोली लगने की दुर्घटना भी सुनाई। यह बहुत ही विकृत विषय है।"

"विकृत नहीं, क्रोध दिलाने वाला विषय है।" लार्ड हेनरी ने प्रत्युत्तर में कहा—"इसका मनोवैज्ञानिक मूल्य कुछ भी नहीं है। यदि जैफरी जानबूझ कर उस पर गोली चलाता तो सारा मामला कितना दिलचस्प बन जाता। मैं किसी ऐसे व्यक्ति को जानना चाहता हूँ जिसने सचमुच किसी की हत्या की हो।"

"हेनरी, तुम कैसी व्यर्थ की बातें कर रहे हो।" डचेस ने चिल्ला-

कर कहा—"हेनरी, मि० ग्रे, फिर बीमार हो गया मालूम देता है। इसे मूर्च्छा आ रही है।"

डोरियन ने अपना भरपूर प्रयास करके अपने आप को संभाला "कोई बात नहीं डचेस !" उसने धीमे स्वर में कहा—"मेरी नसें अपने स्थानों पर स्थिर नहीं हैं। और कोई बात नहीं है। शायद आज प्रातः-काल मैं बहुत दूर तक चला गया था। हेनरी ने अभी जो कहा था वह मुझे सुनाई नहीं दिया। क्या कोई बहुत बुरी बात थी ? किसी समय तुम मुझे बतलाना। मेरे विचार में मुझे कमरे में जाकर लेट जाना चाहिए। तुम क्या मुझे क्षमा करोगे ?"

वे तीनों उन सीढ़ियों तक पहुँच गये थे जो बाग के ऊपर छत तक जाती थीं। डोरियन ने जब शीशे का दरवाजा बन्द कर लिया तब लार्ड हेनरी ने मुड़कर डचेस की ओर अपनी नींद से भरी हुए आँखों से देखा, "क्या तुम डोरियन से बहुत प्रेम करती हो ?" उसने पूछा।

उसने कुछ देर तक लार्ड हेनरी के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया और प्राकृतिक दृश्य का ओर बड़े ध्यान से देखती रही। "काश कि इसका उत्तर मुझे पता होता।" उसने अंत में कहा।

उसने अपना सिर हिलाया—"इसका ज्ञान होना बहुत भयानक है। इसकी अनिश्चितता ही सबसे बड़ा आकर्षण है। बाहर का कोहरा सब चीजों को कितना विचित्र बना देता है।"

"परन्तु कोहरे में मनुष्य अपना रास्ता भूल सकता है।"

"प्रिय ग्लैडिज, सारे रास्तों का अंत एक ही स्थान पर जाकर होता है।"

"वह स्थान कौन-सा है ?"

"मायामुक्त।"

"मैंने जिन्दगी में ही इस ज्ञान को पा लिया है।" उसने कहा।

"यह बड़ी सजधज के साथ तुम्हारे पास आया है।"

"परन्तु मैं इस सजधज से ऊब चुकी हूँ।"

"परन्तु वह तो रहेगी ही।"

"केवल जनता के सम्मुख।"

"परन्तु उसे खो जाने का तुम्हें दुःख होगा।" लार्ड हेनरी ने कहा।

"एक पति से मैं कभी अलग नहीं होऊंगी।"

"मनमौथ के कान है ?"

"बुढ़ापा कम सुनता है।"

"क्या उसने कभी ईर्ष्या नहीं की ?"

"मैं चाहती हूँ कि वह कभी करता।"

उसने अपने चारों ओर देखा मानो किसी वस्तु को खोज रहा हो।

"तुम क्या तलाश कर रहे हो ?" उसने पूछा।

"तुम्हारा बदन गिर गया है।" उसने उत्तर दिया।

वह हँस दी—"मेरे मुँह पर अभी तक जाली है।"

"इससे तुम्हारी आँखें और भी सुन्दर लग रही हैं।" उसका उत्तर था।

वह फिर हँसी। जिस प्रकार लाल पात्र के सफेद बीज चमकते हैं उसी प्रकार उसके दाँत चमकने लगे।

ऊपर अपने कमरे में डोरियन सोफे पर लेटा हुआ था। उसके शरीर की प्रत्येक हड्डी और प्रत्येक नस में भय समाया हुआ था। जिंदगी उसके लिए ऐसा विकृत बोझा बन गई थी जिसको सँभालना असम्भव हो गया था। भाग्यहीन शिकारी नौकर की भयानक मृत्यु, एक जंगली जानवर की भाँति झाड़ियों में गोली चलने की आवाज, ये सब मानो उसकी मृत्यु की सूचना पहले से ही दे रहे थे। अपनी भावमयी मुद्रा में अचानक ही लार्ड हेनरी ने सच्चे हत्यारे को देखने की जो बात कही थी उसे सुनकर वह लगभग मूर्च्छित ही हो गया था।

पाँच बजे के लगभग उसने नौकर को बुलाने की घंटी बजाई और रात को शहर जाने वाली गाड़ी के लिए अपना सामान बांधने के लिए कहा और साढ़े आठ बजे गाड़ी जोतने के लिए आज्ञा दी। वह सैलबी

में अब एक भी रात नहीं सोयेगा—यह उसका दृढ़ निश्चय था। यह बड़े अपशकुन का स्थान था। सूर्य के प्रकाश में उसे मृत्यु चलती हुई दिखाई देती थी। जंगल की घास पर रक्त के धब्बे पड़ चुके थे।

तब उसने एक पुर्जा लार्ड हेनरी को लिखा कि वह डाक्टर को दिखलाने के लिए शहर जा रहा है उसे चाहिए कि वह उसकी अनुपस्थिति में मेहमानों का मनोरंजन करे। जब वह उस पुर्जे को लिफाफे में डाल रहा था तभी किसी ने दरवाजा खटखटाया और उसके नौकर ने सूचना दी कि शिकारी नौकरों का प्रमुख उससे मिलना चाहता है। क्रोधित होकर उसने अपना निचला होंठ चबाया। "उसे अन्दर भेज दो।" कुछ क्षणों की झिझक के पश्चात् उसने धीमे स्वर में कहा।

प्रमुख के अन्दर आते ही डोरियन ने मेज की दराज से अपनी चैक बुक निकाली और उसे खोलकर बैठ गया।

"मेरे विचार में तुम आज प्रातःकाल की दुर्घटना के विषय में ही बातचीत करने आए हो?" उसने अपनी कलम उठाकर पूछा।

"जी हुजूर!" उसने उत्तर दिया।

"क्या वह बेचारा विवाहित था? क्या उसके परिवार के प्राणी उसी पर निर्भर थे?" डोरियन ने ऊबकर उसकी ओर देखते हुए पूछा—"यदि यह ठीक है तो मैं नहीं चाहता कि उन्हें किसी प्रकार का भी कष्ट हो और जितना रुपया तुम उचित समझो, उतना मैं देने को तैयार हूँ।"

"हमें पता नहीं हुजूर कि वह कौन है। इसीलिए तो मैं आपके पास आपको कष्ट देने आया हूँ।"

"तुम नहीं जानते कि वह कौन है?" डोरियन ने अधीर होकर पूछा—"तुम्हारा मतलब क्या है? क्या वह तुम्हारे आदमियों में से नहीं था?"

"नहीं हुजूर! मैंने पहले उसे कभी नहीं देखा। हुजूर, वह एक मल्लाह-सा जान पड़ता है।"

डोरियन के हाथ से कलम गिर पड़ी और उसने अनुभव किया कि उसके हृदय की गति अचानक बन्द हो गई है। "एक मल्लाह" ?" उसने चिल्लाकर कहा—"क्या तुमने उसे एक मल्लाह बतलाया था ?"

"हाँ हुजूर ! उसे देखने से तो वह मल्लाह ही लगता है। उसके दोनों हाथों पर निशान बने हुए हैं।"

"क्या उसके पास से कुछ सामान मिला ?" डोरियन ने कहा और झुककर आश्चर्यमय नेत्रों से उस व्यक्ति की ओर देखने लगा। "कोई ऐसी चीज, जिससे उसका नाम पता चल जाये।"

"थोड़ा-सा रुपया था और एक पिस्तौल। किसी प्रकार का नाम तो लिखा नहीं था। हुजूर, वह शक्ल-सूरत में तो अच्छे घर का लगता है परन्तु जिन्दगी कड़ी बिताई मालूम पड़ती है। मेरे विचार में तो वह एक प्रकार का मल्लाह ही था।"

डोरियन चौंककर खड़ा हो गया। उसके मन में एक आशा का संचार हुआ जिससे वह पागलों की भाँति जकड़कर बैठ गया—"उसका शरीर कहाँ है ?" उसने पूछा—"जल्दी करो, मैं इसी क्षण उसे देखना चाहता हूँ।"

"हुजूर, खेतों के एक खाली अस्तबल में रखा है। यहाँ के लोग ऐसे मृत शरीर को अपने घरों में रखना पसन्द नहीं करते। उनका विश्वास है कि मुर्दा अपशकुन है।"

"खेतों में ! इसी क्षण वहाँ जाओ और मुझसे वहीं मिलो। एक आदमी से मेरा घोड़ा लाने के लिये कहो। अच्छा रहने दो, कोई बात नहीं। मैं स्वयं ही अस्तबल तक चला आऊँगा, इसमें समय कम लगेगा।"

जितनी जल्दी डोरियन घोड़ी पर दौड़ सकता था, दौड़ा और पन्द्रह मिनट से भी कम समय में वह खेतों में पहुँच गया। भूतों के झुंड की भाँति पेड़ों की कतारें पीछे छूट गईं और उनकी परछाइयाँ सड़क को चीर रही थीं। एक बार घोड़ी दीवार से टकराते-टकराते बची और डोरियन नीचे गिरने से बाल-बाल बचा। उसने एक छड़ी से उसकी गर्दन पर

प्रहार किया। वह सर्दीली हवा को तीर की भाँति चीरती हुई आगे को बढ़ रही थी।

अन्त में वह खेतों में पहुँच गया। दो आदमी बाहर मटरगश्ती कर रहे थे। उसने घोड़ी से नीचे कूदकर उसकी रास को एक आदमी के हाथों में थमा दिया। दूर के एक अस्तबल में प्रकाश चमक रहा था। किसी प्रकार उसने अनुमान लगाया कि उसका शरीर वहीं है। वह तेजी से उस ओर बढ़ा और दरवाजे तक पहुँचकर उसे पकड़ लिया।

वहाँ वह क्षण भर के लिये रुका। उसने अनुभव किया कि यह उस रहस्य का पता लगाने जा रहा है जिस पर उसकी जिन्दगी निर्भर है। तब उसने बड़ी तेजी से दरवाजा खोला और अन्दर आ गया।

घास के ढेर पर दूर एक कोने में फटी-पुरानी कमीज और नीले रंग का पैजामा पहने उस मृत व्यक्ति की लाश पड़ी थी। एक रूमाल से उसका मुख ढका हुआ था। उसके पास एक बोतल में फँसी हुई एक मोमबत्ती जल रही थी।

डोरियन ग्रे काँप उठा। उसने अनुभव किया कि उसमें इतना साहस नहीं है कि वह उसके मुख से रूमाल हटाये। उसने खेतों के एक नौकर को अपने पास बुलाया।

"उसके मुख से यह रूमाल हटा लो। मैं इसकी शक्ल देखना चाहता हूँ।" उसने दरवाजे का सहारा लेकर कहा।

नौकर के रूमाल हटा लेने पर वह आगे बढ़ा। उसके होठों से प्रसन्नता की एक चीख निकली। झाड़ियों में जिस व्यक्ति को गोली लगी थी वह जेम्स वेन था।

वह कुछ क्षणों तक उस मृत शरीर को देखता हुआ खड़ा रहा। जब वह घर वापस लौट रहा था, तब उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे, क्योंकि वह जानता था कि अब वह सुरक्षित है।

१६

"तुम्हारे यह कहने से कोई लाभ नहीं कि तुम्हारा आचार-व्यवहार अब अच्छा रहेगा।" गुलाब जल से भरे हुए लाल रंग के एक प्याले में अपनी सफेद उँगलियाँ डुबोकर लार्ड हेनरी ने चिल्लाकर कहा—"तुम बिल्कुल सम्पूर्ण हो, भगवान् के लिये अपने को न बदलो।"

डोरियन ग्रे ने अपना सिर हिलाया। "नहीं हेनरी, मैंने जिन्दगी में बहुत से भयानक कुकर्म किये हैं। मैं अब और नहीं करूँगा। मैंने अपना सद्व्यवहार कल से आरम्भ किया है।"

"कल तुम थे कहाँ?"

"गाँव में हेनरी! मैं अकेला ही एक छोटे से होटल में ठहरा हुआ था।"

"मेरे डोरियन!" लार्ड हेनरी ने मुस्कराते हुए कहा—"गाँव में कोई भी अपने अच्छे चरित्र का दावा कर सकता है। वहाँ पर कोई भी पाप करने का लालच नहीं होता। गाँव के लोग क्यों बिल्कुल असभ्य होते हैं, इसका यही कारण है। सभ्य होना भी कोई हँसी-खेल नहीं है। सभ्य बनने के केवल दो रास्ते हैं, पहला सुसंस्कृत होना और दूसरा नीच काम करना। गाँव के लोगों को दोनों में से कोई भी काम करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता, इसी से उनका विकास नहीं हो पाता।"

"संस्कृति और नीच काम!" डोरियन का स्वर गूँजा—"मैंने दोनों के विषय से थोड़ा-थोड़ा देखा है, परन्तु इन दोनों को एक साथ देखकर अब भी मैं भयभीत हो जाता हूँ। क्योंकि हेनरी, मेरे सामने अब एक नया उद्देश्य है, मैं बदलने जा रहा हूँ। मेरे विचार में मैं बदल चुका हूँ।"

"तुमने यह नहीं बतलाया कि तुमने कौन-सा अच्छा काम किया। या तुमने यह तो नहीं कहा था कि तुमने एक से अधिक अच्छा काम किया ?" लार्ड हेनरी ने पूछा। उसने अपनी प्लेट में लाल रंग का चेरी का रस डाला और उस पर सफेद चीनी छिड़क दी।

"मैं तुम्हें वह घटना बतला सकता हूँ हेनरी। यह ऐसी कहानी नहीं है जो सबको सुनाई जा सके। मैंने एक व्यक्ति को निष्कलंक ही छोड़ दिया। दूसरे को चाहे इसका तात्पर्य कुछ भी न निकले परन्तु तुम मेरा मतलब समझते हो। वह उतनी ही सुन्दर और आकर्षक थी जितनी कि सिबल वेन। उसकी इसी समानता ने पहले-पहल मुझे आकर्षित किया। तुम्हें सिबल की बात याद है न ? वह सब कितनी पुरानी बात मालूम देती है ! परन्तु हेनरी वह हम लोगों की श्रेणी की नहीं थी। वह गाँव की सीधी-सादी बालिका थी, पर मैंने उसे सचमुच प्यार किया। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मैं उससे प्रेम करता था। इस सारे मई के महीने में मैं शहर से सप्ताह में दो-तीन बार उसे देखने जाया करता था। कल वह मुझसे एक छोटे-से बगीचे में मिली। पेड़ों पर लटकते हुए सेबों के गुच्छे उसके सिर के ऊपर लटकते रहे और वह हँसती रही आज प्रातःकाल हम दोनों को एक साथ चले जाना था। एकाएक मैंने निश्चय किया कि मैं उसे उसी प्रकार खिले हुए सुन्दर फूल की भाँति छोड़ जाऊँ जैसा मैंने उसे पहले-पहल पाया था।"

"मैं सोचता हूँ डोरियन कि इस भावना की नवीनता ने तुम में वास्तविक प्रसन्नता की लहर दौड़ा दी होगी।" लार्ड हेनरी ने बीच में टोकते हुए कहा—"तुम्हारी इस अधूरी कहानी को मैं पूरी किये देता हूँ। तुमने उसको नेक सलाह दी और उसका हृदय टुकड़े-टुकड़े कर दिया। अपने-आपको बदलने का आरम्भ तुमने यहाँ से किया।"

"हेनरी, तुम कैसी भयानक बातें कह रहे हो ? यह सब तुम्हें मेरे सामने नहीं कहना चाहिये। हेनरी, उसका हृदय नहीं टूटा है। यद्यपि वह रोई-चिल्लाई और उस तरह का सब कुछ किया। परन्तु उसे कोई कलंक

तो नहीं लगा। वह एक सम्मानित पवित्र बालिका की भाँति रह सकती है।"

"और एक विश्वासघाती प्रेमी पर आँसू बहाये।" कुर्सी पर आराम से बैठकर लार्ड हेनरी ने हँसते हुए कहा—"मेरे डोरियन, तुम में अभी तक बच्चों की सी आदतें हैं।

"क्या तुम समझते हो कि वह लड़की अब अपनी श्रेणी के किसी पुरुष के साथ किसी समय भी सन्तुष्ट होकर रह सकती है? मेरे विचार में किसी दिन उसका विवाह किसी किसान या मिस्तरी से हो जायेगा। तुमसे मिलने की और तुमसे प्रेम करने की स्मृति से सदा ही वह अपने पति से घृणा करेगी और उसकी जिन्दगी दुःखमय बनी रहेगी। नैतिक दृष्टिकोण से मैं तुम्हारे इस परिवर्तन को कोई महत्व नहीं दे सकता। आरम्भ के विचार से भी यह उतना प्रभावशाली नहीं है जितना कि होना चाहिए।"

"हेनरी, तुम्हारी बातें मेरे लिये असह्य हैं। तुम प्रत्येक घटना की हँसी उड़ाते हो और फिर गम्भीर ट्रेजेडी का सुझाव रखते हो। अब मुझे शोक हो रहा है कि मैंने व्यर्थ में ही तुम्हें यह घटना बतलाई। तुम्हारे विचारों की मुझे तनिक भी चिन्ता नहीं है। मैं जानता हूँ कि मैंने जो कुछ किया वह ठीक था। बेचारी! आज प्रातःकाल जब मैं उसके खेत के सामने से गुज़र रहा था तब मैंने खिड़की में से फूल की भाँति उसका मुख देखा। खैर, इस चर्चा को छोड़ो, परन्तु मुझ पर यह प्रभाव जमाने का प्रयास न करो कि मैंने वर्षों के बाद जो पहला अच्छा काम किया है, अपनी जिन्दगी में जो पहला आत्मत्याग किया है; वह वास्तव में एक प्रकार का पाप था। मैं अच्छा होना चाहता हूँ और मैं एक दिन अच्छा हो जाऊँगा। अपने विषय में कुछ बतलाओ। शहर में आजकल क्या हो रहा है? मुझे क्लब में गये कितने ही दिन बीत गये।"

"लोग अभी तक बासिल के गायब हो जाने की चर्चा कर रहे हैं।"

"मैं तो सोच रहा था कि वे अब इस विषय से तंग आ गये होंगे।"

डोरियन ने अपने लिए कुछ शराब उंडेलते हुए क्रोधित स्वर में कहा।

"प्रिय डोरियन, बासिल की चर्चा करते हुए अभी लोगों को केवल छः सप्ताह ही हुए हैं। अंग्रेज जनता एक विषय का मानसिक बोझ तीन महीनों से कम समय तक नहीं सम्भाल सकती। इन दिनों तो वे काफी भाग्यशाली रहे। पहले मेरे तलाक़ का विषय था, फिर कैंपबेल की आत्महत्या की चर्चा और अब एक कलाकार का गायब हो जाना। स्काटलैण्ड यार्ड की अब भी यह दृढ़ राय है कि नौ नवम्बर को आधी रात के समय स्लेटी रंग का कोट पहने जो व्यक्ति पैरिस जा रहा था वह बेचारा बासिल था, परन्तु फ्रेंच पुलिस का कथन है कि बासिल कभी पैरिस पहुँचा ही नहीं। मेरे विचार में पन्द्रह दिन के भीतर हमें यह समाचार मिलेगा कि बासिल को किसी ने सनफ्रांसिसको में देखा है। यद्यपि यह कोरा भ्रम है, परन्तु जो व्यक्ति गायब हो जाता है वह सनफ्रांसिसको में दिखाई देता है। वह बहुत ही सुन्दर शहर होगा, उसमें अगली दुनिया के सारे आकर्षण होंगे।"

"तुम्हारे विचार में बासिल को क्या हुआ?" डोरियन ने अपनी सिगरेट सुलगाते हुए पूछा। उसे स्वयं ही आश्चर्य हो रहा था कि वह किस प्रकार इस विषय पर इतनी शान्ति से बातचीत कर रहा था।

"मैं थोड़ा-सा अनुमान भी नहीं लगा सकता। यदि बासिल को कहीं छिप जाना पसन्द हो तो उसका पता लगाना मेरा काम नहीं है। यदि वह मर चुका है तो मैं उसके विषय में सोचना नहीं चाहता। मृत्यु ही एक ऐसी चीज है जिससे मुझे भय लगता है। मैं इससे घृणा करता हूँ।"

"क्यों?" डोरियन ने ऊबकर पूछा।

"क्योंकि", लार्ड हेनरी ने सुगन्धि के एक डिब्बे को सूंघते हुए कहा—"मृत्यु के अतिरिक्त मनुष्य सब कुछ सहन कर सकता है। उन्नीसवीं शताब्दी में मृत्यु और अश्लीलता ही दो ऐसी चीजें हैं जिनको कोई समझा नहीं सकता। डोरियन, हम अपनी काफी गाने वाले कमरे में बैठकर पियेंगे। आज तुम मेरे लिये चोपिन का संगीत बजाना। जिस आदमी

के साथ मेरी पत्नी भागी है उसे भी यह संगीत बहुत अच्छा लगता था। बेचारी विक्टोरिया ! मैं उसे बहुत पसन्द करता था। उसके बिना घर बहुत सूना-सूना-सा लगता है। यह बात मानी कि विवाहित जिन्दगी मनुष्य की केवल एक आदत है—एक बुरी आदत। परन्तु अपनी बुरी आदतों को छोड़ते समय भी मनुष्य को दुःख होता है, उनका अभाव उसे खटकता है। वे एक मनुष्य के व्यक्तित्व का आवश्यक अंग होती हैं।"

डोरियन ने कुछ नहीं कहा, वह मेज छोड़कर दूसरे कमरे में चला गया और प्यानों के पास बैठकर अपनी उँगलियाँ फेरने लगा। काफ़ी आने पर उसने संगीत बन्द कर दिया और लार्ड हेनरी की ओर देखकर बोला—"हेनरी, क्या तुमने कभी यह आशंका नहीं की कि बासिल की हत्या की गई है ?"

लार्ड हेनरी ने जम्हाई ली। "बासिल बहुत लोकप्रिय था और उसकी कलाई पर वाटरबरी की सस्ती घड़ी लगी रहती थी। उसकी हत्या क्यों की जाती ? वह उतना चालाक नहीं था कि लोग उसके शत्रु बन जाते। हाँ, चित्रकला में वह बहुत प्रवीण था। परन्तु एक व्यक्ति वैल्ज़केज़ की भाँति सुन्दर चित्र बना सकता है और फिर भी नीरस रह सकता है। बासिल सचमुच बहुत नीरस था। उसने अपनी बातचीत में मुझे केवल एक बार ही अपनी ओर आकर्षित किया। कितने ही वर्ष पूर्व उसने मुझे बतलाया था कि वह एक पागल की भाँति किस प्रकार तुम्हारी पूजा करता है और उसकी कला में तुम ही एक महत्वपूर्ण उद्देश्य थे जिससे वह कभी निराश नहीं होता था।"

"मैं भी बासिल को बहुत पसन्द करता था।" डोरियन ने अपने उदासी भरे स्वर में कहा—"परन्तु क्या लोग यह नहीं कहते कि उसकी हत्या कर दी गई है ?"

"कुछ समाचार पत्रों का तो यही विचार है, परन्तु मुझे यह तनिक भी सम्भव नहीं जान पड़ता। मैं जानता हूँ कि पैरिस में बहुत से बड़े भयानक स्थान हैं, परन्तु बासिल वहाँ जाने वाले लोगों में से नहीं था।

उस में कुछ जानने की उत्सुकता नहीं थी। यही उसका मुख्य अवगुण था।"

"हेनरी, यदि मैं तुमसे यह कहूँ कि मैंने ही बासिल की हत्या की है तो तुम क्या सोचोगे !" डोरियन ने पूछा। अपनी बात कह लेने पर उसने लार्ड हेनरी को बड़े ध्यान से देखा।

"प्रिय डोरियन, मेरे विचार में तो तुम उस चरित्र को अपना रहे हो जिसके तुम योग्य नहीं हो। सारी हत्याएँ नीच कर्म हैं और नीच कर्म हत्या से कम नहीं। डोरियन, हत्या करने की शक्ति तुम में नहीं है। यदि यह कहकर तुम्हारे सम्मान में बट्टा लगता हो तो मुझे उसका शोक है, परन्तु मैं तुम्हें यह विश्वास दिलाता हूँ कि यह सत्य है। हत्या केवल नीच श्रेणी के ही लोगों का काम है और मैं इसके लिये उनको दोषी नहीं ठहराता। मेरे विचार में उनके लिये हत्या का वही स्थान है जो हमारे लिये कला का है। इससे उन्हें असाधारण सनसनी मिलती है।"

"क्या यह एक सनसनी प्राप्त करने का साधन है ? क्या तुम सोचते हो कि एक वार हत्या करके मनुष्य फिर हत्या कर सकता है ? ऐसा मुझ से मत कहो।"

"ओह डोरियन, कोई भी काम बार-बार करने से प्रसन्नता देने वाला बन जाता है।" लार्ड हेनरी ने हँसते हुए कहा—"यह जिन्दगी के सबसे महत्वपूर्ण रहस्यों में से एक है। मेरा तो सदा से यह विचार है कि हत्या जिन्दगी कि एक गलती है। भोजन के बाद जिस विषय पर बातचीत ही नहीं की जा सकती वह काम मनुष्य को नहीं करना चाहिये। आओ, बासिल के विषय को छोड़ दें। काश कि मैं तुम्हारे इस विचार पर विश्वास कर सकता कि बासिल का वास्तव में इतना रोमांटिक अन्त हुआ। परन्तु मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता। मैं तो कहता हूँ कि वह बस से नीचे गिर पड़ा और ड्राइवर ने उसकी लाश को भय से पानी में फैंक दिया। हाँ—मेरे ख्याल में तो इसी प्रकार उसका अन्त हुआ। मैं तो अब भी उसको हरे रंग के अथाह जल में पीठ के बल लेटे हुए

कल्पना करता हूँ, जिसके ऊपर से बड़े-बड़े जहाज गुजरते जाते हैं और जिसके सिर के बालों में झाड़ियाँ उलझती जाती हैं। तुम जानते हो कि अब वह अपनी जिन्दगी में कोई और अच्छा काम नहीं कर सकता था। गत दस वर्षों में उसकी चित्रकला बहुत कुछ नीचे गिर गई थी।"

डोरियन ने चैन की साँस ली और लार्ड हेनरी कमरे के दूसरी ओर जाकर जावा के बड़े हरे रंग के तोते को पुचकारने लगा। उसने जब उसकी पीली रंग की पूंछ को छुआ तो अपनी काली पुतलियों को कभी इस ओर और कभी उस ओर घुमाकर वह आगे पीछे हिलने लगा।

"हाँ, उसने घूमकर अपनी जेब से रूमाल निकालते हुए कहा—"उसकी चित्रकला बिल्कुल समाप्त हो गई थी। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उसमें से कोई चीज खो गई थी। उसकी चित्रकला का उद्देश्य विलीन हो चुका था। जब से तुम्हारी और उसकी मित्रता छूटी तब से वह बड़ा कलाकार नहीं रह गया। तुम दोनों का साथ क्यों छूटा? मेरे विचार में उससे तुम ऊब गये थे। यदि यह बात थी तो उसने तुम्हें कभी क्षमा नहीं किया होगा। इस श्रेणी के लोगों की यह आदत होती है। हाँ डोरियन, तुम्हारे उस सुन्दर चित्र का क्या हुआ जो बासिल ने बनाया था? मेरे ख्याल में उसके समाप्त होने के बाद मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा। ओह, मुझे याद आया—कितने ही साल पहले तुमने मुझे बतलाया था कि सैलबी भेजते समय रास्ते में किसी ने उसे चुरा लिया और फिर तुम्हें वह कभी वापस नहीं मिला। कितने दुःख की बात है। यह सचमुच ही उसकी सर्वश्रेष्ठ कृति थी। मुझे याद है कि मैं उसे खरीदना चाहता था। काश कि मैं उसे खरीद सकता। यह बासिल के इस समय की कृति थी जब उसकी कला उच्च शिखर पर पहुँची हुई थी। उसके बाद से उसके काम में बुरी कला और अच्छे विचारों का मिश्रण था, जिसे पाकर एक व्यक्ति अंग्रेज कलाकारों का प्रतिनिधित्व करने का दावा कर सकता है। क्या तुमने उसके लिये समाचार-पत्रों में लिखा था? तुम्हें देना चाहिए था।"

उस में कुछ जानने की उत्सुकता नहीं थी। यही उसका मुख्य अवगुण था।"

"हैनरी, यदि मैं तुमसे यह कहूँ कि मैंने ही बासिल की हत्या की है तो तुम क्या सोचोगे !" डोरियन ने पूछा। अपनी बात कह लेने पर उसने लार्ड हेनरी को वड़े ध्यान से देखा।

"प्रिय डोरियन, मेरे विचार में तो तुम उस चरित्र को अपना रहे हो जिसके तुम योग्य नहीं हो। सारी हत्याएँ नीच कर्म हैं और नीच कर्म हत्या से कम नहीं। डोरियन, हत्या करने की शक्ति तुम में नहीं है। यदि यह कहकर तुम्हारे सम्मान में बट्टा लगता हो तो मुझे उसका शोक है, परन्तु मैं तुम्हें यह विश्वास दिलाता हूँ कि यह सत्य है। हत्या केवल नीच श्रेणी के ही लोगों का काम है और मैं इसके लिये उनको दोषी नहीं ठहराता। मेरे विचार में उनके लिये हत्या का वही स्थान है जो हमारे लिये कला का है। इससे उन्हें असाधारण सनसनी मिलती है।"

"क्या यह एक सनसनी प्राप्त करने का साधन है ? क्या तुम सोचते हो कि एक वार हत्या करके मनुष्य फिर हत्या कर सकता है ? ऐसा मुझ से मत कहो।"

"ओह डोरियन, कोई भी काम बार-बार करने से प्रसन्नता देने वाला बन जाता है।" लार्ड हेनरी ने हँसते हुए कहा—"यह जिन्दगी के सबसे महत्वपूर्ण रहस्यों में से एक है। मेरा तो सदा से यह विचार है कि हत्या जिन्दगी कि एक गलती है। भोजन के बाद जिस विषय पर वातचीत ही नहीं की जा सकती वह काम मनुष्य को नहीं करना चाहिये। आओ, बासिल के विषय को छोड़ दें। काश कि मैं तुम्हारे इस विचार पर विश्वास कर सकता कि बासिल का वास्तव में इतना रोमांटिक अन्त हुआ। परन्तु मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता। मैं तो कहता हूँ कि वह बस से नीचे गिर पड़ा और ड्राइवर ने उसकी लाश को भय से पानी में फेंक दिया। हाँ—मेरे ख्याल में तो इसी प्रकार उसका अन्त हुआ। मैं तो अब भी उसको हरे रंग के अथाह जल में पीठ के बल लेटे हुए

कल्पना करता हूँ, जिसके ऊपर से बड़े-बड़े जहाज गुजरते जाते हैं और जिसके सिर के बालों में झाड़ियाँ उलझती जाती हैं। तुम जानते हो कि अब वह अपनी जिन्दगी में कोई और अच्छा काम नहीं कर सकता था। गत दस वर्षों में उसकी चित्रकला बहुत कुछ नीचे गिर गई थी।"

डोरियन ने चैन की साँस ली और लार्ड हेनरी कमरे के दूसरी ओर जाकर जावा के बड़े हरे रंग के तोते को पुचकारने लगा। उसने जब उसकी पीली रंग की पूंछ को छुआ तो अपनी काली पुतलियों को कभी इस ओर और कभी उस ओर घुमाकर वह आगे पीछे हिलने लगा।

"हाँ, उसने घूमकर अपनी जेब से रूमाल निकालते हुए कहा— "उसकी चित्रकला बिल्कुल समाप्त हो गई थी। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उसमें से कोई चीज खो गई थी। उसकी चित्रकला का उद्देश्य विलीन हो चुका था। जब से तुम्हारी और उसकी मित्रता छूटी तब से वह बड़ा कलाकार नहीं रह गया। तुम दोनों का साथ क्यों छूटा ? मेरे विचार में उससे तुम ऊब गये थे। यदि यह बात थी तो उसने तुम्हें कभी क्षमा नहीं किया होगा। इस श्रेणी के लोगों की यह आदत होती है। हाँ डोरियन, तुम्हारे उस सुन्दर चित्र का क्या हुआ जो बासिल ने बनाया था ? मेरे ख्याल में उसके समाप्त होने के बाद मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा। ओह, मुझे याद आया—कितने ही साल पहले तुमने मुझे बतलाया था कि सैलबी भेजते समय रास्ते में किसी ने उसे चुरा लिया और फिर तुम्हें वह कभी वापस नहीं मिला। कितने दुःख की बात है। यह सचमुच ही उसकी सर्वश्रेष्ठ कृति थी। मुझे याद है कि मैं उसे खरीदना चाहता था। काश कि मैं उसे खरीद सकता। यह बासिल के इस समय की कृति थी जब उसकी कला उच्च शिखर पर पहुँची हुई थी। उसके बाद से उसके काम में बुरी कला और अच्छे विचारों का मिश्रण था, जिसे पाकर एक व्यक्ति अंग्रेज कलाकारों का प्रतिनिधित्व करने का दावा कर सकता है। क्या तुमने उसके लिये समाचार-पत्रों में लिखा था ? तुम्हें देना चाहिए था।"

उस में कुछ जानने की उत्सुकता नहीं थी। यही उसका मुख्य अवगुण था।"

"हेनरी, यदि मैं तुमसे यह कहूँ कि मैंने ही बासिल की हत्या की है तो तुम क्या सोचोगे !" डोरियन ने पूछा। अपनी बात कह लेने पर उसने लार्ड हेनरी को बड़े ध्यान से देखा।

"प्रिय डोरियन, मेरे विचार में तो तुम उस चरित्र को अपना रहे हो जिसके तुम योग्य नहीं हो। सारी हत्याएँ नीच कर्म हैं और नीच कर्म हत्या से कम नहीं। डोरियन, हत्या करने की शक्ति तुम में नहीं है। यदि यह कहकर तुम्हारे सम्मान में बट्टा लगता हो तो मुझे उसका शोक है, परन्तु मैं तुम्हें यह विश्वास दिलाता हूँ कि यह सत्य है। हत्या केवल नीच श्रेणी के ही लोगों का काम है और मैं इसके लिये उनको दोषी नहीं ठहराता। मेरे विचार में उनके लिये हत्या का वही स्थान है जो हमारे लिये कला का है। इससे उन्हें असाधारण सनसनी मिलती है।"

"क्या यह एक सनसनी प्राप्त करने का साधन है ? क्या तुम सोचते हो कि एक वार हत्या करके मनुष्य फिर हत्या कर सकता है ? ऐसा मुझ से मत कहो।"

"ओह डोरियन, कोई भी काम बार-बार करने से प्रसन्नता देने वाला बन जाता है।" लार्ड हेनरी ने हँसते हुए कहा—"यह जिन्दगी के सबसे महत्वपूर्ण रहस्यों में से एक है। मेरा तो सदा से यह विचार है कि हत्या जिन्दगी कि एक गलती है। भोजन के बाद जिस विषय पर बातचीत ही नहीं की जा सकती वह काम मनुष्य को नहीं करना चाहिये। आओ, बासिल के विषय को छोड़ दें। काश कि मैं तुम्हारे इस विचार पर विश्वास कर सकता कि बासिल का वास्तव में इतना रोमांटिक अन्त हुआ। परन्तु मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता। मैं तो कहता हूँ कि वह बस से नीचे गिर पड़ा और ड्राइवर ने उसकी लाश को भय से पानी में फेंक दिया। हाँ—मेरे ख्याल में तो इसी प्रकार उसका अन्त हुआ। मैं तो अब भी उसको हरे रंग के अथाह जल में पीठ के बल लेटे हुए

कल्पना करता हूँ, जिसके ऊपर से बड़े-बड़े जहाज गुजरते जाते हैं और जिसके सिर के बालों में झाड़ियाँ उलझती जाती हैं। तुम जानते हो कि अब वह अपनी जिन्दगी में कोई और अच्छा काम नहीं कर सकता था। गत दस वर्षों में उसकी चित्रकला बहुत कुछ नीचे गिर गई थी।"

डोरियन ने चैन की साँस ली और लार्ड हेनरी कमरे के दूसरी ओर जाकर जावा के बड़े हरे रंग के तोते को पुचकारने लगा। उसने जब उसकी पीली रंग की पूंछ को छुआ तो अपनी काली पुतलियों को कभी इस ओर और कभी उस ओर घुमाकर वह आगे पीछे हिलने लगा।

"हाँ, उसने घूमकर अपनी जेब से रूमाल निकालते हुए कहा—"उसकी चित्रकला बिल्कुल समाप्त हो गई थी। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उसमें से कोई चीज खो गई थी। उसकी चित्रकला का उद्देश्य विलीन हो चुका था। जब से तुम्हारी और उसकी मित्रता छूटी तब से वह बड़ा कलाकार नहीं रह गया। तुम दोनों का साथ क्यों छूटा ? मेरे विचार में उससे तुम ऊब गये थे। यदि यह बात थी तो उसने तुम्हें कभी क्षमा नहीं किया होगा। इस श्रेणी के लोगों की यह आदत होती है। हाँ डोरियन, तुम्हारे उस सुन्दर चित्र का क्या हुआ जो बासिल ने बनाया था ? मेरे ख्याल में उसके समाप्त होने के बाद मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा। ओह, मुझे याद आया—कितने ही साल पहले तुमने मुझे बतलाया था कि सैलबी भेजते समय रास्ते में किसी ने उसे चुरा लिया और फिर तुम्हें वह कभी वापस नहीं मिला। कितने दुःख की बात है। यह सचमुच ही उसकी सर्वश्रेष्ठ कृति थी। मुझे याद है कि मैं उसे खरीदना चाहता था। काश कि मैं उसे खरीद सकता। यह बासिल के इस समय की कृति थी जब उसकी कला उच्च शिखर पर पहुँची हुई थी। उसके बाद से उसके काम में बुरी कला और अच्छे विचारों का मिश्रण था, जिसे पाकर एक व्यक्ति अंग्रेज कलाकारों का प्रतिनिधित्व करने का दावा कर सकता है। क्या तुमने उसके लिये समाचार-पत्रों में लिखा था ? तुम्हें देना चाहिए था।"

"मैं भूल गया !" डोरियन ने कहा—"मेरे ख्याल में मैंने समाचार-पत्र में विज्ञापन दिया था। परन्तु वह चित्र मुझे कभी अच्छा नहीं लगा। उसके लिये मैं बैठा, इसका मुझे सदा शोक रहा। उसकी स्मृति भी मुझे अच्छी नहीं लगती। तुम उसके विषय में क्यों बातें करते हो ? मुझे हेमलेट की वे लाइनें याद आ जाती हैं—शायद इसी तरह हैं—

'एक दुःख का ऐसा चित्र !'

मानो एक मुख जिसका हृदय नहीं है।

"हाँ, वह चित्र इसी प्रकार का था।"

लार्ड हेनरी हँस दिया—"यदि एक मनुष्य अपनी जिन्दगी कलात्मक ढंग से बिताता है तो उसका मस्तिष्क ही उसका हृदय बन जाता है।" उसने आरामकुर्सी पर लेटते हुए कहा।

डोरियन ग्रे ने अपना सिर हिलाया और प्यानो पर बड़े कोमल स्वर बजाने लगा।

"एक दुःख का ऐसा चित्र, मानो एक मुख जिसका हृदय नहीं है।"

लार्ड हेनरी अपनी आँखें आधी बन्द किये कुर्सी पर लेट रहा—"सुनो डोरियन", उसने थोड़ी देर ठहरकर कहा—"यदि एक मनुष्य सारे संसार को जीतकर अपनी आत्मा खो बैठे तो उसको क्या लाभ होगा ?"

संगीत के स्वर जोर से बजाकर डोरियन चौंककर उठ खड़ा हुआ और अपने मित्र की ओर बड़े ध्यान से देखने लगा—"हेनरी, तुम मुझसे यह प्रश्न क्यों पूछते हो ?"

"प्रिय डोरियन !" लार्ड हेनरी ने आश्चर्य से अपनी भौहें ऊपर उठा कर कहा—"मैंने इसलिये तुमसे यह प्रश्न पूछा था कि शायद तुम इसका उत्तर दे सको। इससे अधिक मेरा मतलब और कुछ नहीं था। पिछले रविवार को मैं पार्क में से गुजर रहा था और संगमरमर की मूर्त्ति के पास बेकार के लोगों की एक छोटी-सी भीड़ एक तीसरे दर्जे के प्रचारक का उपदेश सुन रही थी। मैंने वहाँ से गुजरते समय उस प्रचारक को

जनता से यह प्रश्न पूछते सुना। मुझे यह प्रश्न बड़े नाटकीय ढंग का प्रतीत हुआ। इस प्रकार विचित्र उपदेशों से लन्दन भरा पड़ा है। बारिश पड़ती हुई रविवार को एक प्रातःकाल, ओवरकोट पहने एक ईसाई प्रचारक, फटे हुए छातों की छाया में बीमार से सफेद चेहरों का एक झुण्ड और भावुकता में उसके होंठों से निकला हुआ एक छोटा-सा कोई वाक्य—यह सब अपने ढंग में बड़ा सुन्दर लगता है। मैं उस प्रचारक से यह कहना चाहता था कि कला की तो आत्मा होती है परन्तु उसकी आत्मा नहीं है। परन्तु मुझे भय है कि वह मेरी बात को अच्छी तरह से समझता नहीं।"

"हेनरी, ऐसा मत कहो। आत्मा जिन्दगी की बहुत बड़ी वास्तविकता है। इसको खरीदा, बेचा और बदला जा सकता है। इसको पतित से पतित और पूर्ण से पूर्ण बनाया जा सकता है। यह मैं जानता हूँ कि हम में से प्रत्येक के पास एक आत्मा होती है।"

"डोरियन, क्या तुमको इस बात का दृढ़ विश्वास है?"

"हाँ।"

"ओह! तब यह अवश्य धोखा होगा। जिन बातों के विषय में मनुष्य को पूर्ण रूप से विश्वास होता है वे कभी सत्य नहीं होतीं। यही तो श्रद्धा का दुःखमय अन्त और रोमांस की शिक्षा है। तुम कैसे पीड़ित से दिखाई पड़ रहे हो। इतने गम्भीर मत बनो। तुम्हें या मुझे इस युग की मिथ्या धारणाओं से क्या लेना है? नहीं, आत्मा पर से हमारा विश्वास उठ चुका है। अच्छा, प्यानो पर कुछ बजाओ। डोरियन, रात का कोई सुन्दर संगीत सुनाओ और इसके साथ-साथ धीरे स्वर में मुझे यह भी बताते जाओ कि किस प्रकार तुमने अपना यौवन बनाये रखा। तुम्हारा कोई रहस्य अवश्य होगा। मैं तुमसे केवल दस वर्ष बड़ा हूँ परन्तु मेरे मुख पर झुर्रियों की बाढ़ आ गई है, मैं थक चुका हूँ और मेरा मुख पीला पड़ चुका है। डोरियन, तुम सचमुच ही बहुत आश्चर्यमय व्यक्ति हो। जितने सुन्दर तुम आज लग रहे हो उतने

"मैं भूल गया !" डोरियन ने कहा—"मेरे ख्याल में मैंने समाचार-पत्र में विज्ञापन दिया था। परन्तु वह चित्र मुझे कभी अच्छा नहीं लगा। उसके लिये मैं बैठा, इसका मुझे सदा शोक रहा। उसकी स्मृति भी मुझे अच्छी नहीं लगती। तुम उसके विषय में क्यों बातें करते हो ? मुझे हेमलेट की वे लाइनें याद आ जाती हैं—शायद इसी तरह हैं—

'एक दुःख का ऐसा चित्र !'

मानो एक मुख जिसका हृदय नहीं है।

"हाँ, वह चित्र इसी प्रकार का था।"

लार्ड हेनरी हँस दिया—"यदि एक मनुष्य अपनी जिन्दगी कलात्मक ढंग से बिताता है तो उसका मस्तिष्क ही उसका हृदय बन जाता है।" उसने आरामकुर्सी पर लेटते हुए कहा।

डोरियन ग्रे ने अपना सिर हिलाया और प्यानो पर बड़े कोमल स्वर बजाने लगा।

"एक दुःख का ऐसा चित्र, मानो एक मुख जिसका हृदय नहीं है।"

लार्ड हेनरी अपनी आँखें आधी बन्द किये कुर्सी पर लेट रहा—"सुनो डोरियन", उसने थोड़ी देर ठहरकर कहा—"यदि एक मनुष्य सारे संसार को जीतकर अपनी आत्मा खो बैठे तो उसको क्या लाभ होगा ?"

संगीत के स्वर जोर से बजाकर डोरियन चौंककर उठ खड़ा हुआ और अपने मित्र की ओर बड़े ध्यान से देखने लगा—"हेनरी, तुम मुझसे यह प्रश्न क्यों पूछते हो ?"

"प्रिय डोरियन !" लार्ड हेनरी ने आश्चर्य से अपनी भौहें ऊपर उठा कर कहा—"मैंने इसलिये तुमसे यह प्रश्न पूछा था कि शायद तुम इसका उत्तर दे सको। इससे अधिक मेरा मतलब और कुछ नहीं था। पिछले रविवार को मैं पार्क में से गुजर रहा था और संगमरमर की मूर्त्ति के पास बेकार के लोगों की एक छोटी-सी भीड़ एक तीसरे दर्जे के प्रचारक का उपदेश सुन रही थी। मैंने वहाँ से गुजरते समय उस प्रचारक को

जनता से यह प्रश्न पूछते सुना। मुझे यह प्रश्न बड़े नाटकीय ढंग का प्रतीत हुआ। इस प्रकार विचित्र उपदेशों से लन्दन भरा पड़ा है। बारिश पड़ती हुई रविवार को एक प्रातःकाल, ओवरकोट पहने एक ईसाई प्रचारक, फटे हुए छातों की छाया में बीमार से सफेद चेहरों का एक झुण्ड और भावुकता में उसके होंठों से निकला हुआ एक छोटा-सा कोई वाक्य—यह सब अपने ढंग में बड़ा सुन्दर लगता है। मैं उस प्रचारक से यह कहना चाहता था कि कला की तो आत्मा होती है परन्तु उसकी आत्मा नहीं है। परन्तु मुझे भय है कि वह मेरी बात को अच्छी तरह से समझता नहीं।"

"हेनरी, ऐसा मत कहो। आत्मा जिन्दगी की बहुत बड़ी वास्तविकता है। इसको खरीदा, बेचा और बदला जा सकता है। इसको पतित से पतित और पूर्ण से पूर्ण बनाया जा सकता है। यह मैं जानता हूँ कि हम में से प्रत्येक के पास एक आत्मा होती है।"

"डोरियन, क्या तुमको इस बात का दृढ़ विश्वास है ?"

"हाँ।"

"ओह ! तब यह अवश्य धोखा होगा। जिन बातों के विषय में मनुष्य को पूर्ण रूप से विश्वास होता है वे कभी सत्य नहीं होतीं। यही तो श्रद्धा का दुःखमय अन्त और रोमांस की शिक्षा है। तुम कैसे पीड़ित से दिखाई पड़ रहे हो। इतने गम्भीर मत बनो। तुम्हें या मुझे इस युग की मिथ्या धारणाओं से क्या लेना है ? नहीं, आत्मा पर से हमारा विश्वास उठ चुका है। अच्छा, प्यानो पर कुछ बजाओ। डोरियन, रात का कोई सुन्दर संगीत सुनाओ और इसके साथ-साथ धीरे स्वर में मुझे यह भी बताते जाओ कि किस प्रकार तुमने अपना यौवन बनाये रखा। तुम्हारा कोई रहस्य अवश्य होगा। मैं तुमसे केवल दस वर्ष बड़ा हूँ परन्तु मेरे मुख पर झुर्रियों की बाढ़ आ गई है, मैं थक चुका हूँ और मेरा मुख पीला पड़ चुका है। डोरियन, तुम सचमुच ही बहुत आश्चर्यमय व्यक्ति हो। जितने सुन्दर तुम आज लग रहे हो उतने

"मैं भूल गया !" डोरियन ने कहा—"मेरे ख्याल में मैंने समाचार-पत्र में विज्ञापन दिया था। परन्तु वह चित्र मुझे कभी अच्छा नहीं लगा। उसके लिये मैं बैठा, इसका मुझे सदा शोक रहा। उसकी स्मृति भी मुझे अच्छी नहीं लगती। तुम उसके विषय में क्यों बातें करते हो ? मुझे हेमलेट की वे लाइनें याद आ जाती हैं—शायद इसी तरह हैं—

'एक दुःख का ऐसा चित्र !'

मानो एक मुख जिसका हृदय नहीं है।

"हाँ, वह चित्र इसी प्रकार का था।"

लार्ड हेनरी हँस दिया—"यदि एक मनुष्य अपनी जिन्दगी कलात्मक ढंग से बिताता है तो उसका मस्तिष्क ही उसका हृदय बन जाता है।" उसने आरामकुर्सी पर लेटते हुए कहा।

डोरियन ग्रे ने अपना सिर हिलाया और प्यानो पर बड़े कोमल स्वर बजाने लगा।

"एक दुःख का ऐसा चित्र, मानो एक मुख जिसका हृदय नहीं है।"

लार्ड हेनरी अपनी आँखें आधी बन्द किये कुर्सी पर लेट रहा—"सुनो डोरियन", उसने थोड़ी देर ठहरकर कहा—"यदि एक मनुष्य सारे संसार को जीतकर अपनी आत्मा खो बैठे तो उसको क्या लाभ होगा ?"

संगीत के स्वर जोर से बजाकर डोरियन चौंककर उठ खड़ा हुआ और अपने मित्र की ओर बड़े ध्यान से देखने लगा—"हेनरी, तुम मुझसे यह प्रश्न क्यों पूछते हो ?"

"प्रिय डोरियन !" लार्ड हेनरी ने आश्चर्य से अपनी भौहें ऊपर उठा कर कहा—"मैंने इसलिये तुमसे यह प्रश्न पूछा था कि शायद तुम इसका उत्तर दे सको। इससे अधिक मेरा मतलब और कुछ नहीं था। पिछले रविवार को मैं पार्क में से गुजर रहा था और संगमरमर की मूर्त्ति के पास बेकार के लोगों की एक छोटी-सी भीड़ एक तीसरे दर्जे के प्रचारक का उपदेश सुन रही थी। मैंने वहाँ से गुजरते समय उस प्रचारक को

जनता से यह प्रश्न पूछते सुना। मुझे यह प्रश्न बड़े नाटकीय ढंग का प्रतीत हुआ। इस प्रकार विचित्र उपदेशों से लन्दन भरा पड़ा है। बारिश पड़ती हुई रविवार को एक प्रातःकाल, ओवरकोट पहने एक ईसाई प्रचारक, फटे हुए छातों की छाया में बीमार से सफेद चेहरों का एक झुण्ड और भावुकता में उसके होंठों से निकला हुआ एक छोटा-सा कोई वाक्य—यह सब अपने ढंग में बड़ा सुन्दर लगता है। मैं उस प्रचारक से यह कहना चाहता था कि कला की तो आत्मा होती है परन्तु उसकी आत्मा नहीं है। परन्तु मुझे भय है कि वह मेरी बात को अच्छी तरह से समझता नहीं।"

"हेनरी, ऐसा मत कहो। आत्मा जिन्दगी की बहुत बड़ी वास्तविकता है। इसको खरीदा, बेचा और बदला जा सकता है। इसको पतित से पतित और पूर्ण से पूर्ण बनाया जा सकता है। यह मैं जानता हूँ कि हम में से प्रत्येक के पास एक आत्मा होती है।"

"डोरियन, क्या तुमको इस बात का दृढ़ विश्वास है ?"

"हाँ।"

"ओह ! तब यह अवश्य धोखा होगा। जिन बातों के विषय में मनुष्य को पूर्ण रूप से विश्वास होता है वे कभी सत्य नहीं होतीं। यही तो श्रद्धा का दुःखमय अन्त और रोमांस की शिक्षा है। तुम कैसे पीड़ित से दिखाई पड़ रहे हो। इतने गम्भीर मत बनो। तुम्हें या मुझे इस युग की मिथ्या धारणाओं से क्या लेना है ? नहीं, आत्मा पर से हमारा विश्वास उठ चुका है। अच्छा, प्यानो पर कुछ बजाओ। डोरियन, रात का कोई सुन्दर संगीत सुनाओ और इसके साथ-साथ धीरे स्वर में मुझे यह भी बताते जाओ कि किस प्रकार तुमने अपना यौवन बनाये रखा। तुम्हारा कोई रहस्य अवश्य होगा। मैं तुमसे केवल दस वर्ष बड़ा हूँ परन्तु मेरे मुख पर झुरियों की बाढ़ आ गई है, मैं थक चुका हूँ और मेरा मुख पीला पड़ चुका है। डोरियन, तुम सचमुच ही बहुत आश्चर्यमय व्यक्ति हो। जितने सुन्दर तुम आज लग रहे हो उतने

पहले कभी नहीं लगे। तुम मुझे उस दिन की याद दिलाते हो जब मैंने पहले-पहल तुम्हें देखा था। तुम बहुत शर्मीले थे और असाधारण से दिखाई दे रहे थे। तुम बदल चुके हो परन्तु प्रकट रूप से तुम वैसे के वैसे ही हो। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे अपना यह भेद बतलाओ। अपने यौवन को पुनः प्राप्त करने के लिये मैं संसार के सारे काम कर सकता हूँ लेकिन मुझसे कसरत, प्रातःकाल उठना, या दूसरों का आदर-सम्मान करना, यह सब कुछ नहीं होगा। यौवन, इस जैसी संसार में कोई दूसरी चीज नहीं है। यौवन की नादानी और अज्ञान के विषय में मैं कुछ नहीं सुनता। आजकल मैं जिन लोगों की राय को महत्त्व देता हूँ वे मुझसे अवस्था में बहुत छोटे हैं। परन्तु मुझे वे अपने से आगे दिखाई पड़ते हैं। जिन्दगी अपने सारे नये आविष्कार उनके सामने प्रकट करती जाती है। अधिक अवस्था वालों का तो मैं सदा विरोध ही करता हूँ। यह विरोध मैं सिद्धान्त के आधार पर करता हूँ। यदि तुम कल की बीती हुई किसी घटना पर उनकी सम्मति पूछो तो वे १२२० ई० के विचार प्रकट करेंगे। जब लोग सारी प्रचलित बातों पर विश्वास करते थे, परन्तु किसी के विषय में भी नहीं जानते थे। ओह ! तुम कितना सुन्दर संगीत बजा रहे हो ! मैं आश्चर्यचकित होकर सोचता हूँ कि क्या चोपिन ने इसे सजौरका के स्थान पर लिखा था जहाँ उसके मकान के चारों ओर समुद्र रो रहा होगा और खिड़कियों के शीशों पर समुद्र की लहरें नमक का छिड़काव करती होंगी ? यह बहुत ही रोमांटिक है। यह कितने सौभाग्य की बात है कि हमारे पास एक यही कला बच रही है जो किसी की नकल नहीं है। रुको मत डोरियन, मैं आज की रात संगीत चाहता हूँ। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम जवान एपोलो हो और मैं मारसाज की भाँति तुम्हारा संगीत सुन रहा हूँ। डोरियन, मेरे अपने ऐसे निजी दुःख हैं जिनके विषय में तुम भी कुछ नहीं जानते। बुढ़ापे की ट्रेजेडी यह नहीं है कि मनुष्य बूढ़ा बन जाता है परन्तु यह है कि शरीर बूढ़ा बन जाने पर भी उसकी आत्मा जवान बनी रहती

है। कभी-कभी मुझे अपने इस सत्य पर ही आश्चर्य होने लगता है। ओह, डोरियन, तुम कितने खुश हो! तुमने कितनी सुन्दर जिन्दगी बिताई है! तुमने प्रत्येक पहलू का जी भर के आनन्द उठाया है। तुमसे कोई भी रहस्य छिपा नहीं रहा। और यह सब तुम्हें संगीत के मीठे स्वरों की भाँति लगा। यह तुम्हारे यौवन और सौन्दर्य का स्पर्श तक नहीं कर सका। तुम अब भी वैसे ही हो।"

"मैं वैसा ही नहीं हूँ हेनरी।"

"हाँ, तुम वही हो। मुझे आश्चर्य होता है कि अब आगे की तुम्हारी जिन्दगी कैसी होगी। जिन्दगी की वर्तमान धारा को बदलकर खराब मत करो। इस समय तुम पूर्ण हो। अपने को अपूर्ण मत बनाओ। तुम में इस समय कोई दोष नहीं है। तुम्हें अपना सिर हिलाने की आवश्यकता नहीं, तुम अपने विषय में सब कुछ जानते हो। और डोरियन तुम अपने आपको धोखा मत दो। जिन्दगी कभी अपनी इच्छा या भावना से निर्धारित नहीं की जा सकती। जिन्दगी नसों, कोमल धागों और धीरे-धीरे बने हुए छोटे-छोटे सूराखों की बनी हुई है जिसमें विचार छिप जाते हैं और इच्छाएँ अपने अद्भुत स्वप्न देखा करती हैं। तुम अपने-आपको सुरक्षित और शक्तिशाली समझो, परन्तु अचानक ही कमरे में या प्रातःकाल के प्रकाश में एक रंग देखकर, एक ऐसी सुगन्धि सूँघकर, जिसको तुम एक बार बहुत प्यार करते थे और अब जिसके साथ सुन्दर स्मृतियाँ वापस लौटती हैं, भूली हुई कविता की एक पंक्ति को कहीं पढ़कर, किसी गीत के कुछ स्वर सुनकर जिसे तुम बहुत पहले गाया करते थे, उदास मन हो। मैं कहता हूँ डोरियन कि इन्हीं चीजों पर हमारी जिंदगी निर्भर है। बराउनिंग ने कभी इस विषय पर कहीं लिखा है परन्तु हमारी अपनी इन्द्रियाँ ही हमारे लिए इसकी कल्पना कर लेंगी। काश कि मैं तुम्हारे साथ अपनी जिन्दगी बदल लेता। संसार हम दोनों के विरुद्ध चिल्लाता आया है परन्तु उसने तुम्हारी सदा पूजा ही की है और सदा करता ही रहेगा। तुम उस प्रकार के व्यक्ति हो जिसको युग खोज रहा है और

पहले कभी नहीं लगे। तुम मुझे उस दिन की याद दिलाते हो जब मैंने पहले-पहल तुम्हें देखा था। तुम बहुत शर्मीले थे और असाधारण से दिखाई दे रहे थे। तुम बदल चुके हो परन्तु प्रकट रूप से तुम वैसे के वैसे ही हो। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे अपना यह भेद बतलाओ। अपने यौवन को पुनः प्राप्त करने के लिये मैं संसार के सारे काम कर सकता हूँ लेकिन मुझसे कसरत, प्रातःकाल उठना, या दूसरों का आदर-सम्मान करना, यह सब कुछ नहीं होगा। यौवन, इस जैसी संसार में कोई दूसरी चीज नहीं है। यौवन की नादानी और अज्ञान के विषय में मैं कुछ नहीं सुनता। आजकल मैं जिन लोगों की राय को महत्त्व देता हूँ वे मुझसे अवस्था में बहुत छोटे हैं। परन्तु मुझे वे अपने से आगे दिखाई पड़ते हैं। जिन्दगी अपने सारे नये आविष्कार उनके सामने प्रकट करती जाती है। अधिक अवस्था वालों का तो मैं सदा विरोध ही करता हूँ। यह विरोध मैं सिद्धान्त के आधार पर करता हूँ। यदि तुम कल की वीती हुई किसी घटना पर उनकी सम्मति पूछो तो वे १२२० ई० के विचार प्रकट करेंगे। जब लोग सारी प्रचलित बातों पर विश्वास करते थे, परन्तु किसी के विषय में भी नहीं जानते थे। ओह ! तुम कितना सुन्दर संगीत बजा रहे हो ! मैं आश्चर्यचकित होकर सोचता हूँ कि क्या चोपिन ने इसे सजौरका के स्थान पर लिखा था जहाँ उसके मकान के चारों ओर समुद्र रो रहा होगा और खिड़कियों के शीशों पर समुद्र की लहरें नमक का छिड़काव करती होंगी ? यह बहुत ही रोमांटिक है। यह कितने सौभाग्य की बात है कि हमारे पास एक यही कला बच रही है जो किसी की नकल नहीं है। रुको मत डोरियन, मैं आज की रात संगीत चाहता हूँ। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम जवान एपोलो हो और मैं मारसाज की भाँति तुम्हारा संगीत सुन रहा हूँ। डोरियन, मेरे अपने ऐसे निजी दुःख हैं जिनके विषय में तुम भी कुछ नहीं जानते। बुढ़ापे की ट्रेजेडी यह नहीं है कि मनुष्य बूढ़ा बन जाता है परन्तु यह है कि शरीर बूढ़ा बन जाने पर भी उसकी आत्मा जवान बनी रहती

है। कभी-कभी मुझे अपने इस सत्य पर ही आश्चर्य होने लगता है। ओह, डोरियन, तुम कितने खुश हो ! तुमने कितनी सुन्दर जिन्दगी बिताई है ! तुमने प्रत्येक पहलू का जी भर के आनन्द उठाया है। तुमसे कोई भी रहस्य छिपा नहीं रहा। और यह सब तुम्हें संगीत के मीठे स्वरों की भाँति लगा। यह तुम्हारे यौवन और सौन्दर्य का स्पर्श तक नहीं कर सका। तुम अब भी वैसे ही हो।"

"मैं वैसा ही नहीं हूँ हेनरी।"

"हाँ, तुम वही हो। मुझे आश्चर्य होता है कि अब आगे की तुम्हारी जिन्दगी कैसी होगी। जिन्दगी की वर्तमान धारा को बदलकर खराब मत करो। इस समय तुम पूर्ण हो। अपने को अपूर्ण मत बनाओ। तुम में इस समय कोई दोष नहीं है। तुम्हें अपना सिर हिलाने की आवश्यकता नहीं, तुम अपने विषय में सब कुछ जानते हो। और डोरियन तुम अपने आपको धोखा मत दो। जिन्दगी कभी अपनी इच्छा या भावना से निर्धारित नहीं की जा सकती। जिन्दगी नसों, कोमल धागों और धीरे-धीरे बने हुए छोटे-छोटे सूराखों की बनी हुई है जिसमें विचार छिप जाते हैं और इच्छाएँ अपने अद्भुत स्वप्न देखा करती हैं। तुम अपने-आपको सुरक्षित और शक्तिशाली समझो, परन्तु अचानक ही कमरे में या प्रातःकाल के प्रकाश में एक रंग देखकर, एक ऐसी सुगन्धि सूँघकर, जिसको तुम एक बार बहुत प्यार करते थे और अब जिसके साथ सुन्दर स्मृतियाँ वापस लौटती हैं, भूली हुई कविता की एक पंक्ति को कहीं पढ़कर, किसी गीत के कुछ स्वर सुनकर जिसे तुम बहुत पहले गाया करते थे, उदास मन हो। मैं कहता हूँ डोरियन कि इन्हीं चीजों पर हमारी जिंदगी निर्भर है। बराउनिंग ने कभी इस विषय पर कहीं लिखा है परन्तु हमारी अपनी इन्द्रियाँ ही हमारे लिए इसकी कल्पना कर लेंगी। काश कि मैं तुम्हारे साथ अपनी जिन्दगी बदल लेता। संसार हम दोनों के विरुद्ध चिल्लाता आया है परन्तु उसने तुम्हारी सदा पूजा ही की है और सदा करता ही रहेगा। तुम उस प्रकार के व्यक्ति हो जिसको युग खोज रहा है और

जिसका उसे भय था वही उसे मिल गया है। मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि तुमने कभी कोई इस प्रकार का काम नहीं किया, कभी कोई मूर्ति नहीं गढ़ी, कोई चित्र नहीं बनाया अपने से बाहर किसी की रचना नहीं की ! जिन्दगी ही तुम्हारी कला बनी रही। तुमने अपने-आपको संगीत में डुबो दिया है। तुम्हारे दिन ही तुम्हारे संगीत के पद हैं।"

डोरियन प्यानो से उठ गया और अपने बालों पर हाथ फेरने लगा। "हाँ, जिन्दगी मेरे लिए बड़ी सुखदाई रही है।" उसने धीमे स्वर में कहा—"परन्तु हेनरी, मैं अब उसी प्रकार की जिन्दगी नहीं बिताऊँगा। और अब तुम इस प्रकार की व्यर्थ की बातें मुझसे मत किया करो। तुम मेरे विषय में सब कुछ नहीं जानते। मेरे विचार में अगर तुम्हें वे बातें पता चल जायें, तब तुम भी मुझसे दूर भागोगे। तुम हँसते हो, हँसो नहीं।"

"तुमने संगीत क्यों बन्द कर दिया डोरियन ? वापस जाओ और वह रात्रि का संगीत मुझे फिर सुनाओ। धूल-धूसरित वायु में शहद के रंग का वह बड़ा-सा चाँद देखते हो। वह तुम्हारे द्वारा अपने मनोरंजन की प्रतीक्षा कर रहा है और यदि तुमने संगीत बजाया तो वह पृथ्वी के और भी समीप आ जायेगा। तुम अब नहीं बजाओगे ? अच्छा, तो क्लब चलो। आज की सन्ध्या बहुत मजे से कटी और उसी उत्साह से उसका अन्त भी करना चाहिये। बार्नमाउथ का सबसे बड़ा पुत्र लार्ड पूले तुमसे परिचय करने का बहुत उत्सुक है। वह तुम्हारी नकटाइयों की नकल करता है और उसने मुझसे प्रार्थना की है कि मैं उसका तुमसे परिचय करा दूं। वह बहुत प्रसन्नमुख युवक है और उसे देखकर मुझे तुम्हारी याद आती है।"

"मैं ऐसी आशा नहीं करता।" डोरियन ने अपनी आँखों में एक उदासी भर कर कहा—"मैं आज रात बहुत थक चुका हूँ हेनरी। मैं क्लब नहीं जाऊँगा। ग्यारह बज चुके हैं और अब मैं सोऊँगा।"

"अच्छी बात है डोरियन। आज रात जैसा तुमने कभी संगीत नहीं

बजाया। तुम्हारे स्पर्श में ही कुछ ऐसा आकर्षण था कि संगीत बहुत सुन्दर लगा। इसमें कुछ ऐसी गहराई थी जो मैंने पहले इस संगीत में कभी नहीं सुनी थी।"

"इसका कारण यह है कि अब मैं अच्छा चरित्रवान व्यक्ति बनने जा रहा हूँ।" उसने मुस्कराकर उत्तर दिया—"मैं थोड़ा बहुत तो पहले ही बदल चुका हूँ।"

"डोरियन, तुम मेरे लिये नहीं बदल सकते।" लार्ड हेनरी ने कहा—"मैं और तुम सदा मित्र बने रहेंगे।"

"तुमने एक बार एक पुस्तक देकर मुझ पर बड़ा विषैला प्रभाव डाला था। मैं उसके लिये तुम्हें क्षमा नहीं करूँगा। हेनरी, तुम मुझे वचन दो कि तुम वह पुस्तक अब किसी को भी पढ़ने के लिये नहीं दोगे। वह बहुत भारी हानि पहुँचाती है।"

"प्रिय डोरियन, तुम वास्तव में नैतिकता का आरम्भ कर रहे हो। तुम बहुत जल्दी ही बदलते हुए प्रचारक की भाँति लोगों को उन पापों से सावधान करने लगोगे जिनसे तुम थक चुके हो। परन्तु तुम इतने सुन्दर हो कि तुम उस काम के योग्य नहीं हो। इसके अलावा इसका कोई लाभ नहीं है। तुम और मैं जो हैं वही हैं और जो होंगे वही होंगे। और एक पुस्तक के विषैले प्रभाव के विषय में जो तुम कहते हो, वह झूठ है। कला का कर्म पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। यह काम करने की इच्छा का दमन करती है। इसका कोई महत्व नहीं है। जिन पुस्तकों को संसार अनैतिक कहता है वे वही पुस्तकें हैं जो संसार को उसकी लज्जास्पद वास्तविकता दिखाती हैं। परन्तु हम साहित्य की चर्चा नहीं करेंगे। कल मेरे घर आना। मैं ग्यारह बजे घोड़े पर बाहर जाऊँगा। हम दोनों साथ ही चल सकते हैं और उसके बाद लेडी ब्रैंकसम के साथ भोजन कर सकते हैं। वह बहुत आकर्षक स्त्री है और वह तुमसे उन परदों के बारे में सम्मति लेना चाहती है जिसे वह जल्दी ही खरीदने वाली है। जरूर आना, या हम अपनी डचेस के साथ भी भोजन कर सकते हैं? वह कहती

जिसका उसे भय था वही उसे मिल गया है। मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि तुमने कभी कोई इस प्रकार का काम नहीं किया, कभी कोई मूर्ति नहीं गढ़ी, कोई चित्र नहीं बनाया अपने से बाहर किसी की रचना नहीं की ! जिन्दगी ही तुम्हारी कला बनी रही। तुमने अपने-आपको संगीत में डुबो दिया है। तुम्हारे दिन ही तुम्हारे संगीत के पद हैं।"

डोरियन प्यानो से उठ गया और अपने बालों पर हाथ फेरने लगा। "हाँ, जिन्दगी मेरे लिए बड़ी सुखदाई रही है।" उसने धीमे स्वर में कहा—"परन्तु हेनरी, मैं अब उसी प्रकार की जिन्दगी नहीं बिताऊँगा। और अब तुम इस प्रकार की व्यर्थ की बातें मुझसे मत किया करो। तुम मेरे विषय में सब कुछ नहीं जानते। मेरे विचार में अगर तुम्हें वे बातें पता चल जायें, तब तुम भी मुझसे दूर भागोगे। तुम हँसते हो, हँसो नहीं।"

"तुमने संगीत क्यों बन्द कर दिया डोरियन ? वापस जाओ और वह रात्रि का संगीत मुझे फिर सुनाओ। धूल-धूसरित वायु में शहद के रंग का वह बड़ा-सा चाँद देखते हो। वह तुम्हारे द्वारा अपने मनोरंजन की प्रतीक्षा कर रहा है और यदि तुमने संगीत बजाया तो वह पृथ्वी के और भी समीप आ जायेगा। तुम अब नहीं बजाओगे ? अच्छा, तो क्लब चलो। आज की सन्ध्या बहुत मजे से कटी और उसी उत्साह से उसका अन्त भी करना चाहिये। बार्नमाउथ का सबसे बड़ा पुत्र लार्ड पूले तुमसे परिचय करने का बहुत उत्सुक है। वह तुम्हारी नकटाइयों की नकल करता है और उसने मुझसे प्रार्थना की है कि मैं उसका तुमसे परिचय करा दूं। वह बहुत प्रसन्नमुख युवक है और उसे देखकर मुझे तुम्हारी याद आती है।"

"मैं ऐसी आशा नहीं करता।" डोरियन ने अपनी आँखों में एक उदासी भर कर कहा—"मैं आज रात बहुत थक चुका हूँ हेनरी। मैं क्लब नहीं जाऊँगा। ग्यारह बज चुके हैं और अब मैं सोऊँगा।"

"अच्छी बात है डोरियन। आज रात जैसा तुमने कभी संगीत नहीं

बजाया। तुम्हारे स्पर्श में ही कुछ ऐसा आकर्षण था कि संगीत बहुत सुन्दर लगा। इसमें कुछ ऐसी गहराई थी जो मैंने पहले इस संगीत में कभी नहीं सुनी थी।"

"इसका कारण यह है कि अब मैं अच्छा चरित्रवान व्यक्ति बनने जा रहा हूँ।" उसने मुस्कराकर उत्तर दिया—"मैं थोड़ा बहुत तो पहले ही बदल चुका हूँ।"

"डोरियन, तुम मेरे लिये नहीं बदल सकते।" लार्ड हेनरी ने कहा—"मैं और तुम सदा मित्र बने रहेंगे।"

"तुमने एक बार एक पुस्तक देकर मुझ पर बड़ा विषैला प्रभाव डाला था। मैं उसके लिये तुम्हें क्षमा नहीं करूँगा। हेनरी, तुम मुझे वचन दो कि तुम वह पुस्तक अब किसी को भी पढ़ने के लिये नहीं दोगे। वह बहुत भारी हानि पहुँचाती है।"

"प्रिय डोरियन, तुम वास्तव में नैतिकता का आरम्भ कर रहे हो। तुम बहुत जल्दी ही बदलते हुए प्रचारक की भाँति लोगों को उन पापों से सावधान करने लगोगे जिनसे तुम थक चुके हो। परन्तु तुम इतने सुन्दर हो कि तुम उस काम के योग्य नहीं हो। इसके अलावा इसका कोई लाभ नहीं है। तुम और मैं जो हैं वही हैं और जो होंगे वही होंगे। और एक पुस्तक के विषैले प्रभाव के विषय में जो तुम कहते हो, वह झूठ है। कला का कर्म पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। यह काम करने की इच्छा का दमन करती है। इसका कोई महत्व नहीं है। जिन पुस्तकों को संसार अनैतिक कहता है वे वही पुस्तकें हैं जो संसार को उसकी लज्जास्पद वास्तविकता दिखाती हैं। परन्तु हम साहित्य की चर्चा नहीं करेंगे। कल मेरे घर आना। मैं ग्यारह बजे घोड़े पर बाहर जाऊँगा। हम दोनों साथ ही चल सकते हैं और उसके बाद लेडी ब्रैंकसम के साथ भोजन कर सकते हैं। वह बहुत आकर्षक स्त्री है और वह तुमसे उन परदों के बारे में सम्मति लेना चाहती है जिसे वह जल्दी ही खरीदने वाली है। जरूर आना, या हम अपनी डचेस के साथ भी भोजन कर सकते हैं? वह कहती

है कि अब उसकी तुमसे भेंट कभी नहीं होती। शायद तुम ग्लैडिज से ऊब गये हो ? मैंने पहले ही यह अनुमान लगा लिया था। उसकी तेज जुबान से सब तंग आ जाते हैं। खैर, कल ग्यारह बजे जरूर आना।"

"क्या मेरा आना आवश्यक है हेनरी ?"

"अवश्य ! पार्क अब बहुत सुन्दर बन गया है। जब से मैं तुमसे मिला हूँ तब से लेकर अब तक ऐसे सुन्दर फूल उसमें कभी नहीं लगे।"

"अच्छी बात है। मैं वहाँ ग्यारह बजे पहुँच जाऊँगा।" डोरियन ने कहा—"हेनरी नमस्कार !" ज्योंही वह दरवाजे के पास पहुँचा, तभी वह क्षण भर के लिये कुछ झिझका मानो वह कुछ और कहना चाहता है। तब उसने एक आह भरी और बाहर चला गया।

२०

वह बहुत सुन्दर रात थी, डोरियन को इतनी गर्मी लगी कि उसने अपना कोट उतारकर कंधे पर डाल लिया और अपना रेशमी मफलर तक गले में बाँध नहीं सका। घर जाते समय, सिगरेट पीते हुए उसे रास्ते में दो युवक अपने पास से गुजरते दिखाई दिये। उसने एक को दूसरे से कहते सुना—"यह है डोरियन ग्रे।" उसे याद आया कि जब कभी कोई उसकी ओर संकेत करता था, या बड़े ध्यान से देखता था, या कोई उसके विषय में बातचीत करता था, तो उसे कितनी प्रसन्नता होती थी। अब तो वह अपना नाम सुनते-सुनते थक गया है। जिस गाँव में वह अभी हाल ही में जाया करता था उसका आधा आकर्षण तो इस बात में था कि उसके विषय में कोई भी कुछ नहीं जानता था। जिस लड़की को उसने अपने से प्रेम करने के लिये उकसाया था, वह प्रायः

उससे यह कहा करता था कि वह बहुत गरीब है और वह उसकी बात पर विश्वास कर लेती थी। उसने एक बार उस लड़की से कहा था कि वह चरित्रहीन है परन्तु उसने हँसकर यह उत्तर दिया था कि चरित्रहीन लोग सदा बूढ़े और कुरूप होते हैं। वह ऐसी हँसी हँसती थी मानो कोई पक्षी गा रहा हो। अपने सूती कपड़ों और बड़े-बड़े हैटों में वह कितनी सुन्दर लगती थी। उसे किसी बात का ज्ञान नहीं था परन्तु उसके पास वह सब कुछ था जिसे वह खो बैठा था।

जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने नौकर को अपनी प्रतीक्षा करते पाया। उसे सोने के लिये कहकर वह पुस्तकालय के सोफ़ा पर लेट गया और लार्ड हेनरी की कही बातों पर सोचने लगा।

क्या यह वास्तव में सच है कि मनुष्य कभी बदल नहीं सकता? अपने बालकपन की पवित्रता के लिये उसका मन तड़प उठा—उसका गुलाब की भाँति श्वेत बालकपन, जैसा कि एक बार लार्ड हेनरी ने कहा था। वह जानता था कि उसने अपने आपको कितना गिरा दिया है, अपने मस्तिष्क को कितनी नीच भावनाओं से भर रखा है और अपनी कल्पना को कितना भयानक बना लिया है। उसने दूसरों पर कितना बुरा प्रभाव डाला है और अपनी इन करतूतों पर कितना प्रसन्न होता रहा है। उसकी जिन्दगी में जितने लोग आये, उनकी पवित्र, निष्कलंक और होनहार जिन्दगी को उसने क्या से क्या बना दिया। क्या इसको बदला नहीं जा सकता? क्या इसके लिये कोई आशा नहीं रह गई है?

कौन से गर्व और इच्छा के वशीभूत होकर, किस भयानक क्षण में उसने यह प्रार्थना की थी कि यह चित्र उसकी अवस्था के सारे बोझों को अपने ऊपर लाद ले और उसका अमर यौवन निष्कलंक और ताजा बना रहे। उसकी सारी सफलताओं का कारण यह वरदान ही है। यह कितना अच्छा होता कि उसकी जिंदगी का प्रत्येक पाप अपने साथ अपना निश्चित दण्ड और परिणाम लाता। दण्ड पाने से भी मनुष्य कितना सुधरता जाता है। मनुष्य को अपने परमात्मा से 'हमारे पापों को क्षमा

कर दो' वाली प्रार्थना के बदले 'हमारे पापों का हमें दण्ड दो' प्रार्थना करनी चाहिये।

लार्ड हेनरी ने कितने वर्षों पूर्व उसे विचित्र से काम वाला जो शीशा दिया था वह मेज पर रखा था और उसके चारों ओर सफेद मूर्तियाँ उसके बुढ़ापे पर मानो हँस रही थीं। जिस प्रकार उस भयानक रात को—जब उसने अपने चित्र में परिवर्तन देखा था—उसने वह शीशा उठाया था उसी प्रकार आज भी उसने अपनी बड़ी-बड़ी डरावनी आँसुओं से भरी आँखों से उसके चमकते हुए फ्रेम को देखा। एक बार एक स्त्री ने—जो उससे बहुत प्रेम करती थी—अपने उन्माद में एक पत्र लिखा था, जिसके अन्तिम शब्द इस प्रकार के थे—"संसार बदल चुका है किन्तु तुम संगमरमर और सोने के बने हुए हो। तुम्हारे होठों की रेखायें इतिहास को फिर से लिख रही हैं।" वे शब्द उसे याद आये और वह बार-बार उनको दोहराने लगा। तब अपने सौन्दर्य से ही वह ऊब गया और शीशे को पृथ्वी पर पटककर उसने टुकड़े-टुकड़े कर दिया और पाँव से मसलने लगा। यह उसका सौन्दर्य ही उसके पतन का कारण बना, उसका सौन्दर्य और यौवन—जिसके लिये उसने प्रार्थना की थी। शायद इनके स्थायी न रहने से उसकी जिन्दगी पवित्र और निष्कलंकित रहती। उसके सौन्दर्य ने उसके सारे पापों और दोषों को छिपा लिया, और उसका यौवन उसका मजाक करता रहा। आखिर यौवन किस समय पूर्ण रूप से विकसित होता है, एक हरा, बिना पका हुआ फल ? मनुष्य का स्वभाव बहुत खोखला और उसके विचार रोगी होते हैं। उसने यौवन की ताज़गी को क्यों नष्ट कर दिया ? युवावस्था ने उसको बिगाड़ दिया था।

अतीत के विषय में न सोचना ही अच्छा है। कोई भी उसको बदल नहीं सकता। अब उसको अपने और अपने भविष्य के विषय में सोचना है। जेम्स वेन सैल्बी के कब्रिस्तान में बिना नाम की कब्र में दबा पड़ा है। अलन कैंपबेल ने एक रात को अपनी लेबोरेटरी में गोली मार ली

थी और उसने वह रहस्य किसी को नहीं बतलाया, जिसको जानने के लिये उसे बाध्य किया गया था। बासिल हालवर्ड के गायब हो जाने की सनसनी शीघ्र ही समाप्त हो जायेगी, और अभी से लोग उसे भूलने-से लगे हैं। अब वह पूर्णरूप से सुरक्षित है। उसने बासिल हालवर्ड की हत्या भी नहीं की, जिसका बोझ उसके मस्तिष्क पर लदा हुआ था। वह उसकी अपनी आत्मा की ही जीवित मृत्यु थी, जो सदा उसके चारों ओर मंडराया करती थी। बासिल ने उसका ऐसा चित्र बनाया था जिसने उसकी जिन्दगी दुष्कर बना दी थी और इसके लिये वह उसे क्षमा नहीं कर सका। यह वह चित्र ही था जिसने उसकी यह दशा बना दी थी। बासिल ने उससे वे बातें कही थीं जिनको सहना सम्भव नहीं था, परन्तु फिर भी वह धैर्य से सब कुछ सुनता रहा था। उसकी हत्या केवल क्षण-भर के उन्माद में की गई थी। अलन कैंपवेल की आत्महत्या के विषय में तो यह स्पष्ट था कि यह उसकी ही अपनी करतूत थी। उसने यह रास्ता स्वयं ही चुना था, इसका उससे कोई तात्पर्य नहीं था।

एक नई जिन्दगी। यही वह चाहता था। इसी की वह प्रतीक्षा कर रहा था। उसने वह जिन्दगी आरम्भ कर दी थी। कम से कम उसने एक पवित्र आत्मा को बिना कोई कलंक लगाये ही छोड़ दिया था। वह फिर कभी किसी नादान आत्मा को अपने प्रति आकर्षित नहीं करेगा। वह भविष्य में अच्छा बनेगा।

जब वह हेनरी के विषय में सोच रहा था तभी उसके मस्तिष्क में एक अद्भुत विचार आया कि क्या कमरे में बन्द चित्र बदल गया है? शायद जितना विकृत वह पहले था, उतना अब नहीं रहा होगा? यदि उसकी जिन्दगी अब पवित्र बनी रही, तब वह चित्र के मुख से सारे कलंक के चिन्ह दूर कर देगा। शायद कुछ चिन्ह अभी दूर हो गये हों? वह ऊपर जाकर देखेगा।

उसने मेज पर से लैम्प उठाया और धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगा। ज्योंही उसने दरवाजा खोला तभी प्रसन्नता की एक लहर उसके जवान

चेहरे पर चमक उठी और क्षण भर के लिये उसके होठों पर स्थिर हो गई। हाँ, वह अब चरित्रवान रहेगा और जिस भयानक वस्तु को उसने इतने दिनों से छिपा रखा था, अब उसका उसे कोई भय नहीं रहेगा। उसने अनुभव किया मानो कोई बड़ा भारी बोझा उसके सिर से उतर गया हो।

वह चुपचाप अन्दर गया और अपनी पुरानी आदत के अनुसार दरवाजा बन्द करके चित्र के ऊपर से परदा हटा दिया। वेदना और दुःख से वह चिल्ला उठा। उसे चित्र में कोई परिवर्तन दिखाई नहीं दिया, केवल उसकी आँखों में धोखे की झलक और उसके विकृत मुख पर झूठे प्रदर्शन की भयानक रेखा खिची हुई थी। वह चित्र उसे पहले से भी अधिक भयानक लगा। जिस लाल रंग से उस चित्र का एक हाथ रँगा हुआ था वह उसे और भी चमकता हुआ दिखाई दिया, मानो किसी ने ताजा रक्त बहाया हो। तब वह काँप उठा। क्या गर्वोन्मत्त होकर ही उसने यह एक अच्छा कार्य किया है? या जैसा लार्ड हेनरी ने उपहास की हँसी हँसते हुए इसका कारण नई सनसनी की आह बतलाया था? या एक ऐसा पार्ट खेलने की इच्छा जब कि हम लोग कभी-कभी अपने से भी अच्छा कार्य कर बैठते हैं? या इन सब प्रेरणाओं ने मिलकर उससे यह काम करवाया है? और चित्र के हाथ पर लाल धब्बा इतना बड़ा क्यों हो गया है? यह झुर्रियों वाली उँगलियों पर कोई भयानक रोग प्रतीत होता है। चित्र पर बने हुए पैरों पर भी रक्त के धब्बे थे, मानो रक्त छिड़क दिया गया हो, क्योंकि दूसरे हाथ पर भी लाल दाग़ थे। क्या वह अपने पापों को जनता के सम्मुख स्वीकार कर ले? क्या इसका यह तात्पर्य है कि वह अपने सारे पाप मान ले? अपने अच्छे-बुरे का विचार छोड़कर मृत्यु का आलिगन करे? वह हँस दिया। उसने अनुभव किया कि यह विचार ही बहुत भयानक है। दूसरे यदि वह सब कुछ स्वीकार कर भी ले तो उसका विश्वास कौन करेगा? जिस व्यक्ति की उसने हत्या की है उसका नाम-निशान तक बाकी नहीं बचा है।

उसके जो चिह्न थे, वे तक नष्ट हो चुके हैं। वह स्वयं अपने ही हाथों से उसका कोट और बेग नीचे के कमरे में जला चुका है। संसार उसे केवल पागल समझेगा। यदि उसने अपनी कहानी की सत्यता पर जोर दिया तो उसे जेल में वन्द कर दिया जायेगा। परन्तु फिर भी अपने पापों को मान लेना उसका कर्तव्य है। जनता की लांछना को उसे सहना ही होगा और इन सबका दण्ड भुगतना पड़ेगा। एक ऐसा भगवान् है जो लोगों को संसार और स्वर्ग के सम्मुख अपने पाप प्रगट करने के लिए कहता है। वह जब तक लोगों के सम्मुख अपने पापों को प्रकट नहीं करेगा तब तक चाहे वह कितने ही भले काम क्यों न करे, वह पवित्र नहीं हो सकेगा। उसके पाप ? उसने अपने कन्धे हिलाये। बासिल हालवर्ड की हत्या का महत्व उसे कुछ तुच्छ जान पड़ा। वह हेनरी के विषय में सोच रहा था। उसके सामने उसका दर्पण था—उसकी आत्मा का दर्पण, जिसे वह देख रहा था। अभिमान ! उत्सुकता ! झूठा प्रदर्शन ! क्या उसके पुनर्जीवन में इनके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है ? परन्तु इससे अधिक भी कुछ है। कम से कम उसने तो यही सोचा था। परन्तु कौन जानता है ?···नहीं, इनके अतिरिक्त उसके पास और कुछ भी नहीं है। यद्यपि अपने गर्व में उसने बालिका को निष्कलंकित छोड़ दिया है, झूठा प्रदर्शन करके वह अपने-आपको चरित्रवान् कहने लगा है। उत्सुकतावश उसने अपनी वासना की पूर्ति नहीं की। अब वह सब कुछ पहचान गया है।

परन्तु यह हत्या—क्या वह उसको जिन्दगी भर के लिये पंगु बना देगी ? क्या उसके अतीत का भार उस पर सदा के लिये लदा रहेगा ? क्या वह वास्तव में अपने पापों को स्वीकार कर ले ? कभी नहीं। उसके विरुद्ध केवल एक ही प्रमाण बना हुआ है। यह चित्र—यही सबूत है। यह उसे नष्ट कर देगा। उसने इस चित्र को क्यों इतनी देर तक अपने घर में जीवित रखा ? एक बार इस चित्र को बदलते हुए और बूढ़ा होते देखकर उसे आनन्द मिलता था। परन्तु इन दिनों उसे चित्र में कोई उत्सुकता नहीं रही। उसकी याद करते-करते वह घण्टों रात में

जागा है। जब वह शहर से बाहर होता था तब भय के कारण यह सोचा करता था कि कहीं दूसरे लोग इस चित्र को न देख लें। उसकी इच्छायें सदा उदासी में मग्न रहती थीं। इसकी स्मृति-मात्र से ही उसकी प्रसन्नता के कितने क्षण वेदना में परिवर्तित हो गये थे। यह उसके लिये उसकी आत्मा के समान था। यह चित्र उसकी आत्मा था वह इसे नष्ट कर देगा।

उसने अपने चारों ओर देखा और उसे वह चाकू दिखाई दिया जिससे उसने बासिल की हत्या की थी। उसने कई बार उस चाकू को साफ़ किया, जिससे उस पर कोई रक्त का चिह्न बचा न रहे। यह बहुत तेज़ था और चमक रहा था। जिस प्रकार उसने चित्रकार की हत्या कर दी थी उसी प्रकार अब वह उसके चित्र को भी समाप्त कर देगा, जिससे उसका कोई प्रभाव शेष न रहे। इससे उसका अतीत नष्ट हो जायेगा और उसके समाप्त हो जाने पर वह स्वतन्त्र हो जायेगा। यह चाकू उसकी इस आत्मा की भयानक जिन्दगी और उसकी डरावनी चेतावनियों को समाप्त करके उसे शान्ति प्रदान करेगा। उसने चाकू को पकड़ लिया और तस्वीर पर वार किया।

उसी समय एक चिल्लाहट और किसी के बड़ी ज़ोर से गिरने की आवाज़ सुनाई दी। उस चीख में इतनी भयानक वेदना भरी हुई थी कि नौकर भी भयभीत होकर जाग उठे और अपने कमरों से बाहर निकल आये। दो आदमी—जो नीचे स्केयर से गुजर रहे थे—खड़े हो गये और ऊपर मकान की ओर देखने लगे। वे आगे बढ़ गये जहाँ उन्हें एक सिपाही मिला, जिसे वे अपने साथ ले आये। सिपाही ने कितनी ही बार घंटी बजाई, परन्तु किसी ने उसका उत्तर नहीं दिया। ऊपर की एक खिड़की के अतिरिक्त सारे मकान में अन्धकार था। कुछ देर बाद वह पास वाले मकान में ऊपर चढ़कर देखने लगा।

"यह किसका मकान है ?" उन दो आदमियों में से बड़े व्यक्ति ने सिपाही से पूछा।

"मि० डोरियन ग्रे का ।" सिपाही ने उत्तर दिया ।

उन दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा और वहाँ से जाते समय मकान के प्रति अपनी घृणा प्रदर्शित की । उनमें से एक सर हेनरी का चाचा था ।

मकान के अन्दर नौकरों वाले भाग में नौकर एक-दूसरे से बहुत धीरे-धीरे बातें कर रहे थे । बूढ़ी श्रीमती चीफ़ रो रही थी और अपने हाथ मल रही थी । फ्रैंसिस मृत्यु के समान पीला दिखाई दे रहा था ।

लगभग पन्द्रह मिनट के पश्चात् उसने कोचवान और एक दूसरे नौकर को साथ लिया और ऊपर चढ़ गया । उन्होंने दरवाजा खट-खटाया परन्तु कोई उत्तर नहीं मिला । उन्होंने पुकारा, परन्तु उसका भी कोई जवाब नहीं आया । सब कुछ शान्त था । अन्त में दरवाज़ा खोलने की असफल चेष्टा के पश्चात् वे छत पर चढ़ गये और फिर बाहर के बरामदे में कूद गये । खिड़कियाँ आसानी से खुल गईं क्योंकि उनके कुण्डे बहुत पुराने थे ।

अन्दर घुसकर दीवार पर लटकता हुआ उन्होंने अपने स्वामी का अपूर्व यौवन और सौन्दर्य से भरा चित्र देखा । फर्श पर शाम की पोशाक में एक मृत आदमी पड़ा था जिसकी छाती में एक चाकू घुसा हुआ था । वह मुरझा चुका था, उसके चेहरे पर अनेक झुर्रियाँ थीं और उसकी शक्ल भयानक और विकृत-सी हो रही थी । जब तक उन्होंने उस आदमी की अँगुठियों को नहीं देखा तब तक वे पहचान नहीं सके कि वह कौन था ।

GPS./538'68-5,000

DATE SLIP

This book was taken from the Library on the date last stamped. A fine of (a) 00.05 paise per book/volume for the first 20 days of delay per day. (b) 00.20 paise per book/volume per day of delay thereafter which shall be realised from the defaulters before a new book is issued to him/her.

15/7/
2/2/
11/11/
10.12.77



